प्रबोधा

रचयिता : त्रिमत के एकैक गुरू

आध्यात्मिक साम्राज्य के चक्रवर्ती, (88) दश अष्टाधिक ग्रंथकर्ता

इंदू ज्ञान धर्मप्रदाता, संचलनात्मक रचयिता, त्रैतसिद्धान्त आदिकर्ता

श्रीश्रीश्री आचार्य प्रबोधानंद योगीश्वर

www.thraithashakam.org

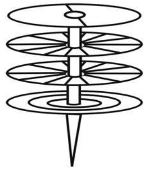

प्रबोधा

रचयिता : **त्रिमत के एैकक गुरू**

आध्यात्मिक साम्राज्य के चक्रवर्ती, (88) दश अष्टाधिक ग्रंथकर्ता

इंदू ज्ञान धर्मप्रदाता, संचलनात्मक रचयिता, त्रैतसिद्धान्त आादिकर्ता

श्रीश्रीश्री आचार्य प्रबोधानंद योगीश्वर

Published by

इंदू ज्ञानवेदिका

(Estd. in 1978 - Regd.No.: 168 / 2004)

त्रैत शक : 39 **प्रथम मुद्र :** May - 2017

प्रतियाँ : 1000 **खीमत :** 200/-

योगीश्वर जी के संचलनात्मक त्रिमत के आध्यात्मिक रचनायें

02 इंदूज्ञानवेदिका के प्रचुरण

01) त्रैत सिद्धान्त भगवद्गीता
02) जनन मरन सिद्धान्त
03) ईश्वर का चिह्न - ९६३
04) धर्म शास्त्र कौनसा है?
05) इंदुत्व की रक्षा करते हैं
06) कौनसा असली ज्ञान हैं?
07) आध्यात्मिक प्रश्न - जवाबात
08) तत्वार्थ के तसवीरों में ज्ञान
09) मंत्र - महिमा (सच या झूट?)
10) गीतम - गीता (गानों में ज्ञान)
11) लु का क्या मतलब? (तेलुगु)
12) हिंदू मत में सिद्धान्त कर्तायें
13) तीन ग्रंथ, दो गुरू, एक बोधक
14) ईश्वर का ज्ञान कब्ज़ा हुआ है
15) हेतुवाद प्रश्न - सत्यवाद जवाब
16) त्रैत सिद्धाँत आध्यात्मिक घंटु
17) मेरा लोचन है तेरा आलोचन है
18) क्या जिहाद का मतलब युद्ध है?
19) क्या ईसा मरगया? या मारेगया?
20) तीन दैव ग्रंथ - तीन प्रथम वाक्य
21) कौनसा पहला है पेड या बींज ?
22) दैवग्रंथ में सत्यासत्य की विचक्षण
23) जिन्न - भूतों के यदार्थ संघटनायें
24) क्या सायिबाबा ईश्वर है या नहीं?
25) क्या श्रीकृष्ण ईश्वर है या भगवान
26) कलियुग (कभी भी युगाँत नही होगा)
27) गालियों में ज्ञान - आशिर्वादों में अज्ञान
28) ज्योतिष्य शास्त्र (शास्त्र है या अशास्त्र?)
29) क्या ईश्वर के आमद का समय ये नहीं है
30) क्या स्वर्ग इंद्रलोक और नरक यमराज्य है
31) हमारे त्योहार (कैसे करना है मालूम है?)
32) कृष्ण मूसा (श्री कृष्ण के मरण की बाद की जिदगी)

33) गुत्ता
34) सुबोधा
35) प्रबोधा
36) समाधि
37) कसौटी
38) फैसला
39) कर्मपत्र
40) आदित्य
41) धर्मचक्र
42) माँ - बाप
43) मत - पथ
44) भाव - भाषा
45) धर्म - अधर्म
46) प्रबोधा तरंग
47) त्रैत सिद्धान्त
48) प्रसिद्ध बोधा
49) सुप्रसिद्ध बोधा
50) वार्तक - वर्तक
51) तत्वों में ज्ञान
52) मरण रहस्य
53) गीता परिचय
54) त्रैतशक पंचांग
55) ईश्वर का चिह्न
56) ईश्वर की मुहर
57) तुझे मेरी लेखा
58) योहान सुवार्ता
59) कथाओं में ज्ञान
60) कथाओं में ज्ञान
61) त्रैताकार रहस्य
62) गुरुप्रर्थना मंजरि
63) देवालय के रहस्य
64) हेतुवाद - प्रतिवाद
65) पुनर्जन्म का रहस्य
66) त्रैताराधना
67) इंदू सांप्रदाय
68) आत्मलिंगार्थ
69) द्राविड ब्राह्मण
70) विश्व विद्यालय
71) प्रवक्तायें कौन?
72) पहेलियों में ज्ञान
73) एक ही दोनों हैं
74) एक बात तीन ग्रंथ
75) सामेताओं में ज्ञान
76) नास्तिक - आस्तिक
77) प्रबोदानंदं नाटिकायें
78) क्या सुलेब ईश्वर है?
79) यज्ञ (सच या झूट?)
80) क्या इंदू ईसायि है?
81) निगूढ तत्वार्थ बोधिनि
82) रूप बदला हुआ गीता

83) सत्यान्वेशि की कथा

84) राजकीय - राजकीय

85) योहान कही हुयी ज्ञान

86) प्रथम दैवग्रंथ भगवद्गीता

87) मतातीत ईश्वर का मार्ग

88) मत बदलना दैवद्रोह है

89) आज्ञान में उग्रवाद बीज

90) एक व्यक्ति में दो कोण

91) मरण के बाद की जीवित

92) हिंदूमत में ही कुलविवक्षा

93) उग्रवाद स्वर्गकेलिये ही है

94) प्रतिमा विग्रह - दैव दैय्यमु

95) कौनसे मत में कितना मतद्वेष?

96) मध्यम दैंवग्रंथ में ज्ञानवाक्य

97) अंतिम दैंवग्रंथ में ज्ञानवाक्य

98) अंतिम दैंवग्रंथ में वज्रवाक्य

भाषा में पांडित्य को छोडकर, भाव में पांडित्य को देखनेवाला ही असली ज्ञानी है

01) माता
02) माता -पिता
03) मत - पथ
04) युग - योग
05) पैत्य - सैत्य
06) प्रभू - प्रजा
07) इंदू - हिंदू
08) बात - दवा
09) भक्ति - भय
10) भाव - भाषा
11) धर्म - अधर्म
12) नैज़ - सहज
13) प्रभू - प्रभुत्व
14) सुख - आनंद
15) दश - दिशायें
16) स्त्री - पुं/लिंग
17) पुस्तक - ग्रंथ
18) द्राविड - आर्य
19) भूत - महाभूत
20) ज्ञान - विज्ञान
21) प्रकृति - विकृति
22) मरण - शरीर
23) मुर्गा - पादरस
24) पैदाहोना - मरना
25) सृष्टि - सृष्टिकर्ता
26) द्वितीय - अद्वितीय
27) मायक - अमायक
28) सेकूवलि - कूलिसेवा
29) देश दोखा - देह मह
30) माँ बाप - गुरू दैव
31) गोरू - गुरू (नाखुन)
32) दिव्य खुरान - हदीस
33) दादा
34) आत्मा
35) समाधि
36) टकलू
37) यादव
38) भगवान
39) सांप्रदाय
40) कलियुग
41) वेलुगुबंट
42) ज्ञानशक्ती
43) ६-३=६
44) गुरुपौर्णमी
45) संचित कर्मा
46) इंदू महासमुद्र
47) त्रैत सिद्धान्त
48) कर्म का मर्म
49) श्रीकृष्णाष्टमी
50) सात आकाशें
51) तीन ग्रंथ
52) चमत्कार आत्मा
53) चंद्राकार (गंजा)
54) गुरू कोन है?
55) श्रीकृष्ण कौन है?
56) १ २ ३ गुरूपौर्णमी
57) एकता - एकाग्रता
58) श्रीकृष्ण जन्म मधुरा
59) आत्मा का काम
60) मतों में पवित्रयुद्ध
61) पुनर्जन्म का रहस्य
62) खिलानेवाली आत्मा
63) तेलुगु में तीन - छ - नौ
64) नाटक करनेवाली आत्मा

65) शैव - वैष्णव
66) जीर्ण+आशय
67) निदर्शा - निरूप
68) सेवा की फीसद
69) कौनसा धर्म है?
70) अधर्म आराधनायें
71) कौनसा शास्त्र है?
72) क्या ईश्वर का कोइ
73) काय - फल - काया
74) दैवज्ञान - माया महत्य
75) तीन पैदायिश - दो जगह
76) क्षमा न कियेजानेवाला पाप
77) ज्ञान के पास जत्तन रहना!!
78) बाल आत्मा की निशान है
79) एक निरंजन - अलकनिरंजन
80) हरिपैर - हरहाथ (हथेलि - तलवा)
81) बिना गुरू की विद्या अंधी विद्या ह
82) तीन निर्माण - एक परिशुभ्रता
83) सहज मरण - तात्कालिक मरण
84) मेघ एक भूत - रोग एक भूत है
85) प्रपंच की श्रद्धा - परमात्मा की श्रद्धा
86) कर्मवाला कृष्ण -बिना कर्मवाला कृष्ण
87) गुरू वह है जो पहचाना नहीं जाता
88) इच्छादीन कार्य - अनिच्छादीन कार्य
89) इच्छादीन कार्य - अनिच्छादीन कार्य
90) योगीश्वर जी का जन्मदिन का संदेश
91) बाहर का समाज - अंदर का समाज
92) सीने पर मोहर - माँ बाप की निशानी
93) स्वार्थ राजकीय (स्व + अर्थ राजकीय)
94) पैदायिश का दिन किसी को नहीं आता
95) आटा - दोबूचलाटा (खेल - छुपाछुपी का खेल)
96) टक्कु टमार, इंद्रजाल महेंद्रजाल, गजकर्ण गोकर्ण

97) भय
98) गुरुचिह्न
99) मतद्वेश
100) धर्म चक्र
101) पुरुषोत्तम
102) हान्कनेवाला
103) अर्थ - अपार्थ
104) ग्रंथ - बोधा
105) प्रज - मानव
106) दंत - अंत
107) शव - शिव
108) अदुरू - बेदुरू
109) भक्ति - श्रद्धायें
110) आस्ती - दोस्ती
111) दैवग्रंथ
112) ग्राहिता शक्ति
113) त्रैतशक संतक
114) कालज्ञान के वाक्य
115) ईश्वर की आज्ञा - मौत
116) मत सामरस्य
117) तेरे पीछेवाला
118) माया मर्म - आत्म धर्म
119) कालज्ञान के वाक्य
120) ज्ञान कब्जा हुआ है
121) क्या ईश्वर एक है! या दो!!
122) आध्यात्मिक प्रश्न - जवाबात
123) अंतिम दैवग्रंथ में प्रथम वाक्य
124) मोक्षमु - मोसमु (मुक्ति - धोका)
125) श्रीकृष्णमरगया? या मारेगया?
126) अक्षर ज्ञान

प्रबोधाश्रम (श्रीकृष्ण मंदिर)

चिन्न पोडमल (ग्राम), ताडिपत्रि (मं), अनंतपुर (जिला) A.P
Cell : 98665 12667, 99516 75081, 94903 63038

इंदूज्ञान वेदिका शाखा
अनंतपुर टौन, A. P
Cell : 97059 59390, 99855 80099

के. लक्ष्मीनारायणा चारि (प्रसिडेन्ट)
मार्केट स्ट्रीट, धर्मवरम, अनंतपुर (जि)
Cell : 94405 56968,
92900 12413, 94406 01136

आदिशेषय्या (टीचर) (प्रसिडेन्ट)
गुत्ति, अनंतपुर (जि)
Cell : 9491362448, 7382986963

पि.आदिनारायण
मुद्दिरेड्डि पल्ली (ग्रां), अनंतपुर (जि)
Cell : 9440745800, 7259851861

ए.नागेंद्र (प्रसिडेन्ट)
क्रोत्त चेरुवु (ग्रां, मंडल) अनंतपुर (जि)
Cell : 9493622669, 9959316410,
9949995090

टि.वि.रमणा (प्रसिडेन्ट)
मुदिगुब्बा (ग्रां), अनंतपुर (जि)
Cell : 9440980036, 07406039453

पि.नागय्या (प्रथम मेंबर)
वीकर सेक्षन कालनी, कर्नूल टौन
Cell : 9440244598, 9849303902

एन.वि.रामकृष्ण (प्रथम मेंबर)
बोद्दाम (ग्रां), राजाम (मं), श्रीकाकुलम
Cell : 9494248963, 9959779187

इंदू ज्ञानवेदिका (Head office)
चैतन्यपुरि, दिलसुख नगर, हैदराबाद,
तेलंगाना रार्ष्ट. Cell : 9491040963,
9032963963, 9848590172

वि.शंकर राव (टीचर) (प्रसिडेन्ट)
अशोक नगर, विजयनगर (जिल्ला)
Cell : 9703534224, 9491785963

तुलसी राव
टि.टि.डि कल्याण मंडप, विजयनगर
Cell : 9441878096, 9030089206

यस अनिल कुमार
काकिनाडा टौन, तूर्पु गोदावरि जिल्ला
Cell : 9866195252, 9640526520,
73960 38888

बंडारु सत्यनारायण
मामिडि कुदुरु (मं), तू, गोदावरी जिल्ला
Cell : 95535 07141, 84669
20419, 94902 95577

यन.वि.रामकृष्णा (प्र.सभ्य)
बोद्दाम (ग्रां), राजाम (मं), श्रीकाकुलम (जिल्ला)
Cell : 9494248963, 9959779187

इंदू ज्ञानवेदिका शाखा
मल्लिगां (ग्रामं), कोत्तपेट (पो), रायगड (जि),
ओडिसा (राष्ट). Cell : 09437527499,
09437527470, 09437975781

इंदू ज्ञानवेदिका शाखा

विशाख पट्टणम, आर्न्धप्रदेश
Cell : 76749 79663, 94400 42763, 89777 13666, 92478 26253

एन.बि.नायक (प्रथम मेंबर)

पेदमडका, अगनंपूडी, विशाख पट्टणम (जि)
Cell : 73964 92239, 92483 15309, 73862 12589

वि.सि.वर्मा आनंदाश्रम

मज्ञिवलस(ग्रां, पोस्ट), भीमिलि (मं), विशाख पट्टणम (जि)
Cell : 94415 67394, 95021 72711

वि.शंकर राव (टीचर) (प्रेसिडेन्ट)

अशोक नगर, विजयनगर (जि)
Cell : 9703534224,9491785963

तुलसी राव

तळळ दत ग.ग.ऽ.कल्याण मंडप, विजयनगर (जि)
Cell : 9441878096,9030089206

डा बि धर्मलिंगाचारी (प्रथम मेंबर)

श्री कनकमहा लक्ष्मी क्लिनिक, (कोट), विजयनगर (जि).
Cell:08966-275208, 9704911737

टि.उदयकुमार (प्रेसिडेन्ट)

भीमवरम १ टौन, पशिचम गोदावरी जिल्ला
Cell : 9948275984,7386433834

यम मुरलि

जड्चर्ला, महबूब नगर जिल्ला
Cell : 97057 16469

इंदू ज्ञानवेदिका शाखा

विशाख पट्टणम, आर्न्धप्रदेश
Cell : 76749 79663, 94400 42763, 89777 13666, 92478 26253

यम अल्लिपीर

मडकशिरा, अनंतपुर (जिल्ला), आं. प्र.
Cell : 89780 58081

शेक षफी

चेन्नै, तमिलनाडु रार्ष्ट
Cell : 09445554354

शेक इब्राहीम

कर्नूल टौन, आंध्रप्रदेश
Cell : 70950 08369

शेक अमीर अली

नल्गोंडा जिल्ला, तेलंगाण रार्ष्ट
Cell : 9505 989898, 9505768181

श्री प्रबोध क्लिनिक यु.जनार्दन

आटोनगर, बस्टान्ड रोड, कोयिल कुंट्ला (मं), कर्नूल (जिल्ला). Cell : 9491851911

अनमल महेश्वर (प्रेसिडेन्ट)

चवटपाल्यम (ग्रां), गूडूरु, नेल्लुरु जिल्ला
Cell : 9494631664, 9490809181, 8106065300

रौतु श्रीनिवास राव (प्रेसिडेन्ट)

एटुकूरु रोड, दर्गा मान्यम, गुंटूर जिल्ला
Cell : 9948014366, 9052870853

नर्रा श्रीनिवास रेड्डि

कंभं (मं), प्रकाश्म जिल्ला
Cell : 9849883261, 8142853311, 8187084516

डा.यम.वेंकटेश्वर राव (प्रेसिडेन्ट) M.D(Acu)

शान्ति नगर, नेल्लूरु जिल्ला
Cell : 9440615064, 9246770277

यन.बी नायक (प्र.सभ्य)
पेदमडक, अगनंपूडी, विशाक पट्नम (जिल्ला)
Cell : 92483 15309,
73862 12589, 73964 92239

नायुडु
ख.व.ऊ कोलिमि गुंड्ला, कर्नूल (जिल्ला)
Cell : 9440490963

तलारि गंगाधर
गुडिपाटि गड्डा, नंद्याल टौन.
Cell : 9491846282, 7671963963

वै.रविशेखर रेड्डि
पेद्द कोट्याल (ग्रमं), नंद्याला (मं)
कर्नूल जिल्ला. Cell : 9440420240,
9885385215

टि.उदय कुमार (प्रसिडेन्ट)
भीमवरम वनटौन, पश्चिम गोदावरी जिल्ला.
Cell : 99482 75984, 73864 33834

इंदू ज्ञान वेदिका शाखा
विशाक पट्नम, आंध्रप्रदेश रार्ष्ट.
Cell : 76749 79663, 94400 42763,
89777 13666, 92478 26253

इंदू ज्ञान वेदिका शाखा
कोत्तकोट, महबूब नगर (जिल्ला)
Cell : 87905 58815,
9440655409, 9701261165

पि रामकृष्णारेड्डि
कोलिमि गुंड्ला, कर्नूल (जिल्ला)
Cell : 9666202963

घडियं.पेद्दिरेड्डि (प्र.सभ्य)
नरसरावपेट, गुंटूरु जिल्ला
Cell : 9989204097, 9849555738

यम जैराम नायक
पद्मावती कालनी, महबूब नगर टौन.
Cell : 70321 74830, 90009 16419

सायि शंकर श्रेष्टी (टीचर)
अच्चं पेट, महबूब नगर जिल्ला.
Cell : 9948947630, 9640717574

पोटु वेंकटेश्वर्लु (प्रेसिडेन्ट)
हुजुर नगर, नलगोंडा जिल्ला.
Cell : 9848574803, 9866423853

बि.देवेंदर
भुवनगिरि टौन, नल्गोंडा जिल्ला.
Cell : 76800 65963,
9704885964, 9848741703

इ.श्री नाथ श्रेष्टि
गणेश स्ट्रीट, जनगां, वरंगल जिल्लाह.
Cell : 9573552963, 8096958359

ए.राघवेंद्र श्रेष्टि
श्री कृष्ण मेडिकल्स जनरल्स, पटेल नगर, ३ क्रास होस्पेट, बल्लारि जिल्ला, कर्णाटका रार्ष्ट.
Cell : 097318 16452, 096111 33635

A.V LAKSHMI NARAYANA
San Antonio, TEXAS,U.S.A
+1(210)714 9696, +1(210)527 3436

K. SIVA KRISHNA
Atlanta, GEORGIA, U.S.A
+1 (404) 551 3297, +1 (470) 658 7635

www.thraithashakam.org

विषय सूचि

क्रम संख्या	विषय		पेज नं
1.	मानव जीवन की महत्व	-	13
2.	चर, अचर प्रकृति	-	16
3.	मोक्ष	-	26
4.	यमलोक - स्वर्गलोक	-	31
5.	देवताएँ - राक्षस	-	40
6.	विद्या - अविद्या	-	49
7.	योगविद्या	-	55
8.	वक्रमार्ग	-	60
9.	योगशक्ति	-	66
10.	योगदण्ड की आवश्यकता	-	72
11.	चर्मासनों की आवश्यकता	-	89
12.	आश्रमों	-	93
13.	गुरु बोधा की आवश्यकता	-	98
14.	आज के ज़माने में गुरुओं की अवस्था	-	101
15.	भगवान की आमगन	-	114
16.	योगी मतलब कौन?	-	119
17.	तपस्या - योग	-	126
18.	मंत्रशक्ति	-	136
19.	ग्रह - विग्रह	-	145
20.	महर्षि - आनंद	-	161

विषय सूचि

क्रम संख्या	विषय		पेज नं
21.	शिवम	-	167
22.	प्राणायाम	-	174
23.	ब्रह्म, काल, कर्म, गुण चक्र	-	191
24.	सगुण - साकार - निराकार	-	207
25.	ज्ञानयज्ञ	-	214
26.	जपमाला में कितने मनके हैं?	-	217
27.	हमारे त्योहार (पंडुगलु)	-	222
28.	कौनसा चाहिये-भजन या तत्वज्ञान?	-	228
29.	शरीर किराय का घर है	-	238
30.	आखरी मरण	-	249

१) चार अधर्म दस प्रतिशत मनुष्यों में हैं तो,
सिर्फ एक मत कहलानेवाला अधर्म ९९ फीसद है ।

२) यज्ञ, दान, वेद, तपस्याएँ चार है तो, पाँचवाँ अधर्म मत है ।

३) मत दैवमार्ग में बडी रुकावट है ।

४) मत ऐसी अधर्म है जो सब अधर्मों से बढकर है ।

५) अगर प्रपंच मार्ग में मत है तो दैव मार्ग में खत्म होजाऊगे ।

६) कलियुग में नये से पैदाहुयी पाँचवीं अधर्म ही मत है ।

मानव जीवन की महत्व

कहते हैं कि जगत में प्राणियों की जातियों की संख्या कुल ८४ लाख हैं। लेकिन इस ज़माने में किसी के पास भी इस बात का सही विवरण नहीं हैं कि कुल ८४ लाख हैं।

सिर्फ एक मानव जाति को ही बाक़ी सब प्राणियों को अपने काबू में रखलेने का सामर्थ्य हैं। मानवजाति के सरमें बुद्धी का विधान बडी महत्ववाली है इसीलिये उसे अतिउत्तम जाति की तरह हिसाब किया जा रहा है। इसतरह कहने में कोई शक नहीं हैं कि बाक़ी पशु, पक्षि, क्रिमि, कीटक, वृक्ष, लतायें सब मानव की अखल से कम अखल रखते हैं। जानवर, परिंदे वगैरा सब प्राणियाँ आहार को कमालेना, खाना, सोना, संभोग सुख का अनुभव करने के सिवा बाक़ी प्रपंच का ज्ञान उनको नहीं हैं। लेकिन मानव को खाना, नींद जाना, संतान पाने के अलावा अनेक और विपरीत प्रपंच ज्ञान मालूम हैं। ज्यादा अखल रखनेवाले मानव के हात में, बहुत ही ताखत रखनेवाले बेअखल सिंह भी हार कर उसके वश में आ रहे हैं। इन सबकी वजह मानव की प्रपंच की बुद्धी ही हैं कहसकते हैं। वह मानव जाति जो प्रपंच के मुताबिक बुद्धी में अतिउन्नत जाति है, वह मानव जाति जो प्रपंच ज्ञान में अग्रस्थान में ठहरी है, वह मानव जाति जो बहुत ही बडे बडे परिशोधना करके यांत्रिक तौर पर कंप्यूटरों को, रोबोटों को, भौतिक तौर पर जीन्स को, आयुधों के तौर पर क्षिपणियों को, अणुबांबों को फैन्डौट किया है, वह मानव सिर्फ एक ही एक परमात्मा के ज्ञान में कम्लीटली (पूरा का पूरा) पीछे हैं।

ज्ञान दो प्रकार के हैं। एक प्रपंच का ज्ञान, दूसरा परमात्मा का ज्ञान। वह मानव जो प्रपंच ज्ञान में बहुत ही आगे हैं, परमात्म ज्ञान में बिलकुल आख़िर में है। बहुत ही बडी अखल रखनेवाला मानव,

कौनसा पुण्य है, कौनसा पाप है इस बात पर विचार किये बगैर, स्थूल वाले प्रपंच विषयों को ही महत्व समझते हुये, आध्यात्मिक में अवगाहना न रहने की वजह से,अपनी निज (असली) स्तिथी को नहीं जानते हुये, खुद कौन हैं ईश्वर कौन है मालूम न होते हुये ही, कम से कम मालूम करने की कोशीष भी न करते हुये, वक्त को बेकार में बिताते हुये कर्म को कमाले रहा है। पहली ज्ञान यानि प्रपंच ज्ञान में बहुत ही बडा मानव, दूसरी ज्ञान यानि परमात्मा के विषय में पूरे तरीके से पीछे हैं तो, बाकि प्राणियाँ प्रपंच ज्ञान में पीछे रहते पर भी परमात्मा के रास्ते में मनुष्य से आगे हैं कहसकते हैं। प्राणियाँ मनुष्य से भी कम कर्म को कमाले रहे हैं और वे मनुष्य जैसा गुणों में ज्यादा नहीं फसें हैं। मनुष्य से भिन्न सब गुणों में भी बहुत ही कम हैं। अगर मनुष्य को आशा कहलानेवाली गुण ज्यादा है तो उनमें आशा का गुण उतना प्रतिशत नहीं हैं। सब गुणों में भी ज्यादा फसा हुआ इनसान ईश्वर से दूर होरहा हैं तो, गुणों में कम फसे हुये प्राणियाँ ईश्वर के खरीब ही हैं। वे जानवर जो कर्म को भुगतने के सिवा कमाना नहीं जानते, उनको अखल न रहने पर भी दैवज्ञान में वे आगे रहे जैसा ही है। गुणों में फसकर भुगतनेवाले कर्म से भी ज्यादा कर्म को कमालेने वाला मानव दैवज्ञान में पीछे रहे जैसा ही है।

प्रपंच ज्ञान में बहुत ही महत्व वाला मानव, डाक्टरों के जैसे, इंजिनीरों की तरह विज्ञान को कमालिया हुआ मानव, कम से कम अब तो जाग कर अपने बुद्धि को प्रपंच पर इस्तेमाल न करते हुये, परमात्मा पर इस्तेमाल करके दैवज्ञान को मालूम करसकता हैं। बिना मौत पैदायिश वाली मोक्ष को पा सकता हैं।

इस मानव जनम में ही जाग जाये तो बाक़ी प्राणियों से भी तेजी (ज्यादा स्पीड) से ईश्वर के खरीब पहुँच सकता हैं। वरना बाक़ी

प्राणियों से भी पूरा पीछे पडसकता हैं। मानव का जीवन बहुत ही अज्ञान से भरी हुयी होने के बावजूद भी, अगर श्रद्धा रखें तो दैवमार्ग में जल्द से जल्द प्रवेश करसकते हैं। कहसकते हैं कि दैवमार्ग में प्रवेश करने केलिये मानव जनम ही अच्छा मौका हैं। क्योंकि परमात्मा को मालूम है कि सब प्राणियों से भी मानव पीछे हैं, इसीलिये मानव को ज्ञान देने केलिये वह खुद मानव के अवतार में आया था। सिर्फ इनसान को ही दैवज्ञान की ज़रुरत हैं, इसीलिये मनुष्य की तरह ही पैदा होकर मनुष्य को जो ज्ञान ज़रुरत हैं उसे बोलकर जाना हुआ। खुद ईश्वर ही आकर पैदा हुआ जनम मनुष्य का है। (यानि मनुष्य का जनम इतना महत्ववाला हैं कि उस मनुष्य का रुप धारण करके ही ईश्वर धरती पर आया है) इसलिये अगर ईश्वर के विषयों को समझना है तो सिर्फ इनसान ही पूरे तरीके से समझ सकता हैं। खुद ईश्वर पैदा होकर ऐसा मौका बनाया हैं।जानवरों में ईश्वर पैदा नहीं हुआ। मनुष्यों में ही पैदाहोने से बिना बोले ही यह मालूम होजा रहा हैं कि मनुष्य को ज्ञान की कितनी ज़रुरत हैं।

अगर मनुष्य को दैवज्ञान हासिल करनी है तो गुरु को आश्रय करना ही पडेगा। गुरु मिलने के बाद यकीन कहनेवाली चीज़ मुख्य से रहना चाहिये। अगर वह यकीन नहीं रहा तो गुरु के पास से हासिल करनेवाली चीज़ कुछ नहीं रहती। जिस व्यक्ति को गुरु पर पूरा ईमान (यकीन) होता है वही सर्व प्राप्त कर सकता हैं। यकीन ही भक्ति हैं। जिसके पास भक्ति नहीं हैं चाहे वह कोई भी मनुष्य क्यों न हो निर्ष्पयोजक ही हैं। हम मानव जनम उठाकर अपनी पूरी अखल को कुछ ही दिन रहनेवाले इस प्रपंच में इस्तेमाल करके मर रहे हैं ना! क्या फायिदा है बतायिये?वास्तव में पहले यह जानना चाहिये कि हमारी अखल को किस पर इस्तेमाल करनी चाहिये फिर उसी पर

इस्तेमाल करने से मानव जनम को सार्थकता प्राप्त होती हैं। वरना पशुओं (जानवरों) में हम में क्या फरख हैं? वे भी काम कर रहे हैं, खा रहे हैं। ऐसा ही हम भी काम कर रहे हैं, खा रहे हैं, ऐसी सूरत में जानवरों के बराबर होजायेंगे। इसलिये उस तरह मानव जनम को बेकार न करते हुये एक प्रत्येकता हासिल करनी हो तो,ऐसा काम करना चाहिये जो किसी प्राणि ने आज तक नहीं किया हो। वही परमात्मा को हासिल करने की साधना। हर एक जन भी साधना करते हुये यह साबित कीजिये कि मानव जनम सब जनमों से उत्तम जनम हैं। तुम्हारे जिंदगियों को ना ना मार्ग से (यानि अलग अलग मार्गों से) परमात्मा के मार्ग के तरफ मोडलीजिये।

चर, अचर प्रकृति

प्रकृति का मतलब आँखों को दिखनेवाली। वह सबकुछ जो स्थावरजंगमरुप हैं प्रकृती ही हैं। कहसकते हैं कि प्रकृति दो प्रकार की है। एक चर प्रकृति हैं, दो अचर प्रकृति हैं। उन्ही को चेतना अचेतना प्रकृति भी कहसकते हैं। अब हम देखते हैं कि चेतना अचेतना प्रकृतियाँ किसतरह तय्यार हुये हैं!

परमात्मा जिसके बारे में न लिखसकते हैं न बोलसकते हैं क्यों कि वह हमारे खयालों को नहीं मिलता। ऐसे परमात्मा से पहले आकाश, हवा, आग, पानि, ज़मीन ये पांच शक्ति निर्मुक्त भाग बाहर आये हैं। बाहर आने के बाद आकाश दो भाग हुयी थी। हवा दो भाग हुयी। आग दो भाग हुयी। पानि दो भाग हुयी। ज़मीन दो भाग हुयी। आकाश दो भाग हुयी थी ना! उसमें का पहला भाग आधा हमें अर्थगोलाकार में ऊपर दिख ही रहा हैं। हवा भी दो हिस्से हुआ ना!

उसमें पहला भाग आधा ज़मीन से शुरु होकर ऊपर थोडे तद तक फैली हुयी हैं। आग्नि भी दो भाग हुयी है ना! उसमें पहला वाला आधा हिस्सा सूरज से शुरु होकर भूमि तक फैली हुयी हैं। पानि भी दो भाग हुयी थि ना! उसमें से पहला आधा हिस्सा भू भाग पर समुद्रों की सूरत में दिख ही रहा है। भूमि के दो हिस्सो में भी पहले आधे हिस्से में ही हम निवास कर रहे हैं। इसतरह आकाश, हवा, अग्नि, पानि, भूमि से प्रपंच बना। उसीको अचर प्रकृति कहते हैं। अब हम यह देखते हैं कि चर प्रकृति कैसे तय्यार हुयी? आकाश, हवा, अग्नि, पानि, भूमि के दूसरा हिस्सा है ना यानि आधे आधे हिस्से हैं ना!वे एक एक पाँच भागो में बटगये (चीरगये)। इसतरह बटकर पूरे पच्चीस हुये।

आकाश का दूसरा आधा हिस्सा .... 5 भागो में .... बटगया

हवे का दूसरा आधा हिस्सा .... 5 भागो में .... बटगया

अग्नि का दूसरा आधा हिस्सा .... 5 भागो में .... बटगया

पानि का दूसरा आधा हिस्सा .... 5 भागो में .... बटगया

भूमि का दूसरा आधा हिस्सा .... 5 भागो में .... बटगया

पूरे 25 भाग। ये 25 भाग एक दूसरे से मिलकर जीवों के शरीर तय्यार हुये। आधा आकाश पाँच भागों में बटगया ना! उसमें का पहला हिस्सा परमात्मा के अंश से मिलकर जीव (जीवात्मा) बना। हवे में के एक भाग से मिलकर मन बना। अग्नि में के एक भाग से मिलकर बुद्धी बनी। पानि में के एक भाग से मिलकर चित्त बना। भूमि में के एक भाग से मिलकर अहम बना। इसतरह पहला आकाश का हिस्सा पाँच दूसरे भागों से मिलकर जीव, मन, बुद्धि, चित्त, अहम

तयार हुये। इन्हीको आकाशतत्व कहते हैं। और अंतः करण भी कहते हैं।

आकाश का पहला भाग 1 + परमात्मा का अंश = जीव

आकाश का पहला भाग 1 + हवे में का 1st भाग = मन

आकाश का पहला भाग 1 + अग्नि में का 1st भाग = बुद्धि

आकाश का पहला भाग 1 + पानि में का 1st भाग = चित्त

आकाश का पहला भाग 1 + भूमि में का 1st भाग = अहम

यह बात अच्छी तरह से याद रखलें कि जीव, मन, बुद्धि, चित्त, अहम कहलानेवाले पांच आकाश के पहले हिस्से से पैदा हुये।

वायु भी पांच भाग हुयी थी ना! उसमें पहलीवाली आकाशतत्व से मिलकर मन तयार हुआ था ना! अब चार भाग बाकी है ना! उसमें का दूसरा हिस्सा परमात्मा के अंश से मिलकर व्यान वायु बना जो हमारे शरीर में हैं। वायु का दूसरा भाग आकाश में के दूसरे भाग से मिलने से समान वायु बना। वायु में का दूसरा भाग अग्नि में के दूसरे भाग से मिलने से उदान वायु बना। हवे में का दूसरा हिस्सा पानि में के दूसरे हिस्से से मिलने से प्राणवायु बना। हवे में का दूसरा हिस्सा भूमि में के दूसरे भाग से मिलने से अपानवायु बना। इन्ही को वायुतत्व भी कहते हैं। और पंचप्राण भी कहते हैं।

हवे का दूसरा भाग + परमात्मा का अंश = व्यानवायु

हवे का दूसरा भाग + आकाश का दूसरा भाग = समानवायु

हवे का दूसरा भाग + अग्नि का दूसरा भाग = उदानवायु

हवे का दूसरा भाग + पानि का दूसरा भाग = प्राणवायु

हवे का दूसरा भाग + भूमि का दूसरा भाग = अपानवायु

यह बात जानलें कि व्यान, समान, उदान, प्राण, अपान वायु ये पांच वायु, हवे के दूसरे भाग से पैदा हुये हैं।

अग्नि भी पांच भाग हुयी हैं ना! उसमें से पहली वाली आकाशतत्व से मिलकर बुद्धि की तरह बदलगयी। दूसरीवाली अग्नि से मिलकर उदान वायु बनगयी। अब अग्नि में तीन हिस्से बचे हैं। उसमें से तीसरा भाग परमात्मा के अंश से मिलकर आँख की तरह तयार हुयी। आकाश में के तीसरे भाग से मिलकर कान तयार हुये। वायु में के तीसरे हिस्से से मिलकर चमडा बना। और पानि में के तीसरे भाग से मिलकर जीब (जबान) बना। इसतरह से अग्नि से तयार हुये चीजों को ज्ञानेंद्रिय कहते हैं। और अग्नि तत्व कहते हैं।

अग्नि में का तीसरा भाग + परमात्मा का अंश = आँख

अग्नि का तीसरा भाग + आकाश का तीसरा भाग = कान

अग्नि का तीसरा भाग + हवे का तीसरा भाग = चमडा

अग्नि का तीसरा भाग + पानि का तीसरा भाग = ज़बान

अग्नि का तीसरा भाग + भूमि का तीसरा भाग = नाक

यह बात याद रखलें कि आँख, कान, चमडा, जबान, नाक कहलानेवाले विषयसेकरणा के भाग पाँच अग्नि के तीसरे भाग से पैदा हुये हैं।

पानि भी पांच हिस्से हुयी थी ना!! उसमें से एक भाग आकाश से मिलकर चित्त की तरह, दूसरी भाग हवे से मिलकर प्राणवायु की तरह, तीसरी भाग अग्नि से मिलकर ज़बान की तरह बनी हैं ना! अब बची हुयी चारवीं भाग परमात्मा अंशा से जुडकर रस (टेस्ट) तयार

हुआ। आकाश में के चारवीं भाग से जुडकर शब्द की तरह, हवे में के चारवीं हिस्से से जुडकर स्पर्श की तरह, अग्नि में के चारवें भाग से मिलकर रुप की तरह, भूमि में के चारवें भाग से जुडकर गंथ (बो) की तरह तयार हुयी। उन्हीको पानि के तत्व कहते हैं।

पानि में का चारवाँ भाग + परमात्मा की अंश = रस (टेस्ट)

पानि में का चारवाँ भाग + आकाश का चारवाँ भाग = शब्द

पानि में का चारवाँ भाग + हवे का चारवाँ भाग = स्पर्श

पानि में का चारवाँ भाग + अग्नि का चारवाँ भाग = रुप

पानि में का चारवाँ भाग + भूमि का चारवाँ भाग = गंथ (बो)

यह बात नहीं भूलना चाहिये कि रस, शब्द, स्पर्श, रुप, बो कहलानेवाले विषयकूडलियाँ पांच पानि के चारवीं भाग से पैदा हुये

भूमि भी पांच भाग हुयी है ना! उसमें से एक भाग आकाश से मिलकर अहमकार, दूसरा भाग हवे से मिलकर अपानवायु, तीसरा भाग अग्नि से मिलकर नाक, चारवाँ हिस्सा पानि से मिलकर गंध तयार हुये थे ना! बचाहुआ पांचावा भाग परमात्मा के अंश से मिलकर गुद, आकाश के पांचवे हिस्से से मिलकर मू, वायु के पांचवे हिस्से से मिलकर हाथें, अग्नि पांचवे हिस्से से मिलकर पैर, पानी के पांचवे हिस्से से मिलकर लिंग तयार हुये। उन्हीको कर्मेंद्रिय कहते हैं।

भूमि का पाँचवा भाग + परमात्मा की अंश = गुद

भूमि का पाँचवा भाग + आकाश का पांचवा भाग = मुंह

भूमि का पाँचवा भाग + हवे का पांचवा भाग = हाथ

भूमि का पाँचवा भाग + अग्नि का पांचवा भाग = पैर

भूमि का पाँचवा भाग + पानी का पांचवा भाग = लिंग

यह याद रखलेना चाहिये कि गुद, मुंह, हाथ, पैर, स्त्रीयों केलिये योनि, पुरुषों के लिये है तो लिंग भूमि के पाँचवे हिस्से से तय्यार हुये।

इसतरह आधे भागो में बचे हुये पांच शक्तियाँ पूरे २५ भाग होकर, एक दूसरे के साथ मिलकर प्रपंच में जीवरुप शरीरें बनकर संचार करना शुरुकिये। उसीको चरप्रकृति, चेतन प्रकृती कहते हैं। इसतरह अचेतनवाली प्रपंच, चेतनवाली जीवशरीरें मिलकर प्रकृति कहलायी थी। इसीलिये प्रकृति को डिवैड करके कहसकते हैं कि एक चेतना प्रकृति है तो, दूसरी अचेतना हैं। १) चेतन यानि सर्वप्राणियों के पूरे शरीरें हैं। उसीको चर प्रकृति, जगती कहते हैं। २) अचेतना यानि आकाश, हवा, अग्नि, पानि, भूमि है। इन्हीको अचर कहते हैं। अचेतन के आकाश, हवा, अग्नि, पानि, भूमि से प्रपंच बनी। चेतन के शरीर रखनेवाले तमाम प्राणियाँ प्रपंच में भरगये हैं यानि अब मानव शरीर को पहने हुये हम भी प्रकृति में एक भाग ही हैं।

भगवद्गीता में विज्ञानयोग में परमात्मा कह रहा हैं कि **प्राणियों के मौत और पैदाइशों को ये तो चेतना अचेतना प्रकृतियाँ ही करवाते रहते हैं, मैं सिर्फ कारणभूत हूँ।** और ज्ञानि मालूम करता हैं कि हर गुण भी ये प्रकृतियों से ही पैदा होरहे हैं। प्रकृति मेरे आधीन में ही हैं। प्राणियों के पाप पुण्यों के प्रकार मेरी प्रकृती ही उन्हे कष्टसुखों को,लाभनष्टों को देती रहती हैं। मैं तो सिर्फ सबकेलिये साक्षिभूत होकर देखता रहता हूँ। इसतरह रहनेवाले मुझको मालूम करना सिर्फ योगियों को ही मुमकिन हैं। मैं ऊपर आकाश से शुरु होकर

भूमि तक सर्वदिशाओं में फैलकर, अचेतन प्रकृति में ऐसा भरकर हूँ कि सुई रखने केलिये भी जगह नहीं होगा। उसीतरह चेतना प्रकृति यानि सब शरीरों में पैरों से शुरु होकर शिरस तक फैलकर हूँ। इसीलिये मुझे मालूम हुये बगैर चर अचर प्रकृति में कुछ नहीं होता। ये चराचर प्रपंच में रात में हो, सुबह हो किसी भी समय में हो, किसी भी जगह में हो, जो हो चुका हैं, जो होरहा हैं,जो होनेवाला हैं वह सब मैं जानता हूँ। इसीलिये विज्ञानयोग में मैं ने कहा कि **मैं वह सबकुछ जानता हुँ जो कुछ भूतजालों के साथ इस जगत में हो चुका हैं,होनेवाले वृत्तांत, लेकिन इसतरह रहनेवाले मुझको कोई नहीं जानता** और विज्ञान योग में ही **सर्वभूतों की पैदाइश और मौत ये चेतना अचेतना प्रकृतियाँ ही करवाते रहते हैं, मैं सिर्फ हेतु (कारण) हूँ अखिल जगत की पैदाइश और मौत का।** अब किसी को भी हो यह सवाल पैदा होसकता हैं कि आखिर चर, अचर प्रकृति किसतरह प्रलयसंभव करवा रही हैं। अब उसके बारे में तफसील के साथ बयान करलेते हैं।

यह विषय को लेकर ईश्वर इसतरह कह रहा हैं कि **मेरी अचेतना (अचर) प्रकृति पांच भागो में है ना! उसमें से सिर्फ एक हवा अगर जोर से फूट पडा तो कोई भी चीज़ बरदाश नहीं करसकती। बडे बडे पहाडों को तक ऊपर उठाकर गोल घुमाकर कुछ मीलों के दूर पर फेंकदे सकती हैं। बडे पेडों को सहित मज़बूत जडों के साथ उखाड के खींच कर फेंक दे सकती हैं। वह हवा जो इतनी ताकतवार है और मेरे आधीन में हैं वह हवा घरों को,वृक्षों को, भूमि पर के वस्तुओं को उधर इधर करसकती हैं। प्रकृति के ताखतों में से सिर्फ एक हवा अगर विजृंभन किया तो प्रपंच में कोई भी प्राणि जिंदा नहीं बचती। अगर अग्नि की बात करें तो ऐसी कोई चीज़ ही नहीं हैं जो**

उसके काबु में नहीं आति हो। प्रपंच में पत्थरों को, ऐरन को, पेडों को, मनुष्यों को, सर्व प्राणियों को जलाकर राख (भस्म) करदेती हैं। बाद में अगर पानि के बारे में कहें तो अगर वह भडक उठा तो सर्व प्रपंचों को डुबा देसकती है सबकुछ उसमें लय होजाना ही पडेगा। उसी तरह अगर भूमि को गुस्सा आगया तो ऊपर का नीचे, नीचे का ऊपर कर के सबको भूसमाधि करदेती हैं। इसतरह पांच ताकतें जो मेरी प्रकृति हैं अगर पांच मिलकर एक ही बार फूट पडे तो और कुछ बोलने की ज़रुरत नहीं हैं शायद। इस प्रकृति में ही चेतन रुप में बसीहुयी ये तमाम जीवरुपवाली प्रपंच मेरी प्रकृति के आधीन में हैं। इसतरह कही हुयी ईश्वर की बात को देखकर लोग कहरहे हैं कि! जो लोग बीमारी आकर मरजाते हैं उनलोगों का तो प्रकृति ने कुछ नहीं बिगाडाना? उनलोगों से परमात्मा यह कहरहा हैं कि **माया से ढके गये तुमलोग मुझे, मेरी महत्य को न जानते हुये ऐसा कह रहे हैं मगर और कुछ नहीं उसका रहस्य बता रहा हूँ, सावधान से सुनिये** कहा हैं।

सर्व प्राणियों के शरीरें पंचभूतों से ही निर्णाम हुये हैं ना। जो कुछ शरीरों के रूप में हैं उसीको ही हम चेतना प्रकृति कह रहे हैं। इस प्रकृती में से एक हवा भडक उठा तो खासी, चींके शुरु होजाते हैं। उसीको कहते हैं कि सरदी हुयी हैं। क्या जीव इस सरदी के द्वारा दु:ख नही उठा रहे हैं? और आस्तमा बीमारी शुरु हो रही हैं। क्या इसके द्वारा जीव तकलीफ नहीं उठा रहे हैं? अगर अपानवायु ज्यादा होगया तो पेट पुगार दर्द विरोचन (लूज मोशन्स) आ रहे हैं। क्या इसके द्वारा परेशानि नहीं उठा रहे हैं? धनुंजयवायु जिसे उपवायु कहते हैं अगर वह व्यतिरिक्त हुआ तो गर्भ में का बच्चा बाहर ही नहीं आयेगा क्या इसके द्वारा जीव तकलीफ नहीं पड रहे हैं? अगर व्यान,

समान वायु व्यतिरिक्त हुये तो शरीर अवयव बराबर ताकत को ही खो बैठते हैं। सिर्फ एक हवे से जीव दुख को भुगतकर मरने की हालत बनरही हैं। उसीतरह अगर शरीर में का पानि व्यतिरेक होगयी तो पूरे शरीर भर पानि भरकर पैर हाथ फुलजाते हैं। उसके द्वारा जीव को बहुत ही दुख को भुगतना पडता हैं और मूत्र की बीमारी भी संभव होती हैं। मुंह में गीलापन कम होजाता हैं दिमाग में गीलापन कम होजाने से नींद कम होजाता हैं, हाथ पैर वजन होकर स्तब्द हो जाकर स्पर्शा खोजाते हैं। नजर कम होजाता हैं, शब्द सुनाई नहीं देता हैं। नाक बो को सुंग नहीं पायेंगे। ज़बान टेस्ट मालूम नहीं करसकेगा। इसतरह अगर कुछ भी कम होगया तो जीव को परेशानि उठाना पडेगा और मरना पड रहा हैं। चेतना प्रकृति में की एक भाग भूमि भडक उठकर हिलगयी तो, पैर हाथ गिरजाना (यानि बिना शक्ति के हिले बगैर रहजाना), दर्द आना हो संभव होता हैं। फ़ालिस शुरु होती हैं, योनी संबंदित बीमार आजाते हैं। दांत के दर्द आते हैं और दौरा पडता है यानि फिट्स आसकता हैं। इसतरह भूमि परेशान करके आखिर में जान से मारडाल रही हैं। चेतना प्रकृति में की आकाश अगर व्यतिरेक हुयी तो नाक के रंद्र बंद होजाकर सांस चलना मुशकिल होजायेगा। नाक के नथ पूरे तरीके से बंद होगये तो सांस रोकाजाता हैं। गले में के मज़िल्स (Muscle) सुजके कंठरंद्र बंदहोकर खाना खानेकेलिये, पानि पीनेकेलिये भी मुशकिल होजायेगा। मूत्र नाल भी बंद होजाकर मूत्र करने केलिये भी बहुत तकलीफ होगी। मन की स्थिरता न होने से मनोरोग पैदा होता हैं। और मेंटल भी संभव होसकता हैं। इसतरह अनेक शरीर संबंध के बीमारियाँ शुरु होकर जीव को परेशान करके आख़िर में उसीके वजह से मरेजैसा भी कर रहे हैं। और भी चेतना प्रकृति अग्नि भडक उठी तो कई प्रकार के बीमारियाँ शुरु होकर जीव को मारडाल रहे हैं।

इसतरह चेतना, अचेतना प्रकृतियाँ जीव को मृत्यू के गड्डे में डालरहे हैं। और प्रकृति ही एक भाग से दूसरा भाग जुडकर जीवों को जनम दे रही हैं। इसीलिये मैं ने कहा था कि जीवों के प्रलय और संभवों का कारण मेरी प्रकृति हैं।

चेतना,अचेतना प्रकृतियाँ ही सर्व प्राणियों को उनके पाप पुण्यों के अनुसार मौत और पैदाइशों को दे रहे हैं। प्रकृती की अध्यक्षता मैं कर रहा हूँ। इसीलिये **जगत** चक्र के जैसा घूम रहा है। मैं किसी के पाप को हो, पुण्य को हो नहीं हटाता हूँ या नहीं निकालता हूँ। मेरेलिये प्रपंच में सब समान ही हैं, लेकिन सिर्फ मेरे भक्त मेरेलिये परम प्रिय हैं। सिर्फ उनके पाप, पुण्य तो मुझजे दियेजानेवाली ज्ञान की अग्नि से जलकर राख होकर, (उनके कर्म) ऐसे बेकार होजारहे हैं कि उन्हे भुगतना ना पडे। प्रपंच में जो मेरे भक्त हैं वे मेरेलिये बेहद प्यारे हैं। वहीं मेरे नित्य रिश्तेदार हैं। इसीलिये मैं ऐसा समझता हूँ कि मैं ही वे हैं और वे ही मैं हूँ। मैं ही ऐसा कर रहा हूँ कि उनको मेरा ज्ञान संप्राप्त हो। इससे उनके कर्म यानि पाप पुण्य दो भी निश्शेष से नाश होकर मुझ में ऐक्य हो रहे हैं। इसीलिये मैं ने मेरे गीता शास्त्र में कहा कि अय अर्जुन सिर्फ मुझ पर ही यकीन रखो,तुझे सर्वपापों से मुक्त करूँगा। अर्जुन को ही नहीं चाहे वह कोई भी इनसान हो जैसे मैं ने कहा वैसे अगर सिर्फ मुझ पर ही विश्वास रखलियें तो बेशक उन्हे ज़रुर माया कहलानेवाली समुद्र से बाहर निकालदूँगा। पूरे प्रपंच में मैं ही भरा हुआ हूँ। मुझे मालूम हुये बगैर प्रपंच में कुछ नहीं होता। सबको चलानेवाला मैं ही हूँ। जो व्यक्ति यह बात जान जायेगा कि सब प्राणियों का आत्मा मैं ही हूँ और हर क्षण मुझे ही अपने मन में भूले बिना रहता हैं उसतरह के भक्त को मैं बहुत ही खरीब हूँ। मेरे भक्त मेरी प्रकृति के अतीत होसकते हैं। मेरे

भक्तों को मेरी प्रकृति कुछ नहीं करसकती। जो अग्नि मेरी प्रकृति में हैं वह नहीं जलासकती, मेरा भक्त नहीं जलेगा। जो पानि मेरी प्रकृति में है वह पानि भिगा नहीं सकती, मेरा भक्त नहीं भीगता उसीतरह हवे को उड नहीं जायेगा, जमीन कुचल नहीं सकती (यानि टुकडे टुकडे नहीं करसकती), वह सूख नहीं जायेगा,उसे भीगा नहीं करसकते, वह नहीं जलेगा, उसे काट नहीं सकते, सबसे अतीत होकर मेरे जैसा ही मेरा भक्त बदलजासकता हैं। वही मैं होकर, मैं ही वह बनूँगा यही मोक्ष हैं। यही जीवब्रह्म ऐक्यसंधान हैं। इसतरह बताया हुआ ईश्वर और भी कह रहा हैं कि!

अय जीव! तू सिर्फ मुझ पर ही भरोसा रखकर,सर्व वक्तों में,सर्वअवस्थाओं में भी मेरी निराकार स्वरुप को ही याद करते रहो यानि योग में सक्रम (सीधे तरीके से) रहो। कुछ वक्त के बाद तू मेरी तरह बदलसकते हो। तू मैं होजाने के बाद जिस प्रकृति केलिये मैं निर्मुक्तधाता हूँ वह प्रकृति मुझे कुछ नहीं करसकती। तब तू मुझमें ऐक्य होकर हैं इसलिये प्रकृति तुझे कुछ नहीं करसकती कहकर भगवान ने कहा हैं। इसलिये सर्वजन प्रकृति में फसकर परेशान न होते हुये उससे छुटकारा पानेकेलिये आज से ज्ञान कहलानेवाली अग्नि को कमालेने की कोशीष कीजिये।

मोक्ष

हर मानव को यह ज़रुर जानना होगा कि आख़िर यह मोक्ष क्या चीज हैं। वह मानव जिसने मोक्ष के बारे में मालूम करने की कोशीष तक नहीं करता वह आत्मा के बारे में भी मालूम करने की कोशीष बिलकुल भी नहीं करेगा। अगर कोई भी उसका ज़िकर करें

तो भी इसतरह कहेगा कि उससे हमें क्या काम हैं? हमें क्या फायिदा मिलेगा? मोक्ष के बारे में मालूम न करनेवाली मनुष्य की ज़िदगी उस फूल के बराबर हैं जिसमें खुशबू नहीं रहती। वह कहते हैं ना कि क्या चिन्टी के घर में सुफेद दीमक पैदा नहीं होती और नहीं मरती!!! (यानि वह दीमक (सुफेद चीन्टी) पैदा हुयें या मरें तो भी किसी को भी कुछ फिकर नहीं रहती और किसीको कुछ फरख नहीं पडता) उसीतरह मोक्ष का मतलब (अर्थ) को मालूम न करनेवाला इनसान भी पैदा हो या मरे दो भी एक ही बात हैं (यानि वह जिंदा रहने पर भी मुरदे के बराबर ही हैं)। मोक्ष के बारे में मालूम न करनेवाली उनकी वह भक्ति, ऐसी सफ़र (प्रयाण) जैसी रहती हैं जिसका कोई गम्य ही नहीं है। कुछ लोगों को मोक्ष के बारे में बताकर,अगर मोक्ष तक पहुँचे तो फिर से जनम लेने की ज़रुरत नहीं है कहने पर,उसकी अहमियत (वाल्यू) न जाननेवाले अज्ञानी लोग इसतरह कह रहे हैं कि वहाँ जाकर (बिना कुछ काम किये) खालि रहेंगे तो टैम पास कैसे होगा?इससे तो बहतर है कि मरकर पैदाहुये तो अच्छा टैम पास होजायेगा। और कहरहे हैं कि वैसे भी (बिना कुछ काम किये) खालि रहना क्या अच्छा लगेगा, भूलोक में पैदा होकर सब सुखों को पाये तो ही अच्छा रहता है ना!! ज्ञानियों को ही धमकी देते हुये इसतरह बोल रहे हैं कि तुम लोगों को मेंटल आकर मोक्ष मोक्ष कह रहे हैं,वह हमारेलिये नहीं हैं। जिनलोगों को यह तक नहीं मालूम कि मोक्ष क्या है! उनसे अगर हम परमात्मा के बारे में कहेंगे तो उनलोगों के लिये ऐसा रहेगा कि बिना हवा वाले कमरे में डालकर बंदकरदिया हो, इसलिये वे लोग नहीं सुनते इतना ही नहीं, वहाँ से कब कब बाहर पडना हैं सोचकर हटजाते हैं। जिनको मोक्ष के बारे में मालूम करने की दिलचस्पि नहीं है वे लोग परमात्मा के बारे में मालूम करना पसंद

नहीं करेंगे। और परमात्मा के विषयों के बारे में बात करनेवालों को देख कर नफरत करते हैं। इसलिये हर मानव पहले मोक्ष के बारे में मालूम करनी चाहिये।

मोक्ष के बारे में थोडा खुले तरीके से बयान करके देखलें तो जैसे अज्ञानी लोग समझते हैं वैसा वह एक लोक नहीं हैं। कुछ लोग समझते हैं कि मोक्ष कहीं और जगह पर हैं। वह कहीं और नहीं बल्कि सबजगह मौजूद हैं। मोक्ष पाया हुआ जीव वक्त की तरह ही बदलजा रहा हैं। जब वह खुद वक्त बनजाने के बाद टैमपास कैसे होगा की समस्या कहाँ से रहेगी? मोक्ष पाया हुआ जीव हर जगह (अणु अणु में) बसजाकर, प्रपंच में जो कष्ट हैं उनको पाये बगैर, सबकेलिये साक्षि की तरह रहरहा हैं इसलिये यह समस्या ही नहीं रहता कि मोक्ष पाने के बाद वहाँ जाकर हमें क्या करनी चाहिये। मोक्ष पाया हुआ जीव प्रकृति के अंदर बाहर तमाम प्रपंच में मौजूद हैं, इसलिये प्रकृति कुछ भी नहीं करसकती। मामूली इनसान प्रकृति के अंदर ही रहने की वजह से उनको प्रकृति नाश करसकती हैं। मोक्ष पाया हुआ जीव को अग्नि से जलने की समस्या भी बिलकुल नहीं रहेगी क्यों कि अग्नि भी वह खुद ही है। जो व्यक्ति मोक्ष नहीं पाया अग्नि वह खुद न होने की वजह से वह अग्नि से जलेगा। मोक्ष पाया हुआ जीव गुणों से अतीत हैं, वे उसको कुछ नहीं करसकते। मामूली इनसान गुणों से जुडा हुआ होता हैं। गुण मानव को सताकर संात घुट पानी पिलाते हैं। मोक्ष को पाया हुआ जीव नज़र न आते हुये इसतरह मौजूद है कि उसे पहचान नहीं सकते कि वह फलाना जगह मौजूद हैं। मामूलि मानव को पहचान सकते हैं। मोक्ष पाया हुआ जीव प्रलय में पूरा प्रपंच नाश होजाने पर भी खुद नाश हुये बगैर रहता हैं। मोक्ष पाया हुआ जीव प्रपंच में सब शरीरों में अंदर बाहर रहता हैं। जो मानव मोक्ष

नहीं पाये वे शरीर के अंदर ही रहते हैं। मोक्ष पाया हुआ जीव सब जगहों को देखते रहता हैं। जिसने मोक्ष नहीं पाया वह ऐसा नहीं देखसकता। मोक्ष को पाया हुआ व्यक्ति सब जगह रहता हैं उसे एक स्थल से दूसरे स्थल को जानेकी ज़रुरत बिलकुल नहीं हैं। जो व्यक्ति मोक्ष को नहीं पाता वह व्ययप्रयास (खर्चा और महनत से) एक जगह से दूसरे जगह को जाना पडेगा। मोक्ष पाया हुआ व्यक्ति आग को नहीं जलता,पानि को नहीं भीगता, हवे को उड नहीं जायेगा इसलिये वह नहीं डरता। जो व्यक्ति मोक्ष को नहीं पाया आग को, हवे को, पानी को उसे हमेशा डरना पडता हैं। मोक्ष पाये हुये जीव को आहार की ज़रुरत नहीं हैं। जिसने उसको (मोक्ष को)नहीं पाया उसकेलिये हमेशा आहार की ज़रुरत हैं। मोक्ष पाया हुआ व्यक्ति शश्वत से ऐसे सुख पाते हुये सुकून से रहेगा कि उस हालत को बातों में बयान नहीं करसकते। जिसने उसको नहीं पाया वह पल भर के सुखों को भुगतते हुये हमेशा असंतोषी रहता हैं। जिसने मोक्ष को पाया उसे जरासी भी परेशानी उठाने की ज़रुरत नहीं हैं। जिसने उसको नहीं पाया कई परेशानियों को भुगतनी पडती हैं। मोक्ष पाये हुये व्यक्ति से बडा कोई नहीं रहता जिस मानव ने मोक्ष को नहीं पाया उसकेलिये ईश्वर कहनेवाला एक बडा रहता हैं। मोक्ष पाया हुआ व्यक्ति हमेशा एक ही तरह रह रहा हैं। जिसने नहीं पाया वह अनेक जनमों में बाल्य, यव्वन, कौमार, वृद्धप्य (बुढापा) कहनेवाले स्थितियों को पा रहा हैं। इसतरह बताते गये तो कई प्रकार से मोक्ष की वाल्यू हैं। उसके बारे में पूरा कहनेकेलिये किसीकी बस की बात नहीं। यह सब जानने के बाद अब आप सोचकर आप को खुद फैसला करलेना पडेगा कि जिस हालत में अब हम हैं क्या वह हालत अच्छी हैं? या मोक्ष की हालत बहतर हैं?

जिन्हे मोक्ष की अहमियत नहीं मालूम वे कह रहे हैं कि मोक्ष से हमें क्या काम हैं? लेकिन उन्हे यह बात नहीं मालूम कि जिस हालत को अब हम भुगत रहे हैं वह हालत मोक्ष के सामने उस छोटे पत्तर के बराबर है जो पहाड के सामने हैं। जिनलोगों को मोक्ष की अहमियत नहीं मालूम वे परमात्मा के बारे में मालूम करने की कोशीष नहीं करते। इसलिये पहले हर एक इनसान को मोक्ष के बारे में जानना ज़रुरी हैं। मोक्ष के बारे में मालूम करने के बाद उसे पाने की मार्ग की तलाश करनी चाहिये। मोक्ष को पाने केलिये ज्ञान की जरुरत हैं। ज्ञान पाने केलिये गुरु की जरुरत हैं। गुरु मिलजाने के बाद उनके द्वारा मोक्ष को पाने का मौका हैं।

सिर्फ एक गुरु ही मोक्ष साम्राज्य पानेकेलिये द्वार है। इसलिये गुरु को आश्रय करके उनके द्वारा ज्ञान, योग पाकर जनम राहित्यवाली मोक्ष को कमालीजिये, यह बात याद रखिये कि 60 या 70साल की वक्त जीनेवाले इस जनम में 20 या 30 साल प्रपंच के पढ़ायियाँ पढ़कर, बडे बडे डिग्रीस कमालेकर, दूसरों से बडे लोग कहलवाने पर भी ये सब शान, शौकत सिर्फ मरे तक ही रहेंगे। डाक्टरों की तरह, इंजनीरों की तरह डिग्री पाने पर भी उसका प्रयोजन सिर्फ थोडे वक्त तक ही रहता हैं। कितना भी पैसा कमालो सिर्फ थोडा वक्त ही हम उस पैसे के साथ रहते हैं। प्रपंच में एक एक जनम थोडा थोडा वक्त ही रहता हैं। इसलिये यह जनम भी थोडा वक्त ही रहेगा। अंधेरे में रस्सी को देखकर सांप की तरह भ्रम किये जैसा, अज्ञान में अशाश्वित को शाश्वित समझकर हम बहुत बडी भूल कर रहे हैं। उस गलती की अहसास करके बिना शाश्वितवाली इस ज़िंदगी को निर्लक्ष्य करके शाश्वितवाली मोक्ष केलिये कोशीष करनी चाहिये। हम इनसानों को बडी अखल हैं। उसका इस्तेमाल करके इससे पहले

जिन्होने मोक्ष के लिये कोशीष की उनके बारे में सोचें तो,यह मालूम होजायेगा कि हम से भी ज्यादा अखलवाले ही उसकेलिये कोशीष की हैं। मोक्ष कहते हुये धोका देनेवाले चोर भक्त प्रपंच में रहसकते हैं। उन्हे देखकर ऐसा मत समझिये कि मोक्ष कहलानेवाली चीज़ बुरी हैं, जिन लोगों ने उसकेलिये कोशीष की वे सब बुरे ही हैं, एक बार आपकी नज़र को मोक्ष के सारांश की तरफ मोडिये। यह भी जानलीजिये कि वह जिंदगी बेकार हैं जिसमें मोक्ष के बारे में मालूम नहीं किया हो। और यह भी जानलीजिये कि वह जनम सार्थक है जिसमें मोक्ष के बारे में मालूम करलिया हो।

यमलोक - स्वर्गलोक

जीव भूमि पर पैदा होकर नित्य कर्मों को करही रहे हैं। जब से पैदा हुये तबसे लेकर मरेतक जीवन में सुखदुखों को भुगतही रहे हैं। जीवनकाल में अपने स्वार्थकेलिये जो काम करनी चाहिये, जो काम नहीं करनी चाहिये उन सब कामों को करके पुण्य और पाप को कमाले रहे हैं। जो काम कर रहे हैं उनकामों की वजह से आँखों को नज़र न आतेहुये आनेवाले पाप पुण्य का डर बिलकुल भी नहीं रख रहे हैं। यह बात जानते हुये भी कि करनेवाले कामों में पाप आयेगा वे लोग ऐसा समझले रहे हैं कि जिसदिन हमें नरक को लेकर जायेंगे तबना हमें सज़ा भुगतनी होगी तब ही देखलेंगे अभी से उसके बारे में डरने की क्या ज़रुरत है । पता नहीं वह नरक कब आयेगा उसकेलिये डरके आज के दिन हमारे लिये जो काम अनुकूल हैं उन कामों को हम क्यों छोडदें? जिस दिन नरक आयेगा जब उसके बारे में सोचेंगे। यह जानते हैं कि पाप पुण्य हैं, यह भी जानते हैं कि उनको ज़रुर

किसी भी हालत में भुगतना ही पडेगा, फिर भी डरे बिना काम कर रहे हैं मतलब यह समझमें आ रहा हैं कि उन्होने पाप पुण्य की निजस्तिथि (असलियत को) मालूम नहीं किये।

कर्म के कारण से ही जीव भूमि पर पैदा हो रहा हैं। कर्म यानि पाप पुण्यों का मिश्रित हैं। पाप के वजह से नरक, पुण्य के वजह से सुख संभव हो रहे हैं। कुछ लोगों से पूछने पर कह रहे हैं कि नरक यमलोक में हैं, स्वर्ग देवेंद्र लोक में हैं। और इसतरह कह रहे हैं कि जिन्होने पाप किया उनको यमलोक में यम, यमकिंकर कई तकलीफें पहुँचारहे हैं,वहाँ पूरे तकलीफें भुगतने के बाद अगर पुण्य रहा तो स्वर्गलोक को जाकर सुख को भुगत रहे हैं। **गीता में सांख्यायोग में जीव शरीर को छोडते ही फौरन माँ के गर्भ में पूरे तरीके से तय्यार होकर प्रसवकिया गया (जना गया) दूसरे शिशु शरीर में जाकर घुस रहा हैं। वह इसतरह हैं कि जैसे पुराने वस्त्र को छोडकर नये वस्त्र को पहनते हैं वैसा** इसतरह भगवान ने कहा तो हम लोग अज्ञान से ऐसा समझ रहे हैं कि जीव उस यमलोग को जा रहा है जो दूसरे जगह पर हैं। जो लोग सच जानते हैं अगर उन्होने **जैसे तुमलोग समझरहे हो ऐसा कुछ भी नहीं होरहा हैं** कहने पर कुछ लोग न सुनते हुये, इसतरह बहस कर रहे हैं कि अगर जीव यमलोक को जाकर नरक का अनुभव नहीं कर रहा हैं तो यमधर्मराज किधर जायेगा? यमकिंकर किधर जायेंगे? तो फिर यमलोक हैं क्यों? अगर इनकी बात के प्रकार देखेंगे तो गीता में जो वाक्य कहा वह झूठ होजायेगा। अच्छा ठीक हैं, अगर गीता के बराबर देखेंगे तो इनकी बहस झूठ होजाती हैं। दो भी मजबूत बहसें ही हैं लेकिन परमात्मा की बहस कभी भी झूठ नहीं होती। मानवों की बहस भी झठ नहीं हैं। लेकिन यहाँ थोडा ज्ञान मालूम करने की ज़रुरत हैं।

मानव पैदा होना ही देरी वे सुखदुखों को भुगतरहे हैं। कुछ लोग ज़्यादा सुख को अनुभव कर रहे हैं। कुछ लोग ज़्यादा दुख को अनुभव कर रहे हैं। कुछ भी काम न करते हुये बेकार में बैठा हुआ व्यक्ति अष्टैश्वर्यों को भुगत रहा हैं यानि वह कुछ काम न करते हुये दिन भर खालि रहने पर भी उसके पास इतना पैसा होता हैं कि वह जिंदगी भर खाकर खर्च करने पर भी खत्म नहीं होता। एक व्यक्ति दिन भर काम करके महनत उठाने के बावजूद भी उसे पेट भर खाना नहीं मिल रहा हैं। कोई भी यह नहीं सोच रहा हैं कि जब परमात्मा की अंश सबमें समान है तो कुछ लोगों को कष्ट क्यों संभव हो रहे हैं? लोग ऐसा समझरहे हैं कि पैसेवाला सुख पा रहा हैं, जिसके पास पैसा नहीं है (गरीब) परेशानि उठा रहा हैं। लेकिन उन सुखदुखों का मूलकारण पाप पुण्य है लेकिन उनके तरफ ज़रा भी खयाल नहीं कर सके। खुद कष्ट उठाते हुये दूसरों के कष्टों को देखते हुये भी, यह तक नहीं सोच रहे हैं कि ये कष्ट कहाँ से आ रहे हैं? (और मुझे ही क्यों आ रहे हैं?) वह यह मालूम नहीं करसका कि ये सारे सुखदुख हमारे पिछले जनम में हमने खुद कमालियेहुये पाप पुण्यों का फलित ही हैं! जो लोग जानते हैं उनके कहने के बाद भी उस बात पर यक़ीन नहीं करपा रहे हैं। चाहे कोई भी यक़ीन करें या न करें पूर्वजनम में किये हुये पाप पुण्य ही इस जनम में खुद को मालूम हुये बगैर ही मानव भुगत रहा हैं। वह इसतरह है कि एक उद्योगी (नौकरी करनेवाला व्यक्ति) एक महीना पूरा काम करने पर उसके फलित में महीने के आखिर में उसे सालरी (तेलुगु जबान में सालरी को **जीतमु** कहते हैं) आति हैं। वह जीतमु यानि पिछले महीने में जो काम किया उस काम का फलित दूसरे महीने भर के नित्य काम आनेवाले ज़रुरी चीज़ों के लिये विनियोग करते हुये अनुभव

करते हैं या भुगतते हैं। उसीतरह एक कूलिवाला पूरा दिन काम करने पर उसका फलित दूरसे दिन अनुभव कर रहा हैं। ऐसा ही किसान एक संवत्सर पूरा महनत उठाकर खेती करके फ़सल काटें तो उस फ़सल को दूसरे संवत्सर भुगत रहा हैं। बिलकुल उसी तरह मानव एक जनम में उसने जो पाप पुण्यों को कमालिया था उन पाप पुण्यों के फलित को दूसरे जनम में, दूसरे जनम में कमलिये हुये पाप पुण्यों को तीसरे जनम में अनुभव कर रहा हैं। इसलिये जैसे श्रीकृष्ण परमात्मा ने कहा वैसे जीव शरीर को छोडते ही फौरन दूसरे शरीर को पहन रहा हैं। लेकिन वह व्यक्ति यमलोक को नहीं गया। इसीलिये जीव पिछले जनम में किये हुये पाप पुण्यों को के प्रकार भूमि पर सुख दुखों को भुगत रहा हैं। एक जीव पूरे बुरे काम नहीं कर रहा है। ऐसा ही सब अच्छे काम भी नहीं कर रहा है। अच्छे कामों में पुण्य,बुरे कामों में पाप किसी को मालूम हुये बगैर ही संभव हो रहे हैं। इसीलिये चाहे वह कौनसा भी जीव क्यों न हो वह पाप पुण्यों का मिश्रित होकर हैं। जीव अपनी जीवन काल में ज़्यादा अच्छे काम किये हो तो पुण्य ज़्यादा मिला होगा। वरना जीवन काल में ज़्यादा बुरे काम किये हो तो पाप ज़्यादा संभव हुआ होगा। इसीलिये एक जीव ज़्यादा सुख अनुभव करना, एक जीव ज़्यादा दुख अनुभव करना ज़मीन पर होरहा हैं।

तो फिर यमधर्मराज कहाँ हैं? यमकिंकर कहाँ हैं? यमलोक कहाँ हैं? इन सवालों का जवाब यह है कि! गीता शास्त्र में परमात्मा ने कहा कि **दंडनाधिकारियों में मैं यमराज हूँ।** इसलिये यह मालूम हो रहा है कि सब शरीरो में रहनेवाला आत्मा ही यमधर्मराज हैं,आत्मा से प्रेरित होकर एक जीव को परेशान करने के सब रुप (हालातें) यमकिंकर हैं। इसीलिये बडों ने कहा कि **नाना रुपेन काल**

किंकर :- और यमलोक का मतलब वह जगह है जहाँ जीव कष्ट उठाता हैं या परेशान होता हैं। इसलिये यह मालूम होरहा हैं कि भूलोक ही यमलोक हैं। कुछ लोगों को यह शक आसकता हैं कि पाप के कारण जो कष्ट आरहे हैं उन्हे यानि वह तकलीफ हमें कौन दे रहा है यमधर्मराज? या यमकिंकर?। इसका जवाब यह है कि! यह मालूम हो रहा हैं कि वे तमाम तकलीफें जो अपने शरीर के ज़रिये आ रहे हैं उन्हे यमधर्मराज ही डाल रहा हैं। इसके अलावा अपने से दूसरे रुपों के द्वारा आनेवाला हर परेशानि यमकिंकरों के वजह से ही आरहे हैं। हमारे शरीरो में हर हमेशा आत्मा हैं, हेना! आत्मा को मालूम हुये बगैर कुछ नहीं करसकते, इसलिये सर्व कामों के लिये आत्मा साक्षि की तरह रह रही हैं। शरीर में रहनेवाली आत्मा ही नवग्रहों के ज़रिये पाप पुण्यों को समझकर कर्मचक्र में रखकर दूसरे जनम में भुगते जैसा कर रही हैं।

हम पाप पुण्यों का अनुभव करते हुये भी, माया की वजह से उसको समझ नहीं पा रहे हैं। माया ही ऐसा कर रही है कि हमें पाप पुण्यों की निजस्तिथि (असलियत) मालूम न हो। जिसतरह अंधा हाथि के पैर को पकडकर खंबा समझकर हाथि को नहीं पहचानता उसीतरह जिन लोगों को माया के अंधेपन से आँखे नहीं दिखते वे इसतरह भ्रम कर रहे हैं कि!

माया को समझने केलिये एक मिसाल देखते हैं, मानलीजि ये कि हमारे थैले को (यानि वज़न वाली एक थैली को) हम खुद ढो रहे हैं। लेकिन हम ऐसा समझरहे हैं कि मेरे थैले को तो मैं खुद ढो रहा हूँ, मुझ से तो कोई ढुलवा नहीं रहा है, ऐसा समझने को ही माया कहते हैं । हमारे थैले को हम ही ढो रहे हैं लेकिन उसे ढुलवानेवाली अलग है उसीको कर्म कहते हैं। अगर हम इस बात पर थोडा गौर

करें तो हम क्यों इस थैले को ढो रहे हैं? ढोने से पहले हमारे अंदर कर्म का संकल्प होता है उसी संकल्प के मुताबिक हमारे अंदर खयाल आता है कि इस थैले को उठाकर दूसरे जगह लेकर जाऊ, फिर हम उस संकल्प के मुताबिक ही थैले को उठाकर दूसरी जगह पर लेजाते हैं। बाहर एक काम करनेकेलिये अंदर प्रेरणा की ज़रुरत होती है। प्रेरणा का कारण कर्म है। इसलिये इस काम केलिये मूल कर्म है। हम जो काम कर रहे हैं चाहे वह खुद का कम हो या दूसरों का हो काम तो वज़न ढोने का ही है ना! जीव ही तो थैली का वज़न की तकलीफ को भुगत रहा है! इसलिये दुख या तकलीफ को भुगतनेवाला जीव है। सज़ा डालनेवाला काल (आत्मा) है ऐसा ही कर्म प्रेरणा की वजह से कई काम करते हुये, उसमें संभव होने वाले दुखों को भुगतही रहे हैं। एक मानव गोले को ढोकर लेजाते हुये समझरहा है कि मैं मेरी ज़रुरत केलिये इसे उठाकर लेजारहा हूँ। लेकिन असल में वहाँ उसका पाप भुगताया जा रहा है लेकिन वह इस सच को समझ नहीं पाया। जो व्यक्ति मरे हुये कुत्ते की लाश को खींचकर लेके जा रहा है वह यह नहीं समझ पाया कि इस समय में यमराज ने मुझे कुत्ते की लाश खींचने की सज़ा डाली है। जो व्यक्ति बैंगनों की टोकरी उठाकर बेपार कर रहा है वह यह नहीं समझ पा रहा है कि मुझे इस समय में यमराज ने बैंगनों की टोकरी को सर पर उठाकर,उसे ढोते हुये पूरा गाँव घूमे जैसा कर रहा है। एक मरीज़ जिसे सर्दी (ज़ुखाम) हुयी है वह माया की वजह से इसतरह का भ्रम कर रहा है कि दूसरे कुयें के पानी पीने के कारण ही उसे सर्दी हुयी है। लेकिन इनसान यह नहीं समझ पा रहा है कि सर्दी होने का कारण पाप है, उस पाप को भुगतने का समय अब आया है इसलिये यम ने उस पाप के फलित में मुझे सर्दी देकर सर को दर्द हुये जैसा कर

रहा है। जिस व्यक्ति को पेट का दर्द सता रहा है वह यह नहीं समझ पा रहा है कि उसके पेट में इतनी तकलीफ को कौन दे रहा है? जो व्यक्ति ज्ञानी होता है वह ऐसा नहीं समझता क्योंकि वह इस बात को अच्छे तरीके से जानता है कि गलती के बिना सज़ा नहीं रहती इसलिये हर तकलीफ को यम इनसाफ के साथ जितना सज़ा डालना है उतनी ही डालेगा, उससे न ज्यादा डालेगा न कम। यम हमारे अंदर निवास करते हुये हमें प्रेरेपित कर रहा है। एक व्यक्ति को रैल के नीचे गिरे जैसा करके जितनी तकलीफ उसको पहुँचानी है उतनी ही तकलीफ उसे पहँचे जैसा, जितना घायल उसे होना है उतना ही घायल हुये जैसा कर रहा है। इसतरह हम हमेशा कई कर्मों को भुगतते हुये भी माया के प्रभाव से उसे ठीक से न समझपाकर उल्टा ऐसा समझ रहे हैं कि यमराज कहीं ओर है और यमलोक कहीं ओर जगह मौजूद है। सांप को चींटिया सता रहे हैं लेकिन हम यह नहीं समझ पा रहे हैं कि उस समय में सांप केलिये चींटियाँ यमकिंकर हैं। भेड़ को इनसान चीरडाल रहे हैं । लेकिन हम यह समझनहीं पा रहे हैं कि भेड़ केलिये उस समय में यमकिंकर इनसान के रुप में हैं। मानलीजिये कि जंगल में एक जानवर को शेर चीर पाड रही हैं तो हम यह नहीं समझ पा रहे हैं कि उस समय में उस जानवर केलिये शेर यमकिंकर है। रिक्षा में एक व्यक्ति बैठा है, एक वक्ति रिक्षा को कष्ट उठाकर खींच रहा है। उसमें जो व्यक्ति बैठा हैं वह तो सुख को भुगत रहा है, रिक्षे को खींचनेवाला कष्ट को भुगत रहा है। उस दृष्य को देखे हुये हम यह ज़रा भी नहीं समझपा रहे हैं कि बैठा हुआ व्यक्ति उसके पुण्य को भुगत रहा है, जो व्यक्ति खींच रहा है वह अपने पाप को भुगत रहा है। इस तरह हम माया के प्रभाव से यह नहीं जान पा रहे हैं कि प्रपंच में असल में (निज से) क्या हो रहा है।

असल में होता है एक तो इनसान समझता है और एक। माया को छोडकर असल में क्या हो रहा है? यह सब कौन कर रहा है? अगर यह रहस्य को जानलिये तो निज से यह मालूम होजायेगा कि यमलोक कहाँ है? और यमकिंकर कौन हैं? यमराज कौन है?

कुछलोग जो अच्छे होते हैं वे इसतरह कह रहे हैं कि हम तो कुछ गलत काम नहीं किये थे तो फिर क्यों भगवान हमें ही इतने ज़्यादा तकलीफें दे रहा है? दुर्माग, दुष्ट जन तो बुरे काम कर रहे हैं उसके बावजूद भी उन्हे सुख दे रहा है, क्या ईश्वर के पास इनसाफ है? कुछ मूर्ख जन भक्तों को देखकर इसतरह उनका मज़ाक उडा रहे हैं कि अरे यह क्या भक्तों को भी कष्ट होते हैं क्या! ईश्वर तो तुमलोगों को कष्ट नहीं देता है ना! इसका जवाब, गीता में भगवान ने कहा कि किसी के भी पाप को हो या पुण्य को हो आत्मा नहीं हटाति यानि दूर नहीं करती। और यह भी कहा कि मुझे किसी के पाप पुण्यों से किस तरह का भी संबंध नहीं है। इसलिये इस जन्म में अच्छे जन होने पर भी पिछले जनम के पाप फलित के वजह से कष्ट आते रहते हैं। सिर्फ इतनी सी बात केलिये अच्छे जनों को ऐसा नहीं कहना चाहिये कि असल में ईश्वर के पास इनसाफ है क्या? दुष्ट जन पिछले जन्म में किये हुये पुण्यफलित के कारण इस जन्म में सुखों को भुगतते रहते हैं।

इस जन्म में उन्होने जो दुष्ट काम किये थे उसका फलित ज़रुर आनेवाले जनम में भुगतेंगे। उसीतरह इस जनम में अच्छे लोग किये हुये अच्छे कामों का फलित, फिर से आनेवाले जनम में ज़रुर भुगतेंगे। भक्त भी कष्ट भुगतने का कारण पिछले जनम में उन्होने किया हुआ पाप ही है। अब कुछ लोग इसतरह पूछ सकते हैं। किये हुये पाप का फलित को भुगतना ही पडेगा क्या? क्या उससे बचने का

कोई रास्ता ही नहीं है? उसका जवाब,ज्ञानयोग में परमात्मा ने कहा कि सर्व पापियों में से तुम सबसे बडे पापि होने पर भी जैसे कलुष जल को भी जहाज से पार करते हैं वैसे ज्ञान की जहाज से पाप को पार करसकते हो। इसलिये चाहे कितना बडा पापि क्यों न हो ज्ञान से बचसकता है। जैसे अग्नि का गुण जलाना है वैसा ही ज्ञान को पाप जलाने का गुण है। इसलिये जो कोई भी ज्ञान को हासिल करता है उसका पाप ज्ञानाग्नि से दहन किये जाकर, जिस पाप को हमें भुगतना चाहिये था उस पाप से बचसकरहे हैं। अगर ज्ञान चाहिये तो परमात्मा की शरण में आना ही पडेगा। कुछ भक्त ज्ञान मार्ग पर चलते हुये भी प्रपंच में आनेवाले कष्टों को बरदाश्त न करपाकर इसतरह कहते हैं कि हम तो परमात्मा के भक्त है ना! और हम ज्ञान भी रखते हैं! फिर भी हमें ही क्यों कष्ट आ रहे हैं? फिर वे ज्ञान मार्ग को ही छोड दे रहे हैं। वे लोग इसतरह बरताव कररहे हैं कि ईश्वर की बात ही झूठ है, लेकिन यह नहीं समझ पा रहे हैं कि जो बात परमात्मा के मुंह से निकली है वह कभी भी असत्य नहीं होसकता। जिसतरह अग्नि में चाहे जितने भी लकडियाँ जलजाते हैं उसीतरह ज्ञानाग्नि में सर्व कर्म जलकर भस्म होजाते हैं। पाप पुण्य दो भी जलजाना शुरु होकर, कुछ वक्त के बाद दो भी खत्म होजाने से जीव परमात्मा में ऐक्य होजारहा है। सिर्फ थोडे वक्त तक ही परमात्मा पर विश्वास रखके, मेरा पूरा कर्म खत्म होजाना चाहिये समझें तो कैसे होसकता है? एक बंडल लकडियों को जलानेकेलिये एक घंटे का वक्त लगता है, गाडि भर के लकडियों को जलाने केलिये एक दिन लगता है। ऐसा ही सौ गाडियों के लकडियों को जलाने केलिये कुछ महीने लगते हैं। लकडियाँ जितने ज़्यादा रहते हैं उनको जलाने केलिये वक्त भी ज़्यादा लगता है। ऐसा ही कर्म कहलाने वाले लकडियों को ज्ञानाग्नि जलाती ही रहती है। जबतक कर्म पूरे तरीके से जलाया

नहीं जाता तबतक जीव प्ररब्द कर्म को भुगतना ही पडेगा। मालूम हो रहा है कि भक्त कर्म को एक तरफ भुगत रहे हैं तो दूसरे तरफ ज्ञानाग्नि कर्म को जलाती रहती है।

यमलोक यहीं पर है, यमधर्मराज, यमकिंकर भी यहीं पर हैं। मालूम हो रहा है कि जो कष्ट हम भुगत रहे हैं वही नरक है, देवतायें, देवेंद्र देवलोक सब यहीं पर है, हम जो सुख भुगत रहे हैं वही स्वर्गसुख है। इसीलिये हम चाहते हैं कि तुमलोग वास्तव को जान कर उस परमात्मा को पकडलो जो यमलोक, स्वर्गलोकों से भी परे हैं।

देवताएँ - राक्षस

प्रपंच में अनेक देवताएँ मौजूद हैं। और राक्षस भी हैं। प्रपंच में दो ही जातियाँ मानवो में आदिसे (शुरु से) आज तक हैं। वही १) देवताओं की जाति २) राक्षसों की जाति । जिन के पास ज्ञान है वे लोग ये दोनों को पहचान सकते हैं। और यह भी मालूम करसकता है कि वह कौनसे जातिवाला हैं। आखिर ये दोनों जातियाँ कैसे बनरहे हैं इस बात पर गौर करें तो यह मालूम हो रहा हैं कि गुणों से ही बन रहे हैं। फलाना गुण रखनेवालों को राक्षस, उसीतरह फलाना गुण रखनेवालों को देवतायें कह कर पहचान सकते हैं। भगवद्गीता में दैवासुर संपद्विभाग योग में भगवान ने देवताओं के गुणों के बारे में, राक्षसों के गुणों के बारे में बताया हैं। और उनके प्रवर्तन (बिहेवियर) को भी बता चुका हैं। और भी श्री कृष्ण परमात्मा ने कहा कि **द्वौभूत सर्गौ लोकेस्मिन दैवासुर एवच** लोक में देवताएँ राक्षस कहलानेवाले

दो प्रकार के प्राणियाँ पैदा हो रहे हैं। इसीलिये यह मालूम हो रहा हैं कि भूमि पर देवताएँ, राक्षस मौजूद हैं।

तैंतीस करोड देवताएँ हैं कहकर मशहूर हैं। कुछ लोगों को यह शक आसकता हैं कि चाहे उनकी संख्या कितनी भी हो विष्णु, ईश्वर, ब्रह्म से शुरुहोकर इंद्र और इंद्र के परिपालन में रहनेवाले दिक्पालक भी तो देवताएँ ही है, हेना! वे लोग कहाँ हैं? वे तो भूमि पर कहीं पे भी दिखायि नहीं देते? इसकेलिये हमारा जवाब यह है कि! जैसे परमात्मा ने कहा वैसे देवताएँ सब भूमि पर ही हैं लेकिन हम उन्हे पहचान नहीं पा रहे हैं। हमें नज़र नहीं है तो इसका मतलब यह नहीं है कि हमारे सामने कुछ भी नहीं हैं। उसीतरह हम उन्हे न देख पाते हुये यह कह रहे हैं कि देवताएँ भूमि पर नहीं हैं। जो स्थूल आँखे हमको हैं उनसे देखें तो सब मानवआकार ही दिखेंगे। लेकिन मानवआकारों के अंदर ही बसा हुआ दैवत्व बिलकुल नज़र नहीं आता। मानवों के अंदर बसाहुआ दैवत्व को पहचान कर यह फलाना ईश्वर है कह कर मालूम करने केलिये ज्ञानदृष्टि की ज़रुरत हैं। अगर ज्ञानदृष्टी नहीं है तो स्थूलदृष्टी को ज़ाहिरी आकार ही दिखते हैं। उससे ऐसा समझेंगे कि सब मानव ही हैं, स्थूलदृष्टि से देवताओं को पहचान नहीं सकते।

जिन लोगों के पास थोडा थोडा ज्ञानशक्ति रहता है वे सब दैवांश वाले ही हैं यानि देवताएँ ही हैं। देवताएँ सब बराबर नहीं हैं। क्योंकि उनमें रहनेवाली ज्ञानशक्ति समान (ईक्वल) से नहीं रहती। अत्यधिक ज्ञानशक्ति रखनेवाला विष्णु हैं। वहाँ से जैसे जैसे योगशक्ति कम होती हैं ईश्वर, ब्रह्म से शुरु होकर दिक्पालकों तक रहते हैं। उसीतरह राक्षस वे लोग है जो अज्ञान रखते हैं। वे भी सब एक ही तरह नहीं रहते। उनके अज्ञान के प्रकार उनमें भी छोटे बडे कहलाने

वाले फरख रहने का मौका है। इससे यह बात साफ होजारहा हैं कि जो लोग ज्ञानशक्ति रखते हैं वे सब देवताएँ हैं, जो लोग ज्ञानशक्ति नहीं रखते हैं वे सब राक्षस हैं।

कुछ लोगों को यह शक भी आसकता हैं कि क्या देवताएँ विष्णु, ईश्वर, ब्रह्म वगैरा इस कलियुग में भी मौजूद हैं? विष्णु, ईश्वर, ब्रह्म वगैरा लोग बडे ज्ञानि होकर भी ईश्वर में ऐक्य हुये बगैर इस कलियुग में अभी भी मौजूद हैं? क्या उन्हे मोक्ष नहीं मिला? क्या वे भी सब की तरह जनम लेते ही रहते हैं? इसतरह पूछने वालों के लिये हमारा जवाब यह हैं कि! देश में राजा, युवराजा, मंत्रि, मुख्यमंत्रि, सेनाधिपति इसतरह कई पदवियाँ (पोजिशन्स) है ना! क्या शुरु से सिर्फ एक ही व्यक्ति राजा की तरह या एक ही व्यक्ति मंत्रि की तरह है क्या? नहीं ना! उसतरह कोई नहीं हैं। लेकिन राजा, मंत्रि के पोजिशन्स वैसे के वैसे ही हैं। उन पदवियों में एक के बाद एक उनकी योग्यता के मुताबिक निर्णय किये जारहे हैं। उसीतरह ही प्रपंच में विष्णु, ईश्वर, ब्रह्म कहलानेवाले पदवियाँ हैं। योगशक्ति के मुताबिक विष्णु, ईश्वर, ब्रह्म के पोजिशन्स जीवों को दियेजारहे हैं। मानलीजिये कि एक जीव सारे प्रपंच में योगशक्ति में अव्वल नम्बर पर हैं यानि पहलावाला हैं। वह जीव एक शरीर को पहनकर भूमि पर पैदा होता हैं। क्योंकि वह योगशक्ति में पहलावाला हैं उसवजह से वह विष्णु पोजिशन के लिये योग्य है जो देवताओं के पोजिशनों में से पहली पोजिशन हैं। इसलिये वह जीव ही देश में विष्णु हैं। वह जीव उस जनम में भी योग हासिल करके पूरी योगशक्ति हासिलकिया हुआ होकर ईश्वर में ऐक्य होजारहा हैं। इसलिये ही मालूम हो रहा हैं कि पूर्वकाल में वैकुंठ में रहनेवाला ईश्वर भी योग को हासिल किया था। जो लोग उसी अंश की योग्यता रखते हैं वैसे कई लोग योग किये

जैसा मालूम हो रहा हैं। एक जीव विष्णु के पोजिशन को थोडा वक्त अधिष्टान करके ईश्वर में ऐक्य होजाते ही, उस सीट के लायक दूसरा जीव तय्यार होकर ही रहता है। जिसतरह राजा की सीट खाली होते ही देश में उस पोज़िशन के लिये दूसरा व्यक्ति योग्यता रखता है उसीतरह प्रपंच में विष्णु, ईश्वर, ब्रह्म के पोज़िशन्स खाली होते ही उस अंश के लायक ज्ञानशक्ति (योगशक्ति) रखनेवाले तय्यार होते ही रहते हैं। इसलिये विष्णु, ईश्वर, ब्रह्म वगैरा लोग भी शरीर पहन कर भूमि पर ही हैं। वे भी मोक्ष के लिये विशेष से योग की आचरण कर रहे हैं। जब उनमें योग शक्ति संपूर्णस्तिथी को पहुंचती हैं तब वे परमात्मा में लीन होजा रहे हैं। फिर दूसरे जीव उनके अंशा के लायक होकर उनकी पोजिशन की नाम को पासक रहे हैं।

यहाँ पर कुछ लोगों को इसतरह का संशय होसकता है कि वह यह है कि एक ही वक्त में, एक ही अंश को बिलांग करनेवाले दो जीव रहसकते हैं क्या?क्या ऐसा मौका है? राम, परशुराम दोनों भी विष्णु के अंश ही तो है,हेना! उसकेलिये हमारा जवाब यह है कि! यह संभव नहीं है कि एक ही काल में एक ही अंश को बिलांग करनेवाले दोनों जीव रहना मुमकिन नहीं है। अब राम परशुराम कहनेवाले दोनों विष्णु अंश को अलंकार किये हुये लोग ही है तो दोनों एक ही वक्त में विष्णु अंश के लिये योग्य (बराबर) नहीं हुये होंगे। ऐसा होसकता हैं कि कुछवक्त तक परशुराम केलिये, कुछ वक्त तक राम केलिये विष्णुवांश रहा होगा। इसका मतलब यह है कि थोडे वक्त तक एक जीव विष्णु है तो, और थोडे वक्त तक और एक जीव विष्णु हैं। जबतक राम का विवाह नहीं होता तब तक विष्णु शब्द केलिये परशुराम ही योग्य है। तबतक योगशक्ति में उससे बडकर प्रपंच में कोई नहीं थे। राम के विवाह समय में, उसवक्त जब परशुराम ने

राम का सामना किया, योगशक्ति में राम ही तेज़ निकला, परशुराम के योगशक्ति से भी राम बडकर होने से उस समय से राम के पूरे जिंदगी भर राम ही विष्णु बने जैसा मालूम होरहा हैं। इसलिये मालूम हो रहा हैं कि राम परशुराम दोनों भी विष्णुवांशसंभूत ही हैं। इसीतरह तैंतीस करोड देवताओं के अंश हैं। जो जीव उन अंशाओं के लायक ज्ञानशक्ति को अपने अंदर रखते थे वे जीव कहलवाये होंगे कि हम फलाना देवताएँ हैं। जो वक्त गुज़र चुका उसको गौर करें तो मालूम हो रहा हैं कि मश्चींद्र विष्णु के पोज़िशन केलिये, उनका शिष्य गोरा कुमार ईश्वर की पोज़िशन केलिये, योग्य हुये थे। उस ज़माने में ही नहीं बल्कि इस ज़माने भी विष्णु, ईश्वर से शुरु होकर आखिर तक योग्यता रखनेवाले योगशक्तिवाले मौजूद हैं। कुछलोग उनके अंदर के माया की वजह से उनकी योग्यता उनको मालूम नहीं होरहा है। कुछ लोग अपनी योग्यता को मालूम करके हैं यानि अपनी योग्यता को जानते हैं । जैसे परमात्मा ने गीता में कहा है वैसे ज़मीन पर सजीवों के रुप में ही देवताएँ सब मौजूद हैं। वे परमात्मा के ओर भक्ति रखते हुये योग करही रहे हैं।

ज्ञानियों को यानि ज्ञानशक्ति रखनेवालों (देवताओं) के विरुद्ध रहनेवाले सबलोग राक्षस ही हैं। इनमें ज्ञानशक्ति बिलकुल नहीं रहती वे लोग यह समझते हैं कि सबकुछ खुद की शक्ति से ही होरहा हैं इनकेलिये परमात्मा का विषय व्यतिरेक दिखता हैं। अनेक भयंकर पापों को कमालेनेवाले होकर रहेंगे। राक्षस सब ऐसे मन्नतें या ख्विहिशें मांगते रहते हैं कि जो आशा से परे हैं, उनमें गर्व ही गर्व तांडव करता रहता हैं। अपरिमितवाले ख्वाहिश रखते हुये कहते रहते हैं कि विषयसुखों से बडकर कोई और सुख बडी नहीं है। और आशा कहलानेवाले रस्सी से बांधेजाकर ख्वाहिश करते हैं कि हमें सुख

चाहिये, फिर उन सुखों के खातिर धन को बहुत ही अन्याय मार्ग में कमा रहे हैं। और भी कहें तो वे इसतरह समझते हैं कि दुनिया में कोई ऐसा नहीं है जो हम से ज़्यादा जानता हो, वे अपनी मरज़ी के मुताबिक पूजायें कर रहे हैं। ऐसे राक्षसों के बारें में गीता में भगवान ने इसतरह बताया कि **उन नरों को जो कूर है, द्वेष करते हैं, अच्छाई को गाली देते हैं उनको मैं राक्षस गर्भो में पैदा हुये जैसा करके उनके साथ मैं ऐसा करूंगा कि वे माया में दुख पायें। इसतरह राक्षसों में पैदा होकर जनम जनम में अज्ञानी होते हुये मुझे मालूम करने की ज्ञान का किनारा भी बिलकुल दिखे बगैर अधम गति को जायेंगे।** इसलिये हम यह कह रहे हैं कि प्रपंच में अज्ञान में फसकर राक्षस जनम न उठाते हुये,ज्ञानमार्ग में चलते हुये ज्ञानशक्ति को कमालेकर देवताओं के पेटों में ही पैदा होते हुये, जनम जनम को अपनी योगशक्ति बढालेते हुये आखिर को परमात्मा में लीन होजाना चाहिये।

अबतक इतना सबकुछ समझाने के बावजूद भी कुछ लोगों को और भी शक रहकर इसतरह पूछ सकते हैं कि गीता शास्त्र में अक्षर परब्रह्मयोग में श्रीकृष्ण ने इसतरह कहा था ना कि **अब्रह्म भुवनाह्लोकाह पुनरावर्तिनोर्जुन! मा मुपेत्यतु कौन्तय! पुनरजन्म न विद्यते ब्रह्मलोक आदि सारे लोक फिरसे जनम को ही भेजेंगे। लेकिन जिन्होने मुझे पाया उनको जनम नहीं होगा।** कुछ लोग इसतरह पूछ सकते हैं ऊपर के श्लोक से तो लगता है कि लोक अलग से कहीं और जगह पर हैं और वहाँ देवताएँ बसर करते हैं। इसकेलिये मेरा जवाब! देवताएँ सब यहीं पर हैं। उनके खरीब पैदा होने केलिये बहुत ही पुण्य करके रहना चाहिये। उनके पास पैदा होना ही उनके लोक में पैदा होना। इसतरह पुण्य करके उनके पास

पैदा होने पर भी फिरसे जनम लेना पडता हैं। लेकिन जिसने मुझे पाया हैं उसे वापिस जनम नहीं हैं कह कर परमात्मा ने बताया हैं मगर और कुछ नहीं। ऐसा ही राजविद्या राजगुह्या योग में

त्रैविद्या मां सोमपाः पूत पापा यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गीतिम प्रार्थयन्ते ।

तेपुण्य मासाद्य सुरेंद्रलोक मश्नन्ति दिव्यान दिवि देवभोगान ।।

तेतम भुक्त्वा स्वर्गलोकम विशालम क्षीणे पुण्ये मर्थ्त्व लोकम विशन्ति ।

एवम त्रयीधर्म मनु प्रसन्न गतागतम कामा कामा लभन्ते ।।

परमात्मा ने कहा कि जो लोग याज्ञिक है, जो लोग सोमपान पीते हैं, उन्हे पाप नहीं मिलता वे मेरी दया से स्वर्ग को पहुंचपाकर बहुत ही पुण्य जनमों को, दिव्य भोगों को, दिव्य सुखों को अनुभव करते रहते हैं। इसतरह स्वर्गसुखों को भुगतने के बाद कमदर्जेवाले लोकों को आते रहते हैं। आशा के जाल में फसकर पुण्य कमालेने वालों की गति ऐसी ही हैं। उनको अशाश्वित सुख ही मिलते रहते हैं। यहाँ भी बहुत से लोग समझने में गलती कर रहे हैं कि स्वर्गलोक अलग से कहीं और जगह पर हैं। पुण्यकिये हुये लोगों केलिये स्वर्ग यहीं पर है। वे स्वर्ग सुखों को यहीं पर अनुभव कर रहे हैं। पुण्य का फलित खत्म होते ही फौरन कष्ट उठानेवाले जनम वापिस ले रहे हैं। इसीलिये हम लोग अनुभव के साथ ऐसा कह रहे हैं कि अच्छे से सुख से जीनेवाला ऊपर के पोज़िशन में है, कष्ट उठानेवाला कम दर्जे पर हैं। उसीतरह जब हम पैसेवाले को गरीब से कम्पार करते हैं उस समय में भी कहते हैं कि वह अमीर कहाँ और यह गरीब कहाँ। मतलब यह बात कहने के पीछे उद्देश्य यह है कि उसे इसे बहुत ही फरख हैं (यानि ज़मीन आस्मान का फरख है)। अब हमें इस बात को

समझना होगा कि आखिर वह फरख क्या है। यह जानलेना चाहिये कि वह भेद या फरख भूमि पर ही दिख रहा हैं। हम कह रहे हैं कि वह ऊपर के दर्जे में है, यह नीचे के दर्जे में है। और यह भी जानलें कि उसका ऊपरवाला दर्जा हो, इसका नीचेवाला दर्जा हो ज़मीन पर ही हैं। उसीतरह मान लो कि अगर एक व्यक्ति अच्छे से जीकर सुखों को भुगतने के बाद वह कष्टों में फसगया है, तब भी यह कहरहे हैं कि वह अधोगति पाया है। अधोगति का मतलब नीची हालत या कम दर्जा, तो अब यह जानलीजिये कि वह कम दर्जा भी भूमि पर ही मौजूद है।

जिसने पुण्य किया वह भूमि पर ही स्वर्गसुखों का अनुभव कर रहा है। जिसने पाप किया वह भी भूमि पर ही नरक का अनुभव कर रहा है। ऊपर का लोक और नीचे का लोक सब इस ज़मीन पर ही हैं। जब हम ज्ञानि को अज्ञानि से कम्पार करते हैं तब इसतरह कहते हैं कि किसका लोक उसीको है, उसके लोक को न यह आयेगा, ना हि इसके लोक को वह जायेगा। एक दिन गुरु **ब्रह्मम जी** ने शिश्य **सिद्दय्या** से सवाल किया कि लोक कैसा है? तो सिद्दय्या ने उसके जवाब में कहा कि **किसका लोक उसका है स्वामि।** परमात्मा ने भी कहा कि मैं तीनलोकों में फैलाहुआ हूँ। और यह भी कहा कि ऐसी जगह ही नहीं है जहाँ पर मैं नहीं हूँ। आखिर लोकों के बारे में मालूम करनी होतो ज्ञानदृष्टि के ज़रिये ही मालूम करसकते हैं। सारे लोक ज़मीन पर ही हैं। अगर इनके बारे में पूरे तरीके से मालूम करनी होतो ऐसा लगता हैं कि नामुमकिन काम हैं। लेकिन ज्ञान के प्रकार तफसील से बयान करलें तो बहुत ही आसान से समझमें आजायेगा।

खास करके जो है वे तीन ही लोक है। उसमें एक एक लोक में 108 उपलोक हैं। पूरे 324 लोक हमारे सर में गुणों के रुप में हैं। एक जीव उसके कर्म के अनुसार शरीरधारि होकर भूमि पर रहने वाले लोकों में ही फसता है। किसका लोक उसको अच्छा ही दिखता रहता हैं। अब इनको तफसील के साथ बयान करने केलिये यह संदर्भ नहीं है। इसलिये इतने से बाकी लोकों की जानकारी को रोकते हुये,हम यह बता रहे हैं कि नरक के कष्ट,स्वर्ग के सुखों को जीव यहीं पर अनुभव कर रहा है। वरना स्वर्गलोक,नरकलोक दूसरे जगह पर ही होतो अगर जीव पाप पुण्य दोनों को भी वहीं भुगत चुका तो, यहाँ भूमि पर उसे पैदा होने की ज़रुरत ही नहीं है ना! यह बात अच्छे से जानते हुये भी कि पाप पुण्यों के कारण से ही हम जनम लेरहे हैं, उसके बावजूद भी इसतरह कहने में कुछ मतलब ही नहीं है कि हम पाप पुण्यों को कहीं और जगह पर भुगतकर आरहे हैं (यानि बेमतलब की बात है)। अगर दूसरे लोकों में पाप पुण्यों को भुगत चुके तो यहाँ पर पैदा होने की ज़रुरत ही नहीं है। इसलिये यह बात जानलेना चाहिये कि सब लोक यहीं पर हैं, सब देवतायें भी यहीं पर हैं। परमात्मा भी इसी भावना के साथ गीता में बताया था। उस भावना को न समझ सकके हमही कनफ्यूज़ हो रहे हैं। परमात्मा ने बतायी हुयी गीताशास्त्र को परमात्मा की भावना के प्रकार ही समझ करलेने केलिये बहुत ही ज्ञान पाकर रहना चाहिये। वरना वह ज्ञान अलग तरीके से समझमें आयेगा। जिसके ज्ञान फलित के मुताबिक उसे वैसा ही समझमें आता है। इसीलिये इस ज़माने में एक एक जन एक एक तरीके से बोलले रहे हैं। गीता शास्त्र को वक्रमार्ग में (गलत मार्ग में) समझने वालों से परमात्मा वापिस मानवरुप में आकर कहने पर भी तब भी वे नहीं समझते ऊपर से इसतरह कहते हैं कि बोलनेवाला भी तो हमारी तरह इनसान ही है! क्या इसे हमसे भी

ज्यादा मालूम है क्या? इसतरह का गर्व अगर नहीं छोडेंगे तो कुछ भी प्रयोजन नहीं है।

मैं कहना यह चाहता हूँ कि जो व्यक्ति जिस दिन गर्व को छोडकर अपने अंदर यह भावना रखता है कि ऐसे यदार्थ विषय बहुत ही है जिनके बारे में मुझे मालूम करनी चाहिये वही अच्छी जिंदगी गुज़ार सकता हैं। इसीलिये इसतरह का गर्व को छोडदें कि मैं सबकुछ जानता हूँ और यह जानलेना चाहिये कि देवताएँ उनके लोक यहीं पर मौजूद हैं। और यह भी जानलेना चाहिये कि राक्षस और उनके लोक भी यहीं पर मौजूद है।

विद्या - अविद्या

वित शब्द से विद्या शब्द पैदा हुयी हैं। वित का मतलब **मालूम करना** के है। इसीलिये उससे पैदाहुयी विद्या शब्द को भी वही मतलब लागू होरहा है। यह मालूम हो रहा है कि **अविद्या** का मतलब **मालूम न होना** ही अविद्या है। बचपन से स्कूल जाकर वह भाषा जो हमें नहीं मालूम,या सामान्य विषयों को हो, या गणित को हो कुछ न कुछ जिसके बारे में हम नहीं जानते उसके बारे में मालूम करते हैं। इसतरह जिसके बारे में हम मालूम कर रहे हैं उसीको विद्या कहरहे हैं। विद्या केलिये धन देकर जो कुछ मुझे नहीं मालूम उसे मुझे बताइए कहकर अर्थना करनेवाले को (पूछनेवाले को) विद्यार्थि कहते हैं। **विद्या + अर्थि = विद्यार्थि** विद्यार्थि मतलब विद्या केलिये अर्थन करनेवाला, और भी अच्छे से समझमें आने केलिये ऐसा भी कहसकते हैं कि जो कुछ वह नहीं जानता उन चीज़ों के बारे में मालूम करने केलिये दूसरे के पास जाकर पूछनेवाले को विद्यार्थि कहते हैं।

जिन विषयों के बारे में हमें मालूम नहीं उनके बारे में बतानेवाले को **बोधक** कहरहे हैं। सूत्र यह है कि मालूमकरानेवाला बोधक है तो, मालूम करवालेनेवाला विद्यार्थि हैं। इस सूत्र के प्रकार चाहे वह कोई भी विषय को बोलनेवाला हो उसे बोधक ही कहते हैं। उसीतरह चाहे वह कोई भी विषय क्यों न हो उसके बारे में मालूमकरवालेनेवाला विद्यार्थि ही है, जिस विषय के बारे में मालूम करते हैं चाहे वह कुछ भी हो विद्या ही है। मानव बचपन से कुछ न कुछ विद्या को सीख ही रहा है। जबतक उसको युक्तउमर (जवानि) आति हैं तबतक कई विद्यायें सीखकर **यम. ए., यम. यस. सि., बि, यस. सि.,** वगैरा डिग्रीस हासिल करके **पि. हेच. डि** यॉं लेकर ऐसा समझ रहा है कि मैं ने पूरी विद्या हासिल की है। पिहेचडि लेनेवाला होकर भी जैसे वह समझरहा है वैसे क्या वह विद्वान है? अगर हम इस बात पर गौर करें तो जितना उसने सीखा उतने हद तक यानि उस प्रपंत विद्या तक वह विद्वान ही हैं। और भी बहुत कुछ ऐसे चीज़ें हैं जिसके बारे में उसे सीखनीचाहिये, मालूमकरनी चाहिये। इसीलिये कहसकते हैं कि वह संपूर्णविद्वान नहीं है। उसे जो मालूम करनी है वह बाक़ी है इसलिये वह अविद्वान ही है कहसकते हैं।

इंपार्टेन्ट चीज़ें, अन इंपार्टेन्ट चीज़ें बराबर नहीं होते। इसीलिये कई अन इंपार्टेन्ट चीज़ें सीखकर भी इंपार्टेन्ट वाली एक नहीं सीखें तो भी वह अविद्वान ही है। ऐसी सूरत में कौन से विषय मुख्य है?कौनसे नहीं? और वे क्या है? इस बात पर बहुत से लोगों को क्लारिटि नहीं होसकता है। अब उसके बारे में मालूम करते हैं। जो विद्यायें प्रपंच में हैं, जिन विद्याओं के बारे में मालूम करनी है वे सिर्फ छः ही है। वे इसतरह है कि! 1) गणित शास्त्र 2) रसायन शास्त्र 3) भौतिक शास्त्र 4) खगोल शास्त्र 5) ज्योतिश्य शास्त्र 6) योग

शास्त्र पूरे छः शास्त्रों में से अति मुख्य शास्त्र योगशास्त्र है। शरीरो में अहम किरदार निभाने वाले जीवात्मा, आत्माओं के बारे में योगशास्त्र बता रही हैं। जीवात्मा, आत्मायें नहीं है तो पूरा प्रपंच बिना चैतन्यवाली जीवरहित जडपतार्थ की तरह रहसकती है। ऐसा ही बिना परमात्मा के जडपतार्थवाली प्रपंच भी नहीं है। मुख्यवाले (महत्ववाले) तीन आत्माओं के बारे में बताती है इसलिये योगशास्त्र मुख्य है कहसकते हैं।

यह जानलें कि बाकि पांच शास्त्रो में जो है वे सब प्रपंच के विद्यायें ही है। आज प्राथमिकपाठशाला से लेकर विश्वविद्यालय तक रहनेवाले तमाम पाढ़यियाँ पांच शास्त्रों की विद्यायें ही है। छठी शास्त्र योगशास्त्र है इसतरह कहनेवाले भी आज कोई नहीं है और वह आज के विद्याबोधनाओ में भी नहीं रही। इसलिये कोई भी विद्यार्थि को हो योगशास्त्र के बारे में नहीं मालूम। चाहे कोई भी कितने भी पढायियाँ पढलें सबसे मुख्यवाली योगशास्त्र के बारे में मालूम न होने से वैसे व्यक्ति को अविद्वान ही कहसकते हैं। कितने भी डिग्रियाँ लेने के बावजूद भी सिर्फ एक योगाशास्त्र को मालूम न करने की वजह से उसे अद्विान कहने की एक खास कारण है, वह यह है कि!

चाहे वह कोई भी विद्या क्यों न हो एक लिपि से शुरु होती है। वह लिपि कुछ अक्षरसमुदायों से जुडिहुयी होती है। चाहे कोई भी विद्या हो अक्षरसारांश से जुडिहुयी होती है। हम आम तौर पर सुनते ही रहते हैं कि जिसके पास विद्या होती है उसे अक्षरज्ञान रखनेवाला कहते हैं। अक्षर का असली अर्थ न जानते हुये ऐसा समझरहे हैं कि वह भी एक प्रपंच की पढ़ाई ही है। असली अर्थ के मुताबिक देखें तो **क्षर** का मतलब **नाश** है,**अक्षर** का मतलब नाश न होते हुये **अविनाशि**

की तरह रहनेवाला है। जो व्यक्ति ऐसी अविनाशि वाली आत्मज्ञान रखता है उसे विद्वान और ऐसा भी कहसकते हैं कि वह अक्षरों (आत्मा, जीवात्मा, परमात्म) को जानता हैं। जिस व्यक्ति को आत्मज्ञान नहीं मालूम उसे इसतरह कहसकते हैं कि अक्षर के बारे में नहीं जाननेवाला, जिसे अक्षरज्ञान नहीं है, अविद्वान है। इसके मुताबिक बिनाआत्मज्ञानवाले कितने भी पढ़ायियाँ पडने पर भी वह अविद्वान ही है कहसकते हैं।

आज ऐसे कई पढायियाँ हैं जिनमें अक्षर सारांश नहीं है। उनको सीखनेकेलिये कलाशालायें, विश्वविद्यालयें मौजूद हैं। वे पढायियाँ जिनमें अक्षरज्ञान नहीं है उनको सीखनेकेलिये कई हज़ारों,लाखों के रुपयों का पैसा खर्चा करना पडता हैं। मानव जिसे उसका विवरण (डीटेयिल्स) नहीं मालूम बहुत ही महनत (व्ययप्रयास) उठाकर,बिना अक्षरज्ञानवाली विद्यायें सीखकर, अहंकार से अपने आप को बडा विद्वान समझरहा हैं। लेकिन वह यह सच जान नहीं पारहा है कि चाहे कितना कुछ सीखलें अगर आध्यात्मि मालूम नहीं है तो वह अविद्वान ही है। आज के प्रपंच संबंध विद्यायें सब प्रपंच में जीनेकेलिये ही काम आते हैं, मगर परमात्मा में ऐक्य होने केलिये काम नहीं आयेंगे। एक हिसाब से जिसने प्रपंच विद्या सीखा उसे भी आज प्रपंच में उसके लायक उद्योग (नौकरी) नहीं मिलरही हैं, और जो पढाई उसने पढा उसकी कोई वाल्यू ही नहीं रही, इसीलिये आखिर में अनपड की तरह शरीर से महनत करते हुये निसाश से काम करना पड रहा है। जिसने आत्म की पढाई की वह प्रपंच में आराम से जीपा रहा हैं। मरने के बाद भी शाश्वित से रहसकता है।

सब शास्त्रों से श्रेष्ट छटीशास्त्र योगशास्त्र हैं, जिसे योगशास्त्र मालूम है उसे चाहे कितने भी कष्ट आने पर भी वे कष्ट उसको कष्ट

की तरह नहीं दिखते, उनके बंधनों को वह हिसाब नहीं करता यानि उनकी परवा नहीं करते। इसीलिये छटी शास्त्र योगविद्या को गीता में **पवित्र मिहविद्यते** कहा है। इतना ही नहीं यह बात भी है कि **नहि ज्ञानेन सदृश्यम।** इसका मतलब यह है कि ऐसी कोई विद्या ही नहीं है जो इससे श्रेष्ट हो और ऐसी चीज कुछ है ही नही जो इसके बराबर हो। अब कुछ लोगों को इसतरह संशय आसकता है कि क्या उस विद्या को सिखाने वाले कोई भी नहीं है?क्या उसे सीखनेवाले भी कोई नहीं है? उसका जवाब यह है कि! योगशास्त्र को मालूम करना है कह कर समझनेवाले बहुत ही कमलोग होते हैं। वह शास्त्र के बारे में बताने वाले तो और भी कम हैं।

आज प्रपंच के पढाईयाँ पढकर बहुत कुछ सीखे हुये अविद्वान लोगों में से कुछ लोग योगशास्त्र की अहमियत मालूम न होने की वजह से गुरुओं को नीच से देख रहे हैं। गुरुओं के पास आत्मज्ञान को मालूम करनेवालों को देखकर कमअखलवालों की तरह हिसाब कर रहे हैं। जीवन में सिर्फ चंद दिन रहनेवाले उद्योगी (नौकरी करनेवाले) कुछ लोग, प्रभुत्व ने उनको दी हुयी अधिकार को देखलेकर फर्ख (गर्व) करते हुये, पूज्यनीय गुरुसांप्रदाय को ही हिसाब न करते हुये गुरुओं को कम नज़र से देख रहे हैं। ऐसे लोगों से हम यह पूछ रहे हैं कि! महीने के फीज के साथ तुमलोगों से पैसा खींचलेकर बिना अक्षर सारांशवाली विद्या को बोलनेवाले गुरुयें आप के आँखों को बडे लग रहे हैं और उचित से, निस्वार्थ के साथ, सबसे श्रेष्ट योगशास्त्र के बारे में बतानेवाले गुरु आप के नज़र में कमतरीन (नीच) लोगों की तरह दिख रहे है क्या? प्रभुत्व केलिये गुलाम का काम करते हुये, जबतक अधिकार में है तबतक नमस्कार (सलाम) रखवाले कर, अधिकार खत्म होजाते ही (यानि नौकरी से निकालदेने

के बाद) कम से कम कोई भी इज्ज़त न देनेवाली ज़िंदगी जीनेवालों से भी, क्या वे गुरु तुमलोगों के नज़र में कमतर हैं जो कई लोगों के हृदय में ज़िंदगी भर पूज्यनीय की तरह रहते हैं। पैसा खर्चा करके बिना चैतन्यवाली विद्या सीखनेवालों से भी, बगैर पैसों के उचित से दुनिया में कोई भी सामना न करसकनेवाली विद्या को सीखनेवाले गुरु शिश्य (आप के नज़र में) कमअखलवाले हैं क्या ?

बहुत से लोग अपनि तात्कालिक संपत्ति, अधिकार, पोज़िशन (होदा) को देखलेकर अखड करते हुये, कल के दिन (यानि मरने के बाद) मेरी ज़िंदगी (जीवित) की हालत क्या है? इस बात की योचना किये बगैर, महीने के आखिर में मेरी कमाई (सालरी) क्या हैं कह कर सोच रहे हैं। कालगर्भ में मिलजानेवाले शरीर के बारे में, उन अवस्थाओं के बारे में जो उसके साथ होनेवाले हैं, और उन अनुभवों के बारे में जिससे कोई भी उसे बचा नहीं सकता ये सब चीजें सोचे बगैर मानव अंधेपन से अपनी ज़िंदगी गुजार रहा है। ऐसा समझ रहा है कि यम.ए पढने से यस.ऐ की नौकरी आयि है, इसलिये मेरे स्टेषन के परिधि में रहनेवाले को मारने का अधिकार मुझे हैं। लेकिन वह यह बात नहीं समझ पा रहा हैं कि मेरे शरीर के परिधि में अधिकार रखनेवाला भी एक जन है, उस शरीर के परिधि में के सज़े (सिक्षा) से खुद को बचाले नहीं सकता। प्रपंच के पढायियाँ कितने पढने पर भी जिसमें आत्मज्ञान नहीं है वह अविद्या ही है। इसलिये यह जानलीजिये कि विद्या का मतलब क्या है,किसको विद्या कहते हैं? अक्षर का मतलब क्या है,किसको अक्षर कहते हैं? ऐसा मत समझो कि भाषा के अक्षरों से जुडिहुयी चीज ही असलि विद्या है, यह जानलों कि असलि विद्या वह है जो अक्षर के साथ जुडिहुयी है। चाहे तू कितने भी डिग्रियाँ हासिल कर चुका हो यह सच जानलें कि जीवित में वे सब

बिना सारंश के है। न वे सुकून देते हैं न शांति, मानव जीवित को सारंश को जोडनेवाली विद्या यानि ब्रह्मविद्या (योगशास्त्र) को जोनो, अबतक जो अविद्या है उसको छोडकर विद्वान बनो। क्षर को छोडकर अक्षर को मालूम करो।

योगविद्या

जीव आत्मा के बारे में मालूम करने केलिए, आत्मा को जानकर परमात्मा में ऐक्य होनेकेलिए, जनन मरन प्रवाह से दूर होकर शून्यमें सब जगह खुद होकर रहनेकेलिये योगविद्या को सीखने की ज़रुरत है। प्रपंच के कई विद्याओं में से योगविद्या बडी हैं, पवित्र है। इस विद्या को समझने केलिये मानव की अखल महत्ववाली होकर रहना चाहिये वरना यह विद्या उतनी आसानी से किसी को समझमें नहीं आती। असल में तो बहुत से लोगों को यह तक नहीं मालूम कि ऐसी एक विद्या है। कुछ लोगों को मालूम होने पर भी उनको यह तक नहीं मालूम कि उसे कहाँ से शुरु करके सीखना चाहिये। जो विद्यायें मौजूद हैं उनमें से कौनसी विद्या योगविद्या है वे नहीं जानते। वैसे लोग इसतरह समझने में कोई गलती नहीं है कि मुझे योगविद्या को सीखनी चाहिये। लेकिन दूसरे विद्याओं को योगविद्या समझकर उसे सीखना, आचरण करना बहुत ही बडी भूल है। खीमती ज़िंदगी का वक्त ही व्यर्थ होजारहा है।

जो लोग योगविद्या को सीखने की इरादा रखते हैं उनको पहले यह जानना ज़रुरी है कि इस विद्या को कौन और कबसे शुरु किया है? क्या कोई ऐसे लोग है जो इस विद्या का आचरण करके अनुभव पाये थे?इस विद्या की आधार केलिये कोई शास्त्र है क्या?

इसतरह मालूम किये बगैर ही ऐसा समझना गलती है कि जो कुछ सुना है जो कुछ देखा है वह सब योगविद्या ही है। इस योगविद्या केलिये षटशास्त्रो में आखरिवाली योगशास्त्र ही आधार है। योगशास्त्र में योग केलिये जो शासन ज़रुरी है वे सब खुले तरीके से रहते हैं। सिवाये योगशास्त्र के बाकी पांच शास्त्रों को मानव ने ही तय्यार किया है। लेकिन सिर्फ योगशास्त्र तो भगवान से (परमात्मा से) उद्भव हुयी जो मानव रुप में है। बाकी पांच शास्त्रों से प्रपंच में अनेक फलित मिलते हैं मगर योगशास्त्र से सिर्फ एक ही एक फलित मिलरहा है। कर्म नाश होकर मोक्ष मिलनेवाला फलित के सिवा योगविद्या में कुछ और नहीं मिलता।

सिर्फ एक ही एक फलित को देनेवाली योगविद्या सब विद्याओं से कष्ट है। इसलिये उतनी आसानी से किसी को भी समझमें नहीं आति। योगविद्या को हासिल करने केलिये बहुत ही दृढ़ता चाहिये होती है वरना वह नहीं मिलती, इसतरह की योगविद्या को सिखानेवाले प्रपंच विद्या को सिखानेवाले प्रपंच बोधकों से भी बडे है। योगविद्या के बोधक पूर्व से आज तक भी मौजूद हैं। उसदिन भी और आज भी योगशास्त्र एक ही है फिर भी बोधा करने वाले बोधक उस दिन से आज बदले हुये हैं। उसदिन या उसज़माने के बोधक योगविद्या को योगशास्त्र के मुताबिक सिखाते थे। लेकिन आज अपने आप को गुरु समझनेवाले बोधक शास्त्र को आधार नहीं करले रहे हैं। अशास्त्रीय पद्दती में बोधा कर रहे हैं। उसज़माने में भक्त को संपूर्ण ज्ञानी करके बाद में योगपद्दती की बोधा करके उपदेश दिया करते थे। उसकेलिये बहुत समय लगता था। लेकिन आज जातेही फौरन उपदेश देनेवाले हैं। पूर्वकाल में बहुत ही पवित्रता के साथ सिखाये जानेवाली विद्या आज क्लास, कोर्सों तक आयी है। उस ज़माने में शिश्यों केलिये

गुरु एक ही है। उसीके ज़रिये उपदेश को पाकर, उसीको ईश्वर (दैव) की तरह पूजा करते थे। लेकिन आज एक बडा गुरु,उसके नीचे असिस्टेंट गुरु बहुत से हिस्से बने। बडे गुरु के पास वक्त नहीं है कहते हुये छोटे गुरुयें ही उपदेश देरहे हैं। लेनेवालों को कुछ नहीं मालूम इसलिये इसतरह समझरहे हैं कि अगर हमें उपदेश मिलगया तो बस काफि हैं। लेनेवालों में सिर्फ यही इच्छा होती है कि बस मुझे उपदेश चाहिये और कुछ नहीं, उसके सिवा ज़रा भी नहीं सोच रहे हैं कि उपदेश का क्या मतलब है उसका फलित क्या हैं? जो लोग थोडा बहुत पढलिये है वे भी बिना सोचें जो मार्ग अच्छा लगा उसीको फालो कर रहे हैं। लेकिन पूर्वकाल में इसतरह बताते थे कि जो कुछ सुना उसकी पूरी जानकारी मालूम करो, जो कुछ मालूम किया उसे अमल करके अनुभव में लालो। और यह भी कहते थे कि जो ज्ञान तू ने मालूम किया उसे दूसरों को बताऊ। लेकिन आज ऐसे गुरु हैं जो इसतरह के निबंधन रखते हैं कि यह बात गुरु रहस्य है इसलिये किसी दूसरे को नहीं बताना चाहिये। और इसतरह कहनेवाले भी आज दुनिया में मौजूद हैं कि सिर्फ जो बोधाएँ हम बताते हैं सिर्फ उन्ही को सुननी चाहिये, दूसरों के बोधाएँ हो, दूसरों के किताबें हो नहीं देखना चाहिये। लेकिन एक बात समझमें नहीं आयि कि जब उनकी विद्या सच में महत्ववाली है तो इसतरह के निबंधनों की क्या ज़रुरत हैं।

ज्ञान वह है जिसमें कोई संशय नहीं रहता। संशयों को बचाकर रखनेवाली ज्ञान नहीं है। लेकिन आज बहुत से लोग ऐसी शास्त्ररहित ज्ञान को फालो कर रहे हैं जो संशयों को दूर नहीं करती है यानि शंशयों को क्लियर नहीं करती है। ऐसे लोगों से अगर हम कहेंगे कि वह रास्ता सही नहीं है तो भी नहीं सुनते। ऐसे

समझनेवाले लोग भी हैं कि जिस ज्ञान पर वे खुद चलरहे है वह ज्ञान असली न होने पर भी उसीको स्वच्छ ज्ञान की तरह समझते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं कि उन्हे जो पसंद आता है उसीको ज्ञान समझते हैं क्योंकि उन्हे यह बात नहीं मालूम कि दैवज्ञान कुछ निबंधनाओं के साथ जुडा हुआ होता है। जिनको इंद्रजाल विद्याओं जैसे माया महत्य बडे लगते हैं वे लोग ब्रह्मविद्या को पहचान नहीं पा रहे हैं। वे लोग इस बात को भूलगये कि इस दुनिया के प्रपंच सुखों केलिये नहीं बल्कि परलोक में मिलनेवाली ईश्वर की सन्निधान केलिये ज्ञान पर चलना चाहिये, इस बात को भूलने की वजह से ही वे लोग उन गुरुओं के शरण में जा रहे हैं जो प्रपंच सुख, प्रपंच के इच्छायें पूरे होनेकेलिये काम करनेकेलिये बोलते हैं (यानि यह काम करने से नौकरी मिलती है,या इसतरह का यज्ञ करने से बच्चे पैदा होते हैं कहकर उन कामों को पूरा करने केलिये पैसों का खर्चा करवाते हैं) शास्त्र साफ तौर पर यह बताती है कि ज्ञान जाने बिना साधना नहीं करनी चाहिये उसके बावजूद भी, पूरा ज्ञान मालूम किये बगैर ही उपदेश पाकर साधना करनेवाले भी कुछ लोग हैं। ऐसे लोग कहते हैं कि हम जो साधना कर रहे हैं उसमें बहुत सुकून मिलता है, साधना में हमें अच्छा फील होता है, उस साधना में नशे से रहता है। उनके अनुभवों को कई प्रकार से बयान करने पर भी यह बात पूरे तरीके से भूलगये कि आखिर ऐसे करने से हमें मिलनेवाला फलित क्या है? कौनसी फलित केलिये काम कर रहे हैं? (यानि इसतरह के साधना से हमें क्या मिलरहा है?) अगर कुछ लोगों से हम इसतरह पूछते हैं कि हर काम का एक फलित होता है ना! तो फिर तुम लोग जो साधना कर रहे हो उसका फलित क्या है? तो जवाब में वे कह रहे हैं कि हमें आत्मशांति से है, पहले से भी मन अब निर्मल से है। असली फलित

को भूलजाकर साधना करना ही इमपार्टेंट समझरहे हैं। योगशासनों को छोडकर जो भी तरीके (पद्दतियाँ) हैं वे योग नहीं होते जिन लोगों को यह बात नहीं मालूम वे अशास्त्रीय तरीके से साधना कर रहे हैं। ऐसी साधना से कर्म को नाश करनेवाली ताकत नहीं मिलती हैं। वह साधना जिसमें कर्मा को नाश करने की ताकत नहीं है उसे कितनी भी गहराई से करलें कोई प्रयोजन नहीं है।

और कुछ लोग कह रहे हैं कि हम आत्मा के बारे में जानने केलिये साधना कर रहे हैं। फिर भी वे कह रहे हैं कि हमारी साधना की वजह से कुछ जन्मों के बाद हमें देवताओं के जनम मिलेंगे। योग का शब्द (लफ्ज) इस्तेमाल करते हुये देवताओं की तरह बदलजायेंगे कहना आश्चर्यकरनेवाली बात हैं। जीवात्मा आत्मा के साथ जब संयोग होता है तब उसे योग कहते हैं। योग शास्त्र बताती है कि योग से मोक्ष मिलता है, पुण्य से उत्तमजनम मिलते हैं, देवताराधना करने से देवताओं के जनम मिलते हैं। ऐसी सूरत में योग से देवताओं के जनम मिलते हैं कहना अशास्त्रीय नहीं है क्या!

कुछ लोग कहरहे हैं कि हमारी साधना केलिये शास्त्र ज़रुरी नहीं है,हमारे गुरु ने हमारे सामने जो आहार (खाना) रखा हैं उसको खाना ही हमारेलिये मुख्य है। इसतरह खाने में कोई गलती नहीं है लेकिन यह सोचना ज़रुरी है कि जो खाना हम खा रहे हैं क्या उससे शरीर में जो रोग (बीमारी) है वह चलेजा रही है, या नये से कुछ बीमारी आरही है। इसलिये कौनसा किसतरह का है कहनेवाला विमर्शना शक्ति तुझमें आनीचाहिये। विमर्शा के द्वारा सत्यासत्य क्या है कहकर मालूम करने की खाबीलियत तुझ में आनी चाहिये। तुम्हे ऐसा ज्ञानी बनना होगा संशयों को फौरन निर्मूलन करसके। तब जाकर योगसाधना करने से कुछ ही मिनटों में योग को हासिल करसकते

हो। वरना प्रपंच में जिसके पास जायदाय ज्यादा है उसको अगर तुम गुरु समझकर उनके बातों को यकीन करोगे तो जीवित का पूरा वक्त बरबाद (व्यर्थ) होजायेगा। जिस रास्ते के बारे में वे बतारहे है उस रास्ते के बारे में योचना करके अगर वह शास्त्रपद्दती है तो उस पर चलें तो भी जीवित साफल्य होगा।

हज़ार बोधको में एक गुरु रहसकता है,या नहीं भी रहसकता हैं। गुरु हज़ार संवत्सरों (सालों) को एक मरतबह ज़मीन पर आसकता है, या नहीं भी आसकता है। इसलिये अगर गुरु के विषय में सावधान नहीं रहे तो तेरा जनम ही बेकार होजायेगा। हर विद्या भी छः शास्त्रों से ही संबंदित होकर रहता है। जब हर विद्या शास्त्रबद्द है तो क्या ब्रह्मविद्या शास्त्रबद्ध कैसे नहीं होगा? शास्त्रीय पद्दती में योग साधना किया हुआ नर (इनसान) योगशक्ति पाकर कर्म से मुक्त होसकता है। श्रीकृष्ण जो योगशास्त्रविशारथ है उसने बतायी हुयी योगशास्त्र यानि भगवद्गीता को देखिये, उसमें के शासनों को ढूंढनिकालिये, आचरण कीजिये,. जरुर योगि से ब्रह्मर्षि तक बढ़ेंगे। जिसे शास्त्र मालूम है वह शास्त्री है,जिसने योग किया है वह योगी है। इसलिये हम यह बता रहे हैं कि योगशास्त्र जानकर शास्त्री बनकर, योग की आचरण करके योगी बनकर, कर्मराहित्य करलेके सिद्ध बनजाओ। शास्त्री न बनाहुआ योगी हो,योगी न बना हुआ शास्त्री हो परमात्मा को पा नहीं सकता।

वक्रमार्ग

भूमि पर एक छोटा देश है तो और एक बडा देश है। इसतरह कई छोटे बडे देशों से भूमि भरकर है। छोटे देश में हो, या

बडे देश में हो कानून के प्रकार उस देश केलिये एक अध्यक्ष रहता है। उस अध्यक्ष के हुकुम (आज्ञा) से उस देश के सबलोग को चलना पडेगा। कानून के मुताबिक सबलोग उसकी इज्ज़त करनी होगी। केवल एक देश केलिये सिर्फ चार पांच साल अध्यक्षपदवी में रहनेवाले को हि इतनी इज्ज़त देनेवाले प्रजा (लोग), उस ईश्वर की इज्ज़त ही नहीं कर रहे हैं जो भूमि पर रहनेवाले सब देशों को ही नहीं बल्कि विश्व में रहनेवाले तमाम गोलों (प्लानेट्स) का आदिकर्ता होकर, विश्व का शाश्वित अध्यक्ष है। पूरे प्रपंच का आदिकर्ता परमात्मा एक जन है,इस बात को जाननेवाले करोड को एक जन रहना भी दुर्लभ है। यह बात बहुत से लोगों को अजीब लगता होगा। बहुत से लोगों को यह संदेह पैदा होसकता है कि कई देवालय मौजूद हैं, बहुत सारे भक्त हैं,कई प्रकार के आराधनायें हो रहे हैं, बहुत ही पैसा ईश्वर केलिये हम खर्चा कर रहे हैं तो ऐसी सूरत में करोड में एक व्यक्ति कहना कितने दूर तक समंजस हैं।

सच कहें तो आज के मानवो में भक्ति है, लेकिन वह भक्ति इस बात पर नहीं कि असली ईश्वर एक ही है। हज़ारों देवताओं को मानव ही तय्यार करलेके उनमें से कुछलोगों की आराधना कर रहा है। मानवों में भक्ति ईश्वर की मार्ग के तरफ आगे न बडते हुये, अन्यदेवताओं के तरफ जाते हुये कब का (यानि बहुत पहले से ही) वक्रमार्ग पकड गयी। बिना गुणवाले ईश्वर को ही आशा दिखाकर उससे कह रहे हैं कि अय ईश्वर तू मेरा यह काम पूरा कर मैं तुझे उसके बदलें में और एक चीज़ दूंगा, लेकिन अज्ञानी यह नहीं जानते कि ये सारा प्रपंच ही ईश्वर का है उसको किसी भी चीज़ ही ज़रुरत ही नहीं है। सिद्धांत के प्रकार शास्त्र में ऐलान करके बतादिया कि ईश्वर कुछ करनेवाला नहीं है,सिर्फ साक्षिभूत है। जिनलोगों को यह

तक नहीं मालूम कि ईश्वर कौन है? वे लोग बहुत सारे देवी देवताओं को बनालेकर असली ईश्वर को कम से कम याद तक नहीं कर रहे हैं। देवताओं के भ्रम में गिरे हुये लोगों को यह तक नहीं मालूम कि ईश्वर कहलानेवाला एक है जो अगम्यगोचर है (यानि इस ज़ाहिरि आँखों को वह ईश्वर नहीं दिखता)। कंठमाधुर्य को बाहर दिखानेवाले भजन,अंदचंद (खूबसूरती) देखलेने केलिये अनुकूलवाले **तिरुनाळ्ळु (टेम्पुल फेस्टिवल या देवोत्सव)** आज मौजूद है। उस दिन ईश्वर के नाम पर मनायेजाने वाले तिरुनाळ्ळु आज ऐसे तय्यार होगये कि सिर्फ समूह में दखेललेने केलिये ही **देवोत्सव** मनाये जाते हैं। क्या यह वर्कमार्ग नहीं है! पूर्व में दैवत्व को बताने केलिये चिह्नों की तरह पैदाहुये देवालय दर्शन केलिये टिकेट्स, पूजाओं केलिये कास्ट (रेट या खीमत) रखकर धनार्जन में (धन कमाने में) मुकाबला कर रहे हैं। क्या यह वक्रमार्ग नहीं है। परमात्मा की चिंता रखते हुये उस परमार्थ की ही बोधा करनेवाले उसे बताना ही हमारा कर्तव्य है कहनेवाले ब्रह्मविद्या के गुरुएँ आज उस परमार्थ को छोडकर प्रपंचार्थवाले विद्याबोधनाओं को करवाते हुये छोटे स्कूल से बडी विश्वविद्यालय तक स्थापना कर रहे हैं। क्या यह वक्रमार्ग नहीं है! पूरे प्रपंच केलिये ईश्वर एक ही है यह बात न जानते हुये एक एक मत या मज़हब केलिये एक एक ईश्वर है कह कर मतद्वेश को बढालेना आज के प्रजाओं का वक्रमार्ग नहीं है क्या! (मंदिर को जाकर ईश्वर से इसतरह मन्नत मांगते हैं कि) अय ईश्वर! तू मेरेलिये ऐसा कर कि हमारे परिवार में से एक व्यक्ति मरजाये उसके बदले में तुझे मैं अपनी जायदाद में से चाराना हिस्सा तेरे हुंडि में डालदूंगा,इसतरह के नीच इच्छायें मांगने की हालता को हमारी भक्ति गिरगयी मतलब क्या वह पूरे तरीके से वक्रमार्ग पकडकर गये जैसा ही हुआ ना!

मानव इसतरह बदलजाने का कारण क्या है? इस बात पर अगर हम योचना करें तो एक, असली ईश्वर के बारे में बतानेवाले गुरु हो स्वामियाँ हो आज नहीं है। दो, ऐसे लोग है जो कहते हैं कि असली ईश्वर एक ही है लेकिन उनकी बात सुननेवाला कोई भी नहीं हैं। इन दोनों कारणों के वजह से दैवमार्ग वक्रमार्ग होगया। कुछ लोगों के मन में एक सवाल उठ सकता हैं कि आज गुरु यानि भक्ति भाव को पैदा करानेवाले बडे बुज़रुग मौजूद है ना!! आप ऐसा क्यों कह रहे हैं कि गुरुएँ नहीं है। उसकेलिये हमारा जवाब यह है कि आज दैवत्व को जाने हुये ज्ञानियों की हालत यह है कि वे लोग आज की समाज को देखकर अगर हम सच कहें तो मनुष्य सुनने की हालत में नहीं है, अगर सच कहेंगे तो जिस हालत में वे हैं उनको यह सब कुछ खिलाफ दिखेगा, उससे खुदको (हमें) ही आफत (मुसीबत) होगी समझकर डर से कुछ कहे बगैर खामुश से है। कुछ बडे बुज़ुर्ग दैवत्व का सारांश उन्हे कुछ मालूम न होने पर भी, जिस रास्ते पर वे चल रहे है वह वक्रमार्ग होने के बावजूद भी, वही बडा है, महत्ववाला रास्ता है कह कर यह रास्ता ही लोगों को खूब पसंद आयेगा समझकर उस रास्ते में और भी कुछ लोगों को दाखिल करने की कोशीशें करते रहते हैं। उदाहरण केलिये एक विषय को बयानकरलेते हैं।

पूर्व के बडे लोगों ने जो तरीकों को दैवमार्ग में बनाकर रखे थे उनको पूरा छोडकर, अपनी पसंद के मुताबिक तय्यार करलिये गये एक देवता को हो या देव को हो खुद आराधना करते हुये वक्रमार्ग में बहुत से लोग सफर (प्रयाण) कर रहे हैं। ऐसे लोग और भी इसतरह कह रहे हैं कि! यह देवता इसीलिये है ताकि हम इससे फायिदा उठासके, अगर हमें फायिदा हासिल करना हो तो उसकेलिये

एक तरीका है, अगर इस देवता की पूजा करें तो इतना फायिदा मिलेगा, जिन्होने नहीं किया उनको नष्ट होगा कह कर लाभ नष्टों की लिस्ट लिखकर, उस लिखत् को कुछ सैकडों कागज़ों पर छाप कर बाटना होरहा है। वे उतने से रुके बगैर जिन्होने उस कागज़ को देखा वे लोग भी वैसी नमूनेवाली कागज़ों को ही तय्यार करके दूसरों को बाटना चाहिये, अगर ऐसा नहीं किया तो उन्हे कष्ट नष्ट आयेंगे, जिन लोगों ने बाटा उनको सुख और लाभ आयेगा। उस कागज़ में यह भी लिख कर रहता है कि जिन लोगों ने इसका पालन किया उन्हे बहुत ही पैसा मिला, जिन्होने इसको मज़ाक समझकर छोडदिया (लैटलि लिया) उनको बहुत ही कष्ट नष्ट आये हैं, जिन्होने भी उस कागज़ को पढा वे हर एक जन भी उसी तरह छाप कर बाट रहे हैं। जिन्होने उस कागज़ को पढा वे लोग भी सिर्फ इसलिये छाप रहे हैं कि हमें कुछ लाभ मिलेगा इसतरह की आशा से हो या नहीं छापेंगे तो नुक़सान को झेलना पडेगा इसतरह के डर के वजह से हो वे लोग ऐसा कर रहे हैं।

कुछ भी न जानने वाले लोगों के बीच में थोडा बहुत जानेहुये लोग इसतरह एक रोग (बीमारी) को दाखिल किये जैसा करने से, वह रोग कलरा क्रिमि की तरह फैलजा रही है। इसतरह जो विषय आज ज़्यादा प्रचार में हैं वही आज के मानव को चिपक कर हैं। अगर उनसे कोई कहेगा कि यह वक्रमार्ग है सही मार्ग नहीं है तो भी उनकी बात को मानव आज सुनने की हालत में नहीं है। शास्त्र बता रही है कि ईश्वर हर ज़र्रे ज़र्रे में फैला हुआ है तो अज्ञान मानव इसतरह का **आशा या डर** पैदा करा रहा है कि अगर यह काम नहीं किये तो तुम्हे नष्ट होगा, यह काम करोगे तो लाभ होगा। लेकिन बहुत से लोगों को यह नहीं मालूम कि जब हमारे कर्म रिकार्ड में

कष्ट आने केलिये लिखा होता है तो ही कष्ट आता है, ऐसा ही अगर हमारे कर्म रिकार्ड में लाभ आने केलिये लिखा होता है तो ही लाभ आता है, यह मूल सूत्र है। भूमि पर कोई भी देवताएँ हो लाभ नष्ट को दे नहीं सकते । (यानि हमारे कर्म रिकार्ड में हमे लाभ आना है या नष्ट आना है यह पहले ही पिछले जनम के हिसाब से लिखा हुआ होता है इसलिये खासकरके इस जनम में लाभ पाने केलिये कुछ करने की ज़रुरत नहीं है, ऐसा ही अगर नष्ट आना ही है तो चाहे कितना कुछ रोकलो नष्ट आकर ही रहेगा यह पूरा कर्मसूत्र के प्रकार होता है जिसे पहले ही ईश्वर ने एक सिस्टम की तरह तय्यार करके रखदिया)। हम इतना सबकुछ कहरहे हैं फिर भी, हम ही नहीं बल्कि योगशास्त्र और पूर्ववाले महर्षियाँ कहने के बावजूद भी असली मार्ग को न पहचान सकके वक्रमार्ग पर ही चलते हुये हमें चिढानेवाले लोग भी हैं।

चाहे कौन भी कुछ भी बोललें सिवाये कर्म के कोई देवता हो, कोई देव हो, लाभ को हो या नष्ट को हो नहीं देसकते। जिसके कर्म में फलाना समय में मरने केलिये लिखकर होता है वह चाहे कितने भी देवताओं को सजदा करने पर भी वह ज़िंदा नहीं बचेगा। जिस के कर्म में मौत लिखकर है वह व्यक्ति सजदा करें या न करें तो भी जीसकता है। आज के ज़माने में बहुत ही पवित्र देवालय है कह कर मशहूर हुये देवालयों के नज़दीक में ही दैवदर्शन केलिये गये हुये लोगों के साथ हादसे होरहे हैं। फिर उनको वहाँ का ईश्वर क्यों बचा नहीं पा रहा है (जिस देवता या देव को वे लोग अपनी जान से भी ज्यादा मानते थे उस वक्त उनको बचाने केलिये वे आये क्यों नहीं, उनके भक्त उनकी दर्शन केलिये ही तो देवालय को आरहे है ना तो उन देवी या देवताओं का फर्ज़ कर्तव्य बनता है कि उनके भक्तों की

रक्षा करें) मन्नत पूरा होने के बाद जो लोग मंदिरों में पैसे हुंडी में डालकर मैं दूसरे साल भी ज़रुर मंदिर को आऊँगा कहकर दुआ मांग कर गये हुये लोग घर वापिस लौट ने से पहले ही रास्ते में मरजा रहे हैं, तो फिर जब क्यों वह ईश्वर उनको उन हादसों से बचा नहीं पाया? क्यों कि वह सबकुछ कर्म के प्रकार होता है इसीलिये वह होकर रहेगा। कर्मराहित्य न कियेजानेवाली मार्ग में ईश्वर की आराधना करने से कोई भी फायिदा नहीं है। प्रवक्ताएँ जिन्हे दैवज्ञान मालूम है उन्होने कही हुयी पद्दती के प्रकार, जैसे भगवद्गीता ने कहा उसके प्रकार दैवाराधन करें तो वे सक्रम मार्ग होंगे, वरना वे अक्रम मार्ग होंगे। पहले इस बात की योचना कीजिये कि दैवमार्ग में सक्रम मार्ग का क्या मतलब है,और वक्रमार्ग का क्या मतलब है? यह बात अच्छे से जानलीजिये कि मानव दिखानेवाले आशाओं के जाल में ईश्वर फसनेवाला नहीं है। पूजा करने से हमें कुछ न कुछ तो ज़रुर मिलेगा समझकर पूजा करनेवाला जिस दिन उसे लाभ मिलता है तब ही ईश्वर की पूजा करता है,जिस दिन उसे नष्ट मिलता है उसदिन उसकी दूषणा करेगा। इसतरह का बरताव न करते हुये कर्म जो इन सबकी वजह है उसके बारे में मालूम करके, उस कर्म को नाश करलेके असली ईश्वर को पहुंचिये।

योग शक्ति

हम लोगों ने यह मालूम किया कि मनुष्य चर्मासन का इस्तेमाल करके, योगदंड को इस्तेमाल करके जिस वक्त वह सही योग में पाबंद रहता है तब जाकर योगशक्ति मनुष्य के शरीर में प्रवेश करती हैं। यहाँ पर कुछ लोगों को इसतरह के संशय पैदा होसकते हैं कि

यह योगशक्ति क्या चीज़ है? वह कैसे रहती है? उससे इनसान को (जीव को) किसतरह का प्रयोजन है? उसकेलिये हमारा जवाब सुनिये।

योगशक्ति यानि उसके बहुत से नाम हैं। ज्ञानशक्ति, परमात्मा शक्ति, आत्मशक्ति, ज्ञानाग्नि कह कर योगशक्ति को ही कहते हैं। चाहे कितने भी नाम रहे शक्ति तो सिर्फ एक ही है। वह कैसे रहती है मतलब न उसका कोई आकार है, न रंग, न टेस्ट, न बो इसलिये वह स्थूल दृष्टि को नहीं दिखती। सिर्फ सूक्ष्म दृष्टि को, ज्ञान दृष्टि को ही दिखती हैं। इसलिये उसके बारे में बतानेकेलिये मौका है (लेकिन दिखा नहीं सकते)। अगर प्रयोजन की बात करें तो प्रपंच में जीवों को उसका प्रयोजन इतना है कि वह मंहु से बयान नहीं कर सकते। बिना ज्ञानशक्ति वाली ज़िंदगी (जीवित) निरर्थक है। पवित्र मानव जनम को पाकर आत्मा के विषयों में मुख्यवाली ज्ञानशक्ति के बारे में मालूम नहीं करसके तो उस मानव जनम का मतलब ही नहीं रहेगा। ऐसी योगशक्ति के बारे में मालूम करते हैं।

योगशक्ति का कोई रुप नहीं है फिर भी आप लोगों को समझमें आने केलिये एक रुप की तरह भावना करके बता रहे हैं। ऐसा समझिये कि योगशक्ति एक प्रकार की धुए के रुप में है। वह भूमि से शुरुहोकर आकाश तक फैली हुयी है। यानि प्रकृतिस्वरुप पंचभूतों में सबमें भरीहुयी है। अगर एक मनुष्य के अंदर भी शक्ति मौजूद है तो बाहर भी मनुष्य के गोलरहती है। जिसतरह समुद्र में प्राणियाँ कहीं भी रहें पानी में ही रहते हैं उसीतरह सब प्राणियाँ योग (आत्म) शक्ति में ही बसे हुये हैं। तेरे मेरे बीच जो कुछ भी आँख को नज़र न आते हुये है वह सबकुछ योगशक्ति ही है। प्रपंच में ऐसी प्राणि ही नहीं है जो शक्ति में न हो। अणु अणु में वही फैली हुयी है उसीको

परमात्माशक्ति, परमात्मा भी कहरहे हैं। इस शक्ति में ही नवग्रहों की स्थूल देह सूर्यगोल, चंद्रगोल, नक्षत्रगोल बांधेजाकर ऐसा दिखरहे हैं कि शून्य में तैर रहे हो। इस योगशक्ति को समूलाग्र से मालूम किया हुआ जीवको वापिस जनम नहीं रहता।

मैं ने कहा था ना कि! योगशक्ति योगि में प्रवेश करती रहती हैं। कुछ लोगों को यह संशय पैदा होसकता हैं कि क्या उससे पहले मानव में बिलकुल भी शक्ति नहीं रहती है? उसका जवाब, एक मानव में ही नहीं बल्कि सर्वजीवरासियों में भी शक्ति समान (बराबर)से रहती है। लेकिन जैसे जैसे योगी योग का आचरण करता रहता है वैसे वैसे उसमें बाहर की शक्ति भी प्रवेश करके ज्यादा होरही है। इसीवजह से गीता में परमात्मा ने इसतरह कहा कि **मेरी पूजा करनेवाले मनुज चार क़िसम से मौजूद हैं, उसमें श्रेष्टवाला ज्ञानि है, उसमें मैं और मुझ में वह रहते हैं।** शक्ति योगी के शरीर में प्रवेश करके सप्तस्थान में स्टोर होकर रहती हैं। इसतरह प्रवेशहुयी शक्ति एक निर्दिष्ट संपूर्ण स्तिथी को पातेही उस योगि को मोक्ष प्राप्त होता है। योग की आचरण करनेवाले सब योगियाँ समान नहीं होते। क्योंकि योगशक्ति एक में ज्यादा एक में कम होसकता हैं। इसलिये उस शक्ति के मुताबिक यह कहसकते हैं कि योगियों में भी छोटे बडों का फरख रहता है। योगशक्ति को धुएँ के रुप में भावना किया है ना! योगि योग करते समय उसके शरीर के सूक्ष्मरंध्रों के द्वारा योगशक्ति उसके अंदर प्रवेश करती रहती है। यहाँ कुछ लोगों को इसतरह का शक पैदा होसकता है कि जो शक्ति बाहर है वह अंदर प्रवेश करके शरीर में उसकी सांद्रता बढने पर, बाहर खालि होजायेगा ना! उसका जवाब, जो धुआ घर भर गाढे से भरकर हैं उसमें से थोडा खिडकी के ज़रिये बाहर चलागया तो घर में खालिस्थल नहीं बनेगा। लेकिन

धुएँ की सांद्रता कम होगी। उसीतरह परमात्मा की शक्ति अपार है उसमें से अणु (Atom) जितना सैज़ में रहता है उतनी शक्ति योगी में प्रवेश करने से खालि स्थल कुछ नहीं बनेगा। मतलब वह ऐसी हालत है कि यह कहने का भी मौका नहीं है कि सांद्रता भी कुछ कम हुयी हो। यानि योगि के शरीर में शक्ति प्रवेश करने के बाद भी बाहर की सांद्रता में कुछ फरख नहीं दिखता। योगि संपूर्णस्तिथि पाकर वापिस पूरे प्रपंच में भरे हुये शक्ति में ही मिलकर मोक्ष पाकर जनम न उठाने के कारण जो शक्ति योगि में दाखिल हुयी वह शक्ति वापिस शून्य को ही पहुँच रही है। इसलिये शक्ति में कहीं पे भी खालि पन नहीं आते हुये हमेशा की तरह हर वक्त रहरही है। इससे यह मालूम हो रहा है कि जीवरुप दैवरुप में बदलने केलिये शक्ती आधार की तरह है। शक्ति ही ईश्वर है, ईश्वर ही शक्ति है। जिसतरह रंग, रुप, टेस्ट, बो वाली कपूर शून्य में मिलने केलिये अग्नि की ज़रुरत है उसीतरह रंग, आकार, गुणों वाला जीव शून्य (परमात्मा) में मिलनेकेलिये शक्ति की ज़रुरत है। योगियाँ बिना शक्ति को कमाये परमात्मा में मिलनहीं सकते। इसलिये हर योगि कष्ट की बरदाश्त करते हुये साधना करलेनी चाहिये। वरना ईश्वर में दाखिल नहीं होसकते।

अनंतशक्तिमय परमात्मा में से संचलन होकर उद्भव हुये प्राणियाँ वापिस उन्हे उसी शक्ति में लीन होना होगा। इसतरह लीन होने केलिये उस शक्ति के बारे में मालूम करनी ज़रुरी है। शक्ति को मालूम करने के बाद अपनी निजस्थल (असली स्थान) कौनसा है, अपना असली नाम कौनासा है, असल में वह कौन है? यह सब मालूम कर सकता है। जबतक शक्ति को मालूम नहीं करता तबतक अपनी असली हालत के बारे में बिलकुल भी मालूम हुये बगैर, अपना

नाम पूछने पर उस नाम को जवाब में बतायेंगे जो पैदा होने के बाद शरीर को रखा गया। वह भी उसे प्रपंच की अखल आने के बाद दूसरे लोगों ने जिस नाम से उसे बुला रहे हैं उसीको वह मेरा नाम समझते हुये उसीको अपनी नाम के जगह बोल रहा है। अगर उससे पूछेंगे कि तेरा असली नाम क्या है तो वह नहीं बतापायेगा। तू कौन है? अगर उससे इसतरह का सवाल पूछें तो कहरहा हैं कि वह फलाना लोगों का बेटा है, वह भी इसलिये कह रहा है क्योंकि सब लोग कहरहे हैं कि तू इन्ही का बेटा है तो वह भी बोलरहा है कि मैं इन्ही का बेटा हूँ। दूसरे लोग पहले ही तुझे यही तेरे मा बाप है कहकर बताए तो तब जाकर तू उन्ही को ज़िंदगी भर माता पिता की तरह कह रहा है, लेकिन शक्ति को मालूम करने के बाद अगर तुझसे यह सवाल पूछा जाये कि तेरे माता पिता कौन है तो प्रपंच में शरीर संबंधि माता पिताओं के नाम न बताते हुये ऐसा जवाब देसकता है कि परमात्मा ही मेरा असली बाप है।

जिसने आत्मशक्ति को कमालिया उसीको बडे लोग योगि कहरहे हैं। योगी के शरीर में प्रवेश की हुयी आत्मशक्ति क्या वैसे ही रहेगी? अगर इसतरह का सवाल पूछें तो, कहसकते हैं कि वैसा ही नहीं रहता। क्यों नहीं रहता मतलब मामूली आग को प्रपंच में सर्व वस्तुओं को जलाने की गुण है। ऐसा ही योगी के अंदर रहनेवाली ज्ञानशक्ति (योगशक्ति) को सर्व कर्मों को जलाने की ताकत है। इसलिये योगी के कर्म जलाकर राख करनेकेलिये शक्ति खर्च होरही है। जैसे जैसे योगशक्ति को कमाते है वह शक्ति थोडा कर्म को जलाने केलिये इस्तेमाल होती रहती है, थोडा बचकर रहता है। जिसदिन कर्म संपूर्ण से जलजाते हैं जो शक्ति जीव के साथ जुडिहुयी है वह शक्ति जीव को अपने अंदर ही लीन करलेके ऐसा करती है उसे

दुबारा जनम न हो। जनम होने केलिये कर्म होना चाहिये ना! मोक्ष पानेकेलिये ज्ञानशक्ति होना चाहिये ना! इसलिये कर्म नहीं है तो जनम भी नहीं है, ऐसा ही ज्ञान नहीं है तो मोक्ष भी नहीं है।

ज्ञानशक्ति को कर्म को जलाने की शक्ति है। इसलिये गीता में परमात्मा ज्ञानयोग में

श्लोक : यथैदामसि समिध्धोग्निर्भस्म सात्कुरु तेर्जुन ।
ज्ञानाग्नि सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ।।

जिसतरह अग्नि में जितने भी लकडियाँ जलकर भस्म होजाते हैं उसीतरह ज्ञानाग्नि से सर्व कर्म भस्म कियेजाते रहते हैं। इसके मुताबिक यह मालूम हो रहा है कि कर्म ज्ञानशक्ति की वजह से निश्शेष से जलजानेका मौका है। और ज्ञानशक्ति की वजह से योगी अपनी कर्म को नहीं बल्कि दूसरों की कर्म को भी जलासकती है। चाहे वह किसतरह की लकडि क्यों न हो अग्नि उस लकडि को जलादेती है उसीतरह ज्ञानाग्नि किसी भी व्यक्ति के कर्म को हो जलासकती है। वह इसतरह है, सुनिये।

शरीर के अंदर प्रवेश की हुयी योगशक्ति को योगी संकल्पपूर्व से दूसरों में दाखिलकरसकता है। इसतरह शक्ति को योगी शरीर से बाहर भेजने केलिये चार मार्ग है। **एक हथेलि (तेलुगु ज़बान में हथेलि को अरचेयि कहते हैं), दो पैर (पाद), तीन नज़र, चार वाक (बात)** यह चार योगशक्ति को बाहर भेजनेकेलिये योगि के शरीर में द्वारों की तरह हैं। श्री पोतुलूरि वीरब्रह्मम जी अच्चम्मा के बेटे के आँखों पर हस्त रखने से हथेलि के द्वारा शक्ति उस कर्मजीव वाले में दाखिल होकर उस पाप को जलादी जो अंधत्व की कारण थी। इसलिये अच्चम्म के बेटे को (आँखों की)नज़र आगयी। उसीतरह

ईसा (एसु प्रभु) अंधे के आँखों को मिट्टी लगाकर नज़र लाया था। हथेलि से छूकर कुष्ठ रोगियों को सहित ठीक किया है। और सिर्फ उनके ज़बान से बोलने से जिन्नात भाग गये थे। श्रीकृष्ण आँखों से देखने से ही कुछलोगों के बिमारियाँ ठीक होगये। इसतरह कई महान योगियाँ अपने अंदर की योगशक्ति (ज्ञानाग्नि) को दूसरों को नज़र, ज़बान, हथेलि, पैर के द्वारा संकल्प से प्रसारित करके उनके अंदर के कर्म को जलादिये। इससे यह मालूम होता है कि चाहे तो योगशक्ति किसी के भी कर्म को जलासकति है। जीव जनम लेनेकी वजह कर्म ही है। कर्म को जलाने की ताकत सिर्फ एक परमात्मा शक्ति को ही है। परमात्मा पर यकीन किये हुये लोगों को ही वह शक्ति मिलती है। वह शक्ति हासिल हुयी तो जनम ही अंत होजाते हैं। जनम नहीं है तो जीव अनंतशक्तिमय परमात्मा में लीनहोजायेगा। आत्मा में लीन होगया हुआ जीव जगति के प्रलय प्रभवों से संबंध न रखते हुये हमेशा नित्यानंद में डूबजाता है। इसलिये हम यह कह रहे हैं कि शाश्वित आनंद की पदवी (पोस्ट) चाहिये तो नित्य योग आचरण करके योगशक्ति कमालीजिये।

योगदंड की आवश्यकता

सर्वप्रपंचात्मक परब्रह्म या परमात्मा या ईश्वर सर्वप्राणियों के शरीरों में निवास कररहा है। इसलिये प्राणियों के शरीर के निर्माण में की प्रत्येकता के बारे में मालूम करना ब्रह्मविद्या में मुख्य विषय है। शरीरें अलग होने पर भी उसमें रहनेवाली परमात्मा की अंश एक ही है। चाहे जीव कितने भी हो उनके साथ रहनेवाले आत्मा की वजह से चलरहे प्राणियों के शरीर को अगर हम विभाजित करके देखें तो हर

शरीर दो भागों में दिख रहा है। वही दायें,बायें हिस्से। दायें तरफ जो अवयव है,वही बायें तरफ भी मौजूद हैं। यह चीज़ हर प्राणि के शरीर में गौर करसकते हैं। चिन्टी से लेकर हाथी तक निर्माण एक ही प्रकार से रहता है।

अगर मानव शरीर को गौर (परिशीलन) करके देखें तो एक हिस्से में जो है वही दूसरे हिस्से में भी मौजूद हैं। एक तरफ कान है उसके दूसरे तरफ और एक कान है। दायें तरफ आँख है,उसके बायें तरफ और एक आँख है। दायें तरफ नाक का नथना है। उसके बायें तरफ और एक नाक का नथना है। दायें तरफ आँख, ऐब्रोस, कान वगैरा अवयवों के शुरुआत,अंत जिस दिशा में भी रहे उसके व्यतिरेक दिशा में वही अवयवों के शुरूआत, अंत और एक दिशा में रहते हैं। मनुष्य को मुंह में दातों की संख्या 32 रहने परभी उनमें से 16 एक तरफ, बाकी 16 दूसरे तरफ रहते हैं। उसीतरह सभी बराबर डिवैड किये हुये होते है। ऊपर के दाँतों के लैन में सामने चौडेवाले दांत दो रहते है। उनमें से एक दायें तरफ, दूसरा बायें तरफ रहता है। वहाँ से देखें तो सीधे तरफ तीसरीवाली एक रदनाक (तेज दांत) रहता है। उसीतरह बायें तरफ भी तीसरीवाली एक रदनाक रहता है। ऐसा ही जितने जबड़े के दांत सीधे तरफ रहते हैं उतने ही दांत बायें तरफ भी रहते है। उसीतरह सीधे तरफ एक हस्त उसके व्यतिरेक दिशा में और एक हस्त रहता है। बिलकुल इसीतरह पूरा शरीर दो भागो में दिखता है। जो अवयव अंदर है वे भी दो तरफ डिवैड होकर है। शरीर दो भाग हुआ है ना! वे दो भाग मिले जैसा ऊपर से नीचे तक एक रेखा बनीहुयी है। वह रेखा दायें बायें भागों को डिवैड करते हुये शरीर के ऊपरवाले हिस्से में प्रत्यक्ष से दिखरहा है। यह शरीर के ऊपर नाक के नीचे के भाग में, ऊपरवाले

होट पर बाण की नोक (तीर की नोक) की तरह दिख रही है कुछ लोगों को दाडि पर भी बीच में गड्डा दिखते हुये रेखा बनकर है जैसा दिखरहा है। और कंठ से शुरु होकर लिंग स्थान तक बाल बीच में जो रेखा है उसके पास मिलते हुये (उन बालों को देखें तो) ऐसा लगता है कि एक गीता बनाया हो। खास करके पुरुषों को लिंग के नीचे वीर्यग्रंथों के बीच से गुद स्थान के रंद्र तक छोटी बेल जितनी मोटी रहती है उतने मोटे पन से प्रत्येक से रेखा दिखती रहती है। इसतरह शरीर दो भागों में (दायें बायें) दिखरही है।

पूर्वकाल से अर्थनारीश्वर कहनेवाली शब्द व्यवहार में रहती थी। इस वाक्य को विस्तार रुप से समझायें तो कुछ लोग इसतरह कहते हैं कि आधा शरीर मरद की तरह और आधा शरीर औरत के रुप से रहने से उसे अर्थनारीश्वर कहा गया है। नारि कहें तो प्रकृति, ईश्वर कहें तो परमात्मा का अर्थ है इस भूमि पर ऐसा शरीर ही नहीं है जिसमें प्रकृति और परमात्मा न हो। इसलिये हर एक को यह जाननी होगी कि हर एक शरीर भी अर्थनारीश्वर ही है।

अर्थनारीश्वर तमाम प्रपंच में भरा हुआ है। हर प्राणि के शरीर में उसके साथ जुडकर है। वह इसतरह है कि! अर्थ का मतलब आधा, नारी यानि अबला या स्त्री, ईश्वर यानि बल या पुरुष। अगर हम हर एक शरीर की परिशीलना करें तो स्त्री तत्व, पुरुषतत्व साफ नज़र आही रहा है। जहाँ पुरुषतत्व है वहाँ व्यतिरेकवाली स्त्री तत्व भी है। इसीलिये शरीर दो भागों में डिवैडेड है। एक भाग में पुरुषतत्व है तो दूसरे तरफ वाली भाग में स्त्री तत्व है। इसीलिये शरीर में एक तरफ ताकत ज्यादा रहती है तो, दूसरी तरफ ताकत में व्यत्यास (डिफरेन्स) रहता है। शरीर में एक तरफ अवयव एक

सैज़ में रहते है तो, दूसरे तरफ अवयवों के सैज़ में डिफरेन्स (भेद) है। उसीतरह नज़र में भी, सुनायी देने में भी, हर एक में भी भेद है। जैसे दायें हाथ से पत्थर फेंकते है वैसा बायें हाथ से फेंक नहीं सकते। एक हाथ से उठाया गया वज़न को दूसरे हाथ से उठा नहीं सकते। इसतरह हर प्राणि का शरीर अर्थनारीश्वर आकार से प्रपंच में प्रत्यक्ष रुप से दिख रहा तो यह सच न मालूम होने की वजह से अलग अलग रहनेवाले पार्वती शिव को मिलाकर पुराण बनाकर कुछ लोगों ने कहा कि अर्थनारीश्वर कैलास में है। वह अर्थनारीश्वर नहीं दिखता लेकिन जिस अर्थनारीश्वर के बारे में मैं बता रहा हूँ वह तो खदम खदम पर दिखता ही रहता है। योचना करके देखें तो तूही अर्थनारीश्वर के आकार में है। तू ही नहीं बल्कि तेरे गोल रहनेवाले हर प्राणि अर्थनारीश्वर आकार में ही है। शरीर दो भागों में है यह विषय तो सब प्राणियों पर लागू है। इसतरह शक करने की ज़रूरत नहीं है कि यह दायें बायें का विधान वृक्षों में तो नहीं दिख रहा है? वृक्षों में भी हर पत्ता दो भागों में डिवैड होकर दिख रहा है। छोटे छोटे पत्तेवाली इमली का पत्ता, तुम्मल के पत्तों में दो भागों का विभाजन दिखरहा है। उनमें भी दायें बायों का फरख है।

कुछ लोगों को यह संशय शुरुहोसकता हैं कि यहाँ शरीर को दो भागों में क्यों विभजन करनी चाहिये?आधा बल की तरह आधा अबल की तरह क्यों निर्णयकरना चाहिये?उसका जवाब यह है कि! जीव कर्म के कारण भूमि पर जनम लेकर मर रहा है। कर्म का मतलब पाप, पुण्य है। जीव कर्म अनुभव करने केलिये शरीर को पहन रहा है। शरीर पहनने के दो ही वजह (कारण) है एक पाप, दूसरा पुण्य है। इसलिये शरीर भी दो भागों में डिवैडेड है। शरीर के बगैर कर्म नहीं है, कर्म के बगैर शरीर नहीं है इन दोनों के बीच

जितना सन्निहित संबंध है उतना प्रपंच में किनके बीच में भी नहीं है। कर्म दो भाग ही है इसलिये शरीर भी दो भाग ही है शरीर को दो भागो में डिवैड करनेकेलिये और एक वजह भी है। वह यह है कि!

कर्मरुप होकर ठहरी हुयी प्रपंच को पालने केलिये परमात्मा का अंश थोडे रुपों का समूह होकर ठहरा। वे रुप प्रत्येक शक्तियाँ रखते हैं। प्रपंच कर्मरुप है इसलिये कर्म जो पाप पुण्यों के रुप में है उस कर्म कहलानेवाली धर्म को जीवों पर अमल करने केलिये आत्म अंश ही यमधर्मराज की तरह रुपधारण की। इसीलिये गीताशास्त्र में कहा था कि **दंडनाधिकारो में यमराज भी मैं ही हूँ।** यमधर्मराज कालचक्र का अधिनेता है। **यम ही काल (वक्त) है, काल ही यम है।** काल में पाप पुण्य सूक्ष्माति सूक्ष्म से जीवों पर प्रसार करने केलिये काल के आधीन में प्रत्येक शक्तियाँ सात तय्यार हुये। वे यह है कि १) सूर्य २) चंद्र ३) अंगारक ४) बुध ५) गुरु ६) शुक्र ७) शनि ये सब सृष्ट्यादि में निर्माण हुये हैं। ये सब कर्मचक्र के अधिनेताएँ हैं। गौर करनेवाली बात यह है कि काल (यम) के अनुसार कालचक्र, आदित्यादि सप्त ग्रहों के अनुसार कर्मचक्र घूम रहा है। कर्म कालचक्र के आधीन में है। जैसे जैसे वक्त (काल) हटता रहता है कर्म भी हटता रहता है। काल, कर्म ईश्वर के आधीन में रहते हैं। इनके बारे में बाद में बताऊंगा। अब हम यह बताना चाहते है कि

सूर्य से लेकर शनि तक कुल सात जन है ना! ये सात जन को एक एक दिन एक एक को प्रपंच की पालना में सिंहासन अधिष्टान करने का अधिकार है। इसलिये पहले दिन सूरज ने प्रपंच सिंहासन को अधिष्टान किया। इसीलिये उसदिन को इंग्लीष में सनडे तेलुगु में आदिवार कह कर नाम रखना हुआ। दूसरे दिन चंद्र ने

प्रपंच सिंहासन को अधिष्टान किया। इसीलिये उस दिन को तेलुगु में सोमवार, इंग्लिष में मून डे कह कर नाम रखा तो आखिर में वह मन डे होगया (यानि **मून डे** में ऊ का झटका गायब होकर **मन डे** में बदलगया)। तीसरेदिन अंगारक ने प्रपंच सिंहासन का अधिष्टान किया। इसलिये उसदिन का नाम मंगलवार हुआ। ऐसा ही बुध, उसके बाद गुरु, उसके बाद शुक्र,फिर शनि लैन से एक के बाद एक प्रपंच सिंहासन का अधिष्टान करने से उन उन दिनों को उनके नाम ही रखेगये। पहलीवाली आदिवार से ही सृष्ट्यादि शुरुहुयी है। उसदिन से लेकर वे सात ग्रह क्रम के साथ (व्यवस्तिथ रुप से) प्रपंच की पालना कररहे हैं। अबतक भी वे सातदिनों को ही हम वारों (हफ्तों) की तरह हिसाब करले रहे हैं। सप्तग्रह कर्म के मुताबिक दो भागो में रहने की वजह से, सप्तग्रह में से थोडे पाप को पालनेवालों की तरह, थोडे ग्रह पुण्य को पालनेवालों की तरह चीरजाकर गुरुवर्ग, शनिवर्ग बने। दोनों वर्गों में नायक गुरु, शनि ही है। इसलिये गुरुपार्टी, शनिपार्टी कह कर उनके नामों को ही उनके वर्गों को रखे गये। दोनों वर्गों केलिये क्रमशिक्षकणा के वीक्षक राहु,केतु ग्रह है।

हर काम सही ढंग से होना है तो उस काम केलिये, उस काम को करनेवाले केलिये एक पर्यवेक्षक रहना चाहिये। पाप पुण्यों को पालनेवाले दोनों वर्गो केलिये पर्यवेक्षक अधिकारियाँ राहु, केतुवु है। जो राहु केतु पहले नहीं थे वे बाद में ग्रहों के समूह में दाखिल होकर उनकी व्यतिरेक दिशा में घूमते हुये सबसे मिलरहे हैं। जांच अधिकारियों की तरह आकर वे भी काम करते हुये सप्तग्रहों के सामने आरहे हैं। राहु,केतु समान दूर में रहकर समान स्पीड रखते हुये जब जब सात ग्रहों से मिलरहे है लेकिन वे दोनों एक दूसरे के साथ कभी नहीं मिलरहे हैं। सब विषयों में इन्हे प्रत्येकता है। इसलिये

इनको भी हर दिन अधिकार है। हर दिन राहु काल के नाम से 1.1/2 घंटे का वक्त नियम (एलाट) किया गया। 1.1/2 घंटे के प्रकार सात दिनों केलिये राहुकाल 10.1/2 घंटे होरहा है। ऐसा ही सात ग्रहों केलिये हरदिन सप्तग्रहों में एक एक को 10.1/2 घंटों का वक्त हफ्ते को आरहा है तो, राहु, केतु को मिलाकर एक हफ्ते केलिये 10.1/2 घंटा आ रहा है। सप्तग्रह खगोल में दायें से बायें तरफ घूम रहे हैं तो राहु केतु बायें से दायें तरफ घूम रहे हैं।

खास करके सप्तग्रहों की हालात ऐसी है कि!जब पूरे ग्रह सात हैं तो,यानि सृष्टी के शुरुआत में ग्रहें दो भागो में डिवैड किये गये थे ना। क्योंकि प्रपंच में पाप पुण्यों को पालनेकेलिये ही तो ग्रहों का निर्माण किया गया था ना! इसलिये पाप को पालने केलिये कुछ लोग,पुण्य को पालने केलिये कुछ लोग बने। १) सूरज २) चांद ३) अंगारक ४) गुरु एक समूह (गॄप) की तरह १) बुध २) शुक्र ३) शनि एक समूह की तरह ठहरे। इसतरह सप्तग्रह दो हिस्से होगये। दो पार्टीयों की तरह तय्यार हुये ये लोग एक पक्ष वाले दूसरे पक्षवालों के सख्त विरोधियों (शत्रृओं) की तरह ठहरगये। पाप पुण्य से जितनी दूर है ऐसा ही इनकी अन्योन्यता भी उतनी ही दूर है। मतलब पार्टी के मुताबिक ही ये परमशत्रृ जिन पर इनको अधिकार चलानी है वह तो प्रपंच के प्राणियों पर ही है ना। इसलिये जीवों के शरीरें भी इनकेलिये दो हिस्सों में तय्यार हुये। वहीं दायें बायें हिस्से। मुख्य से गौर कीजिये हमारी सांस भी थोडी देर बायें तरफ, थोडी देर दायें तरफ के नाक के नथनों में खेलती रहती है। यह बात याद रखलें कि सप्तग्रह दो भाग होने के वजह से ही सांस भी इसतरह दोनों नथनों में खेल रही है।

दो वर्गों में आखिर में रहनेवाले गुरु,शनि दोनों ही अपने अपने पार्टियों में मुख्य सदस्य हैं। इसलिये गुरुपार्टि,शनिपार्टि कहा जा रहा है। गुरुपार्टि में सूर्य, चंद्र, कुज तीनों, शनिपार्टि में बुध, शुक्र दोनों रहने से गुरुपार्टि में एक जन ज्यादा होगये हैं। इसलिये इसतरह की ज्यादती न रहने केलिये, दो पार्टियाँ बराबर रहने केलिये, यम (काल) ने परमात्मा से प्रेरेपित होकर चंद्र के निर्णीत काल में गुरुपार्टि में, उसीतरह शनिपार्टि में उसके बराबरवाली काल में, चंद्र को रहेजैसा नियम किया। इसीलिये चंद्र काल के अनुसार थोडा वक्त एक पक्ष में, और थोडा वक्त औ र एक पक्षवालों में दाखिल होता रहता है। इसके मुताबिक हमारे अंदर चलनेवाली सांस भी थोडा वक्त दायें तरफ, थोडा वक्त बायें तरफ हर दिन खेलरही है। जिन दिनों में चंद्र गुरु पक्ष में रहता है तब बढते हुये, पुन्नम (पौर्णमि) की तरह रुप बन रहा है। व्यतिरेक पक्षवाली शनि पार्टी में चंद्र हर दिन बारीक होते हुये, आखिर में अमावास्या की तरह बन रही है। यह तो सबको प्रत्यक्ष से दिखायि देरहा है। गौर करें तो यह सबकुछ शरीर निर्माण में ही मालूम हो रहा है। आखिर शरीर दो भागो में क्यों तय्यार हुयी है? वह इसलिये कि पाप पुण्य कहलानेवाले दो चीज़ों केलिये ही शरीर ज़रुरत है, इसीलिये शरीर दो भागों में ही तय्यार हुयी है। सप्तग्रह पाप पुण्यों के अनुसार ही दो पक्षों की तरह तय्यार हुये। इसलिये शरीर भी दो पक्षों की तरह ही तय्यार हुयी है। इसलिये इस शरीर को अर्थनारीश्वर का नाम आया है। शरीर के अवयव अंदर सूर्यचंद्रनाडियों की तरह,बाहर दायें बायों में डिवैड होकर है अगर हम इसतरह डिवैड की गयी शरीर के अवयवों के बारे में मालूम करलिये तो यह मालूम करने केलिये थोडा रास्ता बनजाता है कि आखिर परमात्मा क्या है और वह किसतरह रहता

है। भगवद्गीता में परमात्मा ने कहा कि शरीर क्षेत्र है तो मैं क्षेत्रवेत्ता हूँ। जब तक शरीर कहलाने वाली क्षेत्र के बारे में मालूम नहीं करेंगे तबतक क्षेत्रवेत्ता के बारे में मालूम करने का मौका नहीं रहेगा। इसलिये ब्रह्मविद्या में क्षेत्र के बारे में जानना मुख्यांश है।

दायें बायें दो भाग मिलकर बनीहुयी शरीर से ही तो मानव को भक्ति, ध्यान, योग अमल करके आत्मा के बारे में मालूम करनी होगी ना! इसलिये योग अमल करनेवाले हर एक व्यक्ति गुरु, शनि पक्षों को ज़रुर मालूम करके योगाचरण करनी चाहिये। वरना उनका योग निष्प्रयोजन है। यानि उनका योग कुछ काम का नहीं। गुरुपक्षवाले दिनों में सीधे तरफ की शरीर ब्रह्मशक्ति को समझने की ताखत रखती है। शनि पक्षों के दिनों में बायें तरफ का शरीर ब्रह्मशक्ति को समझने की ताखत रखती है। हमारे बडों ने इस रहस्य को बहुत पहले ही मालूम करके उसके प्रकार ही वे योग करनेकेलिये योगदंड का इस्तेमाल किया करते थे। लेकिन कालक्रम में विपरीत भक्त (ढेडे भक्त) आकर एक भी विषय को मालूम नहीं करसके, ऊपर से बडों ने जो बताकर अमल किये उसको व्यर्थ कहदिया। लेकिन उनको यह बात नहीं मालूम कि जिन्होने इन बातों को, अमल को व्यर्थ कहा है असल में तो वे लोग जिन तरीकों को अमल कर रहे हैं वही व्यर्थ है। जिन मार्गों (रास्तों) पर पवित्र महर्षियों ने चलकर दिखाया उन रास्तों को ही सही नहीं है कहरहे हैं। इस ज़माने के भक्त जिन्हे सूत्र तक नहीं मालूम वे कहरहे हैं कि योगदंड से हमे क्या काम है?

योग का मतलब ही आत्मा से मिलना है, हेना! योगदंड शब्द को देखते ही आसानी से मालूम होजारहा है कि यह ज़रुर आत्मसंबंध जोडनेकेलिये इस्तेमाल किये जानेवाली चीज़ है। ऐसी योगदंड को

इस ज़माने में बहुत से लोग आसानी से लेरहे है (यानि लैट ले रहे हैं)। क्या उस ज़माने के विश्वामित्र वशिष्टादि मुनियाँ हमसे कम अखलवाले हैं क्या? या क्या उन्हे विधान (तरीके) नहीं मालूम! वे लोग बहुत ही महत्ववाली योगविद्या संपन्न होकर योगदंड को इस्तेमाल करके उन्होने योग को हासिल किया तो, उनसे कमदर्जेवाले हम बिना योगदंड के ही योग को कैसे हासिल करसकते हैं! बिना योगदंड के योग हासिल करना ख्वाब में की बात है यानि ना मुमकिन है। इसलिये आज बडे बडे स्वामियाँ कहकर नाम पाये हुये लोग भी जैसे भगवान ने गीताशास्त्र में अक्षरपरब्रह्मयोग में कहा वैसा ही अंत्यकाल में रात के वक्त हो,दक्षिणायन में हो, उत्तरायण में हो मर रहे हैं। इसतरह उसवक्त में मौत पाने से प्रत्यक्ष से यह मालूम हो रहा है कि उनको दुबारा जनम है यानि फिर से वे लोग पैदा होरहे हैं। जिन लोगों ने देश में भक्त कह कर नाम पाये थे वे लोग भी सुबह, शुक्ल पक्ष, उत्तरायण के समय के अलावा दूसरे समय में मर रहे हैं मतलब इससे साफ मालूम हो रहा हैं कि और भी बहुत कुछ ऐसे ज्ञान के विषय बाकी है जिनके बारे में उन्हे मालूम करनी चाहिये और अमल करनी चाहिये। गीताशास्त्र में अक्षरपरब्रह्मयोग २८ श्लोक में भगवान ने कहा कि **जिसने शुक्ल, कृष्ण पक्षों के बारे में जानलिया वह वेदों से, यज्ञों से, तपों से, दानों से प्राप्त होने वाले पुण्यफलों को अतिक्रमकरनेवाला है।** गीताशास्त्र की बोधा करनेवाले बोधकों को ही जब यह नहीं मालूम कि पक्ष का क्या मतलब है तो, उनको यह कैसे मालूम हो सकता है कि शुक्ल,कृष्ण पक्ष क्या है? गीताशास्त्र में भगवान ने जब विषय को खुले तरीके से बयान करचुका है तो, इस ज़माने में कथाओं को उपमानों की तरह कहते हुये, भगवान के भावों को छोडकर दूसरे भावों में गिर रहे हैं। दिन में सुबह, रात और

महीने में शुक्ल, कृष्ण पक्ष, संवत्सर में उत्तर दक्षिणायन क्यों है? जब कोई भी हो इन सवालों पर गौर करके उनका रहस्य गुरु से जानता है वही धन्य है, वही सर्वज्ञ है। लोग कह रहे हैं कि हम यह जानते हैं कि ईश्वर (परमात्मा) पूरे प्रपंच में भरा हुआ है। लेकिन वह बात को वे लोग खुद अहसास करके नहीं कह रहे हैं बल्कि दूसरे कह रहे हैं तो उनकी बात सुनकर कहरहे हैं। लेकिन उन्होने खुद में इस बात का स्पष्टीकरण नहीं करलिया कि निज से (असल में) पूरे प्रपंच में परमात्मा किसतरह भरकर है? मंदिर में ईश्वर सूक्ष्म से बात करना देख ही रहे हैं। जिन्नात जिसम के ऊपर आकर बात करना भी देख ही रहे हैं। लेकिन कोई भी इस विषय पर विचार नहीं कर रहा है कि क्यों ऐसा हो रहा है?इसकी निजस्तिथि (असलि हालत) क्या है?इन विषयों पर इनसान को दिलचस्पि ही नहीं है। जो कुछ है वह स्वार्थ ही है। पहले से भी यही भूमि थि। सब यह बात अच्छी तरह जानते है कि इस भूमि पर कितना भी तडपलो मरते वक्त तो कुछ लेकर जानेवाली चीज़ है नहीं तो फिर क्यों इनसान इतनी परेशानियाँ उठा रहा है। अपनी हखीकत को न जानते हुये एक न एक दिन ज़रुर छोडकर जानेवाले चीज़ों के लिये ही मानव काल (वक्त) को इस्तेमाल करले रहा है।

सप्तग्रह नवग्रह होने से पहले जो विधान था वह यह है कि! सप्तग्रहों को सप्तदिन निर्देश किये गये है ना! ग्रहें दो भागों में डिवैड किये गये है ना! उनके मुताबिक दिन भी दो पक्षों (भागों) में डिवैड किये गये। आदिवार, सोमवार, मंगलवार, गुरुवार एक हिस्सा है तो, बुधवार, शुक्रवार, शनिवार एक हिस्से की तरह बडों ने निर्णय किया। दोनों भाग ईक्वल रहने केलिये चंद्र १५ दिन एक तरफ, बाकी १५ दिन दूसरे तरफ बदलता रहता है। इसतरह बदलने को ही पक्ष

कहते हैं। इसतरह चंद्र बदलने से दो पक्षों के ग्रहों को बराबर ताकत मिलरही है। यह मालूम हो रहा है चंद्र जब गुरुपक्ष में दाखिल होता है तो वह शुक्ल पक्ष है उसीतरह चंद्र जब शनिपक्ष में दाखिल होता है तो वह कृष्ण पक्ष है। शुक्ल पक्ष में आदि, सोम, मंगल, गुरुवार एक की तरह, कृष्ण पक्ष में बुध, शुक्र, शनि, सोमवार एक की तरह हैं। शुक्ल पक्ष आदि, सोम, मंगल, गुरुवारो में शरीर में सिर्फ सीधे तरफवाला भाग ही ब्रह्मशक्ति को ग्राहित करने की ताकत को रखती हैं। उनदिनों में शरीर का बायां हिस्सा ब्रह्मशक्ति को ज़रा भी ग्राहित नहीं कर सकता। कृष्ण पक्ष बुध, शुक्र, शनि सोमवारो में सिर्फ बायें तरफ का शरीर तो ब्रह्म शक्ति को ग्राहित करलेने की सामर्थ्य रखती है। इन दिनों में शरीर का दायां हिस्सा ज़रा भी ब्रह्मशक्ति को ग्राहित नहीं करसकता। इसलिये योग को अमल करने की वक्त जिस दिन हम योग कररहे हैं, वह दिन शरीर में कौनसे भाग से संबंदित है यह मालूम करके उस भाग में ही हम में जो सांस खेलरही है उस सांस को चलाते रहना चाहिये। जिस भाग में सांस ज्यादा चलती है उस भाग में रहनेवाले अधिपति ग्रह ऐसा करते हैं कि ब्रह्मशक्ति जिसम में दाखिल हो। इसके बगैर अगर सांस व्यतिरिक्त दिशा में चलरही है तो उस दिशा में ब्रह्मशक्ति को लेनेवाली ताकत कम होजाती है। इसके लिये उदाहरण के तौर पर समझाया जारही बात है यह!

मानलीजिये कि एक योगि मंगलवार को योग आचरण कर रहा है। मंगलवार गुरुपक्ष में पहुंची। इसलिये गुरुपक्ष शरीर में सीधेपार्श में अधिकार रखती हैं। इसलिये वह योगि ऐसा करलेना चाहिये कि उसकी सांस सीधे तरफवाली नाक की नथने में ही खेलें। जब तक सांस सीधे नाक के नथने में खेलती है तबतक जितने देर

योग किया उतनी देर तक योगशक्ति सीधेतरफ शरीर के सूक्ष्मरंद्रों के द्वारा अंदर प्रवेशकरता रहता है। इसके अलावा अगर सांस बायें नाक के नथने में खेल रही तो योगि कितने देर योग में रहने पर भी ब्रह्मशक्ति उसमें दाखिल नहीं होती। द्वार बंद होकर रहते हैं। इसलिये शक्ति अंदर दाखिल नहीं होसकती। सांस बायें तरफ बदलने से बायें तरफ के शरीर में सूक्ष्मरंद्रों के द्वार खुले हुये रहते हैं। वह दिन गुरुपक्ष का दिन है। इसलिये ब्रह्मशक्ति बायें तरफ दाखिल नहीं होती। क्योंकि वह दिन बायें तरफ के ग्रहों का दिन नहीं है। इससे यह मालूम हो रहा है कि! जिसतरफ सांस चलरही है, सिर्फ उसतरफ का शरीर का भाग ही शक्ति को लेसकता है। दिन जिस पक्ष के होते हैं उस पक्ष के भाग को ही ब्रह्मशक्ति रहती है। इसलिये ब्रह्मशक्ति को कमालेने वाले योगियाँ पूर्व में योग समय जिस पक्ष का दिन है उस पक्ष के दिन को ही उस तरफ ही सांस को चलाया करते थे।

गुरु शनि पार्टी के दिन कालक्रम में एक तरीके से बदलते रहते हैं। लेकिन सांस जो हम में है वह एक तरीके से नहीं बदलती। सांस जैसी उसकी मरज़ी है वैसे जिस तरफ वह चाहती है उसतरफ वह बदलती रहती है। इसतरह बिना तरीके वाली सांस को एक तरफ रोक कर योग को सार्थक करलेने केलिये जिस दंड का इस्तेमाल किया जाता है उसीको **योगदंड** कहते हैं। योगदंड का इस्तेमाल न करने पर भी कुछ लोग जानते हैं कि योगदंड कैसा रहता है।

हम में जो सांस है उसे हम अगर एक ही तरफ ज्यादा खेले जैसा करना चाहते हैं तो, उसके व्यतिरिक्त शरीर भाग में योगदंड का विनियोग करना चाहिये। खंदे के नीचे, हाथ के कोने के ऊपरवाले भाग पर योगदंड के पंगे पर टेका रखके उसके नीचे के कोने को

ऐसा रखना चाहिये कि वह भूमि पर छूए। इसतरह रखने से उस हाथ के नर को दंड की प्रेशर लगने से सांस उसकी व्यतिरेक दिशा में बदलेगी। उदाहरण केलिये बुधवार को योग करने की वक्त बायें तरफ सांस खेलनीचाहिये। इसलिये सीधेहाथ के नीचे योगदंड को रखलेना चाहिये। सीधेतरफ दंड को रखलेने से सांस खुद ब खुद बायें तरफ चलाजाता है। अगर दायें नाक के रंद्र में हवा ज्यादा आ रही है तो बडे लोग कहते थे कि वह सूर्य नाडि है, अगर बायें नाक के रंद्र में ज्यादा हवा आ रही है तो उसे चंद्रनाडि कहते थे। सूर्यचंद्र नाडियाँ हमारे स्वाधीन में रहकर चलने केलिये योगदंड ज़रुर रहनी चाहिये। इसका पूरा रहस्य खुले तरीके से जानते होने से वशिष्टदि महामुनियाँ सहित योगदंड को छोडे बगैर अपने पास ही हर हमेशा रखा करते थे। और वे जहाँ भी जाते थे वहाँ ज़रुर हिरण के चमडे को अपने साथ लेकर जाते थे। लेकिन इस ज़माने में ऐसे लोग तय्यार हुये कि क्यों चर्मासन नहीं है तो क्या होगा? ईश्वर खुबूल नहीं करेगा क्या? उस ज़माने में बडे लोग जिन्हे उसकी अहमियत मालूम था वे तकलीफों की भी परवा नहीं करते थे जहाँ पर जाकर वे योग आचरण करना चाहते थे वहाँ चर्म को, योगदंड को लेके जाकर योग आचरण करते थे। लेकिन आज हम लोगों ने उनकी विसर्जना करना ही नहीं बल्कि, जिन लोगों ने उनका इस्तेमाल किया और जो लोग इस्तेमाल कर रहे हैं उनकी मज़ाक उडा रहे हैं।

चंद्र दोनों तरफ बदलता रहता है। इसलिये इस विषय को खूब अच्छे से समझ करलेना चाहिये। योग करने वाले सब योगियाँ इस विधान का अनुसार करने से ज़रुर तुमलोगों को योगशक्ति मिलेगी। इसके अलावा अगर दूसरा विधान अपनाये तो शक्ति को खोये हुये लोग होजायेंगे आप। **(यह बात याद रखें कि योग पूरे तीन**

प्रकार के हैं,उनमें से केवल ब्रह्मयोग में ही योगदंड को इस्तेमाल करनी चाहिये बाकी दो योगों केलिये इसकी ज़रुरत नहीं है)

१) आदिवार सूर्य का दिन (है) :- सूर्य गुरु पार्टी के संबंदित से है। गुरुपार्टी शरीर में दायें तरफ अधिकार रखती हैं। इसलिये उसदिन ब्रह्मशक्ति दायें तरफ ही आनेकेलिये मौका रहता है। शक्ति शरीर के अंदर प्रवेश करने केलिये दायें तरफ सूक्ष्मरंद्रों के द्वार खुलेहुये रहनी चाहिये। सूक्ष्मरंद्र के कवाट खुलने केलिये सांस सीधे तरफ ही रहनी चाहिये। यानि सूर्यनाडि में ही खेलनी चाहिये। इसलिये योगदंड बायें हाथ के नीचे रखलेनी चाहिये।

२) सोमवार चंद्र का दिन :- शुक्लपक्ष का सोमवार गुरुपार्टी में रहता है। इसलिये सांस सीधे नाक के रंद्र में (सूर्यनाडि में) खेलनी चाहिये। कृष्णपक्ष का सोमवार शनिपार्टी में दाखिल होकर रहता है। इसलिये सांस बायें नाक के रंद्र में (चंद्रनाडि में) रहनाचाहिये। शुक्लपक्ष में आनेवाली सोमवार को योगदंड को बायें तरफ रखलेनी चाहिये। कृष्णपक्ष में आनेवाली सोमवार को योगदंड को सीधे तरफ रखलेनीचाहिये।

३) मंगलवार अंगारक का दिन :- इसलिये गुरु पक्ष में है इसलिये सांस सीधेतरफ (सूर्यनाडि में) खेलनीचाहिये। योगदंड को बायें तरफ रखलेनी चाहिये।

४) बुधवार बुध का दिन :- इसलिये शनि के पक्ष में है। इसलिये सांस बायें तरफ (चंद्रनाडि में) खेलनी चाहिये। योगदंड को सीधे हाथ के नीचे रखलेनी चाहिये।

५) गुरुवार गुरु का दिन :- इसलिये गुरु पक्ष में दाखिल

होकर हैं। इसलिये सांस सीधेतरफ (सूर्यनाडि में) खेलनीचाहिये। योगदंड को बायें हाथ के नीचे रखलेनी चाहिये।

६) शुक्रवार शुक्र का दिन :- इसलिये शनि पक्ष में दाखिल होकर हैं। सांस बायें तरफ (चंद्रनाडि में) खेलनी चाहिये। योगदंड को सीधे तरफ रखलेनी चाहिये।

७) शनिवार शनि का दिन :- इसलिये शनि पक्ष में दाखिल होकर हैं। सांस बायें तरफ (चंद्रनाडि में) खेलनी चाहिये। योगदंड को सीधे तरफ रखलेनी चाहिये।

विज्ञप्ति :- योगसाधना करनेवालों केलिये एक खास सूचना है। हमने कहा था ना कि सांस दायें बायें दोनों तरफ खेलती रहती हैं। गुरुपक्ष के दिनों में योग करते वक्त सीधे तरफ, शनिपक्ष दिनों में योग करते वक्त बायें तरफ सांस को खिलवालेनाचाहिये या चलालेना चाहिये। इसकेलिये हमने बताया कि योगदंड को व्यतिरेक दिशा में इस्तेमालकरना चाहिये। लेकिन उसतरह योगसाधना करनेवालों में से रेरली कुछ लोगों में ही जैसे हमने कहा वैसे सांस नहीं बदलेगी। इसतरह न बदलने से हमने योगदंड की इस्तेमाल करने के बावजूद भी क्यों सांस नहीं बदला? कहकर चिंतित होने की ज़रुरत नहीं है। जैसे हमने कहा बिलकुल वैसा ही योगदंड का इस्तेमाल करके साधना करनी चाहिये।

इस विषय के बारे में और भी खुले तरीके से बयान करें तो शरीर में दायें तरफ बडे से सूर्यनाडि है, उसीतरह बायें तरफ बडे से चंद्रनाडि है। हमारे शरीर में अंतहकरणों में से दूसरीवाली और मुख्यवाली मन है,यह मन होश में सूर्यचंद्र नाडियों पर ही रहती है। एक दिन में सूर्यनाडि पर थोडा वक्त, चंद्रनाडि पर थोडा वक्त मन

निवास करती है। मन दायें तरफ सूर्यनाडि पर जब रहती है तब सांस दायें नाक के रंद्र में ज्यादा आति रहती है,उसीतरह मन बायें तरफ चंद्रनाडि पर जब रहती है तब सांस बायें तरफ के नाक के रंद्र में ज्यादा चलती है। उसदिन अंदर की मन जिसतरफ भी जायें उसतरफ सांस खेलती रहती है। हमने पहले ही बतादिया कि मन को सिर्फ एक नाडि पर रखनेकेलिये योगदंड को इस्तेमाल करना चाहिये। जिस दिशा में योगदंड का इस्तेमाल किये थे उस दिशा में मन न रहते हुये उसके व्यतिरिक्त दिशा में रहता है। इसलिये सांस भी जिसतरफ योगदंड का इस्तेमाल किया उसतरफ खेले बगैर उसके व्यतिरेक दिशा में ही खेलती रहती है। लेकिन सौ को एक दो प्रतिशत कुछलोगों को जब वे साधना करते है उसवक्त योगदंड की इस्तेमाल करने की बावजूद सांस बदले बगैर जिसतरफ योगदंड का विनियोग किया उसीतरफ रहता है। लेकिन अंदर की मन तो वैसे न रहते हुये व्यतिरिक्त दिशा में बदलजाचुकि होगी। योग केलिये मन मुख्य है मगर सांस मुख्य नहीं है। इसलिये न बदली हुयी सांस को लेकर कोई भी चिंता नहीं करनी चाहिये।

योगदंड का विनियोग करते ही फौरन बाहरवाली सांस में किसी तरह का भी बदलाव न आने पर भी, अंदरवाली मन में बदलाव ज़रुर आया हुआ होगा। इसलिये योगशक्ति भी जिसतरफ मन है उसतरफ शरीर में प्रवेशकरती ही रहती है। मतलब हम यह बताना चारहे हैं कि योगदंड का विनियोग करने के बाद जिनलोगों में सांस नहीं बदला वे भी योगशक्ति को खोये बगैर उसे पाते ही रहते हैं। खास करके हर एक को यह बात जाननीचाहिये कि योगदंड का इस्तेमाल सिर्फ इसलिये किया जा रहा है ताकि अंदरवाली मन दायें बायें तरफ बदले। इसीलिये जैसे हमने बताया वैसे ही योगदंड का

इस्तेमाल करके योग करनी चाहिये। और यह बात भी भूलना नहीं चाहिये कि पूर्व में गुरु शनि पक्षो में सूर्यचंद्रनाडियों पर मन बदलने केलिये ही शंकर ने योगदंड का विनियोग किया था, विष्णु अपने सरके नीचे दायें बायें हाथ रखलेकर सोजाकर योग किया था। जब विष्णु, शंकरों ने योग का आचरण किया तो, अगर हम नहीं करेंगे तो वह बहुत बडी कमी है, इसलिये सबलोग जैसे ग्रंथ में कहा वैसे ब्रह्मयोग करते समय योगदंड को इस्तेमाल करलेनी चाहिये।

चर्मासनों की आवश्यकता

यह बात तो सब जानते हैं कि पूर्वकाल में महर्षियाँ सहित योगदंड, हिरण का चमडा हाथ में लेकर फिरते थे। हमने यह तो जानलिया कि योगदंड के बिना योगकरना मुशकिल है। अब हम यह मालूम करते हैं कि आखिर क्यों महर्षियाँ चमडे को इस्तेमाल किया करते थे। योग साधना करते समय ब्रह्मशक्ति या योगशक्ति शरीर में प्रवेश करती रहती है। इसतरह जो शक्ति दाखिल होती है वह शरीर में ब्रह्मनाडि को पहुँच कर सप्तस्थान में रहनेवाली सहस्त्रारचक्र में ढेर की तरह जमा होती रहती है। सहस्त्रारचक्र में दाखिल हुयी शक्ति को ही विष्णु, ईश्वर के चित्रपटों में उनके सर के पीछेवाले हिस्से में रोशनी के रुप में चित्र किया हो तो ऐसा समझो कि वह उनकी ज्ञानशक्ति की निशानि है। इस नूर (प्रकाशशक्ति) को देवताएँ पद्दती के प्रकार योग की अमल करके कमालिये थे (यानि हासिल करलिये)। पद्दती मतलब योगदंड का इस्तेमाल करके, चमडे को इस्तेमाल करके योग करना, चमडे को इस्तेमाल करने के पीछे क्या राज़ छुपा हुआ है? बताता हूँ,सुनो।

योगि ब्रह्मयोग करते समय ज्ञानशक्ति उसमें प्रवेश होती रहती है। जो शक्ति शरीर में प्रवेश की थि वह ब्रह्मनाडि को पहुँच कर, ऊर्ध्व दिशा में प्रयाण करके, सर में सांतवींचक्र में पहुंचती रहती है। इसतरह पहुंचते समय नीचे भूम्याकर्षण शक्ति की वजह से थोडी योगशक्ति ब्रह्मनाडि के द्वारा नीचे आकर्षितकिये जाकर आधार कमल कहलानेवाली नाडिकेंद्र जो गुदस्थान में है उस नाडिकेंद्र के द्वारा भूमि को पहँचती है। लेकिन योगि जब योग करता है तब पूरी ताकत को ज़मीन आकर्षित नहीं करलेती (यानि पूरी ताकत नहीं खींचलेती)। केवल आधा हिस्सा खोना होरहा है। केवल आधा हिस्सा ज़मीन में प्रवेशहोजाने पर भी वह शक्ति वापिस शून्य में मिलजारही हैं। हमारे बडोंने यह बात बहुत पहले ही मालूम किया कि भूमि अपने अंदर ऐसी ताकत को रखती है, इसीलिये वे लोग ब्रह्मयोग करते समय चर्मासनों का इस्तेमाल किया करते थे। चमडे को भूमि पर बिछाकर उसपर योगि बैठने से, योगि के शरीर में जो शक्ति दाखिल होती है उसे ज़मीन नहीं खींचलेसकती। जिसतरह सूर्यकिरण दीवार को पार करके नहीं जासकते वैसा ही शक्ति चमडे को पार करके नहीं जासकती। शक्ति केलिये चमडा निरोध है। देश में चमडे के सिवा कोई भी वस्तु हो शक्ति का निरोध नहीं करसकते। बोरिये पर बैठें या पलंग पर बैठे, कहीं पर भी बैठलो शक्ति का नुकसान ज़रुर होगा। लेकिन चमडे पर बैठा हुआ योगी की शक्ति ज़रासी भी नष्ट नहीं होती।

भूमि पंचभूतों में एक है इसलिये इसको विचित्र आकर्षण शक्ति है। जिसतरह भूमि सिर्फ ऊपर उडीहुयी चीज़ को ही आकर्षण से अपनी तरफ खींचलेती है उसीतरह योगी योग करते वक्त यानि सिर्फ उस समय जब योगशक्ति शरीर में दाखिल होती है तब ही

शक्ति को भूमि अपनी तरफ खींचलेती है। जिसतरह भूमि उस वस्तु को नहीं हिलासकती जो उस पर पडा है उसीतरह सहस्त्रार को पहुँची हुयी शक्ति को ज़रा भी नहीं खींचले सकती। इसके मुताबिक मालूम हो रहा हैं कि सिर्फ योगि योग करते समय में ही शक्ति को खोने का मौका है। बाकी समय में शक्ति का नुकसान नहीं होता है।

कुछ लोगों में इसतरह का संशय आसकता है कि योगी योग करते समय में आधाहिस्सा शक्ति ही क्यों खोता है। यह कैसे बता सकते हैं कि नुखसानहोनेवाली शक्ति आधे से ज्यादा है! या कम है! उसका जवाब यह है कि! शक्ति शरीर में प्रवेश करके ब्रह्मनाडि को पहुँचती रहती है ना! ब्रह्मनाडि में नाभिस्थान से शुरु होकर नीचे के तरफ प्रवेशहोनेवाली पूरी शक्ति को भूमि खींचलेती है। नाभिस्थान से शुरुहोकर ऊपर प्रवेशकरनेवाली शक्ति को भूमि नहीं खींचलेसकती। नाभि से ऊपर प्रवेशकरनेवाली शक्ति को खींचलेने केलिये भूमि को आकर्षण की ताकत कम आति है। इसलिये छे चक्रों में से तीनचक्रों तक ही भूम्याकर्षण शक्ति बहती है। इसलिये योगी सिर्फ आधा हिस्सा ताकत खोने का मौका है। आसन में अगर चमडे की इस्तेमाल करेंगे तो योगशक्ति चमडे को पार करके नहीं जासकता। भूम्याकर्षण चमडे को पार करके शक्ति को नहीं खींचलेसकती। जिसतरह रब्बर विद्युश्चक्ति (करेंट) को रोक रही है उसीतरह चमडा भूम्याकर्षण शक्ति को रोक रही है।

पूर्वकाल में सब योगियाँ चर्म को इस्तेमाल करके योगशक्ति को ज़रा भी खोये बगैर बडे शक्तिवान हुये थे। लेकिन आज के ज़माने के लोगों को जिन्हे चर्म की प्रत्येकता नहीं मालूम वे इसतरह बहस कर रहे हैं कि चमडों से हमें क्या ज़रुरत है? अगर ज़रुरत नहीं है

तो गीता में आत्मसंयमयोग में भगवान ने ऐसा क्यों कहा कि योगि को हिरण के चर्म पर बैठना चाहिये? कुछ लोग इसतरह कहनेवाले भी हैं कि आज के ज़माने में योगदंड, हिरण का चर्म ये सब बिना नागरिकता के पुराने ज़माने के तरीके हैं। (अखलरखने वाले ज़रा सोचिये कि) पुराने ज़माने के तरीकों से पुराने ज़माने के लोगों ने अपनी ज़बान से जो भी कहा उन शब्दों (लफ़्ज़ों) से प्रकृती ही ऊपर नीचे होजाती थी। लेकिन नये ज़माने में नये तरीकों के द्वारा इन्होने आखिर क्या हासिल किया है? कुछ हासिल किये जैसा तो हमें नहीं दिख रहा है। शिव हर हमेशा चर्म को अपने कमर के गोल बाँधलेता था। वशिष्ट, विश्वामित्र आदि महामुनियाँ चर्म को, योगदंड को अपने सैड में ही रखलेकर बहुत ही संभालकर देखलिया करते थे। लेकिन आज के ज़माने में मानवों के बीच इतने पवित्र चीज़ों की कोई अहमियत ही नहीं रही मतलब इससे साफ समझमें आ रहा है कि मानव कितना नीचे गिरजा रहा है।

कुछ लोगों को इसतरह का सवाल पैदा होसकता है कि क्या सिर्फ एक हिरन के चमडा ही योगशक्ति का नुकसान हुये बगैर रोकसकता है? उसकेलिये हमारा जवाब यह है कि! चाहे वह कोई भी प्राणि का शरीर क्यों न हो जो योगी के शरीर से अलग रहता है वह शक्ति को रुकासकती है। चाहे वह चर्म सजीव से भी रहसकता है या निर्जीव से भी रहसकता है। इसीलिये पूर्व में शिव कभी कभार हाथी का चर्म पहनता था, और शेर के चर्म को भी पहना करता था, और भी हिरण का चर्म भी पहना करता था। इससे यह मालूम हो रहा है कि चाहे कौनसे भी प्राणि का चर्म हो एक ही है। योहान जो ईसायि मतकर्ता यानि एसु प्रभु के गुरु थे वह ऊँट के चमडे को पहना करते थे। श्री महाविष्णु जिस सांप पर जिये थे उस पर उन्होने बायें

हाथ पर और दायें हाथ पर सोते हुये सूर्यचंद्रनाडियों को बदलाते हुये योग किये जैसा मालूम होरहा है। वह सांप पर सोया था ना! इसीलिये सांप का चमडा भी शक्ति को रोक रही है। इसतरह हम परिशीलन करने से यह मालूम हो रहा है कि चाहे सजीव हो या निर्जीव हो चर्म तो ज़रुर रहनी चाहिये। लेकिन आज हम अहंकार युक्त होकर हमें सबकुछ मालूम है कहते हुये, अगर कोई भी उसकी अहमियत बताता है तो उसे नीचा दिखाते हुये खुद नीचावस्था में जारहे हैं। क्या हम विष्णु, ईश्वर, महर्षियों से भी बडे हैं! नहीं ना! जिसतरह बिना नज़रवाला अंधा जाकर गड्डे में गिरता है उसीतरह ज्ञान दृष्टी न रखनेवाला मानव जाकर माया के गड्डे में गिर कर, उसीमें डूबते तैरते हर दिन जो काम कररहा है वही काम करते हुये, ज़रा भी परमात्मा के मार्ग को पहचाने बगैर ज़िंदगी जी रहे हैं। गुरु वह है जिसने हमें वह बातें सिखायी जो जो हम नहीं जानते थे, गुरु वह है जिसने हमें वह चीज़े दिखायी जो हम नहीं देख सकते थे, गुरु वह है जब हम अज्ञान में थे तो हमे ज्ञान दिया था अंधेरे में रोशनि बनकर जो आया है वही गुरु है इसलिये मैं यही चाहता हूँ कि उस गुरु पर यकीन रखके गुरुसेवा में जीवित को सफल बनालीजिये, ज्ञानदृष्टी को कमालेकर सर्वज्ञ होजाना चाहिये।

आश्रमों

अब आश्रमों के बारे में बतारहा हूँ। इसमें अब जो विषय बताये जारहे हैं वे सबको नहीं बल्कि सिर्फ कुछ लोगों को खासकरके आश्रमवासियों को विरुद्ध दिखसकते हैं। उनको मुझ पर गुस्सा भी आसकता है। लेकिन इसमें मेरी क्या गलती है? इस विषय को लेकर

मैं जिम्मेदार बिलकुल भी नहीं हूँ। मुझे तो कुछ नहीं मालूम। यह पूरा ग्रंथ आत्म के प्रेरेपित से लिखरहे हैं। लेकिन लिखनेवाला मैं बिलकुल नहीं हूँ। इसलिये मुझे गालि दें या तारीफ करें और इससे आनेवाले कीर्ति अपकीर्तियाँ सब मेरे बाप परमात्मा को और मेरा भाई (सहोदर) आत्मा को पहुँचते हैं।

इस ज़माने में भूमि पर कुछ भक्ताग्रगण्य आश्रमों को बनालेकर हैं। उसमें से थोडे आश्रम बाहर की दुनिया में फेमस न होने पर भी बहुत ही पवित्रता रखते हैं। और कुछ आश्रम ऐसे हैं जो दुनिया में बडे फेमस होने के बावजूद भी उनमें ज़रा सी भी पवित्रता नहीं हैं। और थोडे आश्रम विग्रहों की प्रतिष्टा से भरे हुये होकर इसतरह का शक पैदा करते हैं कि क्या यह देवालय है? या आश्रम? और थोडे आश्रम इसतरह का शक पैदा कर रहे हैं कि क्या यह मंदिर है या स्कूल है या आश्रम है? ये सबकुछ सोचते हुये गये तो हमें यह समझमें नहीं आया कि और थोडे वक्त के बाद आश्रमों की हालत किसतरह बदलजायेगी ।

पूर्व काल में कुछ भक्त भूमि पर आश्रम बनालेकर रहे थे। वे परम पवित्र रहते हुये जिस स्थल में वे निवास करते थे उस स्थल को भी पवित्र स्थल नाम सार्थक हुए जैसा किया। ऐसे आश्रमों के बारे में खुले तरीके से बयान करें तो उन आश्रमों में वे लोग योगसाधना के लिये इस्तेमाल किये जाने वाले वस्तुएँ यानि चर्मासनों को, योगदंडों को बहुत ही संभालकर रखलिया करते थे। इस ज़माने में देखें तो आश्रमों में वे चीज़ें कहीं भी नज़र नहीं आते। अगर दिखनेपर भी सिर्फ दिखाने केलिये (शोआफ करने केलिये) ही उन्हे आश्रमो में रखते हैं मगर उनका इस्तेमाल बिलकुल नहीं किया करते। पूर्वकाल

आश्रमो में देवताओं के प्रतिष्टायें हो, देवताओं के तसवीरें हो कहीं भी नहीं दिखते थे। इस ज़माने में देवताओं के प्रतिमाओं को आश्रमों में प्रतिष्टा किये और कई देवताओं के तसवीरें आश्रमों में रखें हैं। पूर्वकाल में ऐसे लोग थे जिन्होने ब्रह्मविद्या को सीखकर, उसके द्वारा साधना करके, ब्रह्म को मालूम किया तो, यह ज़माने में प्रपंचिक विद्या संस्कृत को खूब सीखकर, शब्दों का मतलब बताना मालूम किये। ब्रह्मविद्या को मालूम न करसके तो भी कम से कम संस्कृत मालूम किये तो भी काफी है समझते हुये आश्रमों में स्वामीजियाँ बनजारहे हैं।

आश्रम बोले तो इसतरह रहनी चाहिये कि आश्रमों में ब्रह्मविद्या को अभ्यासकरनेवाले हो, या तो योगियाँ जिन्होने अभ्यास किया हुआ है रहनी चाहिये। योगदंड, चर्मासन योगकेलिये ज़रुरियाति चीज़ें हैं इसलिये वे ज़रुर रहनी चाहिये। ऐसे लोग बिलकुल भी नहीं रहनी चाहिये जो देवताओं को मानते हो, या देवताओं के बारें में बोधा करते हो। हमेशा परमात्मा को याद करने वाले हो,परमात्म की विद्या को मालूम करके सिखानेवाले हो आश्रमों में रहनी चाहिये। देवताओं के प्रतिमाओं को हो, देवताओं के तसवीरों को हो आश्रमों में बिलकुल नहीं रखनी चाहिये। वह श्रीगुरुदेव की चित्र को रखसकते हैं जो निराकार ही साकार की तरह है। गुरु के आकारचित्र के सिवा दूसरे कोई भी देवता के चित्र आश्रमों में रहनेकेलिये अनर्ह है। गीता शास्त्र में विज्ञानयोग में **प्रकृतिसंबंध पापों की वजह से इच्छायें रखते हुये अज्ञानी होकर अन्यदेवताराधना कररहे हैं इसके वजह से काम्यार्थसिद्धि हासिल होती है मगर मोक्षसिद्धि बिलकुल नहीं मिलती। अल्पबुद्धिवाले पाने का फलित भी अल्प ही रहता है। देवताओं के भक्त देवताओं को ही पायेंगे। मेरे भक्त मुझे ही पायेंगे** कहकर परमात्मा बताचुका था। इसलिये देवताओं की पूजा करने से मोक्ष

कभी भी नहीं मिलेगा। जिन्होने परमात्मा की आराधना की है उन्ही को मोक्ष प्राप्त होता है। आश्रम में मोक्ष को चाहने वाले होनी चाहिये मगर कार्यों को चाहने वाले नहीं रहनी चाहिये। आश्रम निश्चलपरब्रह्म निलयों की तरह रहनी चाहिये। लेकिन जैसे देवालय रहते हैं वैसे नहीं रहनी चाहिये। आश्रमों में रहनेवाले दूसरों को वह परमात्मा के बारे में ही बतानी चाहिये जो देवों का देव है। जब विष्णु,ईश्वर ही सूर्यचंद्रनाडियों के अनुसारण करते हुये असली परमात्मा को प्राप्त करने केलिये हर हमेशा योग कररहे हैं तो, अगर हम आश्रमों में देवताओं के पूजायें करते रहें तो क्या अच्छा रहेगा आप ही बताइए। इसीलिये शंकर (शिव) ने ऐसा कहा कि मोक्ष पाने के लिये सिर्फ परमात्मा एक ही रास्ता है कोई और नहीं है समझकर मैं हरपल महनत उठाकर योग कर रहा हूँ तो, उलटा हमें (शिव से, विष्णु से) मोक्ष मांगनेवाले बुद्धिहीन है। पूर्वकाल में मोक्ष को चाहनेवाले उसमें सहीसे आचरण करते हुये, आखिर में मोक्ष पाये थे, वह सही तरीका था। उसके अलावा इस ज़माने में आश्रमों को तय्यार करलेकर, देवताओं के प्रतिमाओं को उसमें प्रतिष्टा करलेकर, हर दिन पूजायें करते हुये हमें मोक्ष चाहिये कहकर उनसे मांगना इस मिसाल के बराबर है कि भीख मांगनेवालों के पास जाकर भीखमांगे जैसा होता है। देवताएँ ही मोक्ष केलिये तरस रहे हैं तो तुझे कहाँ से वे मोक्ष देसकते हैं। अज्ञान प्रजा देवताओं की पूजा करसकते हैं मगर आश्रमवासियाँ भी देवताओं की पूजा कररहे हैं तो अज्ञानों को, आश्रमवासों को क्या फरख रहता है? इसलिये आश्रमवासियाँ देवताओं की पूजा किये बगैर देवताओं में भी चैतन्यवाली आत्मा को और उसका आधार यानि परमात्मा पर ही यकीन करनी चाहिये। देवताओं की भक्ति में नहीं आध्यात्मिकविद्या में प्रावीण्य होकर रहनी चाहिये।

जीव माया कहलानेवाली समुद्र में, विषय कहलानेवाले मगरमच से, बीवीबच्चे कहलानेवाले समुंदर की मछली के वजह से, जायदाद कहलानेवाले लेहरों से तकलीफ उठाते हुये, समुंदर को न तैर सकके डूबते वक्त, मुझे इस माया के समुंदर से बचानेवाला ही कोई नहीं है क्या कहकर दुख उठाते समय में नाव जैसी दिखकर, उसे माया की समुंदर से बचाकर आश्रयदेनेवाली ही आश्रम है।

आश्रम वह है जो अज्ञान की अंधेरे में रास्ता मालूम न होते हुये परेशान हो रहा व्यक्ति को, काल कहलानेवाली सर्प के हाथों फसकर हर पल उसकी तकलीफ बरदाश्त न करपाकर तडप रहा व्यक्ति को सहारा (आश्रय) देती है, अज्ञान अंधकार को मिटाकर कालसर्प से छुडानेवाले ही आश्रमवासियाँ हैं।

जिसतरह शरीर के रोगों को ठीक करने केलिये वैद्यशाला, और उन वैद्यशालाओं में डाकटर्स होते हैं उसीतरह पापपुण्य कहलानेवाले भवरोगों को ठीक करने केलिये आश्रम, उन आश्रमों में आश्रमवास (यानि आश्रमो में रहनेवाले) रहते हैं। जिसतरह प्रपंच विद्या सिखानेकेलिये पाठशालायें, उसमें उपाद्याय रहते हैं उसीतरह आश्रमों की स्थापना की मक़सद सिर्फ परमात्मा की विद्या सिखाने केलिये ही होना चाहिये। और खास कर आश्रम में रहनेवाले ब्रह्मविद्या को ठीक (सही) से सिखानेवाले होकर रहनी चाहिये।

आश्रम, आश्रमवास ही ब्रह्मविद्या के प्राणवायु (जान) है इसलिये ही इतना सबकुछ कहना पडा। इसलिये अर्ज़ करता हूँ कि इसके बारे में कोई भी गलत न समझे।

गुरुबोधा की आवश्यकता

गुरु शब्द ही अपार और अनंतशक्तिमयवाली है। प्रपंच में जिस मानव पर गुरु का छाया पडा वहीं साकार गुरु है। गुरु खुद के रुप की ही बोधा करता है। गुरु कहता है कि मुझे ही फालो करो, फिर उसीमें दाखिल करलेता है (यानि वह सिर्फ उन्ही लोगों को खुद में दाखिल करलेगा जो उसकी कहा मानकर मरते दमतक चाहे कितनी भी मुशकिलात क्यों न आये सबर के साथ रहकर गुरुसेवा करता है। गुरु के बारे में बताना इतना आसान बात नहीं है। एक लफ्स में कहसकते है कि वह ना मुमकिन है। वह हमारे भावना को ही नहीं मिलता। इसतरह के गुरु के साकार से जिस दिन से जीव शक्ति पासकता है उस समय से ही निराकार से शक्ति खुद में (जीव में) बहना शुरु होजाता है। निराकार से शक्ति जीव में दाखिल होने के लिये पहले साकार से बोधा (उपदेश) या बाप्तिस्म होनी ज़रुरी है वरना परमात्मा की शक्ति जीव में प्रवेश करना ना मुमकिन है। क्योंकि साकार ही निराकार है, निराकार ही साकार है। क्योंकि जीव भी साकार (रुप) में ही है होने से उस साकार गुरु की शरण में आना ही होगा जो असल में निराकार है। गुरु के शरण में जाकर चार प्रकार की सेवा (क़िदमत) करते हुये गुरुओं के पास विनय के साथ बिहेव करते रहें तो एक न एक दिन गुरु को शिश्य पर श्रद्धा आकर अपनी ज्ञानदृष्टी को उस शिश्य पर प्रसार करता है। उससे शिश्य के हृदय में ज्ञान का बीज बनकर वह बढकर मोक्ष कहलानेवाली फल को देती है।

शिश्य संपूर्ण विश्वास रखकर गुरु की सेवा कर रहा तो, वह गुरु जो सबकुछ जानता है, शिश्य के विश्वास को पहचान कर अगर

इसको उपदेश दिये तो क्या उसे सही तरीके से हासिल करपायेगा कि नहीं? यह बात जानकर अगर वह योग्य है तो फौरन उसे उपदेश दे देता है,अब हम यह बयान करलेंगे कि उस उपदेश के समय आँख की नज़र को दिखे बगैर क्या होता होगा? गुरु संपूर्ण शक्ति केंद्र हैं। उपदेश के समय गुरु से ज्ञानशक्ति शुरु होकर शिश्य में प्रवेश करती है। बाहर की शक्ति जो जबतक शिश्य के अंदर दाखिल नहीं हुयी थी गुरुपदेश से फौरन उसके अंदर प्रवेश करती है। तबसे शुरु होकर शिश्य जब भी योग करता है उसके अंदर शक्ति प्रवेश करती ही रहती हैं। जैसे जैसे शिश्य योग करता चलता है वैसे वैसे उसमें योगशक्ति बढती हैं। इस तरीके के अलावा अगर कोई भी व्यक्ति हो गुरु के शरण में जाये बगैर, शास्त्रों से विषय मालूम करके, मुझे सबकुछ मालूम होगया अब गुरु की क्या ज़रुरत है कहते हुये, अब मैं खुद जिनको ज्ञान नहीं है उनको बताऊँगा कहते हुये बगैर गुरुपदेश के जो व्यक्ति योग करता है, उसके अंदर योगशक्ति ज़रा भी प्रवेश नहीं करती। योगशक्ति को पहले अपने अंदर दाखिल करवालेने केलिये पहले ज़रुर गुरु ज़रुरत है। जिस चुल्हे में अग्नि नहीं है चाहे उसमें कितना भी फून्क लो लकडियाँ नहीं जलते चाहे वे छोटे हो या बडे हो। पहले दूसरों के पास से अग्नि को पाकर अपने चूल्हे में डाललेकर, उस अग्नि को ही फून्कने पर वह बडा होकर प्रज्वलित होकर चाहे कितने बडे लकडियों को हो जलाने की खाबीलियत अपने अंदर रखती हैं। इसलिये ज्ञानाग्नि को तुम्हे गुरु के पास से ही पाना होगा। फिर उसके बाद तुम साधना करते रहोगे तो ज्ञानाग्नि तुझमें ज्यादा से ज्यादा प्रवेश करते हुये चाहे कितने भी बडे कर्मों को हो जलाने की ताकत रखती हैं। कुछ लोग गुरुपदेश पाकर हम धन्य होगये अब यह ज़िंदगी केलिये यह काफी है समझते हुये किसी तरह

का भी साधना नहीं कर रहे हैं। उनकी मिसाल (उपमान) इसतरह है कि बगल वालों के पास से अग्नि लेकर आके अपने चूल्हे में डालने के बाद अगर उसको नहीं पूकेंगे तो थोडी देर के बाद वह अग्नि भी बुझ जायेगी। ऐसा ही गुरुबोधा पाकर साधना नहीं किये तो जो ज्ञान की अग्नि गुरु ने दी है वह थोडे वक्त के बाद उनमें ज़रासा भी नहीं रहेगा। किसी भी हाल में पहले गुरुबोधा की ज़रुरत है,उसके बाद योगसाधना की भी ज़रुरत है।

अगर तालाब का पानी जंगल में जाना है तो तालाब के निर्गम मार्ग (आउटलेट) के द्वारा ही जाना होगा। लेकिन कोई और मार्ग नहीं रहता। उसीतरह गुरु जो ज्ञान का केंद्र है, उस के ज़रिये ज्ञानशक्ति शिश्य में जाना होतो गुरुबोधा के द्वारा ही जानी होगी लेकिन कोई और मार्ग नहीं है। तालाब में का पानी जंगल में आये तो ही फसल बडता है। ऐसा ही गुरु में की ज्ञानशक्ति तेरे अंदर आने से ही साधना सफल होता है। वरना, जिसतरह बिना पानीवाले जंगल में महनत उठाने पर भी कुछ फल नहीं मिलता, उसीतरह जिस शरीर में गुरु की बोधा नहीं है उस शरीर में योगशक्ति नहीं बढती। इसलिये प्रपंच में हर प्राणि को गुरु बोधा की आवश्यकता बहुत ही है। इसीलिये हम चाहते हैं कि हखीकत को जानकर मन में की अहंकार को छोडकर, गुरु के शरण में जाकर, ज्ञानशक्ति को पाकर,सही ढंग से साधना करके, तुम लोग मोक्ष पाओ।

आज के ज़माने में गुरुओं की अवस्था

(बोधक को गुरु कहें तो भी कोई बात नहीं मगर गुरु को बोधक नहीं कहनी चाहिये)

गुरु कहलानेवाला बहुत ही मुशकिल से कई हज़ारों सालों को एक मरतबा ज़मीन पर आता है। इसीलिये हर हमेशा ज़मीन पर गुरु नहीं रहता। हर हमेशा सिर्फ बोधक ही ज़मीन पर रहते हैं। बोधा करने वाले सब गुरुएँ नहीं होते, वे सिर्फ बोधक ही होते हैं। जब गुरु भूमि पर होता है उसवक्त गुरु भी बोधकों में मिलजाकर यह पहचानने का मौका तक नहीं रहता कि फलाना व्यक्ति गुरु है। उसवक्त इनसान ऐसी हालत में रहता है कि वह यह तक पहचान नहीं सकता कि बोधा करने वालों में से **आखिर गुरु कौन है?** ऐसी हालत में बोधकों को सबको गुरु ही तरह हिसाब करलेने में कोई गलती नहीं है। लेकिन गुरु को बोधक की तरह हिसाब करलेना नहीं चाहिये। इसलिये नीचे की अथथजी में जहाँ पर बोधक लिखनी चाहिये थि वहाँ पर गुरु कहकर लिखे थे।

प्रपंच में कई विद्यायें हैं। उनके बारें में बतानेवालों को गुरु कहते हैं। सब विद्याओं में से बडी विद्या ब्रह्मविद्या है। किसी भी तरह के काम के बीच में एक कहावत इस्तेमाल करते है वह यह है कि **यह क्या ब्रह्मविद्या है?** (इस कहावत को उसवक्त इस्तेमाल किया करते है जो काम किया जारहा है वह बहुत ही आसान हो उसे सीखने में या करने में कोई मुशकिल नहीं होगी, वह काम आसान है कहने केलिये उस काम को ब्रह्मविद्या से कम्पार कर रहे हैं क्यों कि ब्रह्मविद्या सीखना उतना आसान काम नहीं है उसकेलिये बडी महनत करनी पडती है) इस कहावत से बिना कुछ कहे समझमें आ रहा हैं कि ब्रह्मविद्या कितनी महत्ववाली है। जिसतरह सारे विद्याएँ सिखाने

केलिये गुरु होते हैं उसीतरह ब्रह्मविद्या को सिखानेवाले गुरुएँ भी भूमि पर मौजूद है। सारे विद्याएँ सिर्फ तबतक ही हमारा भला करसकते हैं जबतक हम इस ज़मीन पर ज़िंदा रहते हैं लेकिन ब्रह्मविद्या ऐसी नहीं है यह विद्या मरने के बाद भी हमारी भलाई करते हुये आखिर में इस जनन मरण के चक्कर से बाहर फेंकसकती हैं। इसलिये ही पूर्वकाल में ब्रह्मविद्या सिखानेवाले गुरुओं को राजा महाराजा भी इज्ज़तदिया करते थे, पूजा किया करते थे। उनदिनों में यानि पूर्वकाल में ब्रह्मविद्या को बहुत ही पवित्र समझते थे। इसलिये ही उसविद्या को सिखानेवाले गुरुओं को बादशाह भी बडी इज्ज़त किया करते थे। अगर कभी भी राजसभामंदिर में गुरु प्रवेश करते हैं तो सभा में रहनेवाले सबलोगों के सामने पहले वह राजा जो पूरे राज्य का मालिक है उठकर नमस्कार करके उन्हे उन्नतासन दिखाकर बिठाया करते थे। घरमें गुरुओं के पादों (पैरों) को धो कर उस पानि को पवित्र समझकर उनके सरों पर छिनकलेते थे। अगर मामूलि साधारण मनुष्य है तो और भी ज्यादा ब्रह्मविद्या को महत्व समझकर आदर करते हुये गुरुओं को इज्ज़त किया करते थे।

इसतरह वक्त गुज़रता गया तो आज मानव समाज में ऐसी हालत बनगयी कि उनको यह तक नहीं मालूम कि ब्रह्मविद्या क्या है? पैदा होना ही देरी प्रपंच के पढायियाँ सीखने में ही २५ साल की उमर खर्च होजा रही है। पढायि खत्म होते ही नौकरी केलिये हो,व्यापार करने केलिये हो या एक काम पर अपनी जीवन (लैफ) को चलानेकेलिये अपनी पूरी अखल को इस्तेमाल करते हुये उन कामों में ही पैसा कमाने केलिये ट्रिक्स (उपाय) ढूंढरहे हैं। कुछ वक्त के बाद जो संतान पैदाहुयी उनको बिलकुल अपने जैसा ही तय्यर करने में लग्न होकर जीवन में आखरि दशा यानि वृद्धाप्य (बुढापे) को

पहुंचरहे हैं। उस बढापे में पहले से जिसकी चिंता हमें रहती थी वहीं चिंता हमें आति रहती हैं मगर कुछ और खयाल नहीं आता। इसीलिये प्रपंच योचनाओं में जीवन खत्महोजा रहा है। इसतरह गुज़र रहा नवीन प्रपंच में मानव ऐसी हालत में आज है कि उसे यह तक नहीं मालूम कि ब्रह्मविद्या क्या चीज़ है, आत्मचिंतन क्या है, ब्रह्मविद्या के गुरुएँ बोले तो क्या है और वे कौन हैं?

ऐसे मानवों के बीच ब्रह्मविद्या के गुरुओं की हालत कितना अयोमय से रहता है अब हम कुछ जानकारी के द्वारा मालूम करते हैं। मानलीजिये कि एक गुरु अपने आप को गुरु की तरह न जताते हुये सादा सीदा मामूली इनसान की तरह छोटीसी आफिस को गया था क्योंकि वहाँ कुछ काम था तो गया था। तो वहाँ का छोटा गुमस्ता भी बात नहीं करता। वहाँ के लोगों को कम से कम यह तक नहीं मालूम कि ज़िंदगी के सारंश को बतानेवाले महान लोग गुरु होते हैं, वैसे लोग कम से कम उन्हे बैठने केलिये भी नहीं कहते। सामान्य मानव से भी नीच से बातकरके भेजते हैं। पूर्वकाल में देश के अधिनेताएँ ही इज्ज़तदेनेवाले गुरुओं को, आज गुरु सांप्रदाय और उसका मतलब मालूम न होने से छोटे गवर्नमेंट कार्यालयों में भी गुरुओं को इज्ज़त नहीं है।

मानलीजिये कि ब्रह्मविद्या को मानवों के बीच प्रचार करने केलिये गुरु एक छोटा सा गाँव को गया है। कुछ लोगों से जाकर अर्जकिया कि मैं आत्मज्ञान को बोलरहा हूँ, ज़रासा सुन लीजिये कहने पर वहाँ के बूढे लोग इसतरह जवाब दिये थे कि अरे अब हमारी उमर होगयी है, ज्ञान सुन कर हम क्या करेंगे? मरे तक अच्छे से ज़िंदगी गुज़रे तो काफि है और हमें कुछ नहीं चाहिये। अगर

जाकर युवकों को बताना चाहा तो वे कहते हैं कि हमारे पास वक्त नहीं है जाकर उनलोगों को समझाइए जिन्हे कुछ काम धाम नहीं रहता। पूर्वकाल में राज्यों को पालने वाले राजाएँ भी वक्त निकालकर गुरुओं के पास जाकर ज्ञान सुना करते थे, लेकिन इस ज़माने में छोटीसी संसार (फामिलि) वाले भी कह रहे हैं कि हमें फुरसत नहीं है।

अगर मानलीजिये कि गुरु ने ऐसा कहा हो कि अगर तुम लोगों को सुनने केलिये फुरसत नहीं है तो जब आप लोग फ्री होते हो, जब भी आपको टैम मिलता है उसवक्त पढने के लिये कम से कम किताबें तो खरीद करके पढिये। तो कुछ लोग कहते हैं कि किताबों को मुफ्त में देंगे तो हम लेंगे। किताबें मुफ्त में कैसे देसकते हैं। हम कागज़ को खरीद करके पिंटिंग का खर्चा रखलेकर किताबें तुमलोगों के लिये महनत उठाकर तय्यार किये। कम से कम उसका खर्चा तो देना चाहिये ना! मानलीजिये कि गुरु ने ऐसा कहा हो। तो उसके बदले में वे इसतरह कहते हैं कि अरे भइ... आप को क्या कमी है,आप को तो कई भक्त ढेर सारा पैसा देते रहते हैं। पूर्वकाल में ब्रह्मविद्या के गुरुओं का पूरा खर्चा उनके राजाएँ ही उठाते थे। जो कुछ भी वे पूछते थे उनका पूरा इंतेज़ाम करदेते थे। लेकिन फिलहाल गुरुएँ पैसेवालों के पास जाकर इनर्टेस्ट पर पैसे मांगने पर भी नहीं दे रहे हैं देखिये कैसा ज़माना आगया है। क्या ऐसे लोग किताबें खरीद करके पढसकते है जो बिना सोचे समझे बात करते हैं कि मैं ने मुफ्त में थोडि ना लिया है।

अब भक्तों की बात करें तो मानलीजिये कि एक गुरु को भक्त कहलानेवाले कुछ शिश्य हैं। उसमें से कुछ लोग ऐसे रहते हैं

कि गुरु से फायिदा उठानेकेलिये देखते रहते हैं। एक ज़माने में छोटी सी मटकी को रख के लोटे को उठालेके जानेवाले (यानि चोरी से लेकेजानेवाले) रहते थे तो अब छोटी सी मटकी को दिखाकर लोटे को उठाकर लेके जानेवालें हैं। अगर मानलीजिये कि एक व्यक्ति ने ज्ञान के प्रकार कुछ गलती किया हो तो यह काम गलत है कहकर गुरु ने उसको सज़ा डालादिया तो वह गुरु से ही इसतरह बात करता है कि अगर हम तेरे पास नहीं आयें तो तुझे ही नुकसान होगा देखलो कहकर वहाँ से चलाजाता हैं। अगर उस व्यक्ति से कोई इसतरह पूछता है कि अरे भाई क्यों तू आज गुरु के पास नहीं गया है तो वह कहेगा कि उस गुरु में फलान फलान बुरायियाँ हैं, लेकिन मैं तो इतना अच्छा और सच्चा बन्दा हूँ तो मुझ जैसा बन्दा वहाँ जाना अच्छी बात नहीं है ना कहकर गुरु के बारे में ही बुरा कहते हुये अपने आप को महान बोललेते हैं।

थोडा बहुत आध्यात्मिक चिंतन रखनेवाले एक गुरु लिखे हुये किताबों को पढले रहे हैं। वे चाहते हैं कि उनमें के विषय उनकेलिये अनुकूल से रहे। लेकिन यह नहीं सोचते कि जो बातें लिखी गयी वे सत्य है या असत्य है। कुछ लोग ऐसे हैं कि जो किताबें वे पढ रहे हैं उनमें विषय वैसे ही होनी चाहिये जैसे उन्हे पहले से जिसतरह मालूम था तब ही उन्हे लगता है कि वे बातें सही है,वरना कहदेते हैं कि ये विषय ठीक नहीं है। ऐसी सूरत में गुरु ने लिखी हुयी चाहे वह कितनी भी बडी सच क्यों न हो उनकी कोई अहमियत ही नहीं रह रही हैं। ऐसा ही मानलीजिये कि एक गुरु स्टेज पर छडकर उपन्यास देरहा हो। गुरु केवल ब्रह्मविद्या के बारे में, आत्मज्ञान के बारे में कहें तो कोई भी खुबूल नहीं करता। उपन्यास के बीच में जब जब,जैसे हरिकथा के बीच में चिडियों की कहानि (छोटी सी कहानि) होती है

वैसा ही सुननेवालों को हसाने केलिये कुछ चिडियों की कथायें रहनी चाहिये। अगर गुरु समझेंगे कि ये कहानिया सब बेकार चीज़े हैं, सिर्फ ज्ञान को ही बताना चाहिये तो लोग कहेंगे कि कहनेवाले गुरु को ज्ञान ही नहीं आती।

पूर्व में ज्ञानको अच्छी तरह समझानेवाले को गुरु समझते थे। लेकिन आज पहने हुये कपडों को देखकर, बडानेवाले दाडियो को देखकर गुरु कहलानेवाला भाव जता रहे हैं मगर जो ज्ञान बोली जारही है उसके मुताबिक कोई भी गुरु को नहीं पहचान रहा है। ऐसे ज़माने में असली गुरुओं को समाज में वाल्यु ही नहीं रही। पूर्व में जो गुरुएँ रहते थे उनका पूरा देखभाल राजाएँ अैर दूसरे लोग किया करते थे। इसलिये उसदिन गुरुओं का पूरा दिमाग सिर्फ ज्ञान पर ही इस्तेमाल होकर, कई सच्चे विषय फैन्डोट करके (ढूँढके) लोगों को बताया करते थे। लेकिन आज गुरुओं की हालत बदलगयी है। वे सिर्फ ज्ञान पर ही उनके मनोबुद्धि को केंद्रीकृत (लग्न) नहींकरसकते, थोडा बहुत प्रपंच विषयों पर केंद्रीकृत होकर उनके पेट केलिये उन्हे कमालेना पडरहा है। ऐसे हालातों में कुछ गुरुएँ इसतरह समझरहे हैं कि अपने पास ज्ञान रहकर भी वह कुछ काम का नहीं है, कुछ और रास्ता न होने के कारण कुछ लोग ज्योतिष्य बोललेते हुये वक्त का गुज़ारा कर रहे हैं तो, कुछ लोग वैद्य कररहे हैं, कुछलोग अंत्र,मंत्र कहते हुये वक्त गुज़ार रहे हैं, और कुछ लोग ऐसा कर रहे हैं कि जो चीज़ उनके आस पास रहनेवालों के नज़र (दृष्टि) को भक्ति की तरह दिख रही है उसी पर चलरहे हैं। कुछ लोगों में मन में इसतरह का खयाल रहता है कि अगर हम थोडे बहुत काम नहीं किये तो लोग हमें स्वामि कहकर भी नहीं बुलायेंगे, इसलिये खुद को पसंद रहे या न रहे लोगों को बहका कर लोगों से ही नागपंचमी, नवग्रह प्रतिष्टा

कहकर लोगों के हाथों ही यह सब कारस्तानी करवानेवाले भी मौजूद हैं। कुछ लोग ऐसे हैं कि लोगों के पसंदीदा पुराण पढकर वक्त गुज़ारते हैं जबकि वह अच्छे से जानते हैं कि वे सब अभूत कल्पनाएँ हैं। (यानि बने बनाये हुये कहानियाँ हैं)।

इसतरह बहुत से गुरुएँ नवसमाज में अनेक प्रकार से बदले हुये हैं। क्योंकि उनके पास कोई और चारा भी तो नहीं है इसलिये उन्हे वैसा बदलना पडा। मैं इसतरह नहीं बदलूँगा सिर्फ आत्मज्ञान के पाठ ही सिखाऊँगा कहनेवाले गुरु भी कहीं न कहीं एक जगह ज़रुर रहते हैं। ऐसे गुरु कदम कदम पर कई समस्याओं का, कई प्रतिघटनाओं का, कई ऐतराज़ों का सामना करना पड रहा है। इसतरह का गुरु आम लोगों के नज़र में कुछ भी ज्ञान न रखनेवाले अज्ञानी से भी ज्यादा हीन दिखता रहता है। इसतरह के एक गुरु को हमने देखा हैं। उसके उद्देश्य ऐसा रहता था कि किसी से भी कुछ न चाहते हुये स्वयं महनत करके सिर्फ ज्ञान की ही प्रचार करनी चाहिये। जब वह ज्ञान बोलता था तो गुरु के स्थान में सिर्फ शाश्वित शास्त्र धर्मों की ही बोधा किया करता था। ज्यादा इन्र्टेस्ट पर कर्ज़ा लेकर, ज्ञान के किताब छापने केलिये, ज्ञान प्रचार करने केलिये उन पैसों को इस्तेमाल करके महनत करके क़र्जा चुकाता था। खुद गुरु होकर भी गुरु कहलानेवाली भावना अपने अंदर न रखते हुये कुछ कामों में कूली (नौकर) से भी ज्यादा काम किया करता था। नये जगहों में जहाँ पर उसे किसी ने भी पहले नहीं देखा हो उनके पास जाकर यह नहीं कहता था कि मैं गुरु हूँ, बल्कि खुद को भक्त कहते हुये ज्ञान की प्रचार किया करता था। ऐसे समय में जो लोग उसे नहीं देखे थे वे सब खुद की ज्ञान की तारीफ करते समय में भी वह यह तक नहीं बताता था कि उस ज्ञान को उसीने लिखा था। खुद को गुरु न कहते

हुये मामूली इनसान की तरह रहनेवाले निरहंकार गुरु के पास कई भक्त आना, कुछ वक्त तक उसके ज्ञान को सुनना, आखिर में दूर चलेजाकर उसकी अच्छायी को बुराई की तरह, उसके ज्ञान को अज्ञान की तरह प्रचार करनेवालों को भी हमने देखा। इसतरह जो लोग चलेगये थे वे आज चोरों से, धोका करनेवालों के साथ,जुआ खेलनेवालों के साथ हलमिल कर फिर रहे हैं। जिनलोगों ने महत्ववाली ज्ञान बताये हुये गुरु को दूर करलिये, उनको गलत रास्ते पर जानेवाले अच्छे लगने लगे मतलब उस विषय के बारे में उस गुरु के अंतरंग में बुद्धि सवाल, उनके जवाबों के रुप में योचना कर रही है। वे प्रश्न जवाब इसतरह हैं।

सवाल :- कई गुरु जन ऐसी ज्ञान बता रहे हैं जो लोगों के लिये अनुकूल हो और लोगों के पसंद के मुताबिक बता रहे है। लेकिन आप वैसा नहीं कर रहे हैं आपके अंदाज (स्टैल) में आप कहते हुये चले जारहे हैं। इसीलिये सबको पसंद नहीं आरहा है। इस विषय पर आप क्या कहेंगे?

जवाब :- जो लोग अज्ञान की अंधकार की वजह से संसार की समुद्र में है वे तबतक ही तैर सकते है जबतक उनमें शक्ति रहती है। शक्ति खत्म होते ही उसमें डूब जा रहे हैं। जो लोग संसार की समुंदर में तैर रहे हैं उनसे तुम इसतरह तैरो, तुम उसतरह तैरो कहकर तैरने केलिये आसान उपाय बतलाने के बजाए, मैं समझता हूँ कि ऐसा उपाय बताना बहतर रहेगा कि तैरे बिना, पानी का गीलापन लगे बिना रहे। लोगों को देखकर उनके अनुकूल में गुरु को बदलना नहीं चाहिये। गुरु को देखकर, गुरु के तरीके को देखकर कम से कम एक जन बदले तो भी काफी है। हम जो बोधाएँ सिखा रहे हैं वे सबको

पसंद आने की ज़रुरत नहीं है हज़ार लोगों में से एक जन को पसंद आजाए तो भी काफी है। यहाँ पर मुख्य समस्या पसंद आना या न आना नहीं है। हमारे दृष्टि में तो जो बोला जा रहा है वह धर्म है या नहीं यही मुख्य है। भूमि पर अधर्म को ही ज्यादा अहमियत देनेवाले हैं इसलिये हमारे बोधाएँ बहुत से लोगों को पसंद नहीं आते।

सवाल :- वे कहरहे हैं ना कि उन्हे पसंद नहीं आ रहा है तो उनको जैसा पसंद है वैसे बताएँ तो आप का क्या नुक़सान होगा?

जवाब :- यह जानते हुये भी कि धर्म क्या है? और अधर्म क्या है? दूसरों को पसंद आने केलिये अधर्म विषय को बताना दैवद्रोह, दैवविरुद्ध होता है। उसके कारण **माफ न किये जानेवाली कर्म** लग जाता है, यह बात जानते हुये भी हम कैसे बतासकते हैं?

सवाल :- जिन्हे यह तक नहीं मालूम कि शास्त्र क्या चीज़ है उनसे आप कहेंगे कि शास्त्र एक ही है तो उन्हे उसमें क्या स्वाद (टेस्ट) मिलेगा?

जवाब :- हमने कई बार बताया था कि शास्त्र क्या होता है और वे क्या है? फिर भी आज ऐसे लोग है जो सारे ग्रंथों को शास्त्र समझते हैं। वह उनका कर्म है उसकेलिये हम क्या करसकते हैं। एक गुरु के नाते विवरण बताना ही मेरा धर्म है, वही मैं कर रहा हूँ। मानलीजिये कि एक व्यक्ति को पत्थे की थाली में भोजन रखकर दालसब्जी, सांबार, भाजी की चटनी, नींबू की अचार डाले हैं। खाने में एक एक चीज़ को एक बार मिलाकर खानेवाले को उनसबका स्वाद अलग अलग से मालूम होता है। जब वह आसानी से बता सकता है कि कौनसा ज्यादा स्वादिष्ट है कौनसा कम। उसके अलावा सारे चीज़ों को एक ही बार में मिलाकर जो खाता है उसे मालूम नहीं होगा कि

कौनसा पदार्थ ज्यादा स्वादिष्ट है। जब अलग अलग से खाते हैं तो दालसब्जी की प्रत्येकता क्या है, भाजी की चटनी की प्रत्येकता क्या है मालूम होजायेगा। सबको मिलाकर खानेवाले को किसी भी स्वाद के बारे में कहें तो भी उसको समझमें नहीं आयेगा। जो स्वाद उसे दिख रहा है वह एक है तो जिस स्वाद के बारे में हम बता रहे हैं वह दूसरे क़िस्म से दिखता है। उसीतरह मैं ने कहा था कि शास्त्र अलग है,पुराण अलग है,चरित्र अलग है तो जो लोग इन तीनों को देखकर भी यह समझते हैं कि सब किताबें ही तो है, हेना, ऐसे लोगों को शास्त्र की प्रत्येकता मालूम कैसे होसकती है। बहरहाल, मेरा काम तो सिर्फ धर्मों से जुडीहुयी योगशास्त्र के बारे में बताना ही है।

सवाल :- अगर कुछ लोग मिलकर आपकी सहायता करके, आप जो भी बोल रहे हैं वह सबकुछ धर्मयुक्त ज्ञान है कहकर बाक़ी सबलोगों को बतायेंगे तो आपकेलिये अच्छा होगा ना! तो इसकेलिये आप फिलहाल बडे मशहूर ज्ञानियों के साथ दोस्ती क्यों नहीं करलेते, ऐसे करने से तो आप केलिये अच्छा ही होगा ना!

जवाब :- दोस्ती रखलेने केलिये यह राजकीय पार्टी थोडि ना है। आज प्रपंच में ७० प्रतिशत जनता एसुप्रभु (ईसा) को ईश्वर मानते हैं लेकिन उसदिन जब एसु ने कहा था कि मैं जो भी कहरहा हूँ वह सब सत्यमार्ग है मेरी बात मानो तो उससमय कितने जन उनका साथ दिये थे। उस समय जो बडे ज्ञानियों के नाम से मशहूर थे वे सब उस्ताद उनके खिलाफ में खडे रहे, उन्ही लोगों ने दूषणा करते हुये कहा था कि जो भी वह बोलरहा है वह ज्ञान ही नहीं है, आखिर वही लोग एसु की मरण की वजह बने थे। कई लोग कई बिमारियों को उनके हाथ की स्पर्शा से ठीक करवालेकर, उनके हाथ की रोटी खाये हुये लोग भी उनपर पत्थर नहीं फेंके थे क्या? आज हिंदू मत

में महत्व मानेजानेवाली भगवद्गीता को श्रीकृष्ण ने सिर्फ एक अर्जुन से ही कहा था। उसदिन उसे इस बात की चिंता नहीं थी कि सबलोग उसका ज्ञान सुने। उन्हीकी मार्ग में चलरहे हम भी उन्ही की तरह सत्य को बताना चाहे थे लेकिन हमारेलिये यह बात विशेष नहीं कि कितने लोग हमारी सहायता कर रहे हैं।

सवाल :- आप भी पूर्व के एसुप्रभु की तरह और दूसरे बडे महर्षियों की तरह कुछ संदर्भों में आपकी ज़बान की बात से और हाथ की स्पर्श से कुछ भयंकर कर्मों को भी जलाकर यह साबित करदिया कि आप योगशक्ति रखनेवाले योगी है उसके बावजूद भी बहुत से लोग तुझे बडे ज्ञानी की तरह पहचान नहीं पाये। आख़िर में वे लोग जो कर्म से बाहर पडगये थे वे भी ज्ञान के बारे में नहीं सुन रहे हैं ऐसा क्यों?

जवाब :- उन्होने मुझे एक योगी की तरह इसलिये पहचान नहीं पाये क्योंकि वे नहीं जानते कि योगशक्ति क्या है और मंत्रशक्ति क्या है और उनदोनों के बीच का फरख भी कम से कम उन्हे नहीं पता। आख़िर में मेरे पास मेरी स्पर्श के द्वारा हो या नज़र के द्वारा हो जो लोग ठीक होगये वे भी इसको एक मंत्रशक्ति और मुझे एक मांत्रिक की तरह हिसाब करके ज़रुरत पूरा होगया ना समझकर दूर चलेगये।

सवाल :- तो फिर ऐसे मनुष्य केलिये आप क्यों अपनी कमायी हुयी योगशक्ति को खर्च किये थे?

जवाब :- कहीं न कहीं तो यह साबित करना ही पडेगा ना कि ज्ञान की ताकत क्या है, उसे कितनी सामर्थ्य है। इसीलिये पास आये हुये लोग किसी न किसी एक की कर्म को जलाकर साबित करने की

उद्धेश्य से ही हमने ऐसा किया और यह विधान सिर्फ ज्ञानशक्ति की वजह से ही हुआ है। और हमने यह भी बताया कि कर्म को जलाने की ताकत सिवाये योगशक्ति (ज्ञान की आग) के दूसरी किसी चीज़ से भी नहीं होता। पूर्व में ऐसे लोग भी थे जो ऐसु प्रभु के पास ठीक होजाकर वापिस उन्ही पे पत्थरों को फेंके थे। ऐसी मानवता ही तो आज भी है। इसीलिये उनका काम पूरा होते ही फौरन पत्थर फेंके बगैर चलेगये (इस बात से खुश होना चाहिये कि पूर्व में जैसे ईसा पर पत्थर फेंके वैसे तो नहीं फेंके ना)

सवाल :– आप बहुत ही रचना कर रहे हैं। आज के ज़माने में तो एक पुस्तक छापने केलिये कई हज़ारों के रुपये खर्च होते हैं। आप कुछ लाखों के पैसे खर्च करके पुस्तक की प्रचुरणा करके कर्ज़ों में फस गये थे। आप ज्यादा इन्टर्रेस्ट (मिद्दी) पर पैसे लेकर जिस काम का संकल्प किया उसको वक्त पर पूरा कर रहे हैं। वापिस स्वयंकृषि से ही कर्ज़ पेढ रहे हैं। ऐसा कुछ काम ही नहीं है जो आप नहीं करते हो। आप खुद एक गुरु होकर इतने सारे काम खुद करके पैसे कमाकर आपके मक़सद केलिये इस्तेमाल करने से भी, आप सब गुरुओं की तरह कुछ गाँवों में उपन्यास रखकर तोफे लेसकते हैं ना?

जवाब :– मुझे वह काम पसंद नहीं है। मैं समझता हूँ कि जो लोग मेरे द्वारा होने वाले हर काम की सहायता करना चाहते हैं वे अपने श्रमदान से ही सहायता करें, ऐसा जब करते हैं तब ही बहुत फलित उन्हे मिलता है।

सवाल :– क्या आप को इसबात की संतुष्टी है कि इसतरह श्रम के रुप में श्रम करनेवाले आपकेलिये हैं?

जवाब :- हाँ, मुझे और मेरी उद्धेश्य को समझकर श्रम करनेकेलिये और मेरेलिये उनके जान तक देने केलिये भी नहीं सोचनेवाले मौजूद हैं। इसीलिये मैं सब केलिये नहीं बल्कि कुछ लोगों केलिये ही हूँ कहकर समाधान देते हुये और भी दुगुनि उत्साह के साथ ज्ञान बता रहे हैं।

सवाल :- अगर मानलीजिये कुछ वक्त तक आप को लगातार तकलीफें ही आरहे हो तो क्या तब भी आप इसीतरह ज्ञान को बतासकते हैं क्या?

जवाब :- सुखदुख कर्मफलित के प्रकार आते हैं, और वे प्रकृति से ताल्लुख रखते हैं। इसलिये जैसे कर्म का फैसला हुआ उसीके प्रकार वे संभव होते हैं मगर उनकेलिये ज्ञान से पीछे नहीं हटनी चाहिये। हम खुद बतारहे हैं कि जो परेशानियाँ आनी हैं वे आकर ही रहेंगे तो फिर हम ही ज्ञान में पीछे मुडें तो दृढनिर्णय का तो कोई मतलब ही नहीं रहता।

यह एक गुरु के मन में आये हुये बुद्धि के दो प्रकार के विवरण को हमने आपको बताया हैं। आज के ज़माने में गुरुओं की तरह भूमि पर रहना बहुत ही मुशकिल काम है। इसीलिये तो कुछ बडे लोगों ने कहा कि इस ज़माने में सौ गुरुओं के पास शिष्य की तरह रहसकते हैं मगर एक शिष्य केलिये गुरु की तरह रहना मुशकिल है। कहने का मतलब यह है कि वे कह रहे हैं कि गुरु का पोस्ट उतना मुशकिल हैं। अब असली गुरुओं की तरह चलना बोलेतो और भी मुशकिल काम है। अगर भूमि पर गुरु कम होगये तो ज्ञान ही गायब होजाता है। इसलिये कम से कम आप तो गुरुओं को इज्ज़त दीजिये।

भगवान की आगमन

ईश्वर जो है वह सारे मतों से पूजेजाता है। सारे मत के लोग उनके अपने अपने प्रवक्ताएँ उन्हे जो नाम सिखाये थे उन्ही नामों से ईश्वर को दुआ माँगते रहते हैं। भिन्न मत के लोग कई भिन्न आराधनाओं के साथ आराधनाएँ करने पर भी उनकी पूरी आराधना ईश्वर के बारे में ही है, अगर हम विषाल दृष्टि से जब देखते हैं तो सारे मत के लोगों के हृदय में ईश्वर की स्मरण ही है। सारे मत के लोग यही बोलले रहे हैं कि ईश्वर एक है जो पूरे प्रपंच का आदिकर्ता है। उस ईश्वर की सन्निधान को पहुँचने केलिये सारे मत के लोग बेचैन हो रहे हैं जिसने सर्व सृष्टि को पैदा किया।

मानव किसी न किसी एक मत को आधार करलेके, ईश्वर को मालूम करने केलिये जो कोशीश करता है वही दैवाराधना है। जैसे जैसे वक्त गुज़रता गया वैसे वैसे इस बात को भूल गये कि मत का उद्धेश्य ईश्वर को मालूम करने केलिये ही है, आज इनसान मत को डेवेलप करलेना ही मुख्य उद्धेश्य की तरह रखलिया है। मत में सारांश वाली ईश्वर की चिंता को छोडकर, ईश्वर केलिये कुछ भी त्याग न करनेवाला मानव मज़हब केलिये जान तक देने की हालत को पहुँचगया है। ऐसी सूरत में कुछ लोगों में एक सवाल ज़रुर पैदा होगा कि क्या मज़हब बडा है? या मज़हब के द्वारा मालूम होनेवाला ईश्वर बडा है? कौनसा बडा है यह बतानेवाला तो ईश्वर ही है। मानव मतोन्माद होकर ईश्वर को ही भूलकर जैसे ईश्वर ने कहा वैसे नहीं चलनेवाला, वापिस वही (ईश्वर ही) आकर मानव को उन दोनों रास्तों को बताना पडेगा जिस पर उसे चलनी चाहिये और जिस पर नहीं चलनी चाहिये। जैसे चाहे कितना भी सुफेद दिवार क्यों न हो धुआ रहने से कुछ वक्त को थोडासा अपना सुफेद पन खोजाता है,

उसीतरह निष्कल्मष हृदय वाला मानव माया (शैतान) के संबंध से अज्ञानी की तरह बदलजा रहा है। जिसतरह मैले दिवार को चूना लगाकर वापिस सुफेदी को पहुँचाते हैं उसीतरह ईश्वर मानव को वापिस ज्ञानी की तरह बदलाने केलिये जब जब भूमि पर अवतार लेकर, अपनी बातों को (धर्मों को) बताकर जाता है। लेकिन किसी को भी यह नहीं मालूम कि वह कब आयेगा और कब जायेगा।

अधर्मी मानव को धर्मी बनाने केलिये ही ईश्वर जब मानव रुप में पैदा होकर आता है तो उसे पहचानने का एक ही एक मौका है। जो धर्म वह बताता है उसके मुताबिक यह व्यक्ति कौन होसकता है कहकर खूब योचना करके मालूम करलेने का मौका रहने के बावजूद भी, वह इतनी आसानी के साथ मिलनेवाला नहीं है। उसीको भगवान कहते हैं। ईश्वर मानव रुप में आने से पहले हर ज़र्रे ज़र्रे में फैलकर बिना आकार के सब जगह रहनेवाले को उस वक्त ईश्वर को किसी भी नाम से पुकार नहीं सकते। इसीलिये उसे पुरुषोत्तम यानि पुरुषों से उत्तम, परमात्मा यानि आत्मा से परे रहनेवाला कहकर मतलब देनेवाले शब्दों का ही इस्तेमाल किये हैं। परमात्मा,परम पुरुष ये शब्द नाम नहीं होते। ईश्वर जो विश्वव्यापि है वह मानवाकृति का धारण करता है तो उस समय उसे भगवान कहकर एक नाम रखके बुलाना हो रहा है। इतने अज़ीम ईश्वर को आकार आने पर उसे भगवान कहने में ज़रुर कुछ न कुछ बडी विषेशता होकर रहती है। उस भगवान नाम के बारे में तफसील के साथ मालूम करते हैं।

भग यानि स्त्री का गर्भ (योनि) है। भगवान यानि स्त्री के गर्भ से जो पैदा हुआ उसे भगवान कहते हैं। ऐसा मत समझिये कि अरे बस इतना ही है इसका मतलब इतना छोटा सा है!!! यह बहुत ही विशेष मतलब रखनेवाला शब्द है। कुछ लोग समझसकते हैं कि इसमें

क्या विशेषता होसकती है। हम सब भी तो स्त्री योनि से ही पैदा हुये थे ना!!! कुछ लोगों में यह सवाल भी आकर रहता है कि जब भगवान का मतलब योनी से पैदा होना ही है तो उस ईश्वर में और हम में क्या फरख है? उसका जवाब भी तो मालूम होकर रहना चाहिये ना! सिर्फ वह एक ईश्वर ही भग से पैदा होसकता है जो अणु से अणु में हैं, सबका मालिक है, अव्यक्त है, अविनाश है, सब शरीरों को ताकत देकर खिलानेवाला परमात्मा, परमपिता, परंधाम सिर्फ वह एक ही भग से पैदा होसकता है। भगवान होसकता है। उसके सिवा सर्व भूमंडल में कोई भी प्राणि हो न भग से पैदा हुआ, न भगवान हुआ। तुमलोगों को यह शक भी आया हुआ होगा कि इस बात को बोलने वाले हमें मेंटल्ली एफेक्ट हुआ है। सत्य का ऐलान करना बहुत ही मुशकिल काम है। अब यह बात पागल बात की तरह रहने पर भी इसको थोडा वाल्यु देकर गौर कीजिये कहते हुये लिख रहे हैं।

हम यानि जीव हो और कोई भी प्राणि हो वास्तव में योनी से पैदा नहीं हुयी। हमने जिन शरीरों की धारणा की सिर्फ वे शरीरें स्त्री योनी से पैदा हुये हैं। लेकिन शरीर को पहने हुये हम किसी भी संदर्भ में भी योनी से पैदा नहीं हुये। यानि सजीव से हम गर्भ से नहीं आये (मतलब बेजान जिस्म माँ के पेट से बाहर आया है उसमें जीव नहीं है)। हमारा शरीर गर्भ से बाहर पडने के बाद उसमें जैसे पुराने वस्त्र को छोडकर नये वस्त्र को पहनते हैं वैसे ही पुराने शरीर को छोडकर नये शरीर में पहुँच पा रहे हैं। जीवात्मा जो परिमित (लिमिटेड) है वह एक शरीर को छोडकर दूसरे शरीर तक सफ़र कर रही है। लेकिन ईश्वर अपरिमितवाला (अनलिमिटेड) है, एक जगह मरकर अलग जगह पैदा होनेवाला नहीं है, वह कर्म के आधीन में नहीं है, स्त्री शरीर में भी चैतन्य होकर है। वह गर्भ से सजीव से

पैदा होपारहा है। जो कोई गर्भ से सजीव से पैदा हुआ उसी पर भगवान का शब्द लागू होता है। गर्भ से बाहर आकर, चैतन्य रहित पडा हुआ शरीर को पहुँचनेवाले जीवात्माओं पर कभी भी भगवान का शब्द लागू नहीं होता। **(अगर आपको यह विषय पूरे तरीके से समझमें आने केलिये हमारी रचनाओं में से जनन मरण सिद्धांत ग्रंथ को पढिये)**

जब मानव के अंदर अधर्म बढजाते हैं, धर्मों को जब आफत पहुँचती है तब ज़मीन पर उसका (भगवान का) आगमन, उसकी वजूद किसी को मालूम नहीं होता है, ऐसा भी लिख कर है। बडी रहस्यवाली उनकी अवतार को जिसने पहचानलिया वे तो बगैर किसी योग के ही मोक्ष को पासकते हैं, ऐसा भी है। जब हमें यह तक नहीं मालूम होता है कि ईश्वर की पैदाइश कहाँ, किस समय में होता है तो,आज भूमि पर एक ही समय में कई लोग भगवान नाम को रखलिये हैना! अगर हम जाँच कर देखते हैं तो भूमि पर भगवान नाम रखलिये हुये स्वामियाँ,योगियाँ अबतक तो कई सैकडों की संख्या में मौजूद है ना! तो फिर ये सब भगवान नहीं है क्या? इतने सारे लोगों में असली (निज) भगवान कौन है? यह संशय तो मुझे और आपको,सबको ज़रुर उद्भव होगा। अगर इस सवाल के लिये जवाब ढूँढें तो भूमि पर एक समय में ही ,एक भगवान ही कभी न कभी एक वक्त पर रहसकता है मगर,सारे वक्तों में बहुत सारे भगवान रहना असंभव है। आज के जमाने में जो भी भगवान नाम रखलिये हैं वे सब असली नहीं है। होसकता है कि असली (निज) भगवान कहीं मौजूद हो इस वक्त में। अगर ऐसा हो तो उस एक के सिवा बाकी सबलोग मामूली मानव ही है, लेकिन भगवान नहीं है।

मानलेते हैं कि ईश्वर ही शरीर धारण करके अब भूमि पर मौजूद है, तो सिर्फ उसीको भगवान का शब्द लागू होता है। लेकिन वह अपने आप को भगवान नहीं कहता ना हि भगवान का नाम रखलेता है। जब वह इस ज़मीन पर रहता है तब उसे पहचानना मुशकिल है। उसके चलेजाने के बाद जब हमें समझमें आता है कि फलाना जनम ईश्वर का है कह कर पहचान सकते हैं। अगर जब वह शरीर से रहता है तब ही उसे पहचान सके तो कोई योग अमल किये बगैर ही भीष्म की तरह मोक्ष को पासकते हैं। ईश्वर मानव रुप में ही आकर,मानव की परिधि में ही मानव की तरह नाटक करके,किसी भी हाल में खुद को ज़ाहिर किये बगैर धर्मों को बताकर चला जाता है। वह भगवान ही **मैं भगवान हूँ** कहकर किसीको मालूम हुये बगैर केरफुल से रहते हुये,रहस्य से ही वक्त गुज़ार कर सिर्फ अपने धर्मों को यहाँ पर बताकर खुद चुकालेकर भाग जा रहा है। **भगवान** शब्द का अर्थ तक न जानते हुये कई लोग भगवानों की तरह ज़ाहिर हुये इस ज़माने में निज भगवान ज़रुर आकर अधर्मों की खंडना करके धर्मों को बताना बहुत ज़रुरी है। पता नहीं वह भगवान कब आयेगा इसलिये उसकेलिये हज़ार आँखों से देखते हुये, अगर वह आये तो भी मालूम हुये बगैर चले जानेवाले उस चोर भगवान को मालूम करने केलिये हज़ार सरों से योचना करते रहेंगे।

(कुछ लोग इस बात को लेकर बेहस करते हैं कि दया, कीर्ति, पैसा, ज्ञान, वैराग्य रखनेवाला भगवान है, लेकिन यह जानलें कि वह सच नहीं है। जो भी भग से पैदा होते हैं सिर्फ वही भगवान होते हैं। और यह भी जानलें कि सिर्फ एक ईश्वर को ही भग से पैदा होने का मौका है और ईश्वर ही भगवान है)

योगी मतलब कौन?

जब हम छोटे थे तब हम समझते थे कि योगी, फखीर (सन्यासि) मतलब भीक मांग कर खानेवाले। उस ज़माने के हमारे बडों में भी यही भाव रहकर वे भी उसी तरह बात करने की वजह से,उन्ही के पास ही पले बडे हुये हम भी योगियों को लेकर यहीं समझते थे कि वे भीक मांगने वाले साधू हैं। आज भी बहुत से अज्ञान जनों के सामने फखीर, योगियों का नाम लेते ही वे उन्हे कमतर समझते हैं। जो व्यक्ति थोडा बुरा रास्ता पकडलिया तो उसे कहते हैं कि **अरे क्या रे तू फखीर बनने के लिये है क्या?** इसके मुताबिक इस ज़माने के लोगों का भाव यह है कि फखीर मतलब वह व्यक्ति है जो पूरे तरीके से खराब हुआ हो। लेकिन जो लोग थोडा बहुत ज्ञान रखते हैं वे योगियों के बारे में अच्छी खयाल रखते हैं।

आज के ज़माने में भी ऐसे कुछ योगियाँ हमें वहाँ वहाँ नज़र आते हैं जो बडी ज्ञान रखते हैं। ऐसे योगियाँ बहुत ही कम (वेरि रेरली) कहीं न कहीं एक जगह दिखते हुये रहने पर भी कुछ लोग जो असल में योगि नहीं होते वे भी हम योगियाँ है कहते हुये प्रचार करलेते हैं। दो प्रकार के योगियाँ यानि असली योगियाँ, झूठे योगियाँ भूमि पर मौजूद है। जिस इनसान को संपूर्ण ज्ञान नहीं है वह सत्यासत्य को न पहचान पाकर सबको योगियों की तरह हिसाब करले रहा हैं। क्योकि उसे मालूम न होने की वजह से जो व्यक्ति असल में योगि नहीं है उसे भी योगी समझले रहा है। इसलिये जिन्हे ज्ञान पर और योग पर आस्कती है वे लोग उन्हे आश्रय करने का मौका जो असल में योगयिाँ नहीं है। जिन लोगों ने इसतरह आश्रय किया वे उन झूठे योगियों की बात सुनकर उन्होने जो भी साधना करने केलिये कहा होगा उसीकी साधना करते हुये उसीको निज

योग की तरह भ्रम करना भी हो रहा है। ऐसे लोगों के आँखों के सामने असली यानि निज योगी अगर आजायें तो उन्हे पहचाने बगैर ऊपर से उन्हे ही शक करना और बेइज़्ज़ती करना हो रहा है। मतलब आज लोग ऐसी हालत में है कि कई समझ में न आनेवाले विषयों को सहित खुले तरीके से बयान करके संशयरहित करनेवाले बडे योगियों को भी हिसाब नहीं कर रहे है ऊपर से ऐसा कह रहे हैं कि जो भी विषय,अर्थ आप बता रहे हैं वे हमें ज़रुरत नहीं है। हमारा रास्ता अलग है हम ऐसी योग कर रहे हैं जो बहुत ही खास है,हमें ज्ञान से कोई लेना देना नहीं है यानि हमें ज्ञान की ज़रुरत नहीं है,पुस्तक पढने की ज़रुरत तो बिलकुल भी नहीं है। गीता में दो ही दो योगों के बारे में बताया गया था तो आज ऐसे लोग मौजूद है जो इन दोनों योगों को छोडकर उनकी जगह दूसरे मार्गों को आश्रय करके यह समझ रहे हैं कि जिस योग का अमल वे कर रहे हैं वही निज योग है। इतनी बडी गलती को सुधारलेने का मौका तक वे लेना नहीं चारहे हैं। उन्हे सच्चे योगियाँ कौन है यह बात मालूम न होना ही इन सबकी वजह है। इसलिये अब योगियों के बारे में मालूम करना मुख्य विषय है।

योगशास्त्र के प्रकार जिसे ज्ञान मालूम है उसे ज्ञानी कहते हैं, जो व्यक्ति योग की साधना करता है उसे योगसाधक, आत्मशक्ति को पाये हुये व्यक्ति को योगि कहते हैं। योगि ज्ञानियों से भी, तपस्या करनेवालों से भी, योगसाधकों से भी श्रेष्ट है यह बात गीता में आत्मसंयम योग में ४६ वीं श्लोक में ईश्वर ने ही इसतरह कहा है कि **तपस्वि भ्योधिको योगि ज्ञानि भ्योपि मतोधिकः कर्मि भ्यश्चधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन** यहाँ जब यह कहा गया कि इन सबसे योगी ही अधिक है तो, यह सोचना पडेगा कि क्या उस योगि को पहचानने

केलिये कोई मार्ग है। अगर इसतरह सोचें तो बाह्यविधानों से यानि वेष भूष से कोई भी योगि को पहचान नहीं सकते। कुछ लोग समझते हैं कि देखते ही हम फौरन निज योगियों को पहचान सकते हैं। जैसे वे समझ रहे हैं वैसे आँख की नज़र से ज़रा भी योगत्व पहचानी नहीं जाति। ऐसी सूरत में एक शक भी आता है कि तो फिर यह कैसे पहचान सकते हैं कि फलाना लोग ही निजयोगियाँ है, हमें उन्ही की शरण में जाना चाहिये? इसका जवाब तो हमें गीताशास्त्र ही बतासकती है। आत्मसंयम योग अध्याय में १ श्लोक में **अनाश्रितः कर्मफलम कार्यम कर्म करोतियः स सन्यासीच योगीच ननिरग्रिर्न चाक्रियः** पाप पुण्य जिसे कर्म फल कहते हैं जो व्यक्ति अपने आप को ये पाप पुण्य लगने से बचाकर कार्यों को कर्म के अनुसार करता है वही असली सन्यासि है असली योगि है जिसके पास ज्ञान की आग नहीं होती और जिसने कार्यों को करना हि छोडदिया हो वह योगी नहीं है, भगवान के इस वाक्य के प्रकार यह मालूम करने का मौका है कि कौन योगि है और कौन योगि नहीं। फिर भी कौन अपने आप को पाप पुण्य लगने से बचालेते हुये काम कर रहा है और किसके पास ज्ञानाग्नि है यह विषय तो आँखों को दिखनेवाला है नहीं। इसलिये ही योगियों को पहचानना मुशकिल है। जब योगियाँ खुद जान बूच कर ऐसा बिहेव करते हैं कि वे योगियाँ है ताकि दूसरे लोग भी यह पहचानसके कि वे योगियाँ है सिर्फ तब ही ईश्वर ने जो सूत्र बतायें उनके प्रकार योगियों को पहचानने का मौका है।

ऐसे योगियाँ भी है जो कहते हैं कि ज्ञान की आचरण करके जब योग करते हैं तो योगशक्ति हासिल होती है,और वे साबित भी करके दिखाते हैं कि उस योगशक्ति (ज्ञानाग्नि) का प्रभाव कितना होता है। निजयोगियाँ (असली योगियाँ) अपने अंदर की ज्ञानशक्ति से

कोई न कोई एक संदर्भ में बहिर्गत करके साबित करते हैं ताकि हेतुवादियों को सहित यह बतानेकेलिये कि ज्ञान, योग, ईश्वर कहलानेवाले चीज़ें सिर्फ एक यकीन ही नहीं बल्कि निज से उसे साबित करके दिखाते हैं। इसतरह के निरुपण ऐसे रहते हैं कि उदाहरण के तौर पर मानलीजिये कि एक योगि एक अंधे के आँखों पर हाथ रखके अंधत्व को निकालदिया। वह बिना किसी वैद्य के ही अपनी स्पर्श से ऐसा करपाया कि उसे देखने केलिये नज़र आजाये। अपने अंदर की ज्ञानशक्ति को सामनेवाले के उस पाप पर छोडा है जो अंधेपन की वजह थि ताकि वह पाप जलजाये। इसीलिये उसके आँख वापिस ठीक होगये। ऐसे समय में दूसरे लोग उस व्यक्ति को योगशक्ति रखनेवाले योगि की तरह पहचानने का मौका है। खास करके गौर करनेवाली बात यह है कि! अगर ऐसी शक्ति ही देश में मौजूद है तो देश में रहनेवाले सारे अंधों को योगियाँ अपनी शक्ति से ठीक करसकते है ना! इसतरह पूछनेवाले भी कुछ लोग होते है। उनकेलिये हमारा जवाब यह है कि जब योग अमलकरते हैं तब ही योगशक्ति मिलती है। योग अमल करते वक्त खुद को कितनी योगशक्ति मिली है यह बात कोई योगी नहीं जानता। किसी न किसी एक संदर्भ में जब बाहर इसतरह एक इन्सिड़ेन्ट जाहिर होता है सिवाये उसवक्त के योगी को तो यह तक मालूम नहीं होता कि खुद के अंदर भी कुछ शक्ति मौजूद है। यहाँ और एक सवाल भी हमें आसकता है। वह यह है कि! कुछ लोग इसतरह पूछ सकते हैं कि जब वह योगि खुद नहीं जानता कि खुद के अंदर शक्ति है तो वह योगि कैसे समझेगा कि मुझे दूसरों की कर्म को जलानी चाहिये? वह ऐसा क्यों समझेगा कि मुझे दूसरों की बीमारि को ठीक करना चाहिये? उसकेलिये जवाब इसतरह है कि कोई भी योगी ऐसा नहीं समझता कि मुझे दूसरों की कर्म को

हटादेनी चाहिये क्यों कि खुद उसे ही नहीं मालूम कि वह कितनी शक्ति रखता है। अगर वह दूसरों की कर्म को जलादेना चाहा तो भी या तो एक रोग को दुरुस्त करना चाहा तो भी, रोग को हो, तकलीफ को हो निकाल देने की कोशीष करना चाहा तो भी उस वक्त वह रोग ठीक नहीं होरहा है या तो वह तकलीफ दूर नहीं हो रहा है। कभी कभार एक एक व्यक्ति की रोग के विषय में हो, दर्द के विषय में हो वही योगी छूते ही ठीक होजाता है। योगि एक छोटीसी दर्द को ठीक करने केलिये बडी कोशीश करने पर भी वह दर्द जाये बगैर वैसे ही ठहर कर आखिर में योगी को ही ऐसे शक में डालदेती है कि शायद मेरे अंदर ही शक्ति नहीं होगी। एक वक्त में फिर वही योगि छोटीसी कोशीष करने पर बडा रोग भी बस यूँही ठीक होजाता है। इसतरह होने की वजह क्या है?

योगी ने जो योगशक्ति को कमालिया वह शक्ति तो योगी की ही है फिर भी वह उस आत्मा के आधीन में रहता है जो शरीर में पूरे शरीर का मालिक है। क्यों कि वह आत्मा की आधीन में है उसे आत्मशक्ति भी कह रहे हैं। योगी के शरीर में जो जीवात्मा होती है अगर वह चाहता है कि एक मनुष्य का रोग हो या दर्द हो चलाजाये, तो उस योगी के शरीर में की आत्मा को अगर वह काम पसंद आजाये तो अपने आधीन में की शक्ति को रिलीज़ करके सामनेवाले की कर्म को जलादेती है। अगर योगी की आत्मा को वह विषय पसंद नहीं आया तो अपनी आधीन में की शक्ति को रिलीज़ नहीं करेगी। जब बाहर योगी के कोशीश के बावजूद भी वह ठीक नहीं होगा। इसीलिये योगियों के पास कुछ लोगों का कर्म चले जाने पर भी कुछ लोगों का कर्म नहीं जाता। जो योगियाँ अंदर की आत्मा की विषय को जानते हैं वे बाहर की रोगों की विषय के बारे में ज्यादा नहीं सोचते।

एक एक समय में ऊपर से योगी चुप रहने पर भी, उसके अंदर जब आत्मप्रेरण होता है तब योगी कुछ भी करें सामने वाले का रोग हो, दर्द हो आसानी से चले जासकता है। आत्मप्रेरण की वजह से ही बिना वैद्य के रोग इसलिये ठीक हो रहे हैं ताकि दुनियावालों को यह साबित करसके कि प्रपंच में ज्ञान कितनी पवरफुल है। ऐसे संघटनाएँ इसलिये होते है ताकि मनुष्य योगियों की तरह बदले और शक्ति के बारे में मालूम करसके। एक योगी ज्ञान इसलिये बताता है कि जो व्यक्ति अज्ञान में है वह योगी की तरह बदलजाये, और वह व्यक्ति योगशक्ति को कमाले ताकि उससे वह अपनी कर्म का खुद निरोध करसके।

असली योगी तो वे होते हैं जो साथवाले व्यक्ति को भी योगी की तरह बदलाते हैं और उस व्यक्ति को भी शक्ति पहुँचानेवाले गुरु की तरह रहता हैं। शिश्य गुरुओं के पास सिर्फ इसलिये जाना चाहिये कि शिश्यों को उन गुरुओं से ऐसी ज्ञानाग्नि हासिल हो कि उनके खुद के कर्मों को वे जलासके। गुरुओं का ध्येय यह होकर रहनी चाहिये कि वह अपने शिश्य को भी ऐसी हालत में लाये कि वह खुद शक्ति को कमाले और ज्ञानाग्नि की प्रकाश में अपने मुक़ाम पर उसे लाकर छाडदें। उसके अलावा अगर ऐसा समझेंगे कि गुरुओं का काम तो सिर्फ उपदेश देना ही है, उसे लेकर साधना करना ही शिश्यों का काम है तो ज़िंदगी (जीवित) ही बेकार होजायेगी । जिस साधना में ज्ञान शक्ति नहीं मिलती है वह साधना उस नौकरी के बराबर है जिसमें तनख़्वाह नहीं मिलता। ईश्वर ने जो सूत्र बताया है उसके प्रकार तो जिन गुरुओं के पास शक्ति नहीं है वे योगियाँ ही नहीं होते।

आज के ज़माने में कुछ शिश्य शक्ति के मुताबिक गुरुओं के पास नहीं जा रहे हैं। जिन गुरुओं के पास विमान होता है, जिस गुरु के पास ज्यादा जायदाद होता है, जिस के पास कुछ करोंडों का पैसा होता है उन्हीको बडे योगियाँ समझ रहे हैं। उदाहरण केलिये कहीं भी किसी भी डाक्टर के पास ठीक नहीं होने वाले एक बीमार आदमी को एक गरीब योगि अपनी हाथ की स्पर्शा से ही ठीक करदेने के बावजूद भी लोग समझते हैं कि यह सब मंत्र का प्रभाव है और उस योगी को एक मांत्रिक समझते हैं। लेकिन एक व्यक्ति जो निरुपन तक नहीं करसकता उसके बावजूद भी जिसके पास खूब पैसा रहकर, सिर्फ विदेशों को जाकर बोधा करके आने से ही उसे बडा योगी समझते हैं लेकिन यह तक नहीं देखते कि असल में उस व्यक्ति के पास ज्ञानशक्ति है कि नहीं। यहाँ तो सिर्फ पैसे वाला बोधा बोलते ही उसे योगी की तरह, गुरु की तरह हिसाब किया जा रहा है। लेकिन जिस के पास पैसा नहीं रहने पर भी ज्ञानवाली बोधा रहने की बावजूद भी, संपूर्णशक्ति रहने की बावजूद भी ऐसे लोगों को मांत्रिक समझा जा रहा है।

अपनी ज्ञान की इस्तेमाल करके मालूम करने की कोशीश करनी चाहिये कि खासकर ईश्वर में ऐक्य होकर जन्मराहित्य को मांगनेवाले, मोक्ष पर आसक्त से रहनेवाले ही योगियाँ होते हैं। **यथैथामसि समिधोग्नि र्भस्मसात्कुरुतेर्जुन ज्ञानाग्नि स्सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा** भगवान के इस वाक्य के प्रकार जो लोग कर्म को जलाकर योगियों की तरह निरुपण पाते हैं वही निज योगियाँ होते हैं। योगसिद्धांत के प्रकार आज भी वैसे लोग ही योगियाँ हैं। वैसे योगियाँ ही निज गुरु (असली गुरु) होते हैं।

जिस गुरु को आश्रय किया उसके पास शक्ति है या नहीं इसकी योचना किये बगैर ही दूसरे गुरुओं को कम समझते हुये उनका मज़ाक नहीं उडाना चाहिये। ऊँच नीच तो योगशक्ति के मुताबिक रहता है, इसलिये जिन लोगों को इस शक्ति के बारे में नहीं मालूम वे लोग चाहे किसी गुरु को भी हो कम अंदाजा नहीं लगाना चाहिये।

तपस्या – योग

आज के प्रपंच में ऐसे बहुत से लोग हैं जो इस बात का यकीन रखते हैं कि ईश्वर मौजूद है। जिन लोगों को इस बात पर यकीन है वे कई तरीकों से अपनी भक्ति को ईश्वर के प्रति दिखा रहे हैं। श्रद्धा के मुताबिक वे ईश्वर के ओर जो भक्ति भाव दिखा रहे हैं वह तरीका भी तै किया हुआ रहता है। प्रपंच में कई प्रकार के श्रद्धायें मानव रखते हैं। इसलिये जिस भक्ति मार्ग पर वे चलते हैं वह मार्ग भी कई प्रकार के रहते हैं। कुछ लोग मंत्र बोलते हुये पूजायें करते रहते हैं। कुछ लोग अपनी अपनी पसंदीदा ईश्वर की आराधना करते हैं। और कुछ लोग यज्ञ करते रहते हैं। तो कुछ लोग तपस्या करनेवाले भी हैं। और भी कई विधानों से ईश्वर के ओर भक्ति को दिखा रहे हैं। सब एक ही मार्ग पर न चलते हुये कई मार्गों पर चलने की वजह उसकी श्रद्धा, कर्म ही कारण है। पूर्व जन्म में जिसने जितना पुण्यफल कमालिया था उस पुण्यफल के मुताबिक और श्रद्धाओं के मुताबिक उसको इस जनम में भक्तिमार्ग में चलने का विधान भी तै किया हुआ रहता है। सर्व मानवों केलिये ईश्वर एक ही है फिर भी उसको मालूम करने के लिये प्रपंच में कई मार्ग हैं। कई प्रकार के पूजायें, यज्ञ,

तपस्यायें, योग उस के बारे में मालूम करने केलिये ही हैं। हर वह छोटी पूजा जो मानव करता है उसीको पहुँच रहा है। सारे पूजाओं का भोक्ता सिर्फ एक परमात्मा ही है फिर भी मानव आचरण करने वाले भक्ति विधान कई प्रकार के हैं। इसलिये उनमें से कौनसा विधान सही है ज़रुर मालूम करके उसीके प्रकार चलना चाहिये। उसके अलावा जिस मार्ग में सब चलरहे हैं मैं भी उसी पर चलरहा हूँ,अगर आप ऐसा कहेंगे तो क्या पता उस रास्ते का गम्य दूर है या खरीब (किस को पता)? चाहे कौनसा भी तरीका हो हम जो भक्ति आचरण कर रहे हैं वह परमात्मा को ही पहुँचेगा। लेकिन उससे जो फलित हमें मिलता है वह अनेक प्रकार के स्थायियों में रहता है। जो जैसा अमल कर रहा है वैसा ही उसी तरीके से ही परमात्मा उनके पूजायें स्वीकार करके फलित देता रहता है। चाहे आराधन कितने भी हो,किसी भी रुप में हो सबकेलिये आदि पुरुष तो ईश्वर एक ही है। लेकिन हमने कहा था ना कि आराधना करनेवालों को जो फलित प्राप्त होते हैं उन फलितों में व्यत्यास होता है। उनके व्यत्यासों को दो प्रकार डिवैड करसकते हैं। वे दो प्रकार ये हैं कि! एक काम्यार्थसिद्धि दूसरा मोक्ष सिद्धि। प्रपंच में इन दो फलितो में पहली वाली काम्यार्थसिद्धि को मांगनेवाले ही सौ को निन्यानौ प्रतिशत हैं। बचे हुये एक प्रतिशत में भी मोक्षसिद्धि को मांगनेवाले बहुत ही कम होते हैं। जिन ज्ञानियों को मोक्ष सिद्धी की अहमियत मालूम है वे उस मोक्ष के बारे में बताने के बावजूद भी बहुत से लोग कहते हैं कि उससे हमें क्या काम?प्रपंच में सब तरीकों से सुख जीवन बिताने केलिये ईश्वर को आराधना करें तो काफि है, उससे बढकर हमें क्या चाहिये। काम्यार्थसिद्धि को चाहकर जो आराधनायें करते हैं वे भी कई प्रकार के हैं। इसलिये काम्यार्थसिद्धि के फलित भी मानव कई प्रकार के प्राप्त कर रहे हैं।

कुछ मानव तो ऐसे समझते हैं कि जो इच्छाओं को उन्होने चाहा था वे इसी जन्म में पूरे होंगे। यह असंभव है ऐसा कभी नहीं हो रहा है। हर एक जीव जो इच्छायें मांग रहा है वे सब उसके अगले जनम में पूरे हो रहे हैं। काम्यार्थसिद्धि शीघ्र से फलित देती है। यानि अगले जनम में ही पूरी होजाती है। लेकिन मोक्षसिद्धि ऐसी नहीं है वह कुछ जन्मों तक भी नहीं मिलसकती है।

मोक्षसिद्धि को चाहकर परमात्मा की आराधना करनेवाले देश में कुछ लोग ही हैं। कुछ लोगों को यह शक होसकता हैं कि क्यों काम्यार्थसिद्धि को चाह कर अमलकरनेवाले ज़्यादा रहकर, मोक्षसिद्धि को चाह कर अमलकरने वाले कम लोग ही क्यों हैं? मोक्ष को पाना चाहिये कहकर सबलोग क्यों नहीं समझ रहे हैं? उसकेलिये हमारा जवाब यह है कि! भक्ति रखनेवाले तो प्रपंच में बहुत से लोग हैं। लेकिन उनकी भक्ति तो क्षुद्रदेवताओं से लेकर महादेवताओं पर हैं। कुछ लोग तो पेद्दम्मा, सुंकल्लम्मा, कालिका वगैरा औरत देवताओं की आराधना कर रहे हैं तो और कुछ लोग इंद्र, चंद्र से शुरु करके विश्णु, ईश्वर, ब्रह्मतक आराधना करनेवाले भी हैं। जितने देवताएँ हैं उतने देवताओं से भी यानि देवताओं में से अग्रगण्य ब्रह्म, विश्णु, ईश्वर से भी अतीत और सारे देवताओं में भी अंतर्यामि होकर जो है उसे कोई भी पहचान नहीं पा रहे हैं। जिनलोगों ने पूर्व जन्म में भक्ति मार्ग में विशेष ज्ञान हासिल की हो सिर्फ उन्ही लोगों को उस एक ईश्वर का विषय मालूम हो रहा है जो देवताओं से सबसे अतीत है। इसतरह जो लोग मालूम किये होते हैं सिर्फ वही लोग देवों का देव परमात्मा को आराधना करते हैं। कहसकते हैं कि परमात्मा की आराधना करनेवाले ही मोक्षसिद्धि को चाह कर अमल करनेवाले हैं। भक्ति मार्ग में जिनकी पुण्यफलित कम है ऐसे लोग ही देश में ज्यादा

तर हैं। इसीलिये उनके अपने अपने पुण्यफलितों के बराबर वाले ईश्वर को ही यकीन करके उसीकी आराधना कर रहे हैं। इसीलिये देश में देवताओं को आराधना करनेवाले ही बहुत से लोग हैं। यानि कहसकते हैं कि काम्यार्थसिद्धि को पानेवाले ही अधिक हैं।

वह परमात्मा जो सबसे अतीत है, कभी भी नाश नहीं होता, जिसे विष्णु, ईश्वर ब्रह्म इत्यादि देवतायें तक आराधना करते हैं उस परमात्मा का विषय मालूम होने केलिये ही कई जन्मों का पुण्यफलित ज़रूरी है। पुण्यफल विशेष से जिन्होने परमात्मा की अहमियत जानने के बाद, उनकी आराधना करके उनको पाना तो उनकी अपनी श्रद्धा के मुताबिक रहता है। परमात्मा की आराधना करने के बावजूद भी कुछ लोग अनेक जन्मों को, कुछ लोग चंद जन्मों को, कुछ लोग एक ही जन्म में मोक्ष पा रहे हैं। हमने कहा था ना कि परमात्मा को आराधना करने की **बुद्धि पैदा होने केलिये ही** कई जन्मों की पुण्यफल की ज़रुरत है। देश में ऐसे लोग बहुत ही कम है जिनका पुण्यफल ज्यादा हो। इसीलिये कहसकते हैं कि मोक्ष को चाहकर परमात्मा की आराधना करनेवाले भी बहुत ही कम है।

देश में जो जिस विधान को भक्ति मार्ग में अमल कर रहे हैं वे उस विधान को ही महान कह रहे हैं। लेकिन कोई भी यह नहीं समझ पा रहे हैं कि हर तरीके से भी आचारों का नायक एक (ईश्वर) ही है। कुछ लोग मतों (मज़हबों) की तरह डिवैड करलेके इसतरह बहस करले रहे हैं कि हमारा मज़हब बडा है तो हमारा मज़हब बडा है। लेकिन यह बात को समझ नहीं पा रहे हैं कि सारे मतों का मालिक एक ईश्वर ही है। उसीतरह पूजायें करनेवाले, होमम् करनेवाले, तपस्या करनेवाले सब हम ही महान है समझले रहे हैं। ये सब तो

परमात्मा के तरफ जाने की साधना ही हैं लेकिन हम मानवों को यह जानना बहुत ही ज़रुरी है कि आखिर कौनसा साधन हमें मोक्ष तक लेकर जाता है। इसी विषय को लेकर भगवद्गीता में **विश्वरुप संदर्शन योग में भगवान और परमात्मा ने कहा कि!**

५३ श्लोक :   नाहम वेदैर्न तपसा नदानेन नचेज्यया शक्य
एवम विधो धृष्टुम धृष्ट वानसि माम यथा

हे अर्जुन! अब तू ने जो इस विश्वरुप को देखा है वह वेदों से हो, दानों से हो, यज्ञों से हो, तपस्याओं से हो देखना चाहा तो ना मुमकिन है यानि इन चारों चीज़ों से मुझे नहीं देखसकते।

४८ श्लो : न वेद यज्ञाध्यय नैर्न दानैर्न चक्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैह
एवम रुपश्यक्य अहम नृलोके दृष्टुम त्वदन्येन कुरुप्रवीर

हे अर्जुना! वेदमंत्रों की उच्छारण से हो, विविध प्रकार के यज्ञों से हो, दानों से हो, उग्र तपस्याओं से हो मुझे मालूम करना ना मुमकिन है। ऐसी मेरी रुप को मेरी अनुग्रह की वजह से तू देख पाया है।

इससे यह मालूम हो रहा है कि देश में विविध प्रकार से हम जो आराधनाएँ कर रहे हैं यानि वेदों को कंठापाठन करलेके अध्ययन करने से हो, दान करने से हो,यज्ञों से हो, उग्रतपस्याओं से हो न परमात्मा को मालूम करने का मौका है ना हि उसे पासकते हैं। इस बात से ही बहुत से लोगों को तकलीफ हो सकती है। क्योंकि! वे जो आरधनाएँ कर रहे हैं छोटे पूजाओं से शुरुहोकर होम, तपस्याओं तक रहते हैं। जब भगवान खुद कहरहा है कि तपस्या को करनेवाले भी मुझे मालूम करनेकेलिये अनर्ह है तो तकलीफ तो होगी हि। लेकिन भगवान हमें तकलीफ देने केलिये इस बात को नहीं कहा था। हम

सही रास्ते पर चलकर उसके बारे में मालूम करने केलिये ही परमात्मा ने इसतरह कहा है। तपस्याओं से मुझे मालूम करना नामुमकिन है अगर उसने ऐसा कहा मतलब मालूम यह हो रहा है कि उस तक पहुँचने का कोई और विधान है। उस विधान को ज़रा परख कर देखते हैं।

बहुत से लोगों के राय (अभिप्राय) यहीं है कि देश में सबसे बढी तपस्या ही है। ऐसे लोग और भी अलग तरह के अभिप्राय रखनेवाले देश में मौजूद है इसी उद्देश्य से भगवान गीताशास्त्र में आत्मसंयम योग में

४६ श्लो तपस्विभ्योधिको योगि ज्ञानभ्योपिमतोधिकह
कर्मभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुनः

भगवान ने कहा कि हे अर्जुन! योगि तपस्या करनेवालों से भी उत्तम है, ज्ञानी से भी बढकर है और कर्म करने वाले से भी अधिक है इसलिये तू भी योगि बन।

इससे यह मालूम हो रहा है कि सबसे उत्तम योगि है, सारे अभ्यासों से भी योगाभ्यास ही परमात्मा को मालूम करने केलिये श्रेयस्कर है। मानव किसी का कहना नहीं मानता इसीलिये गीता में इस वाक्य को भगवान ने खुद कहा है। यहाँ कुछ लोगों को शक आकर इसतरह पूछ सकते हैं कि भगवान ने तो कहा था कि योगी तपस्या करने वालों से भी उत्तम है! और यह भी तो कहा था ना कि ज्ञानी भी योगी से कम है! क्या ज्ञानी, योगी अलग अलग है? और तपस्वी, योगी के बीच क्या फरख है? उसका जवाब यह है कि ज्ञानी मतलब जिसने परमात्मा के साधना विषयों के बारे में मालूम किया

हो। अज्ञान मतलब न मालूम पन है। एक गाँव को जानेकेलिये सिर्फ रास्ता मालूम करने से उस गाँव को पहुँच जाने के बराबर कैसे होसकता है? उसीतरह सिर्फ परमात्मा को पाने के विषय मालूम करने से उसको पाये जैसा कैसा होगा? दूध दही की तरह बाद में मलाई कीतरह फिर उसके बाद घी की तरह बदलता है सिर्फ यह विधान मालूम करने से क्या घी तयार होजायेगी? नहीं ना! दूध को गरम करके दही की तरह बदलने केलिये जमुन डालकर, बाद में उसे हिलाकर मलाई करके, फिर उसके बाद आग के द्वारा गरम की गयी घी को देखसकते हैं। उसी प्रकार अगर हम ऐसा कहेंगे कि प्रपंच में सिर्फ परमात्मा को जानने के मार्गों को मालूम करने से ही हम परमात्मा को पालिये है तो ऐसा कहना उस मिसाल के बराबर है कि हम ने ऐने में दिखनेवाली चीज़ को पकडलिया है। इसीलिये भगवान ने कहा कि सिर्फ ज्ञानी होजाने से कोई योगि नहीं बनसकता। योगि यानि वह व्यक्ति है जिसने आत्मा में मिलगया हो। सिर्फ विधान को जानने से कोई योगि नहीं बनजाता। खुद को जो दैवविधान मालूम हुये उन पर अमलकरनेवाला ही आखिर में योगी की तरह बदलजाता है। इसीलिये कहसकते हैं कि योगी ज्ञानी से उत्तम है।

भगवान ने बतादिया कि तपस्या करनेवाले से भी योगी उत्तम है। उसने ऐसा इसलिये कहा क्यों कि योगी और तपस्वी में फरख है। तपस्या मतलब तडपना। अगर कोई कहता है कि एक व्यक्ति तपस्या कर रहा है मतलब वह इस उद्देश्य से तडपता है कि वह किसी न किसी ईश्वर की आकार को देखनी चाहिये या तो एक मंत्र को अपने मन में लग्न करलेके उसकेलिये तडपता है। कुछ लोग तो मन को एक जगह पर केंद्रीकृत करके नज़र आनेवाले विषयों केलिये तडप रहे हैं। बहरहाल, जीव इंद्रियों को दिखनेवाले चीज़ों पर हो, या तो उन

चीज़ों के लिये जो अपने से अलग है,देवों केलिये तडपने को तपस्या कहसकते हैं। अनेक लोग पूर्व में तपस्या करके देवताओं के द्वारा उनके इच्छाओं को पूरा करलिये थे। अगर लोगों के बीच में रहेंगे तो तपस्या केलिये डिस्टर्ब होगा इसलिये वे मानव संचार न करनेवाले जंगलों को जाकर पूर्व में तपस्या किया करते थे। पूर्व में बहुत से लोग इच्छाएँ पूरे करलेने केलिये अपनी मन पसंदीदा दैव को दृष्टि में रखलेकर तपस्या करते करते कुछ वक्त को वह तपस्य सफल होने पर उनकी इच्छायें पूरे करलेते थे। अर्जुन पाशुपतास्त्र केलिये शिव की तपस्या की। विश्वामित्र भी कुछ वक्त ब्रह्मास्त्र के लिये तप किये जैसा चरित्र से मालूम हो रहा है। तपस्या से मोक्ष सिद्धि प्राप्त नहीं करसकते लेकिन काम्यार्थसिद्धि को प्राप्त करसकते हैं। इसीलिये भगवान ने कहा कि तप के वजह से मुझे पाना ना मुमकिन है। कहसकते हैं कि तपस्वि से भी परमात्मा के मार्ग के बारे में जानलिया हुआ ज्ञानी ही बहतर है। तप के वजह से जो फल प्राप्त होता है वह भुगतते ही फौरन खत्म होजाता है। लेकि न ज्ञान ऐसा नहीं है वह आगेवाले जनम में भी परमात्मा के मार्ग के तरफ ही लेकर जाता है। इसलिये तपस्वी से भी ज्ञानी ही उत्म है कहसकते हैं। जाना हुआ व्यक्ति से भी पाया हुआ व्यक्ति श्रेष्ट है, इसीलिये ज्ञानी से भी योगी अधिक है कहसकते हैं। सिर्फ एक योगी ही उस आत्मा को जो अपनी देह में बसीहुयी है योग के द्वारा मालूम करले रहा है। बाकी कोई भी मालूम नहीं करसकते हैं इसका मौका तक नहीं है। इसलिये भगवान ने गीता शास्त्र में पुरुषोत्तम प्राप्ति योग अध्याय में

११ श्लो यतन्तो योगिनश्चैनम पश्यन्त्यात्मन्य वस्थितम ।
यतन्तोप्यकृतात्मानो नैनम पश्यन्त्य चेतस्स ।।

जो योगी कोशीश करते हैं सिर्फ वे ही देह में की आत्मा को मालूम करसकते हैं। बाक़ी लोग चाहे कितना भी कोशीश करलें मालूम नहीं करसकते हैं। इससे यह मालूम हो रहा है कि प्रपंच में सब तरीकों से आत्मा को मालूम करने का उत्तम मार्ग योग ही है। चाहे कोई भी विषय हो उसे जाँच कर मालूम करना मानवों का कर्तव्य है। हमारे अनुभव में तपस्या को ही महत्व समझने वाले बहुत से लोग तटस्थ हुये थे इसीलिये हमने इतना साफ साफ बयान करदिया कि तपस्या से भी योग बढकर है। इसीलिये हम यह बता रहे हैं कि चाहे तपस्वियाँ हो,ज्ञानियाँ हो ऐसा मत समझिये कि हमे नीचा दिखाया गया हम चाहते हैं कि सच को मालूम करने की कोशीश करें।

हाँ, एक बात और है वह यह है कि! कुछ लोग इसतरह पूछ सकते हैं कि भगवान ने आत्मसंयम योग में यह भी तो कहा था ना कि **कर्मि भ्यश्चाधिको योगि** ! कर्म की आचरण करते हुये कर्म को त्याग करके उनसे आनेवाले पाप पुण्यों से बचतो सकते हैं ना! वह भी तो कर्म योग ही होता है, हेना! तो फिर यहाँ कर्म करनेवालों से भी योगी को अधिक बताया गया है ना! वह कैसे? हाँ इस बात से मैं भी सहमत हूँ। लेकिन यहाँ पर मालूम करने वाली रहस्य एक है। वह यह है कि! कर्माचरण करते हुये उसमें आनेवाले पाप पुण्यों से बचना भी योग ही है। उसीको कर्मयोगि कहते हैं। आत्मसंयम योग में आत्मयोगि के बारे में भगवान ने बताया था। कर्मयोगि से आत्मयोगि अधिक है। हमलोगों ने तो पहले ही मालूम किया था कि योगियों में छोटे, बडे दर्जे रहते हैं। इसीलिये तो भगवान ने गीता शास्त्र में वहाँ वहाँ कहा था कि सर्वयोगियों में से फलान योगियाँ ही मेरेलिये उत्तम है, जो भी इसतरह रहते हैं उन्हे मैं श्रेष्ट समझता हूँ। और आत्म संयम योग में आखिर में परमात्मा ने कहा कि **सर्वयोगियों में से जो संपूर्ण तरीके**

से अंतरात्मा में मुझे ही आश्रय करके श्रद्धा रखते मेरी ही आराधना कर रहा हो वही उत्तम कहकर मैं समझता हूँ। इसीलिये कहसकते हैं कि योगियों में भी छोटे बडे होते है। अब हम यह मालूम करते हैं कि क्यों कर्मयोगि से भी आत्मयोगि अधिक है।

जो जो काम कर्मयोग अमलकरते हुये किये जा रहे हैं उन कार्यों में का पाप पुण्य उस जीव को बिलकुल नहीं लगते। लेकिन पिछले जनम में किये हुये पाप पुण्यों को यानि प्रारब्द को उसे ज़रुर भुगतना ही पडेगा। जिसतरह कीचड में घुसा हुआ कुम्हार कीडे को कीचड नहीं लगता उसीतरह कर्मयोगि कर्म करने पर भी उस कर्म में जो पाप पुण्य होते हैं वे उसे नहीं लगते। उस जनम में कर्मयोग से कर्म को कमालिये बगैर बचसकते हैं पिछले जनम के कर्म को वह गवाले नहीं सकता यानि उस कर्म को भुगतना ही पडेगा। कर्मयोग से जो ताकत हासिल होती है वह सिर्फ उस जनम में आनेवाले कर्म जीतनेकेलिये ही इस्तेमाल होती है। पिछले जन्मों में भी हमने जो पाप पुण्य किये होंगे उनको खत्म करलेना चाहते हैं तो सिर्फ एक आत्मयोग से ही मुमकिन होसकता है। आत्मयोग से सिर्फ इस जनम के कर्म से बचना ही नहीं बल्कि पिछले जन्मों में जो भी कर्म हमने कमालिया होगा उस कर्म को भी ज्ञानाग्नि से जलादे सकते हैं। इन सबको जाँच कर देखने के बाद मालूम होजायेगा कि आखिर भगवान ने क्यों ऐसा कहा कि कर्म करनेवालों से भी योगी अधिक है।

पवित्र मानव जन्म में आये हुये अय जीवों! हम तुम लोगों को यह कह रहे हैं कि अहम जो तुम्हे चिपकलिया है उसे छोडकर अबतक तुम लोगों ने जिन जिन मार्गों पर भरोसा किया था उन सबको छोडकर अतिउत्तम योगमार्ग में बहुत ही तेज़ी के साथ सफ़र

करके परमपद को पाना चाहिये। मैं समझता हूँ कि आज के मेरी इस बात पर यकीन न किये तो भी उस दिन के भगवान की बात पर तो कम से कम यकीन करके सही मार्ग पर पहुँचेंगे।

मंत्रशक्ति

आज प्रपंच में मांत्रिक भी मौजूद हैं। वे यह साबित कर रहे हैं कि मत्रं का प्रभाव होता है। कुछ लोग योगियों को देखकर इसतरह के बातें कहरहे हैं कि तुम जो अभ्यास कर रहे हो वह इस मिसाल के बराबर है कि पहाड कि खुदायि करके चूहे को पकडे जैसा मतलब बडी महनत करने के बावजूद भी कम से कम थोडा फलित भी नहीं रहता। अगर वही अभ्यास जिस विधान से हम कर रहे हैं उसी विधान से अगर करेंगे तो तुमलोग जल्दी से फलित को पासकते हो। दूसरों को तुम यह दिखा सकते हो कि तुमने कुछ हासिल किया है इसतरह के बातें करते हुये योग क्रिया की बेइज्ज़ति कर रहे हैं,योग की अभ्यास करने वालों को भी बेकार काम करनेवालों के नीचे जमा करके बात कर रहे हैं। उससे कुछ योगाभ्यासक भी यानि योग का अभ्यास करनेवाले भी जो कुछ उन्होने कहा वह सच समझकर जल्दी से फलित मिलनेवाली मंत्रमार्ग की अनुसार कर रहे हैं। ये सब गौर करने के बाद मालूम हो रहा है कि कुछ लोगों को योगशक्ति, मंत्रशक्ति के बीच फरख मालूम न होने के कारण और योग क्या चीज़ है? मंत्र क्या चीज़ है मालूम न होने के कारण कुछ लोग योगभ्रष्ट हो रहे हैं। इसीलिये मैं ने मंत्रों के बारे में, मंत्रशक्ति के बारे में बोलना चाहा।

कुछ ईंटों को इकट्ठा करके लैन से जमाते गये तो आख़िर में एक गृह तयार होता है। उसीतरह एक यंत्र को तयार करनेकेलिये कुछ लोहे के तुकडों को इकट्ठा करनी चाहिये। पुस्तक को तयार करने केलिये कुछ कागज़ों को इकट्ठा करनी पडेगी। कुछ ईंटों की संगम (संयोजना) को ही गृह कहते हैं। कुछ लोहे के टुकडों की संगम को ही यंत्र कह रहे हैं। कुछ कागज़ों के संगम को ही पुस्तक कह रहे हैं। जैसे एक एक वस्तु को तयार करने केलिये उस के संबंदित कुछ टुकडों को जाइन्ट करके एक के ऊपर एक जमाते हैं उसीतरह एक एक कार्य को हासिल करने केलिये एक एक तरह के मंत्रों को जाइन्ट करके जमाना चाहिये यहाँ पर कुछ लोगों को एक शक पैदा होसकता है कि बाहर के वस्तुओं को जमाकर एक रुप देकर कार्य को पूरा करसकते हैं मगर मंत्रों से कार्य कैसे करसकते हैं। उसका जवाब यह है कि!

मंत्र मतलब एक निर्णीत शक्ति से जुडीहुयी होती है। चाहे कुछ अक्षरों से हो या एक ही अक्षर से हो मंत्र रहती है। उस मंत्र का प्रभाव अक्षरों के मिश्रित से हो या अक्षर के मुताबिक हो रहता है। उदाहरण केलिये रं जो है वह एक मंत्र है ह्रीम जो है वह एक मंत्र है। ऐसा ही कुछ अक्षरों का संगम **श्रीम ह्रीम क्लीम ऐम रम** जो है वे भी एक मंत्र है। इसतरह अनेक अक्षर सम्मेलनों से कई मंत्र हैं। एक एक क़िस्म के मंत्र को एक एक शक्ति रहती है। पूर्व में जिनलोगों ने उस शक्ति के बारे में जानलिया उस शक्ति को हासिल करके, उसके संबंदित कार्यों को पूरा करलेते थे। हमे लगता होगा कि आख़िर उन्होने मंत्रशक्ति को हासिल कैसे करलिया होगा। वह इसतरह है कि! उदाहरण केलिये कुछ अक्षरों से जुडी हुयी मंत्र मारणमंत्र कहलाती है। अगर उस मारण मंत्र को कुछ नियमों के प्रकार निर्णीत

संख्या में मन में उच्छारण करें तो उस मंत्र में जो शक्ति होती है वह सबकुछ एक ग्रूप की तरह बनकर उसमें ऐसी ताकत आजाती है कि वह मारण करने की प्रभाव अपने अंदर रखती है। वह मंत्र प्रभाव उस व्यक्ति के अंदर निगूढ होकर बसजाती है जिसने उसकी उच्छारण की हो। इसतरह मंत्र प्रभाव को हासिल करलेने को ही मंत्रसिद्धि कहते हैं। जिस व्यक्ति ने सिद्धि को पाया है वह वापिस उस मारण मंत्र का उच्छा रण करलेके जिस पर उसका प्रभाव दिखाने केलिये वह संकल्प करलेता है उस पर वह (शक्ति) प्रसार होकर उसे मरण कर रही है यानि उसे मार रही है। यह मालूम हो रहा है कि पूर्व में कुछ लोग सिर्फ एक मारण का कार्य ही नहीं बल्कि अनेक कार्यों को मंत्रप्रभाव के ज़रिये किया करते थे। पूर्व में मंत्र प्रभावों से इस्तेमाल किये जाने वाले आयुधों को **अस्त्र** कहा करते थे। मालूम हो रहा है कि पूर्व में **नागास्त्र, ब्रह्मास्त्र** कहलानेवाले कई प्रकार के अस्त्र रहा करते थे। एक एक अस्त्र मंत्र प्रभाव के साथ जुडा हुआ रहता है। उस प्रभाव के मुताबिक फलित रहता है। इसीलिये चरित्र से मालूम हो रहा है कि सबसे ज्यादा प्रभाव रखनेवाली **ब्रह्मास्त्र** है। राम ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किये जैसा,कर्ण अर्जुन पर नागास्त्र का प्रयोग किये जैसा मालूम हो रहा है। वे लोग उस दिन धनुष से एक तीर को खींच कर छोडके कहा करते थे कि यह सहस्त्रमारणास्त्र है जो हज़ार लोगों को मारडालेगा। यह शक आसकता है कि एक तीर (बाण) हज़ार लोगों को कैसे मारडालसकता है। उसका समाधान यह है कि! जिस तीर को छोडा था वह मंत्र प्रभाव से हज़ार लोगों को मारदेता था। अस्त्र तो एक ही है लेकिन फलित हज़ार लोगों को मारडालना, हज़ार लोगों को मारने की ताकत उस समय में उस लकडी (तीर) में निगूढ से रहती थी (यानि छुपकर रहती थी)

पूर्वकाल से आजतक मंत्र कई प्रकार के प्रभाव रखनेवाले होकर हैं। सांप केलिये एक प्रकार का मंत्र, बिच्छू केलिये एक प्रकार का मंत्र, जिन्नों केलिये एक प्रकार का मंत्र, मारण केलिये एक प्रकार का मंत्र इसतरह कई प्रकार के मंत्र आज भी मौजूद हैं। एक एक प्रकार के मंत्र को एक एक प्रकार का आचार रहता है। वह आचार का प्रकार रहे तो ही वह मंत्र सफल होता है। अगर आचार छोडदिये तो वह मंत्र सफल नहीं होगा। खास करके बतायें तो यह जो मंत्र है वह अक्षरों से जुडा हुआ होता है और उसके कई नियम रहते हैं। जबतक नियमों का अतिक्रमण नहीं करते तबतक चाहे कितना भी वक्त होजाये उस मंत्र का प्रभाव वैसे का वैसा ही रहता है।

अगर एक कुल्हाडि को कुछ लकडियाँ मारने केलिये इस्तेमाल करें तो उस कुल्हाडि का शार्पनेस कम होकर कुंठित बनजाता है। जब उस कुल्हाडि को वापिस शार्प (तेज़) करना पडता है। वरना कुल्हाडि लकडियों को काठ नहीं सकती। उसीप्रकार मंत्र को सिद्धि करलेने के बाद उसे एक काम केलिये इस्तेमाल करें तो वह काम पूरा होजायेगा। लेकिन दूसरीबार उस मंत्र का ताकत कम होकर रहता है। फिर से उसे ताकतवार बनाने केलिये वापिस मंत्र को कुछ बार पठन करना पडता है। मंत्र को नियमों के प्रकार हर हमेशा पठन करते रहने से वह मंत्र इतनी सामर्थ्य अपने अंदर रखती है ताकि कार्यों को पूरा करसके। अगर इसतरह पठन नहीं करेंगे तो कुल्हाडि रहने के बावजूद भी तेज़ न करने से जिसतरह वह कुंठित होकर लकडियों को काट नहीं सकती उसीतरह मंत्रसिद्धि पाने के बावजूद भी वह मंत्र काम नहीं करेगा।

मंत्रों के प्रभाव से कुछ लोग देवताओं को भी अपनी वश में करलेकर उन्हे अपने अपने कामों में इस्तेमाल करलेना भी हो रहा

है। इस ज़माने में भी ऐसे लोग मौजूद हैं जिन्होने काली शक्ति को अपने वश में रखलिया, कुछ लोग तो भगलामुखि शक्ति को अपने वश में रखलिया, और कुछ लोग काटेरिदेवता को अपने वश में रखलिया,कुछ लोग आन्जनेय को अपने वश में रखलिया। जिन्होने इसतरह अपने वश में रखलिया उनको कुछ वक्त के बाद वे देवताओं के ज़रिये ही अपाय भी संभव होरहा है। ऐसा इसलिये हो रहा है ! मानलीजिये कि एक ताकतवार इनसान को कारागार (जैल) में डालकर उसके ज़रिये काम करवाले रहे हैं। तो वह व्यक्ति हर हमेशा इसीकी योचना करता रहता है कि कब कब वह उस बंधीखाने से बाहर पडें। मौका मिलते ही उस बंधीखाने से फरार होजाता है यानि भाग जाता है। उसीतरह ताकतवार देवताऊँ को जब वश में करलेते हैं तो वे देवताएँ उन के मंत्रों से बांधे जाकर जो काम वह व्यक्ति करने केलिये कहता है उस काम को तो वे देवताएँ पूरा करदेंगे, लेकिन वे देवताएँ हर हमेशा यही खयाल में रहते हैं कि कबकब हम इस मांत्रिक के बंदिश में से छुटकारा पायें? अगर जब भी मौका मिलता है यानि जिस समय वह मांत्रिक उस मंत्र के नियमों से हो या आचारों से हो हटजाता है उस वक्त वे देवताएँ उस मांत्रिक पर अपना प्रभाव दिखाकर, ऐसा करते हैं कि वह मरजाए, फिर वहाँ से वे भाग के उनकी अपनी मरज़ी के मुताबिक जाते रहते हैं। कुछ देवताएँ मांत्रिक को मारे बगैर उसकी हालत ऐसी करदेते हैं कि उसके पैर को हो, हाथ को हो या तो स्वर को हो काम न करें। बस यूँही मांत्रिक को छोडदिये बगैर वे इसतरह इसलिये कर रहे हैं क्योंकि वह व्यक्ति इतने दिन उसे (यानि देवता को) अपने आधीन में रखलेकर काम करवालिया था ना! उस गुस्से के कारण, अगर यूँही छोड कर चलेगये तो वह मांत्रिक वापिस मंत्रसाधना से उसे अपने

स्वाधीन करलेगा कहकर डर से ऐसा कर रहे हैं और वे देवताएँ उसके साथ ऐसा कर रहे हैं कि वह व्यक्ति मरजाए या तो जिसम का कुछ हिस्सा काम न करें ताकि वह वापिस मंत्र की साधना न करसके। इसलिये देवताओं को अपने वश करलेने वाला काम बहुत की बेकार और बेवकूफ काम है। उसके द्वारा आखिर में सिर्फ नष्ट ही संभव होता है।

मंत्रों को सीखने की वजह से तात्कालिक तौर पर फलित होता है। लेकिन वापिस उनके द्वारा नष्ट बहुत ही रहते हैं। मंत्रों के ज़रिये इन स्थूल आँखों को दिखे जैसा बिच्छुओं को, सांपों को और कुछ वस्तुओं को तयार करसकते हैं। लेकिन वे सब सिर्फ कुछ मिनट या तो कुछ घंटों तक ही रहते हैं, उससे बढकर नहीं रहते। वापिस वे अदृष्य होजाते हैं। आज के ज़माने में बडे मंत्रों को हासिल करने वाले मांत्रिक न रहने पर भी छोटे छोटे मंत्रों को सीखेहुये कुछ लोग हमें वहाँ वहाँ नज़र आते हैं। ऐसे लोग भी मौजूद है जो बहुत ही छोटे मंत्रों को बडी मुशकिल से सीखकर कहते हैं कि हमसे बडे कोई होही नहीं सकता। क्षुद्रदेवताओं को अपने वश में रखलेकर उनके द्वारा हमारे आँखों को भी नज़र न आनेवाले वस्तुओं की जगह बता रहे हैं कि वे चीज़े वहाँ पर है। सिर्फ इतने से क्या वे ज्ञाननेत्र रखनेवाले होजायेंगे क्या? बिलकुल नहीं। कर्णपिशाच से पूछ कर जो विषय कहीं ओर हुये हैं उसके द्वारा मालूम करके, कह रहे हैं कि वहाँ पर ऐसा हुआ है। इतने से क्या वे ज्योतिश्य होजायेंगे? हरगिज़ नहीं, कभी नहीं होसकते। मंत्रप्रयोग (ब्लाक माजिक) करके एक व्यक्ति के साथ ऐसा कर रहा है कि उसकी मृत्यु होजाए या वह अंगवैकल्य होजाए,ऊपर से बडा शाप देनेवाले महर्षि की तरह खुद पर इतना गर्व (फखर) कर रहा है कि मैं जैसा करना चाहूँ तो वैसा करसकता

हूँ। सिर्फ इतना करदेने से क्या वह महर्षि बनजाता है? कभी नहीं,न कभी बनसकता है।

जो लोग मंत्रों को सीखकर सिद्धि हासिल किये थे वे लोग उनके फलित को योगाभ्यास करनेवालों को दिखाने पर,उसको देखकर कुछ योगाभ्यासक (यानि योग करनेवाले योगी) अज्ञानवश में आजाकर मंत्रों की प्रभाव को ठीक से समझ न पाकर, ऐसा समझ रहे हैं कि अरे, हम तो कितने दिन से योगाभ्यास कर रहे हैं फिर भी कम से कम इनकी तरह एक छोटे बिच्छू को भी तयार नहीं करसके! यह मांत्रिक तो हम से भी बडा है और हमारे मार्ग से इनका मार्ग ही बडा है कह कर मांत्रिक को आश्रय कर रहे हैं। लेकिन जो लोग ज्ञान की दीपकांति से योग और मंत्र के बीच फरख जानलिया है वह ऐसा बिलकुल नहीं करता। क्योंकि मंत्र जो है वे विविध आचारों के साथ,जानवरों की खुरबानियों (बलियों) से, शोचनीय नैवेद्यों से अनेक नियमों से जुडे हुये हैं। लेकिन योग ऐसा नहीं है योग में तो न आचार रहते हैं न नियम, ना हि जानवरों के बलीचढाना, कई प्रकार के नैवेद्य या मंत्र कुछ नहीं रहते, बाहर के चीज़ों से योग का कुछ भी वास्ता नहीं है। मंत्रों के वजह से देवताएँ तो वश में आजाते हैं मगर मांत्रिक पर ही द्वेष से रहते हैं। योग की वजह से देवताएँ वश में नहीं आते मगर देवताएँ भी योगी के पास भक्ति भाव के साथ विनय विधेयता से पेश आते हैं। चाहे वह किसी भी तरह का मंत्र प्रयोग हो योगी को कुछ नहीं करसकता। जिन योगियों ने मांत्रिकों से मंत्रबल अच्छा नहीं है कहा होगा वे मांत्रिक उस योगी पर द्वेष से,मंत्रप्रयोग करके,उनका प्रयोग ही उल्टा होजाने से डर जा रहे हैं। योगशक्ति मांत्रिकों की मंत्रशक्ति से भी बडी है। इसलिये मंत्रशक्ति उन योगियों को कुछ नहीं करसकती जिनके पास योगशक्ति हो। मांत्रिकों के

प्रयोग योगियों पर नहीं चलते। अगर योगियाँ संकल्प करलें तो मांत्रिकों की मंत्रशक्ति पूरी बरबाद होजासकती है। बाद में वे मांत्रिक मंत्रशक्ति में निर्बल होकर किसी भी तरह के काम को पूरा नहीं करसकते। जो देवताएँ मांत्रिकों के वश में हैं वे योगियों का कुछ नहीं बिगाड सकते। अगर योगियों को तकलीफ पहुँचाने केलिये मांत्रिकों के प्रेरणा से देवताएँ आने पर भी योगियों के पास जो ज्ञानाग्नि है उसमें भस्म होजाते हैं। नहीं तो पास आते ही ज्ञानाग्नि के गरमी से बरदाश्त न करसकके भाग जाते हैं। पूर्व में मंत्रयुक्त वाले अस्त्र भी योगियों को कुछ नहीं करपाये। सबसे ज्यादा प्रभाव रखनेवाली ब्रह्मास्त्र को वशिष्ट पर प्रयोग करने पर वह वशिष्ट को कुछ नहीं करसकी क्योंकि वह योगी था और कहते हैं कि वह अस्त्र भी उसीमें लीन होगयी। कहते हैं कि जब श्रीराम और आन्जनेय (हनुमान) ययातिराज केलिये युद्ध करना चाहा था उसवक्त श्रीराम ने जो अस्त्र का प्रयोग आन्जनेय पर किया था वह उसे कुछ नहीं करसकके उस आन्जनेय में जो योगशक्ति है उसकी बात मानकर हार के रुप में बदलकर उसके गले में जाकर गिर गयी। एक ज़माने में ईश्वर जो महायोगि है वह शिकारी के भेष में था उसवक्त अर्जुन ने उस पर दिव्यास्त्रों का प्रयोग किया फिर भी वे ईश्वर को कुछ नहीं करपाये। सब शक्तियों से बडी ज्ञानशक्ति है इसलिये उसके आगे कोई भी शक्ति काम नहीं की। इस प्रपंच में ऐसी कोई शक्ति ही नहीं है जो ज्ञानशक्ति से पवित्र हो और उसका सामना करसके। इसीलिये भगवद्गीता में ज्ञानयोग में भगवान ने कहा कि **न हि ज्ञानेन सदृशं, पवित्रमिह विद्यते** मतलब इस जगत में ज्ञान से बराबर वाली चीज़ कोई है ही नहीं उससे पवित्रवाली चीज़ कुछ भी नहीं है। इसलिये मंत्र,यंत्र,तंत्र गजकर्ण,गोकर्ण, इंद्रजाल, महेंद्रजाल विद्यायें और यक्ष, राक्षस, किन्नेर,

किंपुरुष, गरुड, गंधर्व, नाग, भूत, प्रेत पिशाच ये सबकुछ ज्ञान से हीन है। सब से अग्रस्थान में जो है वह परमात्मा का ज्ञान है। जिसने आत्मज्ञान पालिया वह लोक में किसी शक्ति से नहीं डरता। न दूसरों को डराता। बिना भय,मनोव्याकुल के निश्चल से रहता है। ऐसा बन्दा ही परमात्मा का पसंदीदा बंदा है। इसलिये गीता शास्त्र में भक्ति योग में भगवान ने **यस्मान्नो द्विजते लोको लोकान्नो द्विजतेचयह हर्षामर्ष भयोद्वेगैर्मुक्तो यस्सचमे प्रियह वही मेरा प्रिय है जिसे इस जगत से डर न लगता हो, जगत से जिसे डर नहीं लगता वह न संतोश, न कोप, न मनोव्यकुलता, न डर पाता है।** इसीलिये जो ज्ञानी होता है वह मंत्र तंत्रों को आश्रय किये बगैर योगशक्ति को ही कमालेता है।

आज देश में कुछ लोग मंत्रों को आश्रय करके, क्षुद्रदेवताओं की आराधना करते हुये, अपने आप को असली भक्त समझते हुये, इसतरह के भ्रम में है कि हम से बढकर ज्ञानियाँ दुनिया में है ही नहीं। अगर मंत्रो और योग के बीच का व्यत्यास जान जाये तो यह मालूम होजायेगा कि असल में कौनसा अच्छा है। कुछ मांत्रिक मंत्रप्रभाव से योगियों पर द्वेष भाव रखते हुये उन्हीको नीचा दिखा रहे हैं। चाहे कोई कुछ भी बोललेने पर भी योगियाँ सामान्य से चुप रहते हैं। अगर योगियों को गुस्सा आगया तो, अगर वे ज्ञान नेत्र को लाल करदिये तो मांत्रिकों की मंत्रशक्ति भस्म होजायेगी। बाद में नष्ट और कष्ट मांत्रिक को ही झेलना पडेगा। पूर्व में जिनलोगों ने योगियों पर मंत्रों के ज़रिये दण्डयात्रा किये थे वे मंत्रभ्रष्ट होकर दूसरे जनम में कई कष्टों को भुगतना हुआ था। इसलिये मांत्रिक योगियों को नीचा नहीं दिखाना चाहिये। मैं यह बता रहा हूँ कि मांत्रिक भी कभी न कभी तो नष्ट को लाकर रखनेवाले मंत्रों को छोडकर, परमात्मा को आश्रय करके, दैवसाधना करें तो बहुत ही अच्छा होगा। मंत्रसाधना से भी

योगसाधना पवित्र है। मंत्रसाधना के द्वारा प्रपंच कार्यों को, प्रपंच की शान शैकत को पासकते हैं। लेकिन मोक्ष को ज़रा भी हासिल नहीं करसकते। इसलिये हम चाहते हैं कि जिन्हे मंत्रों के बारे में मालूम है वे मंत्रों के पास जाये बगैर, मंत्र सिखाने वाले गुरुओं को आश्रय किये बगैर, योग मार्ग की अन्वेषणा करते हुये, उन गुरुओं की शरण में जाकर अपनी जिंदगी सार्थक करलें जो परमात्मा का ज्ञान बताते हो।

ग्रह - विग्रह

पैदाहुयी हरप्राणि को ज़रुर मरना ही पडेगा। मरने की हालत को मृत्यु कहते हैं। मृत्यु कर्म के अनुसार दो प्रकार के हैं। वे **१) कालमृत्यु २) अकालमृत्यु । जीव की आयु पूरा खत्म होजाने के बाद जो मृत्यु आति है उसे कालमृत्यु कहते हैं। जीव की आयु पूरा खत्म न होने से पहले ही जो मृत्यु संभव होती है उसे अकालमृत्यु कहते हैं।** कालमृत्यु में जीव स्थूल, सूक्ष्म शरीरों को छोडकर जायेगा। अकालमृत्यु में सिर्फ स्थूल शरीर को छोडकर,सूक्ष्मशरीर को पहनकर रहता है। जो लोग अकालमृत्यु पायें हैं वे जबतक उनको कालमृत्यु संभव नहीं होगी तबतक रहकर,कालमृत्यु संभव होते ही फौरन जबतक जो सूक्ष्मशरीर को वे पहनेते उसको भी छोडकर दूसरे शरीर को पहन रहे हैं। इसीलिये भगवद्गीता में सांख्य योग में परमात्मा ने कहा कि **देहि देह को पहन कर लैन से बाल्य, योव्वन, कौमार, वृद्धाप्य ऐसा ही मृत्यु को पा रहा है। मृत्यु को पाते ही फौरन नये शरीर को पहन रहा है।**

बहुत से लोगों को आखिर यह अकालमृत्यु क्यों है? अकालमृत्यु पाने के बाद जीव का रुप कैसे रहता हैं? अकालमृत्यु पाने के बाद जब तक कालमृत्यु नहीं आता तबतक जीव क्या करता हैं? इसतरह के कई शक शुरु हुये होंगे। उन सवालों का जो वे पूछते हैं, उन सवालों का जो वे पूछ नहीं सकते, उन सब सवालों के लिये मेरा जवाब यह है कि! जीव पाप पुण्य को कमाले रहा हैं ना! उन्ही को तो हम कर्म कहरहे हैं, हेना! कर्म दो प्रकार के हैं। एक मानसिक कर्म, दूसरा शारीरक कर्म। मानसिक कर्म वह कर्म है जिसे इनसान ने शरीर से नहीं बल्कि मन से कमालिया हो और उस कर्म को भी मन से ही भुगतते हैं। शारीरक कर्म वह कर्म है जिसे इनसान ने मन से ही नहीं बल्कि शरीर से भी किया हो और उस कर्म को शरीर से ही भुगतते हैं। अगर इसीको खुले तरीके से बयान किये तो यह मालूम हो रहा हैं कि मानसिक कर्म यानि जीव सूक्ष्मशरीर के द्वारा भुगतता हैं, शारीरक कर्म यानि जीव स्थूलशरीर के द्वारा भुगतता हैं। जिस व्यक्ति को ये दो कर्म तखरीबन बराबर रहते हैं वह दोनों कर्मो को भुगतते हुये प्रारब्द खत्म होते ही फौरन कालमृत्यु को पा रहा है। इसके अलावा अगर शारीरक कर्म कम रहकर, मानसिक कर्म ज्यादा रहा तो, प्ररब्द के हिसाब से शारीरक कर्म पहले खत्म होजाकर सिर्फ एक मानसिक कर्म बाक़ी रहता हैं। जब शारीरक कर्म खत्म होजा रहा हैं तब स्थूल शरीर से कुछ काम नहीं है इसलिये अकालमृत्यु संभव होरही हैं। अकालमृत्यु में जो बाक़ी रहती हैं वह सूक्ष्मशरीर ही है। उसीसे पूरा मानसिक कर्म भुगतवाया जारहा है। पाप पुण्य (कर्म) दो क़िस्म से हैं एक शारीरक, दो मानसिक। इसीलिये परमात्मा ने कालमृत्यु, अकालमृत्यु कहकर दो प्रकार के मृत्युओं को रखा हैं।

जीव स्थूल शरीर में जब रहता है तो कहते हैं कि वह ज़िंदा है। स्थूलशरीर छोडके जाते ही कहते हैं कि वह मरगया है। लेकिन यह पहचान नहीं सकते कि वह मरण कालमरण है? या अकालमरण? उसीतरह हम बहुत से लोगों को मरेहुये देखते हैं लेकिन हमलोग यह पहचान नहीं पा रहे हैं कि जीव ने कालमरण पाया है या अकालमरण। जीव जब अकालमृत्यु से मरजाने के बाद, सिर्फ सूक्ष्मशरीर बच रहा है ना! उसका रुप इसतरह से रहता है कि जिस स्थूलशरीर के साथ सूक्ष्मशरीर जुडकर रहता था उसी रुपको सूक्ष्मशरीर पायि हुयी होती है। लेकिन सूक्ष्मशरीर को ही और एक नाम है। उसीको **ग्रह** कहते हैं। ग्रह को कुछ लोग जिन्नात (तेलुगु में दय्यमु कहते हैं) कहते हैं तो कुछ लोग भूत भी कहते हैं। सूक्ष्मशरीर को ही ग्रह, दय्यमु, जिन्नात, भूत कहते हैं। जीव एकबार अकालमृत्यु के द्वारा खुद का जो स्थूलशरीर है उसे छोडने के बाद उसमें कभी भी वापिस प्रवेश नहीं करसकता। ऐसा ही मृत्यु पाया हुआ किसी भी स्थूलशरीर में हो प्रवेश नहीं करसकता। लेकिन जिंदा रहनेवाले किसी भी जीव के शरीर में प्रवेश करसकता हैं। इसीलिये मरेहुये लोग आकर जिंदे लोगों के शरीर में प्रवेश करके बात करना प्रत्यक्ष से हम वहाँ वहाँ देखही रहे हैं। यहाँ पर कुछ लोगों को शक आसकता हैं कि जो लोग जिंदे हैं उनके शरीर में तो पहले से सूक्ष्मशरीर है ना! दूसरा सूक्ष्मशरीर कैसे प्रवेश करेगा? पहले से उस शरीर में जो सूक्ष्म है वह उस समय में कहाँ जायेगा? उसकेलिये हमारा जवाब यह है कि! जो जिसम ज़िंदा है उसमें सूक्ष्मशरीर आसानी के साथ प्रवेश करसकता हैं। वह इसतरह है कि जिसतरह **सूर्यकिरण कॉंच के ऐने में घुसता** हैं सूक्ष्मशरीर भी स्थूलदेह में घुसजाता हैं। अगर आपलोग कहेंगे कि दूसरों के जीवशरीर में तो सूक्ष्मशरीर पहले से ही रहता हैं ना! तो

उसकी क्या हाल होगी? जब दूसरा सूक्ष्मशरीर अपने स्थूलशरीर में आता हैं तो पहलेवाला निद्रावस्था में जाता है। इसलिये दूसरा ग्रह (सूक्ष्मशरीर) अपने अंदर प्रवेश करके क्या किया है यह बात उस जीव को मालूम नहीं होता। जिसतरह घोडा चडकर रैडर अपनी मरज़ी के मुताबिक घोडे को चलाता है उसीतरह स्थूल देह में कोई भी सूक्ष्मशरीर दाखिल हो उस सूक्ष्म शरीर के मुताबिक ही स्थूल चलता है। वह इसतरह है कि, मानलीजिये कि एक जीव को पान खाने की आदत नहीं है अगर उनमें दूसरा ग्रह (सूक्ष्मशरीर) दाखिल हुआ तो अगर उस ग्रह को पान खाने की आदत है तो, उस समय में वह पान खाती है। और एक व्यक्ति जिसे तमिल भाषा नहीं आति लेकिन उसके अंदर तमिल भाषा बातकरनेवाला ग्रह प्रवेश करने पर उस समय में तमिल भाषा ही बात करेगा। उसीतरह गाने न आनेवाले को गानेगानेवाला ग्रहपकडलिया तो उस समय में गाने गा रहा है। इसतरह सूक्ष्मशरीर को जो आदतें और गुण रहते हैं वहीं आदतें और गुण उस स्थूल शरीर में भी दिखते रहते हैं जिसमें उस ग्रह ने प्रवेश किया।

प्रपंच में बहुत से लोग अकालमृत्यु के द्वारा ग्रहों की तरह बदले हुये हैं। बदले हुये लोग सब दूसरों में प्रवेश नहीं करते। कुछ लोग तो दूसरों में प्रवेश करते रहते हैं। लेकिन और एक रहस्य की बात यह है कि कई जातियों के प्राणियों के स्थूलशरीरें अलग होने पर भी जीवात्मायें तो एक ही है ना! इसलिये ग्रह (सूक्ष्मशरीरें) अपने जाति के शरीरों में ही नहीं बल्कि दूसरे जातियों के शरीरों में भी प्रवेश कर रहे हैं। इनसान के शरीर में इनसानि ग्रह प्रवेश कर रहे हैं। और सांपों के ग्रह और दूसरे जाति के प्राणियों के ग्रह भी प्रवेश कर रहे हैं। इनसान में इनसानि ग्रह प्रवेश करने पर, जैसे इनसान

बिहेव करता है वैसा ही बिहेव करेगा। जैसे इनसान बात करता है वैसा ही बात करेगा। इनसान में जब सांप की जाति की ग्रह प्रवेश करता है तो सांप जैसे रेंगता है वैसा ही रेंगता है, जैसे सांप फुफकारता है वैसा ही फुफकारता हैं, कोई भाषा में बात नहीं करसकता। इसके मुताबिक देखें तो, यह मालूम हो रहा है कि सिर्फ एक इनसानी सूक्ष्मशरीरें ही नहीं बल्कि कई प्रकार के प्राणियों के सूक्ष्मशरीरें प्रपंच में मौजूद हैं। सूक्ष्मदेह पहनेहुये तमाम प्राणियों को अगर ज्ञान की दृष्टि से देखेंगे तो ऐसा लग रहा है कि क्या यह सब दूसरा प्रपंच है!!!

चाहे इनसानों को मालूम हो या न होने पर भी ऐसी एक प्रपंच तो मौजूद है जो इन स्थूल आँखों को नज़र नहीं आति। जिसतरह यहाँ के सर्व प्राणियाँ, इनसान पाप पुण्यों के फलित यानि सुख दुखों को भुगत रहे हैं उसीतरह उस प्रपंच में भी भुगत रहे हैं। इस प्रपंच में जिसतरह हम परेशानियाँ उठारहे हैं उसीतरह ग्रह भी परेशानियाँ उठा रहे हैं। जिसतरह हम सब एक दूसरे के साथ संबंध रखे हुये हैं उसीतरह वे (ग्रह) भी एक दूसरे के साथ संबंध रखे हुये हैं। जिसतरह हम एक दूसरे से बात करलेते हैं उसीतरह वे (ग्रह) भी एक दूसरे के साथ बाते करलेते हैं। जिस जाति को जो प्रवर्तन रहता है,उस जाति को वही प्रवर्तन रहता हैं। सूक्ष्म शरीर में बुद्धि, मन, अहंकार हैं। इसलिये जो गुण इनसानों को रहते हैं वही गुण इनसानि ग्रहों को भी रहते हैं। सूक्ष्मशरीरों से भराहुआ दूसरा प्रपंच हमारे आँखों को नहीं दिखता। हमारे आँखों को सूक्ष्म शरीरें नहीं दिखते मगर सूक्ष्मशरीरों के नज़र (दृष्टि) को सूक्ष्मशरीरें ही नहीं बल्कि स्थूलशरीरें सब दिखते ही रहते हैं। यानि हमलोग उनको नहीं देख पा रहे हैं मगर ग्रह हमलोगों को देखसकते हैं।

कुछ लोग इसतरह बहस करते हैं कि हमने ग्रहों को देखा हैं। उसकेलिये हमारा जवाब यह है कि! दिन में ग्रह साधारण से किसीको नहीं दिखते रात्रि के समय दिखने का मौका है। वह भी इसतरह है कि रात्रि के समय में भी जिन लोगों की जागृतावस्था अच्छी हैं उनको बिलकुल नहीं दिखते। जिन लोगों की जागृतावस्था ठीक न रहते हुये जागृति में ही नींद की अवस्था पाये हुये लोगों को, यानि रास्ते पर चलतेवक्त जो लोग नींद की नशे में रहते हैं उनका स्थूलशरीर पूरे तरीके से जागृति में नहीं रहता। इसलिये उसके सूक्ष्मशरीर के दृष्टि को ग्रह दिखसकते हैं। वो भी पूरा रुप नहीं दिखता। सिर्फ इतने हद तक मालूम होता है कि वह फलाना जाति को बिलांग करता हैं। इसीलिये जिनको नींद ज्यादा रहती है वे रात्रि के समय में जब बाहर संचार करते हैं तब उन्हे ग्रह दिखते रहते हैं। वह भी केवल इनसानि ग्रह ही नहीं बल्कि दूसरे जातियों के ग्रह भी दिखते हैं। इसीलिये कुछ लोग मुझे जिन कुत्ते की तरह दिखी हैं, मुझे बैल की तरह दिखी हैं, मुझे भेड़ की तरह दिखी हैं कहकर कई प्रकार कहते रहते हैं। चाहे कैसे भी दिखे वे स्थूलदृष्टि को बिलकुल नहीं दिखते। सूक्ष्मशरीर के नज़र को थोडा बहुत दिखा हुआ होगा।

कुछ लोग इसतरह सवाल करसकते हैं कि जीव अकालमृत्यु को पाने के बाद उसे सूक्ष्मशरीर के साथ बहुत ही वक्त गुज़ारना पडता है ना! तो तब तक वे कहाँ निवास कर रहे हैं? कुछ लोग तो स्मशानों में ही निवास कर रहे हैं। कुछ लोग तो पुराने पडगये हुये गृहों में निवास कर रहे हैं। और कुछ लोग इमली के पेडों, जम्मि के पेडों, पीपल के पेडों, अंजीर के पेडों में निवास कर रहे हैं। कुछ लोग तो जहाँ मरगये थे वहीं पर रह रहे हैं। जैसे हमलोगों के लिये दिन में होष, रात्रि में नींद है वैसा ही सूक्ष्म शरीरों को रात्रि में होष, दिन

में नींद है। इसलिये ग्रह रात्रि के समय ज्यादा संचार करते हैं। जैसे हमलोगों को भूक है सूक्ष्मशरीरों को भी भूक है। जिसतरह हम भूक को मिटाने के लिये कडी महनत करते हैं सूक्ष्मशरीरें भी भूक को मिटालेने के लिये बडे मुशकिलात उठा रहे हैं। जो खाना हम खाते हैं वही खाना ग्रह भी खाते हैं। हमको मालूम हुये बगैर ही हमारे आहार को,धान्य को ग्रह लेकर चलेजाते हैं। इसतरह लेकेजाने को कोई पहचान नहीं सकता। लेकिन पूर्व में बडे लोग जिन्हे ज्ञानदृष्टि है उन्होने ग्रहों के स्थितिगतियों को मालूमकरलिये इसलिये धान्य को भुट्टेसे अलग करके ढेर की तरह डालें तो उस समय में ग्रह डर कर उस ढेर के पास न आने के लिये चाखु को हो, लकडी को हो,कुल्हाडि को हो,नारियल को हो इनमें से कुछ न कुछ एक चीज़ को उस धान्य के ढेर पर रखा करते थे और ढेर के गोल रेखा (गीता या लिखीर) गीसते थे। उस काम को कुछ लोग कुछ प्रांतों में अभी भी कर रहे हैं। लेकिन उनको यह नहीं मालूम कि वे क्यों कर रहे हैं। जब धान्य को ढेर की तरह डालते हैं तब ही ग्रह उस ढेर में के धान्य को अदृष्य रुप में लेके जाने का मौका ज्यादतर है। इसीलिये उस जगह पर डालते वक्त ही अगर कोई भी धान्य पर कुछ न कुछ नहीं रखा तो हम समझते हैं कि सौ बस्तों का धान्य निकलेगा लेकिन तोलने पर अस्सी बस्तें ही निकलता है। इसतरह कई जगहों पर होता रहता है। जिन के घरों में ग्रह निवास करते हैं उनके संसार में वृध्दि न होने का कारण यही है। कुछ जंगलों में तो भुट्टों के साथ रहनेवाले बीजों को भी ग्रह गायब करसकते हैं। इसलिये पूर्व में बडेलोग जंगल में **पोलि (बलि देना)** नाम से मुर्गी हो या बकरे को हो काट कर ग्रहों को दावत देते थे ताकि वे इसतरह की हरकत न करें। उस खाने को खाये हुये ग्रह उनपर दया करके उनके जंगलों में आया नहीं करते

थे। आज के ज़माने में कुछ स्थलों में अब भी पोलि कर रहे हैं। लेकिन यह क्यों कर रहे हैं किसी को नहीं पता। बहुत से लोगों को यह बात बिलकुल भी नहीं मालूम कि पोलि ग्रहों के लिये भोजन हैं। यह बात न मालूम होकर जो लोग अपने जंगलों में पोलि नहीं करते उनके फसल को कम करदेते हैं। इतना ही नहीं खाने के ढेर के पास भी ऐसा ही होता था। बकरों को काटकर मांस को ढेर की तरह डालने के जगहो में भी ग्रह चोरी करते हैं। कुछ जगहो में पहले तोला हुआ मांस फिर से तोलने पर बहुत ही वज़न कम होकर रहता हैं। कारण ग्रह लेगये हुये होते हैं। इसतरह सूक्ष्मशरीर जो अदृष्य रुप में हैं अपने आहार को कमाले रहे हैं।

अगर ग्रहों को एक जगह से दूसरे जगह को जाना है तो हमारी तरह ही रैलो में बस्सो में प्रयाण कर रहे हैं। उनको टिकेट्स पूछनेवाले कोई नहीं है। सूक्ष्मशरीरें भी औरत, मरद का फरख रखते हैं ना! इसलिये हमारी तरह ही सूक्ष्मशरीरें स्त्री पुरुष संयोग कर रहे हैं। जो लोग ग्रहों के तरह बदले हुये हैं अगर उनमें कोई भी इसतरह का ख्वाहिश रखते हैं कि जो लोग ज़िंदे हैं उनसे संयोग करना है तो वे लोग ज़िंदे लोगों से संयोग कर रहे हैं। लेकिन कैसा कर रहे हैं यह सामान्य से किसी को भी नहीं मालूम। जो लोग ग्रहों की तरह हैं वे उनमें एक दूसरे के साथ मारले रहे हैं और गालि देले रहे हैं। बहरहाल, उनका पूरा जीवन जैसे हमारा है वैसा ही रहता हैं। वह सबकुछ हमारे आँखों को नहीं दिखता। इसलिये कुछ लोग यकीन नहीं करसकते हैं। जो लोग अब यकीन नहीं कर रहे हैं अगर उनको अकालमृत्यु आयें तो तब जाकर उन्हे पता चलेगा कि जो कुछ भी कहा गया वह सबकुछ सच हैं।

ग्रह मतलब कोई और नहीं हमारे अंदर जो जीवात्माएँ हैं वही ग्रह हैं। ग्रहों से अज्ञान डरते हैं। वे भी उन्हीको सताते हैं। ज्ञानी बिलकुल नहीं डरते न वे उन्हे डरासकते हैं, न तकलीफ पहुँचासकते हैं। जैसे अज्ञानों के शरीरों में प्रवेश करते हैं वैसे ज्ञानियों के शरीर में प्रवेश नहीं करसकते। क्योंकि क्या हम उस अग्निगुण्ड में ठहर सकते हैं जो जलरहा हो?या कम से कम खदम रखसकते हैं? नहीं ना! उसीतरह ग्रह उन शरीरों में दाखिल नहीं होसकते जो ज्ञानाग्नि से भरेहुये हो। अगर पास आने पर भी ज्ञानाग्नि के गरमी से बरदाश्त न करसक के दूर चले जाते हैं। और संपूर्ण ज्ञान रखनेवाले योगियों को देखकर ग्रह डरते हैं। इसीलिये एसु प्रभु (ईसा) को देखकर कुछ ग्रह डरके मारे भाग गये थे। बहुत से जगह ग्रह ज्ञानवानों की बात मानते हैं यानि उनके वश में आगये। जो लोग ज्ञानी न होते हुये अज्ञान हुये हैं वे ज्ञानियों को देखकर मज़ाक उडाते हुये कहते हैं कि हम तो बडे बडे पढायियाँ किये थे ना! हमारे पढायियों मैं तो ऐसा कहीं पे भी नहीं लिखा हुआ है कि जिन्नात (ग्रह) मौजूद है। प्रापंचिक पढायि पढने से सिर्फ वहीं मालूम होता है जो आँखों को दिखता है। लेकिन परमात्मा की पढायि करने से वह भी मालूम होता है जो आँखों को नज़र नहीं आता। जो लोग अज्ञान में फसे हुये उनको ग्रह कई प्रकार से तकलीफ पहुंचा रहे हैं। बहुत से लोगों को यह तक नहीं मालूम कि कुछ तकलीफें सिर्फ ग्रहों से ही संभव हो रहे हैं। वे तकलीफ इसतरह होते हैं कि,कुछ लोगों के शरीर में ग्रह प्रवेश करके पेट में ज्यादा दर्द आये जैसा कर रहे हैं। इस पेट के दर्द केलिये दवायियाँ बिलकुल काम नहीं करेंगे। दवायियाँ कुछ काम नहीं करते ऊपर से एक्स (X - Ray) निकाले हुये उस फिल्म में भी किसी तरह का दोष नज़र नहीं आयेगा। कुछलोगों में तो ग्रह प्रवेश करके

छाति में दर्द आये जैसा कर रहे हैं। कुछ लोगों में ऐसा कर रहे हैं कि उन्हे सर का दर्द आये। कुछ लोगों के साथ ऐसा कर रहे हैं कि वे कमज़ोर होकर दुबले पतले होजाये। कुछ औरतों के साथ ऐसा कर रहे हैं कि उन्हे मैला (रक्तस्त्राव) ज्यादा हो। और कुछ लोगों को फिट्स आये जैसा करके ऐसी बेहोश की हालत में लेकर जा रहे हैं कि उन्हे बुलाने पर भी वे कुछ नहीं बोलसकते। कुछ लोगों को एक पैर, एक हाथ पारलैज़ड (न हिले जैसा) कर रहे हैं। इसतरह ग्रह इनसानों को सता कर सात घुट पानि पिला रहे हैं,यानि बहुत परेशान कर रहे हैं। एक मानव जाति को ही नहीं बल्कि दूसरे जातियों को भी ग्रहों के परेशानियाँ रहते हैं। अगर कोई भी हो ग्रहों के परेशानियों से छुटकारा पाना चाहते हैं तो भक्तिमार्ग का अनुसार करना ही पडेगा। इसके अलावा मंत्र तंत्रों से हम छुटकारा पालेंगे कहकर समझें तो थोडे दिन शायद बचजायेंगे मगर हमेशा केलिये नहीं बचसकते। ज्ञानशक्ति से बढकर कोई और शक्ति नहीं है। इसलिये सिर्फ उसीके ज़रिए छुटकारा पासकते हैं।

अब तक हमलोगों को आमूलाग्र से यह बात मालूम हुआ कि ग्रह का क्या मतलब है? उनके स्तिथिगतियाँ क्या हैं? अब हम विग्रहों के बारे में मालूम करते हैं। मानव के सूक्ष्मशरीर को ग्रह कह रहे हैं ना! ऐसा ही जो सूक्ष्मशरीर प्रतिमा में रहती हैं उसे विग्रह कहते हैं। मानव को सूक्ष्मशरीर स्थूलशरीर में दबकर हैं। ऊपर से सिर्फ मानव का स्थूलदेह दिखता है मगर सूक्ष्मदेह नहीं दिखता । उसीतरह मंदिर में जो ईश्वर है उसका स्थूल शरीर प्रतिमा है तो, सूक्ष्मशरीर विग्रह है। प्रतिमा में विग्रह दबा हुआ है। ऊपर से सिर्फ उस ईश्वर की प्रतिमा का आकार दिखता है मगर सूक्ष्मशरीर (विग्रह) का आकार नहीं दिखता। जिसतरह पैदाहुआ हर मानव को सूक्ष्मशरीर रहता है

उसीतरह प्रतिष्टा की गयी हर प्रतिमा को विग्रह रहता है। जैसे मानव को सूक्ष्मशरीर जाकर स्थूल कलेबर बचता है, उसीतरह प्रतिमा में विग्रह जाने पर सिर्फ स्थूलदेहवाली प्रतिमा ही बचकर रहती है। यानि मराहुआ मानवकलेबर, बिना विग्रहवाली प्रतिमा दोनों एक ही है। मानव का सूक्ष्मदेह स्थूलदेह का आकार ही पाया हुया होता है। ऐसा ही प्रतिमा का आकार ही विग्रह पायि हुयी होती है। लेकिन ग्रहों में, विग्रहो में कुछ विषयों में बहुत ही फरख है। उनके बारे में तफसील के साथ बयान करते हैं, सुनिये।

१) ग्रह एकबार अपने स्थूलदेह को छोडकर बाहर आएँ तो वापिस उसमें प्रवेश नहीं करसकती। विग्रह अपने स्थूलशरीर को छोडकर बाहर आकर वापिस प्रवेश करसकती हैं। २) ग्रह दूसरों के पदार्थों को चोरि करती है। विग्रह उसतरह चोरि नहीं करती। ३) ग्रह दूसरों को रोगों की सूरत में तकलीफ देती है। विग्रह भी कुछ लोगों को परेशान करते हैं, और कुछलोगों को परेशानियों से विमुक्त भी करते हैं। ४) ग्रहों में कुछ ज्ञानशक्ति को रखते हैं तो कुछ में बिलकुल भी ज्ञानशक्ति नहीं रहती। पूरे विग्रह ज्ञानशक्ति रखे हुये होते हैं। लेकिन कम दर्जे से बडे दर्जे तक लेवेल बै लेवेल से शक्ति रखे हुये होते हैं। ५) ग्रह बेइनसाफी से बरताव करते हैं। लेकिन विग्रह इसतरह बरताव नहीं करते। ग्रहों में विग्रहों में कुछ फरखें हैं इसलिये ग्रहों को छोटे जिन्नात कहसकते हैं।

जो कर्म किया था वह कर्मचक्र के द्वारा आकर,दूसरे माँ के गर्भ में जनमलिया हुआ शिशु के शरीर में प्रवेश करके जिसतरह शिशु शरीर को प्राण आता है उसीतरह शिल्पाचार्य के हाथ तय्यार हुयी प्रतिमा में कर्म की वजह से एक जीव प्रवेश करके प्रतिमा को

प्राण आ रहा है, जो जीव इसतरह दाखिल हुआ उसकेलिये स्थूल शरीर प्रतिमा, सूक्ष्मशरीर विग्रह, इसतरह प्रतिमा प्राण को पाये हुयी होती है। मानव शरीर की तरह प्रतिमा की शरीर हिल नहीं सकती। जिसतरह मानव की सूक्ष्मशरीर संचार करती है उसीतरह प्रतिमा की सूक्ष्मशरीर भी संचार करसकती है। सर्व प्राणियों में, भोगियों में, पापियों में, जानवरों में और मंदिरो में रहनेवाले ईश्वरों में सब जीवियों में आत्मा समान से है। देवप्रतिमा में जीव दाखिल होने के लिये अच्छे कर्म की बहुत ज़रुरत है। अच्छे कर्म रखनेवाले कर्मानुसार दैवप्रतिमाओं मैं जीवों की तरह दाखिल होकर, उसमें योग आचरण करके दैवशक्ति को ज्यादा पाए हुए लोग होकर, उनके कर्म खत्महोजाते ही परमात्मा में ऐक्य होजा रहे हैं। लेकिन कुछ लोग ऐसा नहीं कर रहे हैं वे दैवप्रतिमाओं में जीव की तरह दाखिल होने पर भी ठीक से योग की अमल न करते हुए प्रपंच की माया में डूब रहे हैं। यहाँ जो लोग मंदिरों में के देवताओं को बडे समझ कर उनको मानते हैं उनको मैं जो कह रहा हूँ वह समझमें नहीं आयेगा, इतना ही नहीं शायद यह सब बतानेवाले मुझे भी गलत तरीके से समझेंगे शायद! मैं चाहता हूँ कि कृपा करके विग्रहों के बारे में समझकरलें या न करलें तो भी कोई बात नहीं है मगर मुझे गलत मत समझना, आप आपकी नज़र को आगे बढाना चाहिये।

भगवद्गीता शास्त्र में विज्ञान योग में मानव **प्रकृति संबंदित पापों से इच्छाओं में डूब कर अज्ञान होते हुए मेरी आराधना (पूजा) न करते हुए अन्यदेवताराधना कर रहे हैं। जो व्यक्ति जिस देवता को श्रद्धा के साथ पूजा करता है, मैं उसी देवता पर उसका यकीन को पुक्ता करके उसी देवता को श्रद्धा से पूजा किये जैसा करता हूँ। वह उसी देवता को यकीन करते हुए श्रद्धा के साथ आराधना कर**

रहा है तो, जो आराधना उन्होने की है उसके फलित में उन्होने जो मुरादें मांगी है उन्हे पूरा करता हूँ। इसतरह परमात्मा ने पहले ही भगवद्गीता में बतादिया। इससे यह मालूम हो रहा हैं कि मंदिरों में के देवल कुछ नहीं करसकते। वह परमात्मा ही सबकुछ कर रहा हैं जो मंदिरों में के देवलों का अंतरात्मा है। हमारे लिये कुछ करनी हो तो वह परमात्मा को ही करना पडेगा कोई और कुछ नहीं करसकता। प्रपंच में प्रजाओं का, देवालयों में देवताओं का, अंड, पिंड, ब्रह्मांड का मालिक परमात्मा ही है। जिन्होने परमात्मा पर यकीन रखके थोडा बहुत ज्ञानशक्ति को पालिया वे भी प्रतिमाओं में विग्रहों की तरह बदलकर पुण्य की वजह से कई पूजाओं को,नैवेद्यों को खा रहे हैं।

जो जीव पहले दैवप्रतिमाओं में रह चुके थे वे जिन्न पकडे जैसा दूसरे इनसानों के शरीर में घुसकर कहते हैं कि हमें फलान फलान पूजायें कीजिये। और जो व्यक्ति उनके प्रतिमाओं के सामने जाकर ऐसा कहा होगा कि मैं तेरे नाम पर फलान चीज़ दूँगा लेकिन उसने वह बात को पूरा नहीं किया तो वह जिन्न उसके जिस्म में आकर उस चीज़ को पूछती है कि मेरी मन्नत पूरी कर... जल्दि से...। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि तू तो मेरी पूजा भी ठीक से नहीं कर रहा हैं, देख! मैं तेरी क्या हालत करती हूँ कह कर धमकी देते हैं। मालूम हो रहा है कि ये सब प्रतिमाओं में रहकर माया में गिर गये हैं। कुछ लोग प्रतिमाओं में रहते हुये चाहे जीव (यानि साधारण इनसान) उन्हे पुजा करें या न करें,गालि दें या तारीफ करें कुछ न समझते हुये मौन से रहकर योग कर रहे हैं।

जिसतरह एक ही नाम रखे गये मानव बहुत से रहते हैं उसीतरह एक ही नाम रखे गये देवता प्रतिमायें भी अनेक हैं।

जिसतरह एल्लन्न नाम से बहुत से मनुष्य हैं उसीतरह श्रीराम के नाम से बहुत से प्रतिमाएँ हैं। एल्लन्न नाम तो एक ही है लेकिन वे सब लोग जो एल्लन्न नाम रखलिये वे एक ही प्रकार के नहीं होते। दोनों व्यक्तियों का नाम भी एल्लन्न ही समझिये। एक एल्लन्न को दूसरे एल्लन्न को जिसतरह रुप में, गुण में फरक रहता है उसीतरह एक ही नाम रखे गये सारे राम प्रतिमाएँ एक ही तरह नहीं रहते। एक राम प्रतिमा को दूसरे राम प्रतिमा को बहुत फरख रहता हैं जैसे कि पुण्य में, गुणों में,ज्ञान शक्ति में, आकार में वे दो भिन्न रहते हैं। इसीलिये जो प्रतिमाएँ देश में हैं उनको भिन्न तरीकों में पूजायें होते हैं। हनुमान (आन्जनेयस्वामि) नाम के प्रतिमाएँ देश में अनेक हैं। लेकिन जो जीव उन प्रतिमाओं में होते हैं वे एक ही शक्ति नहीं रखते। यानि उनके शक्तियों में फरख रहता हैं उसीतरीके से उनके पुण्य में भी फरख रहता हैं। इसीलिये कई प्रकार के आन्जनेयों को कई प्रकार से पूजाएँ होते हैं। एक मंदिर में आन्जनेय को नित्य पूजाएँ होते रहते हैं। दूसरे मंदिर में आन्जनेय को कुछ नहीं होते हैं। सब आन्जनेय कहलानेवाले नाम को रखते हैं फिर भी, जब मंदिर में शत्रृ ग्रह प्रवेश करें तो कुछ आन्जनेय उनका सामना नहीं करपा रहे हैं। कुछ आन्जनेय ग्रहों से लडकर खुद हार जा रहे हैं। कुछ लोग विशेष ताकत रखते हुये ग्रहों को मार कर हकाल दे रहे हैं। मानवों में जिनलोगों में ग्रह दाखिल हुये वे लोग ज्यादा ताकतवार आन्जनेयस्वामियों के प्रतिमाओं के पास जाकर शरण मांगने से वे स्वामियाँ उन ग्रहों को तकलीफ देकर ऐसा कर रहे हैं कि वे ग्रह फिर से उनके पास न जाये। ये सबकुछ हम कुछ स्थलों में दृष्टांतों के जैसा देख ही रहे हैं। **अनंतपुर जिल्ला गुंतकल्लु के पास कसापुर** में उन मानवों (ग्रहों) को उस आन्जनेय के साथ (विग्रह) हरदिन

शाम के वक्त लडायि होता रहता है। जिनको नहीं मालूम वे वहाँ जाकर गौरकर सकते हैं।

विग्रह, योगशक्ति रखनेवाले मनुष्यों की बात को मानलेते हैं उनकी इज्ज़त करते हैं। क्योंकि विग्रहों से भी योगियों में ज्यादा दैवशक्ति रहती हैं। इसलिये विग्रह जैसे सबसे बरताव करते है वैसे योगियों से बरताव नहीं करते, योगियाँ जब उनके पास आते हैं तब उनसे विनय विधेयता के साथ पेश आते हैं। जब एक देवालय में योगि सोजाकर रहता है तो हर दिन एक व्यक्ति में घुसकर बात करके पूजाएँ करवालेनेवाली उस देवालय की देवता उस दिन कितने पूजाएँ करने पर भी ना हि किसी में घुसेगी ना ही वह बात करसकती हैं। क्योंकि उसे इस बात का डर रहता है कि कहीं उसके इस हरकत से योगि गुस्सा न होजाये। मालूम हो रहा हैं कि यहाँ भी विग्रह योगि से डरगयी है। इसीलिये कुछ योगियाँ जिन्हे मालूम है वे देवालय को नहीं जाते। और जहाँ पर जातरा होते हैं उन जगहों पर, पीरों की ईद में पीरों के पास, जहाँ देवताएँ हद से आगे बढकर बात कर रहे हो उन जगहों पर योगियाँ नहीं जाते। अगर वे गये भी तो ज्ञानाग्नि की गरमी से उन ग्रहों को तकलीफ उठानी पडेगी।

अय मानव (इनसानों)! परमात्मा जो देवालय में के देवताओं में भी अंतर्यामि होकर है उस परमात्मा के बारे में मालूम करने केलिये उस गुरु के शरण में जाओ जो योगि है, और बोधाओं के रूप में गुरु जो अमृत को देता है उसे पीकर मृत्युंजय बनो। वरना मरना पैदाहोना, सुख दुख को भुगतना ही पडेगा (उससे किसी भी हाल में छुटकारा नहीं पासकते)। जब भयंकर तकलीफ आते हैं तो सिर्फ उस वक्त ही परमात्मा को याद करने से परमात्मा दया करनेवाला नहीं

है। कर्म से बचनेकेलिये ज्ञान ज़रुरी है। इसीलिये गीता शास्त्र में ज्ञानयोग में भगवान ने कहा कि कर्म को जलानेकेलिये ज्ञान की आग चाहिये अगर ज्ञान चाहिये तो जिन के पास ज्ञान की धन है उनके पास जाकर मांगलेना चाहिये। इसलिये हर एक व्यक्ति ज्ञान को कमालेना शुरु करनी चाहिये। पहले देवालयों में पूजाएँ करते हुये, मुरादें न मांगते हुये, देवालयों के सारे बाह्यार्थो को मालूम करके, उसके बाद गुरु के पास उपदेश पाकर योगसाधना करते हुये योग शक्ति कमालेकर (हासिल करके), योगशक्ति परिपूर्ण हालत पर पहुँचते ही आत्मा में ऐक्य होजाना चाहिये।

यह जानलों कि देवालयों के देवताओं के प्रतिमाओं में भी परमात्मा बसा हुआ है। यदार्थ को जानेहुये ज्ञानियाँ हो,अज्ञानियाँ हो करनेवाले पूजाओं में भोक्ता परमात्मा ही है, तमाम पूजायें उसी को पहुँचते हैं। इसीलिये गीताशास्त्र में राजविद्या राजगुह्या योग में परमात्मा ने कहा कि **जो शक्स (व्यक्ति) श्रद्धा के साथ अन्यदेवताओं की आराधना कर रहा है वह भी मेरी ही आराधना कर रहा है लेकिन यह बात वह नहीं जानता।**

जिसतरह परमात्मा सारे जीवों में हैं उसीतरह सारे देवताप्रतिमाओं में भी है, हमारे पूजाएँ सब परमात्मा को ही पहुँचते हैं जो व्यक्ति इस यदार्थ को जानता है कि सिर्फ उसीको ही परमात्मा प्रप्त होता है। इसके बगैर जो लोग देवताप्रतिमाओं में भी बसाहुआ अंतर्यामि परमात्मा को नहीं जान सके वे पूजायें करते रहने पर भी, उनसे उन्हे पुण्य हासिल होकर उस पुण्य से सुख मिलता है। वह पुण्य खत्म होजाते ही फौरन सुख भी खत्म होजाता है। इसीलिये जो लोग प्रतिमाओं में के अंतर्यामि परमात्मा को नहीं पहचान पाये वे सुख

पायेंगे, लेकिन वह सुख खत्म होते ही उनको दुख भी संभव होते हैं। इसलिये गीता में राजविद्या राज गुह्य योग में परमात्मा ने कहा कि **सर्व देवताओं केलिये जो यज्ञ किये जाते हैं उनमें भोक्ता मैं ही हूँ और प्रभु भी मैं ही हूँ।** जो लोग मुझे यदार्थ तरीके से नहीं जानते उनको पहले सुख मिलके फिर बाद में उन सुखों से हट भी जाते हैं। इसीलिये उस व्यक्ति से बढकर ज्ञानी कोई और नहीं होसकता जिसने ग्रह क्या है? विग्रह क्या है? कहकर क्लियर्ली मालूम किया हो और जिसने उस परमात्मा के वजूद को पहचानलिया जो ग्रहों में, विग्रहों में है। ऐसे ज्ञानी के भाव में पूरा परमात्मा ही रहता है। इसलिये वह भी परमात्मा में ही दाखिल होगा।

महर्षि - आनंद

भूमि पर कई मनुज (इनसान) हैं। उनमें से मान्य लोग कुछ है तो सामान्य लोग बेहिसाब हैं। जब पैदाहुये थे तब सब सामान्य लोग ही है तो जैसे जैसे बढकर बडे होजाते हैं तो उनमें से कई लोग सामान्यलोगों की तरह बचगये तो, सिर्फ कुछ लोग तो मान्यों (यानि पूज्यनीय) की तरह तयार होरहे हैं। यहाँ गौर करनेवाली बात यह है कि केवल वही लोग मान्यों की तरह तयार हो रहे हैं जो ज्ञानमार्ग में हैं। कुछ लोगों के उद्देश्य में मान्य वे लोग है जिनके पास पैसा ज़्यादा होता है लेकिन सिर्फ यह उनका वहम (भ्रम) हैं। ज्ञानमार्ग में रहनेवाले जो पूरे तरीके से मान्य हैं उनके पास ज्ञानशक्ति रहने की वजह से उन्हे मान्यों की तरह पहचानना होरहा है।

जो लोग आत्मा के धरम जानते हैं और उनकी आचरण करते हैं उनमें ज्ञानाग्नि कहलानेवाली एक शक्ति पैदा हुयी होती है।

इसतरह की ज्ञानाग्नि जिन में पैदा हुयी हैं उन्हे योगियाँ कहते हैं। आत्म के धर्मों को अमल करने को ही योग कह रहे हैं। उसतरह अमल करने वाले को योगि कह रहे हैं। इसतरह आत्म धर्म आचरण करने वाले कुछ लोग भूमि पर होसकते हैं। तो ऐसी सूरत में हमें यह ज़रुर मालूम करनी चाहिये कि उनमें से कौन बडा है, कौन छोटा हैं किसकी खाबीलियत कितनी है। मिसाल के तौर पर स्कूल को जानेवाले सब विद्यार्थियाँ ही होते हैं। सिर्फ विद्यार्थियाँ कहकर नाम रहने से वे सब एक ही क्लास के थोडि न होंगे! उसीतरह आत्म के धर्म जानकर अमल करने वाले सब योगियाँ ही है लेकिन वे सब बराबर नहीं है। योगियों में भी छोटे बडे योगियाँ रहना सहज ही है। इसलिये पूर्व में बडे लोग जिन्हे ज्ञान मालूम था उन्होने योगियों में भी जैसे कक्षाओं को निर्णय किया वैसे ही उनके युक्ति को पहचान कर नाम रखे हुये हैं।

मालूम हो रहा है कि योगियों में चार कक्षायें (श्रेणियों) को पूर्व में बडे लोगों ने डिवैड करके नाम रखा। जो योगियाँ ईश्वर में ऐक्य होने की कोशीश कर रहे हैं उनको ये चार श्रेणियों को पार करना होगा। चार श्रेणियों को पार करने के बाद ही मोक्ष को पासकते हैं। जो लोग इन चार श्रेणियों में हैं उनके नाम इसतरह है कि १) महर्षि २) राजर्षि ३) देवर्षि ४) ब्रह्मर्षि। परमात्मा में एक्य होने के लिये एक संपूर्ण शक्ति की ज़रुरत है। जो योगि उस संपूर्ण शक्ति में से पच्चीस (पाव) (1/4) भाग शक्ति को कमालेता है उस योगि को महर्षि कहकर बुलाते हैं। जो योगि आधे (1/2) भाग शक्ति को कमालिया है उस योगि को राजर्षि कहकर बुलाते हैं। (3/4) भाग शक्ति को जिसने कमालिया उसे देवर्षि कहकर पुकारते है। उसतरीके से ही 3/4 से संपूर्ण शक्ति को जिसने कमालिया उस योगी को ब्रह्मर्षि कहकर भी बुलाते हैं।

अब कुछ लोगों को थोडे संशय आसकते हैं। वे ये है कि! एक, जिस शक्ति को हासिल कर रहे हैं क्या वह शक्ति आँखों को दिखती है? दूसरा, यह पता कैसे चलेगा कि जो शक्ति को कमालिये है वह पाव भाग है या आधा भाग है? इसतरह कई संशयों के समाधान भी ढूँढना पडेगा। उनकेलिये हमारा जवाब यह है कि! जो शक्ति योगि कमालेता है वह योगशक्ति आँखों को नहीं दिखती। इसीलिये चाहे कितना बडा योगि क्यों न हो उसे अपना दर्जा (पोज़िशन) मालूम नहीं। इसी वजह से गुज़रा हुआ ज़माने में विश्वामित्र ने ब्रह्मर्षि बनना चाहा लेकिन दूसरे व्यक्ति ने उससे कहा कि तुम तो कबका ब्रह्मर्षि बनचुके हो (मतलब जबतक दूसरे व्यक्ति ने विश्वामित्र से नहीं कहा तबतक उसे अपने दर्जे के बारे में पता ही नहीं चला)। एक योगी की शक्ति और महत्वता सिर्फ सामनेवाले योगी को ही मालूम होता है। वह भी सिर्फ ब्रह्मर्षि के पोज़िशन में जो योगी होता है सिर्फ वही यह पहचान सकता हैं कि सामनेवाले योगी में कितनी शक्ति है। इसलिये सिर्फ ब्रह्मर्षि वशिष्ट ही पहचान पाया कि विश्वामित्र ब्रह्मर्षि बनगया है। इसके मुताबिक यह मालूम हो रहा है कि एक योगि खुद के दर्जे को खुद पहचान नहीं सकता मतलब उसे यह विषय मालूम नहीं होगा कि वह महर्षि हैं या राजर्षि हैं या देवर्षि हैं या ब्रह्मर्षि हैं। सिर्फ एक ब्रह्मर्षि सामनेवाले की योगशक्ति को पहचान कर बतासकता है कि वह कितनी शक्ति रखता है,और वह कौनसे दर्जे का है।

पूर्वकाल में मनुष्य यह बात अच्छे से जानते थे कि महर्षियों के कितने श्रेणियाँ हैं? और वे महर्षियों को पहचानते थे भी। लेकिन आज के प्रपंच के मानवों को यह तक नहीं मालूम कि महर्षि का क्या मतलब है। आज ऐसे लोग तयार होगये कि कहते हैं कि इन सब बातों से हमें क्या काम है। स्वामियाँ, पीठाधिपतियाँ जिन पर यह ज़िम्मदारि है कि

प्रजाओं को ज्ञानियों की तरह बदलाना चाहिये लेकिन वे भी आज कहानियाँ बोलते हुये वक्त को गुज़ार रहे हैं। इसीलिये पूर्व में जो भाव रहते थे वे आज नहीं रहे (पोशीदा होगये)। अब हम महर्षि कहलानेवाले शब्द का पूर्व में क्या मतलब रहता था उसके बारे में मालूम करते हैं। **हर्ष का मतलब संतोष है। हर्षि मतलब संतोश या खुशी से रहनेवाला है।** महा यानि बड़ा,महर्षि यानि बड़ा संतोषि है, एक योगि को बड़ा संतोषि (महर्षि) कहना क्यों?इसके जवाब में हम यह कहते हैं कि क्योंकि योगि आत्मानुभूति को अनुभव करनेवाला है। अगर आप पूछेंगे कि आत्मानुभूति कैसे रहती है, तो उसके जवाब में यह कहसकते हैं कि वह एक ऐसी अनुभव है जो बातों में बयान नहीं करसकते। उसके बारे में बाहरवालों को बोलने केलिये वह एक आनंद है कह कर उसका वर्णन किया। अनुभवो में सबसे बडी आनंद ही तो है, हेना! इसीलिये आत्मानुभूति को आनंद की तरह वर्णन किया। लेकिन वह आनंद भी नहीं है। फिर भी उसका वर्णन न करसकके बडों ने उसे आनंद, ब्रह्मानंद कहा है। जिनलोगों ने योग का वर्णन आनंद कह कर बताया, उन्होने योग अमल करनेवाले को भी आनंद कह कर वर्णन किया। मानलीजिये कि इस ज़माने में भी शायद जो लोग सोसैटी में स्वामियों की तरह है वे आनंद नाम से ही है। फिर भी यह किसी को नहीं मालूम कि कौन कितना फीसदवाला आनंद है यानि पच्चीस प्रतिशत आनंदवाला है या 75 प्रतिशत आनंदवाला है। पूर्वकाल में तो 25,75 प्रतिशत जानकर आनंद कहकर नाम रखलिया करते थे लेकिन इस ज़माने में हमें जो आनंदाएँ दिखायी देते हैं वे परंपरा के तौर पर रखलिये हुये नाम ही है मगर पूर्व काल की तरह 25,75 प्रतिशत जानकर उन्होने नाम नहीं रखलिये। अगर उन्हे यह बात मालूम होता तो वह नार्मल आनंद नहीं बल्कि राजानंद,

देवानंद, ब्रह्मानंदों में बदल जाते थे। अब हम जो भी कह रहे हैं वे कुछ लोगों को नये लगने पर भी यह जानलें कि पूर्व काल में यह सब रहा करते थे। आनंद शब्द को महर्षि भी कहसकते हैं। दो शब्दों का अर्थ एक ही है। इसलिये योगी को महर्षि भी कहसकते हैं। महर्षि के शक्ति से ज्यादा शक्ति रखनेवाले को राजर्षि कहने में एक अर्थ है। जो सबसे बडा होता है उसे राजा कहना सहज ही है। इसीलिये महर्षि के बाद जो बडा होता है उसे राजर्षि कहा हैं। मानवों में राजा से बडे देवतायें हैं, इसीलिये राजर्षि के बाद देवर्षि कहा है। देवताओं से भी बडा परमात्मा (ईश्वर) है। उसीको ब्रह्म कहना सहज ही है,इसीलिये सबसे आखरी वाले को ब्रह्मर्षि कहा हैं। महर्षि, राजर्षि, देवर्षि, ब्रह्मर्षि इसी लैन के प्रकार ही आनंद, राजानंद, देवानंद, ब्रह्मानंद कहलानेवाले पोस्ट्स (पोज़िशन्स) हैं।

आज के ज़माने में भी योगियों में बडी शक्ति रखनेवाले महर्षियों से लेकर राजर्षि, देवर्षि, ब्रह्मर्षि तक भूमि पर रहसकते हैं। लेकिन जबतक सामनेवाला उसकी योग्यता के बारे में नहीं बतायेगा तबतक खुद को मालूम नहीं होगा कि उसकी योग्यता क्या है, इसलिये ऐसे लोग भी मौजूद हैं जिन्हे खुद के दर्जे के बारे में मालूम नहीं। कुछ लोग ऐसे भी है कि जो इसतरह सवाल करते हैं कि यह सब तुझे कैसे पता? ये सारे विषय तो किसीने भी कहीं पे भी नहीं कहा था ना! तो तुम्हारी बातों पर हम विश्वास कैसे करें? उसके लिये हमारा जवाब यह है कि! जैसे आपने कहा वैसे बहुत से लोग दूसरों ने कही हुयी बातों को ही बार बार घुमा पिरा कर लिखने की वजह से ही, तुम लोग वैसे बातें ही पढने की वजह से,अब हमारे बातें आपको नये और अलग दिख रहे हैं ंइसीलिये तुमलोगों ने ऐसा सवाल किया था इसमें कोई गलती नहीं है। मानलीजिये कि एक पेड

ऐसा मशहूर हुआ कि वह मीठे मीठे फल देती है। तो जब फलों को बेचनेवाला अपने टोकरी में के फल दूसरे पेडों के फल होने के बावजूद भी वह उस मीठे पेड के नाम को बोलकर ही फलों को बेचा करता था। उसीतरह कुछ लोग गुज़रे हुये ज़माने के लोगों में से मशहूर स्वामियों के नाम बोलकर कहते हैं कि ये सबतो उन्ही के बातें है, ये सबतो उन्ही के रचनाएँ हैं। उसीतरह पुस्तकों में लिखते रहते हैं। उदाहरण केलिये हमारे देश में एक गुरु जिसने कालीमाता की पूजा किया था बडा मशहूर था। उसका शिश्य भी मशहूर था। ऐसे बहुत से लोग हैं अगर उनसे हम कहेंगे कि ये किताबें तो उन गुरु शिश्यों ने लिखे हैं या कहे हैं तो बस उन बातों को खूब सुननेवाले,उन किताबों को खूब पढनेवाले बहुत ही लोग हैं। यह बात जानकर आज के रचयिता और उपन्यासक उनके नाम लिये बगैर न कुछ कहसकते हैं न लिख सकते हैं। न तो उस गुरु ने भगवद्गीता लिखा न शिश्य ने फिर भी आज ऐसे लोग मौजूद है कि फलाना लोगों ने लिख्खि हुयी भगवद्गीता कहकर उनका नाम रखके भगवद्गीता को लिखा। इसीतरह कुछ बडेलोगों के नाम लेकर जैसा कि **शंकराचार्य ने कहा या रामक्रिष्ण ने कहा, विवेकानंद ने कहा या रमणमहर्षि ने कहा..**उन्होने जो बातें कहीं थी वहीं बातों को घुमा फिरा कर कहते रहते हैं। लेकिन हम यहाँ पर किसी का भी नाम इस्तेमाल किये बगैर, उन्होने जो बातें कहीं उन विषयों के अलावा, जो विषय इस ज़माने में लोगों को मालूम हुये बगैर रहस्य की तरह रहगये और जो विषय पूर्व काल में रहा करते थे वहीं बातें हम बता रहे हैं। केवल इतने से तो यह नहीं कहसकते कि ये बातें सब सत्य नहीं है। क्यों कि हम जो भी बता रहे हैं वे आज भी बिना मतलब के आचरणों की तरह दुनिया में बाकी है। इसलिये वे आचारण ही हमारे बातों को प्रत्यक्षप्रमाण की तरह

ठहर रहे हैं, यानि आधार है। यह बात तो सब जानते ही है कि पूर्व काल में महर्षि, राजर्षि, देवर्षि, ब्रह्मर्षि रहा करते थे, लेकिन आज उन विषयों के बारे में किसी को मालूम नहीं बस सिर्फ उनके नाम बाक़ी है लेकिन अर्थ कोई नहीं जानता। हमें इस बात का यकीन है कि कम से कम थोडे लोग तो सही हमारी बातों में की सच्चाई को समझलें। हमारा नाम भी प्रबोधानंद कहकर गुरु ने रख्खा है। आनंद तो हमारे नाम में भी है। लेकिन कक्षाओं के मुताबिक मैं कौनसा आनंद हूँ मुझे नहीं पता। इसलिये अगर कोई ब्रह्मर्षि रहकर तू इतना प्रतिशत का आनंद है कहकर बतायें तो हम खुशी के साथ सुनेंगे। प्रबोधानंद ही नहीं बल्कि योगीश्वर का दर्जा रखनेवाले हम कौनसे कक्षावाले होसकते है? यह बात आप के अनुभव से ही बताइये।

शिवम

प्रपंच में हर जीव (प्राणि) तै किया गया हुआ वायु (आयु) के प्रकार ही जीवयात्रा करके मरना सहज ही है। यह जीवयात्रा निर्णीत वायु के प्रकार एक शरीर में चलरहा है। जहाँ शरीर कहलानेवाली गाडि में **वायु का माप** खत्म हो रहा है वहाँ शरीर से जीव को उतरजाना ही होगा। यह तो हर एक जीव (प्राणि) के साथ हो रहा विषय ही है।

जब हम एक गाँव को जानेकेलिये शुरु होते हैं तब वह गाँव कितने दूर है, हमें कहाँ पर उतरनी चाहिये यह सब खयाल (ज्ञप्ति) में रखलेके सफ़र (प्रयाण) किया करते हैं। अगर गम्य दूर है तो उसके खर्चों के लिये जितना पैसा चाहिये होता है सिर्फ उतना ही हमारे पास रखलेते हैं। उसीतरह उस प्रयाण में अगर किसी से

दोस्ती करें भी तो हम यह जानते हैं कि वह दोस्ती सिर्फ (गाडि) उतरने तक ही रहती है इसीलिये उस हद तक ही हम परिचय बनालेते हैं। क्यों कि इस सफ़र का गम्य हम जानते हैं इसीलिये इस प्रयाण में बंध, अनुबंध कुछ भी नहीं रखलेते।

हमें मालूम हैं कि जीवनप्रयाण में मरण कहलानेवाली गम्य सब केलिये है। लेकिन वह गम्य कितने दूर है यह बात किसी को नहीं मालूम। यह भी नहीं मालूम कि वह कब आयेगी। जब हम यह जानते हैं कि ५० कि.मी.की स्पीडवाली वाहन में सफ़र करने से दिह्ली जानेकेलिये ८ दिन, अमेरिका जानेकेलिये एक महीना लगता हैं तो हम हमारे साथ जो लोग सफ़र कर रहे हैं उनसे हाय हाय बाय बाय की दोस्ती ही करते हैं। (मतलब उनसे किसी भी तरह का रिश्ता नहीं जोडते)। लेकिन हम यह नहीं जानते हैं कि हमारा शरीरवाहन का प्रयाण कितना समय का है फिर भी हम हमारे साथवाले प्रयाणिकों से पूरी तरीके से रिश्ते बनालेना हो रहा है। जब हम यह तक नहीं जानते कि हमारा सफ़र एक दिन का है या आधे दिन का इसतरह बंधन बनालेने में तो कोई मतलब ही नहीं है। जब हम यह जानते हुये भी कि दिह्लि का सफ़र ज़रुर सात दिन का है उसके बावजूद भी हम हमारे साथ सफ़रकरनेवालों से किसी तरह का भी रिश्ता नहीं रखलेते। तो फिर यह जानलों कि हमारा देह का प्रयाण सात दिन का है या नहीं इस बात की भी कोई गारन्टी नहीं है तो फिर ऐसी सूरत में इसतरह रिश्ते बनालेना ज्ञानरहित है। अगर ज्ञान के हिसाब से हम योचना करेंगे तो हमारे साथ प्रयाणिकों की तरह कई लोग शरीरो में जीवन गुज़ार रहे हैं फिर भी किसका गम्य उसीका है। जिसका जिस गम्य तक सफ़र है वहीं तक चलकर रुकजाता है। तेरे साथ ठीक से तेरे गम्यतक सफ़र करनेवाले कोई नहीं रहते। कोई

इस बात का इनकार नहीं करसकता, हर हाल में सबको यह बात खुबूल करनी पडेगी। लेकिन यह थोडे तद तक वास्तव ही है। लेकिन और एक सच है जिसके बारे में हमें नहीं मालूम। वह यह है कि! सहज से बाहर दिखनेवाले तेरे साथि तेरे साथ सफ़र करनेवाले तेरे गम्य तक न आने पर भी तुझे नज़र न आते हुये तेरे साथ सफ़र करनेवाले और **दोनों हैं** उनमें से एक का नाम है, दूसरे का कोई नाम ही नहीं है। एक को आत्मा कहकर नाम है। दूसरे का तो कोई नाम ही नहीं है इसलिये, वह आत्मा से परे हैं इसलिये, उसीको **परमात्मा, ईश्वर (अधिपति), शिव, अल्लाह, यहोवा** इसतरह कई प्रकार के दर्जों से उसे पुकार रहे हैं।

तुझे भी मालूम है कि तू जीवात्मा है। लेकिन तुम यह भूलगये हो कि तू शरीर कहलानेवाले गाडि में सफ़र कर रहा है। और तू यह भी नहीं जानता कि तेरे साथ हर हमेशा दोनों मौजूद है। अगर थोडी ज्ञानदृष्टि से देखोगे तो तेरे शरीर में तीनों सफ़र कर रहे हैं।

इसतरह सारे जीवरासियों के शरीरों में भी **प्रयाण** हो रहा है। शरीर में आत्मा परमात्माओं के साथ तेरा (जीवात्मा) का क्या बंधन (रिश्ता) हैं? उनसे तुम कितनी दोस्ती निभा रहे हो? अगर हम इन बातों पर योचना करें तो यह मालूम हो रहा हैं कि जीवात्मा बिलकुल भी उनसे किसी भी तरह का संबंध नहीं रखले रहा हैं। दूसरों के तक क्यों अब इस वाक्य को तुम पढ रहे हो ना क्या तुम उनसे कुछ रिश्ता रखे हो (अपने आप को सवाल करलो) तो तुम्हे यही जवाब मिलेगा कि नहीं बिलकुल भी तुमने उन दोनों के बारे में नहीं सोचा। जो कुछ रिश्ता हैं वह हमारे आँखों के सामने मरनेवालों के साथ या हमारे बाद में मरनेवालों के साथ ही रिश्ता रखलेकर,

उनसे ही पूरा वक्त गुजर जा रहा है तो, अंदर के आत्मा, परमात्माओं को और उनसे रिश्ता जोडने की फुरसत, सबर किसी को भी नहीं हैं। तुम हो, कोई और हो अंदर रहने वालों के तरफ नहीं देखें तो भी उनका रिश्ता हमेशा तेरे साथ ही हैं। अगर उनका बंधन नहीं हैं तो शरीर में हम एक मिनट भी नहीं रह सकते। शरीर वाहन में जीवात्मा, आत्मा, परमात्मा सफ़र करते हुये गम्य (मनजिल) को पहुंचते ही शरीर बंधन से जीवात्मा उतर जाता हैं। वह एक ही नहीं उसके साथ आत्मा भी उतर जाती हैं। तुझ से सफ़र शुरु करके तेरे साथ मनज़िल में उतरजानेवाला आत्मा एक ही हैं। यह विषय भगवद्गीता पुरुषोत्तम प्राप्ति योग अध्याय ८ श्लोक में कहा गया हैं।

तेरे मनज़िल में तेरे साथ सफर करनेवाले आत्मा, परमात्मा में दोनों में से सिर्फ एक जन उतर जाता हैं। परमात्मा आत्मा से अलग हैं इसलिये परमात्मा वैसे ही शरीर में रहता हैं।

सजीव यात्रा में जीव सुख दुखों का अनुभव करता रहता हैं। उन सुख दुखों के अनुभवों के लिये ज़रुरी कार्यआचरण को चैतन्य देकर शरीर को हिलानेवाली आत्मा हैं।तीसरा वाला गवाह की तरह सबको देखते हुये कुछ न किये बगैर मौन से रहता हैं। सिर्फ एक परमात्मा ही शरीर में हमेशा मौन से रहता हैं तब भी जब जीव शरीर में रहता है और तब भी जब जीव शरीर में नहीं रहता हैं। उसीको **शिव या ईश्वर या परमात्मा** कहते हैं। अब हम यह जानगये ना कि वह तीसरा वाला जो कुछ भी नहीं हैं उसे परमात्मा कहने के पीछे क्या अंतरार्थ है! उसी तरह अब यह मालूम करते हैं कि उसे ईश्वर क्यों कह रहे हैं।

अधिपति का मतलब बडा, या सबसे बडा, या महान के हैं। उसी तरह लक्षाधिपति (लाखपति) का मतलब लक्षा (लाख) का अधिपति या लाख से ज़्यादा (पैसे) रखनेवाला, या जिसके पास लाख रुपे हैं। लक्षाधीश्वर, कोटीश्वर (करोडपति) कहने में यह मालूम हो रहा हैं कि करोड का, लाख का मालिक या अधिपति हैं या उनसे भी बडा है। बिलकुल उसीतरह इस प्रपंच में लाख, करोड कहे बगैर सबका समस्त का अधिपति सिर्फ एक परमात्मा ही हैं। इसलिये यह कहे बगैर कि वह फलाना चीज़ का ही ईश्वर है उसे कुल्हि तौर पर एकैक शब्द इस्तेमाल करके ईश्वर कहना हुआ। उसका नाम शिवम भी इसलिये रखा क्योंकि कोई भी उसे पहचान नहीं सकते, वह सब जगह मौजूद है, वह किसी को मालूम नहीं होता, जिंदे रहनेवाले ज्ञानियों को भी, योगियों को भी मालूम नहीं होता, वह अगम्यगोचर हैं,इसीलिये उसे शिवम कहा हैं। शिवम का मतलब मालूम न होने वाली के हैं। ज्ञानियाँ योगियाँ यह जानते हैं कि शिवम कहलानेवाली चीज़ एक हैं। लेकिन उन्हे यह नहीं मालूम कि वह क्या हैं? जीवात्मा ज्ञानयोग के ज़रिये शरीर में रहनेवाली आत्मा को मालूम कर सकता हैं,लेकिन **शिवम** को किसी भी हालत में मालूम नहीं करसकता। कर्म होजाने के बाद बिना जनमवाली हालत को पहुँचे हुये योगियाँ शिवम में ऐक्य होजाते हैं। तब ही उसके बारे में मालूम होने का मौका है मगर उससे पहले हरगिज़ मालूम नहीं होगा।

शरीर में की जीवयात्रा में मरण कहलानेवाली गम्य में आत्मा, जीवात्मा शरीर से बाहर आजाने के बाद आखिर में शरीर में बाक़ी रहनेवाला सिर्फ शिवम ही हैं। जब वह जीव जिंदा था उसवक्त नीच गुणों से संबंध रखनेवाला जीव अब उस शरीर में नहीं हैं। वह शरीर जिसमें जीव और आत्मा नहीं हैं उसमें किसी तरह के भी नीच

भाव नहीं होते। जब वह शुद्ध **शिव** निलय है। सिवाये परमात्मा के कोई भी नहीं हैं। इसलिये यह विषय जाने हुये ज्ञानियाँ एक व्यक्ति मरजाने के बाद अंत्यक्रिया से पहले उस शरीर को भक्ति भाव के साथ पूजते थे। मृतदेह (लाश) को दैव संबंध विभूति नाममों से अलंकार करके, गोविंद नामस्मरण से पूजा करके,सबको कहते थे कि उसे नमस्कार करें। इसतरह की सांप्रदाय आज भी रहने पर भी वे बेमतलब का आचार हुआ। अब लेग लाश को भक्ति से नहीं बल्कि डर से नमस्कार कर रहे हैं। और इसतरह के भाव से वे नमस्कार कर रहे हैं कि अगर अब यह लाश को नमस्कार नहीं किये तो वह वापिस शैतान या भूत बनकर आयेगी, फिर उसका पीडा पूरे घर को लपटलेगा, अगर नमस्कार करडालें तो यह झंझाठ ही नहीं रहेगा समझकर नमस्कार कर रहे हैं।

लेकिन पूर्व में ऐसा नहीं किया। वे लोग हर काम मतलब जानकर किया करते थे। वह अच्छी तरह जानते थे कि जीव शरीर में से बाहर जाने के बाद आखिर में शरीर में सिर्फ शिव (ईश्वर) ही रहता हैं। इसीलिये मरा हुआ शरीर को (मृतदेह) शिवम कहते थे। कालक्रम में भाव बदलगया। आखिर में **शिव** का शब्द **शव** शब्द में बदल गया। शिवम शवम में बदलजाने पर भी पूर्व से जो पूजायें थे वे वैसे के वैसे ही हैं। इसीलिये यह मालूम हो रहा हैं कि उसका असली अर्थ आज बदलगया हैं।

वे योगि जिनका कर्म सशेष से खत्म होगया वे दूसरे जनम को नहीं जाते बल्कि तीसरे पुरुष परमात्मा में ऐक्य होजायेंगे। ऐसेलोग मरते वक्त अपने शरीर को छोडकर नहीं जाते। शरीर में रहनेवाले शिव (परमात्मा) में ही ऐक्य होजाते हैं। ऐसे लोगों के शरीर को आखरि दिन में पूजा करना ही नहीं बल्कि समाधि में

रखकर नित्य पूजायें करना भी बडों का निर्णय ही हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि इसतरह करने से साक्षात इतना फलित मिलता है कि जितना परमात्मा की आराधना करने से मिलता है।

शव (लाश) के बारे में अब हमने थोडा मालूम किया। अब हमलोगों को यह सच मालूम होगया कि वह शव नहीं हैं बल्कि शिव है। इसीलय लाश को शुभसूचक मानना चाहिये। सब की तरह पीडा या पिशाच नहीं समझना चाहिये। किसी पूजा विधान में शामिल न हुये तो भी कोई बात नहीं। **शव** को **शिव** की तरह देखिये। उनकी मदद कीजिये जो अंत्यक्रिया नहीं करसकते। आप लोगों ने मुस्लिम समाज में देखा ही होगा कि उनको उस क्रिया के बारे में कुछ मालूम न होने पर भी शव को देखते ही सब कामों को छोडके जाकर एक से बडकर एक शव पेटी को उठाते हैं। वही अगर ईसायि मत में होतो मत गुरु बैबिल पडते हुये भक्ति के साथ अंत्यक्रिया करना देख ही रहे हैं। सबसे पहले पैदाहुयी (इंदू) हिंदू मत में नाममात्र आचार के साथ घर के लोग ही पसंद न होतो भी मृतदेह को स्नान करवाकर टीका लगाकर भेज रहे हैं। बे मतलब वाले आचार के साथ पूजा करते हुये शिव को शव कह रहे सबलोग शव को शिव की तरह देखकर असली भक्ति से यह भाव रखना चाहिये कि हम मरेहुये शव को नहीं बल्कि उसमें बसा हुआ शिव (ईश्वर) को अंत्यक्रिया कर रहे हैं। अगर मरे हुये लोग योगि है तो समझो कि ऐसा शरीर मिलना ही हमारा सौभाग्य हैं फिर उसे प्रत्येक जगह पर समाधि करके नित्य पूजायें करना अच्छी बात हैं। ऐसी शरीर समाधि दैवशक्ति की निलय होकर रहती हैं। उस समाधि को जो लोग पूजा करते हैं उनके कर्म जलजाते हैं।

प्राणायाम

जीवों के शरीरों में पाँच वायु हैं। उनको पंचप्राण कहते हैं। ये पाँच वायुवों को पाँच उपवायुवें हैं। वे उपवायु भी इन पाँच वायुवों में ही बसे हुये रहते हैं। पंचवायु नाम पाये हुये ये पांच वायु एक होजाने को ही **प्राणायाम** कहते हैं। प्राणायाम दो प्रकार से हैं। ये दो प्रकार इसतरह है कि! जीव सांस लेने को पूरक (उश्छ्वास), सांस बाहर छोडने को रेचक (निश्छ्वास), जो सांस अंदर लिया गया उसे बाहर छोडे बगैर अंदर ही दबाकर रखने को कुंभक कहते हैं। कुंभक के द्वारा सांस को दबाकर रखके अंदर के सारे वायुवों को एक करना एक प्रकार का प्राणायाम है। जीव सांस को दबाकर रोके बगैर योग से सांस खुद ब खुद रुकजाकर अंदर के सारे वायुवों को एक करना और एक प्रकार का प्राणायाम है। इन दोनों तरीको में से जो भी हो उसको प्राणायाम ही कहते हैं।दो प्रकार के प्राणायामों में से दबाकर सांस को रोकने का तरीका बहुत ही मुशकिलवाला है, और प्राणापाय (रिस्की) भी है। लेकिन दूसरा तरीका बिना कष्टवाली है और उसमें किसी तरह का भी प्राणापाय (रिस्क) नहीं है। दोनों तरीकों को आमूलाग्र से (यानि पूरा) मालूम करते हैं।

हर मानव के शरीर में ब्रह्मनाडि है। उसीको मेरुरज्जु (स्पैनल कार्ड) कहते हैं। ब्रह्मनाडि दिमाग से प्रारंभ होकर मेरुदण्ड (स्पैनलकालम) जो पीट पर है उसके द्वारा गुदस्थान तक फैली हुयी है। दिमाग से नीचे तक फैलीहुयी ब्रह्मनाडि में मुख्य नराशय केंद्र सात हैं। इन नराशय केंद्रों को ही योगियाँ सप्तस्थान,सप्तचक्र,सप्तकमल कह रहे हैं। ये नराशय केंद्र ही मानव को हिले जैसा, सब काम किये जैसा कर रहे हैं। और ऐसा कर रहे हैं कि शरीर के अंदर के अवयव, बाहर के अवयव काम करें। जो नर इन नराशयों से बाहर

आये हुये हैं वहीं फेफडों को खिले जैसा, मुडे जैसा कर रहे हैं। जब फेफडे मुडजाते हैं तब सांस बाहर चलेजा रहा है उसीको निश्छ्वास कहते हैं। जब फेफडे खुलते हैं तब सांस अंदर प्रवेश कर रही है उसीको उश्छ्वास कहरहे हैं। जो नराशय केंद्र ब्रह्मनाडि में मौजूद है वहीं उन नरों के मदद से जो उनसे शुरु होकर आये थे, फेफडों को खिलाते हुये ऐसा कर रहे हैं कि जीव को उश्छ्वास, निश्छ्वास हो । जीव को सांस अंदर जाकर बाहर आयें तो एक सांस गुज़रे जैसा हो रहा है। सांस को ही हंस भी कहते हैं। इसतरह दिन में 21,600 सांसे जीवको गुज़रजाते हैं। ये 21,600 सांसे गुज़रे जैसा ब्रह्मनाडि में रहने वाले केंद्र ही कर रहे हैं। वे केंद्र सांस को इसतरह चला रहे हैं कि! ब्रह्मनाडि में सात केंद्र है ना! उनमें से सबसे नीचे वाले केंद्र को **आधार कमल** कह रहे हैं। जो रीढ की हड्डी गुदस्थान के बराबर है उस रीढ में की ब्रह्मनाडि में यह केंद्र है। इसीलिये बडोंने कहा कि आधारकमल (आधारचक्र) गुदस्थान के पास है। आधारचक्र कहलानेवाली नराशय केंद्र से बाहर निकले हुये कुछ नर जो सूर्यचंद्रनाडियाँ उनके बगल में है उन नाडियों से मिलकर फेफडों के पास गये हुये होते हैं। सूर्यचंद्र नाडियाँ ब्रह्मनाडि के दोनों तरफ दो हैं। बडे लोग कहते हैं कि जो नाडि ब्रह्मनाडि के सीधे तरफ है उसको **सूर्यनाडि** कहते हैं,जो नाडि बायें तरफ है उसको **चंद्र नाडि** कहते हैं। इन्हीको **इड, पिंगल** नाडियाँ भी कहते हैं। इन्ही को डाक्टर्स सिंपतेटिक दण्ड भी कहरहे हैं। आधार नराशय केंद्र जो आखिर में है अपने नरों के द्वारा फेफडों को सूर्योदय से लेकर 600 सांसे गुज़रे तक चलाति है। 600 सांसे गुज़रते ही फौरन वह अपने काम से हट जाति है (यानि वितड्रा करलेती है)। उसके बाद दूसरा नराशय केंद्र है ना! उस दूसरी वाली का नाम **स्वाधिष्टान पद्म (स्वाधिष्टान चक्र)** है जो

रीढ की हड्डी स्त्रीयों के लिये योनि की स्थान, पुरुषों केलिये लिंग स्थान के बराबर है उस रीढ में की ब्रह्मनाडि में यह केंद्र है। इसलिये कह रहे हैं कि स्वाधिष्टान लिंगस्थान के पास है। स्वाधिष्टान चक्र कहलानेवाली नराशय केंद्र से बाहर निकले हुये कुछ नर जो सूर्यचंद्रनाडियाँ उनके बगल में है उन नाडियों के साथ मिलकर फेफडों के पास गये हुये होते हैं। स्वाधिष्टान केंद्र जो दूसरी केंद्र है अपने नरों के द्वारा जहाँ से पहला केंद्र काम से हटगयी है वहाँ से फेफडों को 6000 सांसे गुज़रे तक चलाती है। 6000 सांसे खत्म होते ही अपने काम से हटजाती है। उसके बाद तीसरा नरा शय केंद्र है ना! उस केंद्र का नाम **मणिपूरक पद्म (मणिपूरक चक्र)** है। इसीलिये कह रहे हैं कि मणिपूरक चक्र नाभि स्थान के पास है। इस मणिपूरक पद्म कहलानेवाले नराशय केंद्र से प्ररंभ हुये कुछ नर अपने बगल में रहनेवाले सूर्यचंद्रनाडियों से मिलकर फेफडों तक गये हुये होंगे। मणिपूरक नर केंद्र अपने नरों के द्वारा दूसरा केंद्र जहाँ से अपने काम को रुका दिया था वहाँ से लेकर 6000 सांसे पूरे होने तक चलाती है। 6000 सांसें गुज़रते ही फौरन अपने काम से हटजाती है। उसके बाद चारवीं नराशय केंद्र है ना! उस चारवीं नराशय का नाम **अनाहत नराशय केंद्र है या अनाहत पद्म (अनाहत चक्र)** कह रहे हैं। कहते हैं कि हृदयस्थान के बराबर रहनेवाली रीढ की हड्डी में की ब्रह्मनाडि में यह केंद्र रहती है। चारवीं चक्र अनाहत केंद्र से शुरुहुयी कुछ नर अपने बगल में रहनेवाले सूर्यचंद्र नाडियों से मिलकर फेफडों के पास गये हुये होते हैं। अनाहत नर केंद्र अपने नरों के द्वारा तीसरा केंद्र जहाँ से अपने काम को रुका दिया था वहाँ से लेकर 6000 सांसे पूरे होने तक चलाती है। 6000 सांसें गुज़रते ही फौरन अपने काम से हटजाती है। उसके बाद पाँचवी नराशय केंद्र है

ना! उस पांचवीं नराशय का नाम **विशुद्ध पद्म (विशुद्ध चक्र)** कह रहे हैं। कहते हैं कि कंठस्थान के बराबर रहनेवाली रीढ की हड्डी में की ब्रह्मनाडि में यह केंद्र रहती है। विशुद्ध केंद्र से शुरुहुयी कुछ नर अपने बगल में रहनेवाले सूर्यचंद्र नाडियों से मिलकर फेफडों के पास गये हुये होते हैं। विशुद्ध नर केंद्र अपने नरों के द्वारा चौथा केंद्र जहाँ से अपने काम को रुका दिया था वहाँ से लेकर 1000 सांसे पूरे होने तक चलाती है। 1000 सांसें गुज़रते ही फौरन अपने काम से हटजाती है। उसके बाद छटी नराशय केंद्र है ना! उस छटी नराशय का नाम **आग्रेय पद्म (आग्रेय चक्र)** कह रहे हैं। कहते हैं कि यह केंद्र ठीक ऐब्रोस के बीच (भ्रूमध्य स्थान के बराबर) सर में जो ब्रह्मनाडि है उसमें मौजूद है। आग्रेय केंद्र से शुरुहुयी कुछ नर अपने बगल में रहनेवाले सूर्यचंद्र नाडियों से मिलकर फेफडों के पास गये हुये होते हैं। आग्रेय नर केंद्र अपने नरों के द्वारा पांचवा केंद्र जहाँ से अपने काम को रुका दिया था वहाँ से लेकर 1000 सांसे पूरे होने तक चलाती है। 1000 सांसें गुज़रते ही फौरन अपने काम से हटजाती है। उसके बाद सांतवीं नराशय केंद्र है ना! उस सांतवे नर केंद्र का नाम **सहस्त्रार पद्म (सहस्त्रार चक्र)** कहरहे हैं। यह केंद्र सर के बीचवाले हिस्से में है। इस केंद्र से शुरुहुयी कुछ नर अपने बगल में रहनेवाले सूर्यचंद्र नाडियों से मिलकर फेफडों के पास गये हुये होते हैं। सहस्त्रार नर केंद्र जो सांतवी नर केंद्र अपने नरों के द्वारा छटी केंद्र जहाँ से अपने काम को रोक दी थी वहीं से लेकर 1000 सांसे पूरे होने तक चलाती है। 1000 सांसे खत्म होजाते ही फौरन फिर से पहली केंद्र आधार चक्र फेफडों को चलाना शुरु करदेती है। उसके बाद दूसरा केंद्र फेफडों को चलाती है। सांतवे केंद्र का काम खत्म होते ही फिर से पहला केंद्र अपना काम शुरु करता है। इसलिये

हरवक्त सांस चलही रहा है। सारे चक्र मिलाकर पूरे 21,600 सांसे चला रहे हैं। सूर्योदय से शुरु होकर सब चक्र काम करनेकेलिये वापिस सूर्योदय आरहा है। इसीलिये यह मालूम हो रहा है कि एक दिन को 21,600 सांसे चल रहे हैं।

कुछ लोग ग्रंथों में ऐसा लिखे थे कि सांस अंदर जाकर अंदर के चक्रों के गोल प्रदक्षिण करके आरही है। ऐसा कहना सरासर झूट है कि सांस चक्रों तक जाकर प्रदक्षिण करके आ रहा है। डाक्टर्स इस बात को सुनते ही कह रहे हैं कि यह बात तो एक दम झूट है। इससे शरीर की परिशोधना करने वाले डाक्टर्स पूरी ब्रह्मविद्या को ही झूट समझने की हालत बनगयी। इस बात (विषय) को लेकर जिन लोगों ने पूरी तरीके से परिशोधना नहीं की वे लोग शुरु में एक जन को बताये होंगे फिर उस बात में सच्चाई कितनी है देखे बिना ही वही बात को परंपरा की तरह सब कहते गये, इसीलिये उन्होने कहा कि सांस शरीर के अंदर कहीं पर जाकर आ रहा है। कहीं पे जाकर आनेवाली बात झूट है। यह बात जानलो कि सांस फेंफडों तक ही जाकर आति है। ब्रह्मविद्या में बिलकुल भी परिशोधना किये बिना, फलित को फैन्डौट न करसकने पर भी, पता नहीं कौन कहा होगा उसीकी बात को पकडकर सब वही बात कहते जाते हैं। इस बात में सच्चाई कितनी है? झूट कितना है? कहकर बिलकुल अनालसिस नहीं कर रहे हैं ना हि साधना के द्वारा मालूम करने की कोशीष कर रहे हैं। ऐसे लोग कई प्रकार से इसतरह कह रहे है कि कुंडलीशक्ति सांप जैसी है, वह सो रही है, वह स्प्रिंगरोल की आकार में नाभिस्थान के पास है। लेकिन वे खुद नहीं जानते कि जो कुछ वो बोल रहे हैं वह सच है या नहीं उसके बावजूद भी जो ज्ञानियाँ इस विषय को अच्छी तरह जानते है उनकी बात को सुने बगैर ही उनसे

इसतरह बहस कर रहे हैं कि निजसे (सच में) उन्होने उस दृष्य को देखा हो। चाहे बातें खूब सीखकर बेहस करने में बहुत ही स्टान्ग है कहकर दूसरों से कहलवालेने पर भी, चाहे बहुत लोग से तारीफें (अभिनंदनायें) मिलने पर भी,जब तक निज (सच) क्या है मालूम नहीं होता तब तक कुछ भी फायिदा नहीं है। परमात्मा हमारे बहसों को स्वीकार नहीं करेगा। इसलिये बेहतर यही होगा कि हर विषय को आप स्वयं मालूम कीजिये दूसरों पर डिपेन्ड मत हुयिए। आप लोग ऐसा मत कहिए कि मुझसे तो उन्होने ऐसा कहा, इन्होने ऐसा कहा क्योंकि यदि आप दूसरों की बात को सुनेगे तो आप भी उसीतरह दूसरों को बोलते जायेंगे इसकी मिसाल ऐसी है कि एक भेड़ा (शीप) कुयें में कूदा तो उसे देखकर सारे भेड़े कुये में कूद गये। इसलिये हम चाहते हैं कि इन सब सवालों का जवाब मालूम करनी चाहिये कि असल में यह कुंडलीशक्ति क्या है? क्या उसका कोई आकार है? जिसतरह हमें नींद, होष है क्या उसीतरह उसको भी है कि नहीं?

ब्रह्मनाडि में पूरे सात नाडिकेंद्र हैं हेना! उसमें सात केंद्र एक एक एक एक शक्ति रखती है। वे शक्तियाँ कुछ देवताशक्तियों के बराबर है। इसीलिये बडों ने कहा है कि उन उन चक्रों में फलान फलान देवतायें हैं। कुछ बडे लोग तो यह कह रहे हैं कि सातकेंद्रों की शक्ति कूडलि ही **कुंडलीशक्ति** है। कुछ लोग तो ऐसा कह रहे हैं कि अज्ञान के वश होकर कुंडलीशक्ति सो रही है, उसको नींद से जगाना चाहिये। सात केंद्रों की चैतन्य ही कुंडलि कही जा रही है। वह कुंडलिनि शक्ति हर हमेशा फेफडों को चलाने की काम में निमग्न होकर, और शरीर में कुछ काम करने में लग्न होकर, हर वक्त काम कर रहे है तो यह कैसे कहसकते है कि कुंडलिशक्ति सो रही है। सात केंद्रों की चैतन्य (कुन्डली) होश में न रहते हुये अगर बेहोश

(नींद) में चलीगयी तो जीव मरजायेगा। जो भक्त स्वानुभव के साथ खोज नहीं किये वे गलती से कुंडलिनि शक्ति को अलग क़्रिस्म से कम्पार करलेके कनफ्यूज़ हो रहे हैं। ब्रह्मनाडि में जो चैतन्यशक्ति है वही कुंडलिनि शक्ति है, वही आत्मशक्ति है। ब्रह्मविद्या में ब्रह्मनाडि सात हिस्सो में डिवैड होकर है। उसमें जो चैतन्य शक्ति सात हिस्सों तक रहती है उसीको कुंडलीशक्ति कहकर पुकार रहे है। अगर सांतवीकेंद्र में शक्ति नहीं हो तो बाकी छः केंद्रों में भी शक्ति नहीं रहेगी। सातवीं केंद्र में जो शक्ति है वह किसी भी देवता शक्ति से समान नहीं है। यानि दुनिया में कोई ऐसी शक्ति है ही नहीं जो उसकी बराबरी करसकती हो। जो शक्ति सांतवीं केंद्र में मौजूद है जिन्होने उसके बारे में मालूम किया वही योगियाँ हैं।

जो नर ब्रह्मनाडि से शुरु हुये उसमें से कुछ नर अपने बगल में रहनेवाले सूर्यचंद्रनाडियों में जाकर,वहाँ से फेफडों तक जाकर फेफडों को खेले जैसा कर रहे हैं। जो सांसे इसतरह खेल रहे हैं उनको इनसान दो पद्दतियों के द्वारा रोक रहा है। यानि अनिच्छाधीन अवयवों को इच्छाधीन अवयवों में बदलने की शक्ति सिर्फ एक योगियों को ही रहती है। अब यह बताता हूँ कि योगि केलिये सांस दो पद्दतियों से कैसे रुक रही है।

जो योगि सांस को दबाकर, सांस को रुका के मन को ब्रह्मनाडि में दाखिल करनी चाहिये समझता है,वह एक स्थल में हिले बगैर बैठकर पहले इतना सांस अंदर लेता है कि फेफडों में खालिपन ही नहीं रहता पूरा सांस से भरजाता है। जो सांस को अंदर लिया था उसे बाहर न आने देते हुये तीन या चार मिनट रहता है। इसतरह रहने के बाद फिर से बाहर की हवा ही अंदर को लेता है। यहाँ पर गौर करनेवाली बात यह है कि पहले फेफडों में ज़रा भी खाली न

रहते हुये उसने हवे को अंदर लेलिया ना तो फिर जिन फेफडों में खाली जगह तक नहीं है उसमें वापिस हवा कैसे प्रवेश किया?इसतरह का शक आसकता है। उसका जवाब पहले उन फेफडों में जो खाली नहीं थे तीन चार मिनटों के बाद थोडा खालीपन बना हुआ रहता है। वह खाली जगह इसतरह बना कि! फेफडों में जो हवा है वह तीन चार मिनटों के बाद बाहर आने केलिये कोशीष करता है। क्योंकि बाहर आने से रोक के रखा हैं इसलिये कंठमार्ग के द्वारा थोडा थोडा पेट (उदर भाग) में जाता है, फेफडों के कोनों तक हवा पहुँचने से फेफडों में थोडा खाली जगह बनता है। उस खालिपन को भरती करने केलिये योगि बाहर की हवा को फिर से अंदर लेकर उसे पूरा कर रहा है। इसतरह दूसरी बार हवा को लिया हुआ योगि तीन या चार मिनटों तक सांस को बाहर छोडे बगैर रहकर, बाद में तीसरीबार भी हवा यह चेक करने केलिये लेता है कि क्या अपने अंदर और भी हवा जाकसकता है या नहीं। तब भी हवा थोडा अंदर को जायेगा। इसतरह दो तीन बार सांस को लेकर पेट में फेफडों में हवा को भरती करलेके बाहर छोडे बगैर जान बूजके हवे को दबाके रखता है। इसीको कुंभक कहते हैं इसतरह दबायि गयि हवा ऐसी रहती है जैसे उसे बाल (Ball) में बंद करके रखा हो।

१) जो फेफडे हवे को आधार करलेके खेल रहे हैं वे उस वक्त फौरन रुक जारहे है जिसवक्त हवा हिले बिना रुकजा रहा है।

२) फेफडे रुकजाते ही फौरन जो नर फेफडों को चला रहे हैं उनमें की चैतन्य भी रुक जारहा है।

३) नरों में चैतन्य रुकजाते ही फौरन उन नरों के साथ संबंध

होकर जो सूर्यचंद्र नाडियाँ है उनमें की चैतन्य भी रुकजाति है

४) सूर्यचंद्र नाडियों में चैतन्य रुकजाते ही फौरन जो मन सूर्यचंद्र नाडियों को आधार करलेके चलरही है वह मन बिना हिले ठहर जाति है।

५) मन के रुकजाते ही फौरन उन छः केंद्रों में की चैतन्यशक्ति रुकजाती है जो मन को आधार करलेकर जीवों के शरीरों को चला रही है। यानि कुंडलीशक्ति का खेल खत्म होगया। लेकिन सिर्फ एक सांतवीं केंद्र अपनी शक्ति को खोये बगैर वैसे के वैसे ही रहती है जो इन सब नरकेंद्रों की चैतन्य की आधार है। छः केंद्रों की चैतन्यशक्ति रुकजाने पर भी सांतवीं केंद्र में जो चैतन्यशक्ति है वह रुके बगैर वैसा ही रहती है। सांतवीं केंद्र में जो शक्ति है वह अपार है, जिसकी ऊहा (कल्पना) भी हम नहीं कर सकते,न उसे बातों में बयान किया जासकता है, उसीको योगियों ने आत्मा कहा है। जो चैतन्य इस सांतवें केंद्र में है वह जीव के नींद, होश, स्वप्न की हालत में बराबर रहती है। इसीलिये कहसकते हैं कि सांतवीं केंद्र में जो चैतन्य है वह तीसरीस्थान में साक्षी की तरह है। जो मन कुंभक के द्वारा ठहरगयी थी वह ब्रह्मनाडि में सांतवीं केंद्र को पहुंचकर उसमें बसजा रही है। मन के साथ साथ वह जीव जो अंतःकरण है वे भी सांतवीं केंद्र में रहनेवाली आत्मा में ही लीन होजा रहा है। जीव आत्मा में लीन होजाने को ही **योग** कह रहे हैं।

कुंभक को ही पूर्व में योगि श्री वीरब्रह्मम जी ने गाने के रुप में एक तत्व की तरह कहा था। कुछ लोगों ने कुंडलिनि शक्ति को अलग प्रकार से कम्पार करलिया है, कुछ लोगों ने तो ऐसा समझलिया

कि कुंडलि शक्ति सो रही है, इसतरह के लोग रहने से उस तत्व का मतलब ही किसी को समझमें नहीं आया, आखिर उस तत्व की हालत ऐसी बनगयी कि आज भीख मांगने वाले गाने के लिये इस्तेमाल हो रही है। जिसतरह अंधे को रत्न दिये तो भी व्यर्थ है उसीतरह श्री वीरब्रह्मम जी ने बडी ज्ञान इस्तेमाल करके कही हुयी बात को मालूम न होने की वजह से हम उसे व्यर्थ कर रहे हैं। हम यह बता रहे हैं कि जिनलोगों के भाव में कुंडलिनि ही महत्ववाली है और जिन्होने उसके बारे में सुना वे लोग श्री पोतुलूरि वीरब्रह्मम जी ने कही हुयी नीचे की तत्व को खूब ग्रहण कीजिये।

आहा (वाह वाह) !!! ब्रह्माण्ड है वह आदि मंत्र
हमारे ब्रह्मम जी ने कहा है बडा मंत्र!

१) बिना पंख नाक वाली पक्षि रात दिन तपस्या करके एक तालाब के सारे मछलियों को एक ही निगल गयी। **आहा**

२) घर के पीछे आवाज़ का कीड़ा घर में के सबलोगों को निगली, जो जन देखनेकेलिये आये उन सबको देख देख कर निगल गयी। **... आहा**

३) बिना हाथ और पैरवाला, हंडि प्याला हाथ में पकड कर, सिर्फ अकेला ही कुंये का सारा पानी खींचा। **... आहा**

४) तालाब पर सारस शिकार करते हुये आयी तो छुपीहुयी छोटी मछली एक दम उसे निगल गयी। आहा

५) कहा है वीरदास ने आत्मतत्व को बडे अनोखेपन से,महान लोग इसका भाव खोलके बतायें तो काफी है **... आहा**

इसका भाव यह है कि :- जो मंत्र ब्रह्मम जी ने कहा वह बड़ा मंत्र है। वह मंत्र हमारी सांस ही है। सांस जब अंदर जाती है तो **सो** शब्द से,जब बाहर आति है तो **हम** शब्द से हरकत कर रही है। ये दो शब्द मिलकर **सोहम** कहलानेवाला शब्द बना है। यह शब्द बड़ी महिमा वाली है इसलिये उसे **मंत्र** कहा गया। और अक्षर सम्मेलन से जुडा हुआ है इसलिये उसे मंत्र कहा गया। **सोहम** कहलाने वाला मंत्र आदिमंत्र की तरह बदल रहा है। वे इसतरह है कि! **सो** शब्द में आखिर में **ओ** कहलाने वाला शब्द है। **हम** शब्द में आखिर में **म्** कहलानेवाला शब्द है। एकबार सांस अंदर जाकर बाहर आयें तो **सोहम** कहलानेवाला मंत्र बन रहा है। उस **सोहम** मंत्र में ही **ओम (ॐ)** कहलानेवाला शब्द बसा हुआ है। इसलिये **सोहम** माँ है तो **ॐ** शिशु है। प्रपंच के पैदाइश में जो शब्द पहले पैदा हुआ वह शब्द **ॐ** ही है इसीलिये उसे **आदिमंत्र** कहना हुआ।

9) *बिना पंख नाक वाली पक्षि रात दिन तपस्या करके*
एक तालाब के सारे मछलियों को एक ही निगल गयी।
आहा

भाव :- नाक के नथनों में प्रवेश करनेवाली सांस का कोई आकार नहीं है इसलिये उस सांस को बिना पंख नाक वाली पक्षि कहा है। सांस दिन रात रुके बगैर सोहम मंत्र का जप कर रही है। इसीलिये कहा है कि पक्षि (चिडिया) ने रात दिन तपस्या की। ये सांस ही शरीर में प्रवेश करके कुंभक के द्वारा ठहरकर शरीर में के सारे हरकतों (चैतन्य) को रोक रही है। इसलिये ही कहा कि तालाब में कई प्रकार से घूम रहे मछलियों को निगलगयी।

२) *घर के पीछे आवाज़ का कीड़ा घर में के सबलोगों को निगली ,*

जो जन देखनेकेलिये आये उन सबको देख देख कर निगल गयी। आहा

भाव :- सांस हर हमेशा सोहम कहलानेवाला शब्द कर रही है, इसीलिये **गी गी** कहकर पुकारनेवाले आवाज़ के कीड़े से उसे कम्पार करके बताया। शरीर में नज़र न आते हुये ब्रह्मनाडि में जो चैतन्य है वही सांस केलिये आधार है। इसीलिये उसे घर के पीछे आवाज़ का कीड़ा कहा है। घर का मतलब शरीर है। सांस के कुंभक के द्वारा शरीर में के जो पांच वायु है यानि व्यान, समान, उदान, प्राण, अपान बंद किये जा रहे हैं। इसीलिये तत्व में कहा कि घर में रहनेवाले सबको निगलगयी। सांस को दबाने के बाद फेफडों में खाली पन से दो या तीन बार थोडा थोडा बाहर की हवा अंदर प्रवेश करके, जो हवा अंदर गया वह बाहर आये बगैर ठहरजाने से कहा कि देखनेकेलिये आये हुये सब लोगों को निगल गयी।

३) *बिना हाथ और पैरवाला , हंडि प्याला हाथ में पकड कर , सिर्फ अकेला ही कुंये का सारा पानी खींचा। आहा*

भाव :- सांस का कोई रुप नहीं है इसलिये कहा है कि बिना हाथ पैर वाली है। सांस नाक के नथनों में से एक रंद्र में ज़्यादा और एक रंद्र में कम अंदर और बाहर चलती रहती है,..ज़्यादा सांस को हंडी (बडे मटके) से, कम सांस को प्याले (छोटे मटके) से कम्पार किया। इसीलिये हंडी, प्याला हाथ में पकडकर कहा गया। शरीर में के तमाम खयालात सिर्फ एक सांस को रोकने से रुकजारहे हैं। इसलिये

ही कहा गया कि कुंये में का सारा पानि सिर्फ अकेला ही डुबाया। यहाँ पर शरीर को कुंये से कम्पार किया।

४) *तालाब पर सारस शिकार करते हुये आयी तो छुपीहुयी छोटी मछली एक दम उसे निगल गयी। आहा*

भाव :- सांस शरीर में ठहरजाने से पहले फेफड़े बाद में नर, उसके बाद सूर्यचंद्र नाडियाँ, षटचक्र एक के बाद एक अपने अपने चैतन्य को खो रहे हैं। इसीलिये कहना हुआ कि तालाब पर सारस शिकार करने आयी तो एक के बाद एक अपने हरकत को खोने पर भी, आखिरीवाली सातवीं केंद्र सांस के रोकने से भी अपनी ताक़त को खोये बगैर वैसी की वैसी ही रहने से, सब की हरकतों को रुकायी हुयी सांस जब सांतवीं जगह पर पहुंचती है तो उसको उतनी ताक़त नहीं है कि वहाँ की चैतन्य को रुका सके इसीलिये सांस वहाँ पर रुक जाने से, कहना हुआ कि छुपी हुयी छोटी मछली सारस को निगल गयी। ऐसे कई तत्व प्राणायाम के बारे में बडे ज्ञानी लोगों ने हमें बताये थे। लेकिन आज के ज़माने के लोग उन तत्वों को सही से समझ न सकके अपनी जनम को व्यर्थ करले रहे हैं।

हवे के तत्व से आकाश का तत्व मिलकर मन पैदा हुयी है। इसलिये मन और सांस को अविनाभाव संबंध है। सांस रुके तो मन रुकेगा या मन रुके तो सांस रुकजायेगा। सांस ठहरने के बाद मन ठहरने को कुंभक कहते हैं। कुंभकपद्दती तारकयोग से संबंदित है। मन को रुकाने के बाद सांस को रुकाने को प्राणायाम ही कहसकते हैं। लेकिन यह तरीका अमनस्का योग से संबंदित है। अमनस्क पद्दती के द्वारा योगिया प्राणायाम इसतरह कर रहे हैं कि!

योगि हिले बगैर बैठके मन को कोशीश के द्वारा ऐसा करता है कि कोई संकल्प ही न रहे। जो चैतन्य ब्रह्मनाडि के नरकेंद्रों में रहता है वह मन को चंचल करता है। मन चंचल न होते हुये ठहरजाने पर फौरन सूर्यचंद्रनाडियाँ जो मन के स्थान है वे अपने चैतन्य को खो देते हैं। तो तब मन उस ब्रह्मनाडि में प्रवेश कर रही है जो सूर्यचंद्रनाडियों के बीच है। मन ब्रह्मनाडि में प्रवेश करते ही जो नरकेंद्र ब्रह्मनाडि हैं वे अपने चैतन्य को खो रहे हैं। इसतरह मन रुकजाने से सूर्यचंद्रनाडिया, ब्रह्मनाडि के छः केंद्र अपने अपने शक्ति को खो रहे हैं। सांस को चलाने की शक्ति सूर्यचंद्रनाडियों पर से ब्रह्मनाडि के छः केंद्रों को है। इसलिये ये सारे केंद्र रुकजाते ही फौरन सांस रुक जारही है। इसतरह कुछ योगियाँ अपने मन के द्वारा सांस को रुका रहे हैं। इसके मुताबिक यह कहसकते हैं कि प्राणायाम दो प्रकार के हैं, **एक तारक पद्दती, दूसरी अमनस्क पद्दती।**

सांस को और मन को सूर्यचंद्र नाडियों के द्वारा कनेक्षन है। इसीलिये हम कह रहे हैं कि जैसे जैसे मन ठहरता है वैसे वैसे सांस ठहरता है। यहाँ कुछ लोगों को एक शक आसकता है। नींद में मन ठहरजा रही है हेना! तो फिर सांस को भी तो ठहरजाना चाहिये ना! लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है ऊपर से सांस मामूली हालत से भी नींद में ज्यादा हो रही है, इसके मुताबिक तो यह कैसे कहसकते हैं कि मन ठहरजाने से सांस भी ठहरजायेगी? इस सवाल पर हमारा जवाब यह है कि नींद में मन अपने आप ब्रह्मनाडि में ठहर रही है। इसलिये सूर्यचंद्रनाडियाँ अपने चैतन्य को खोये बगैर रहकर, मन उन नाडियों पर न रहने की वजह से स्वतंत्रित होकर अपने मर्ज़ी के मुताबिक सांस को चलाते हैं। मन जब सूर्यचंद्रनाडियों पर रहता

है तब सांस मन के अनुसार चलती है। जब भी मन जीव को मालूम हुये बगैर ही अपने आप ब्रह्मनाडि में मिलजाति है तब सांस मन के अनुसार न चलते हुये अपनी मरज़ी के मुताबिक चलना शुरु करदेती है। इसीलिये कुछ लोगों को नींद आते ही फौरन सांस तेज़ी से चलता रहता है। लेकिन योग में ऐसा नहीं होता। मन जीव के कोशीश से ब्रह्मनाडि में लय हो रही है। योग में षट चक्र अपने चैतन्या को खो रहे हैं। सूर्यचंद्रनाडियाँ भी अपने चैतन्य को खोकर अपने द्वारा जो सांस खेल रही है उसे ताकत नहीं रह रही है। योग में और नींद में बहुत फरख है। नींद अज्ञान स्वरुप है। योग ज्ञान स्वरुप है। नींद में जीव अपने आप को भूलजाता है। योग में जीव खुद के बारे में मालूम करता है। नींद में ज्ञानशक्ति शरीर में प्रवेश नहीं करसकती। योग में ज्ञानशक्ति शरीर में प्रवेश करती हैं। नींद को, योग को एक सांस में ही नहीं बल्कि शरीर के अनेक कार्यों में भी फरख हैं।

हर मानव को सांस नाक के रंद्रों से साधारण से 12 इंचेस बाहर आकर जाता है। योग साधना के द्वारा जिनका मन थोडे हद तक ठहरता है उनको सांस 12 इंचेस लम्बा बाहर न आते हुये सिर्फ थोडे इंचेस ही बाहर आकर जाता है। जैसे जैसे मन ठहरता है सांस की तेज़ी भी ठहरती है। मन जब पूरे तरीके से रुकजाता है तब सांस ज़रा भी बाहर न आते हुये ठहरजाता है। उसीतरह मन जैसे जैसे चंचल होता है वैसे वैसे सांस की स्पीड भी ज़्यादा होती है,जब मन ज़्यादा उद्रिक्त होता है तब सांस 12 अंगुल ही नहीं बल्कि 18 अंगुल तक आकर जाता है। मानव की आयु सांस पर ही निर्णय होकर रहता है। सांस पर ही काल, कर्मचक्रों के गमन डिपेन्ड होकर हैं। जिसतरह हम सेकन्डों के द्वारा मिनटों को, घंटों को पहचानते हैं उसीतरह परमात्मा सांस के द्वारा जीव के वक्त को और कर्म को

पहचानता है। एक निर्णीत लम्बाई रखनेवाली सांस को एक सासं (एक हंस) की तरह पहचान सकते हैं। परमात्मा के दृष्टी में जो सांस जीव के नाशिक (नाक) के रंद्रों के चौडाई से २४ टैम्स ज़्यादा लम्बाई रखती है उसे एक सांस कह रहे हैं। इसीलिये कहसकते हैं कि मानव को साधारण से १२ अंगुल की सांस चलरही है। यहाँ कुछ लोगों को एक शक आसकता हैं कि **मनुष्य के नाशिका रंद्रों के चौडाई से २४ टैम्स ज़्यादा है कहकर** किस आधार से बतासकते हैं कि उसका जवाब यह है कि हमारे कपाल में जो काल, कम्र चक्र के हिस्से हैं उन हिस्सों को मानव के नाक के रंद्रों से संबंध है। इसीलिये उसतरह बतासकते हैं। मानव के नाक के रंद्रो के अनुसार यह बतासकते हैं कि १२ इंचेस हैं। हाथी के नाक के रंद्रों के अनुसार ६ फीट लम्बी सांस को एक सांस की तरह हिसाब करसकते हैं। ऐसा ही मख्खी के नाक के रंद्रों के अनुसार कहसकते हैं कि उसकेलिये एक सांस रहती है। इस सूत्र के प्रकार चाहे जीव किसी भी शरीर का हो उसका सांस निर्णय करके बता सकते हैं।

योगसाधना के द्वारा सांस की लम्बाई को 12 अंगुल से 1 अंगुल तक कम करले सकते हैं और रुका भी देसकते हैं। मानव को 12 अंगुल की सांस 21,600 मरतबा बाहर आकर जायें तो परमात्मा के नज़र में जीव के लिये एक दिन की तरह हिसाब किया जा रहा है। योगसाधना के द्वारा 1 इंच सांस चलें तो ग्याराह इंचेस की सांस बच रही है हेना! 1 इंच की सांस 21,600 मरतबा बाहर आके जानेपर भी परमात्मा के दृष्टी में एक दिन की तरह हिसाब नहीं किया जायेगा। काल, कम्र चक्रों का भ्रमण भी 11 हिस्से कम होजाकर रहता है। मामूली मानव को 12 इंचेस की सांस 21,600 टैम्स खेलने पर एक दिन की तरह हिसाब किये जाने पर भी, योगसाधना

करनेवाले मानव को १ इंच की सांस 21,600 मरतबा खेलने पर भी उसकेलिये वह एक दिन की तरह हिसाब नहीं किया जा रहा है उसके बदले में 12 दिनों को एक दिन हुये जैसा हिसाब किया जा रहा है। इसलिये मानव की आयु चढना, उतरना सांस पर आधारित है। पूर्व में ऐसे बहुत से योगिया रहा करते थे जिन्होने सांस पूरे तरीके से बंद करके आयु को बढालिये हैं।

प्रारब्द के प्रकार परमात्मा ने जीव के लिये कुछ सांसे निर्णय करके रखे हुये होते हैं। निर्णय की गयी सांसों में से हर दिन 21,600 सांसे खर्च होजाते रहते हैं। इसतरतह खर्च होते जाकर जो सांसे निर्णय की गयी वे खत्म होते ही फौरन जीव शरीर को छोडदेना हो रहा है। कुछ ज्ञानियाँ प्राणायाम के द्वारा ऐसा करले रहे हैं कि सांसे एक दिन में कम खर्च हो,इससे वे लोग अपनी आयु को बढाले रहे हैं। यह सब समझमें आने केलिये एक छोटी सी मिसाल से समझाता हूँ,देखिये। मानव के प्रारब्दकम्र के प्रकार इसतरह कर्म निर्णय होकर है कि जबतक 31,53,60,000 सांसे खत्म नहीं होते तबतक जीव शरीर में रहे। दिन में 21,600 सांसे चलें तो 31,53,60,000 सांसे खत्महोने के लिये 40 साल का वक्त लगता है। इसलिये कहसकते हैं कि उसका आयु 40 साल है। लेकिन मानव 20 की उमर से प्राणायाम करना शुरु किया है। हर दिन 2 घंटे प्राणायाम किया करता था। वह दो घंटे सांस चलें बगैर दो घंटों को 1800 सांसे जीव को बच गये। उस जीव को एक दिन 1800 सांसे बचते हुये 19,800 सांसे खर्च होजाते थे। इसके प्रकार उस जीव केलिये जो सांसे निर्णय किये गये थे वे खत्म होने के लिये 41 साल, 8 महीने, 3 दिनों का वक्त लगता है। जबतक उस जीव का आयु 1 संवत्सर, 8 महीने, 3दिनों का वक्त बढगया। इसतरह कुछ योगियाँ प्राणायाम के

द्वारा आयु को बढालेकर ज़्यादा दिन जीने का मौका है। चरित्र में मालूम हो रहा है कि पूर्व में कुछ लोगों ने आयु को बढालेकर कुछ सैकडों साल ज़िंदा थे।

ब्रह्म, काल, कम्र, गुण चक्र

जीव की मौत और पैदाइश का कारण कर्म है। जीव कर्म को भुगतता ही रहता है। और कमालेता ही रहता है। पिछले जन्म का कर्म इस जन्म में, इस जन्म का कर्म अगले जन्म में भुगतते हुये कम्र चक्र से बाहर नहीं पडसकके कई दुख सुख जीव हमेशा भुगतही रहा है। यदि कम्र चक्र से बाहर निकलना है तो पहले कर्म क्या है? और वह कहाँ से हम पर गिर कर हमें दुख दे रही है? उससे कैसे विमुक्त होना चाहिए? इसतरह इन सब चीज़ों का विवरण जानलिये तो, कर्मचक्र से जीव बाहर निकलने का मौका बनसकता है। इसलिये कम्रचक्र के बारे में थोडा बताता हूँ।

कर्म यानि पाप, पुण्य है हेना! ये पाप पुण्य दो गोल घेरलेके एक चक्र की तरह तयार होकर जीव को उस चक्र में ही गोल गोल घुमाते हुये ऐसा कर रहे हैं कि वह पाप, पुण्यों को भुगते। जो पाप पुण्य हम कमाले रहे हैं वह कर्म चक्र में पहुंचकर स्टोर होजा रहे हैं फिर वक्त के अनुसार वापिस हम पर ही प्रसार होता है। जिसका कर्म उसीके कर्म चक्र में ही जाकर स्टोर होता रहता है, वापिस उस पर ही प्रसार होता है। कर्मचक्र हर जीवी के दिमाग में है। पाप, पुण्य आँखों को नहीं दिखते हैं, इसलिये यह चक्र जो पाप पुण्यों का मिश्रम है दिमाग में आँखों को किसी को नहीं दिखता । अगर देखना चाहते हैं तो चौथी आँख ज्ञान नेत्र से देख सकते हैं। दिमाग में यह

चक्र 12 हिस्सों में डिवैडेड है। कम्र चक्र को (1) पहली तसवीर में देखसकते हैं।

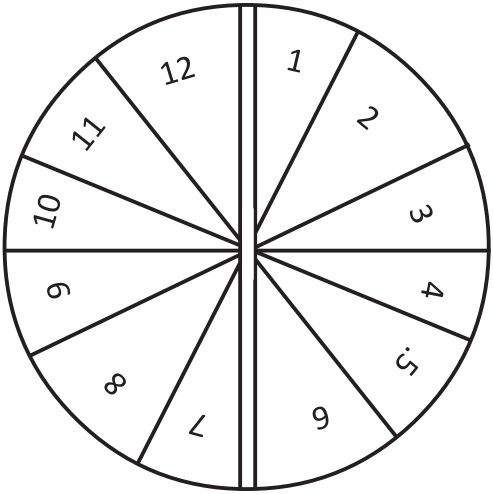

(1) पहली तस्वीर - दिमाग में की कर्म चक्र के भाग

इसतरह जो कर्मचक्र बारह हिस्सों में है उसमें जीव के पाप पुण्य निर्णीत हिस्सों में जाकर जमा होजाते हैं। वह इसतरह है कि! कर्मचक्र के एक, दो, नौ भागों में जीव का पुण्य स्टोर होता है। ऐसा ही तीन, सात,ग्यारह भागों में जीव का पाप स्टोर होता है। बाक़ी छः भागों में पाप पुण्य दो भी स्टोर होते हैं। कुछ लोगों को यह शक आसकता हैं कि कुछ भागों में पुण्य, कुछ भागों में पाप, कुछ भागों में पाप पुण्य दो भी क्यों स्टोर हो रहे हैं?

उसके बारे में बडे लोग इसतरह कह रहे हैं कि मानव अपने जीवन में एक ही क़िस्म का पाप हो या एक ही क़िस्म का पुण्य हो नहीं कमालेता। अनेक प्रकार के काम करते हुये अनेक प्रकार के पाप पुण्यों को कमालेते रहता है। एक एक प्रकार का पुण्य कर्मचक्र में

एक एक निर्णीत भाग में ही स्टोर होता है। ऐसा ही एक एक प्रकार का पाप कर्मचक्र में एक एक निर्णीत भाग में ही स्टोर होता है। इसीलिये कुछ भागों में पुण्य, कुछ भागों में पाप, कुछ और भागों में पाप पुण्य दोनों भी स्टोर हुये होते हैं। आप (2) दूसरी तसवीर में देखसकते हैं कि वह किसतरह है।

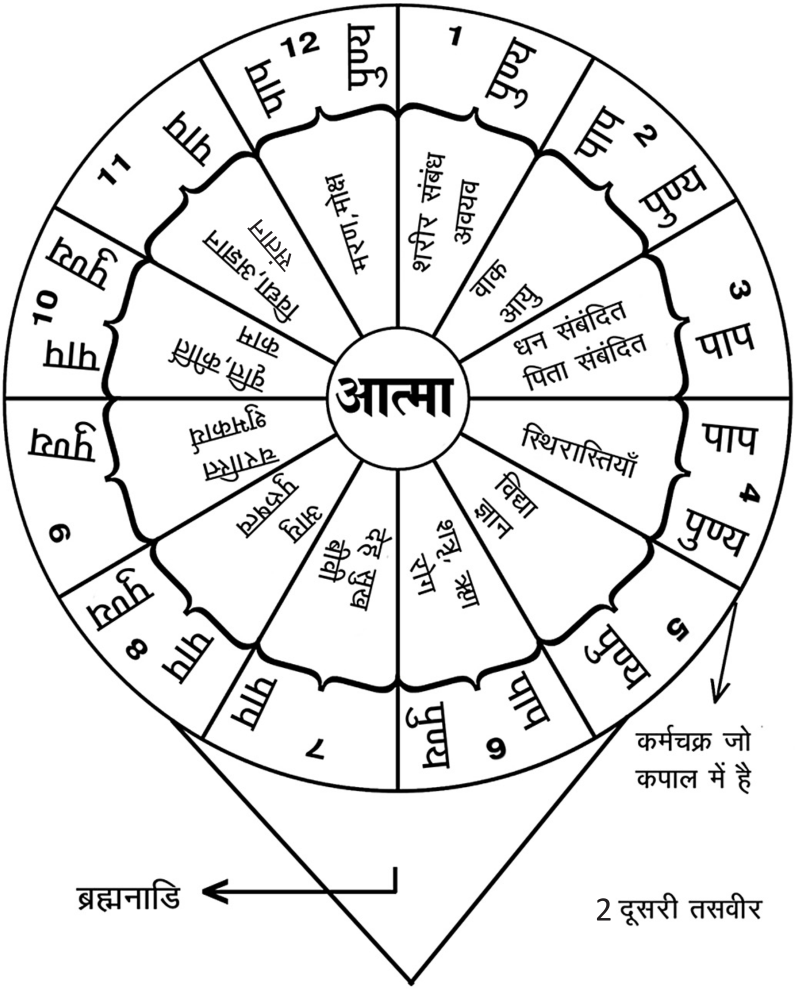

2 दूसरी तसवीर

इसतरह जैसे जैसे जीव कई प्रकार के पाप पुण्यों को कमालेता है वैसा ही उस कर्मचक्र में दाखिल होता है जो कपाल में मौजूद है कर्मचक्र में के कर्म को जीवों पर प्रसार करने वाले **नवग्रह है यानि सूर्य, चंद्र, अंगारक, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु,केतु** है। ग्रह टोटल्लि १२ हैं। फिलहाल नौ ग्रहों के बारे में ही बता रहे हैं। द्वादश ग्रहों की विवरण हम जो **ज्योतिश्यग्रंथ** लिख रहे हैं उसमें बतायेंगे। ये नौ जन कालचक्र में फसकर जैसे काल चक्र घूमता है वैसे ये भी घूमते हुये कर्मचक्र में के पाप पुण्यों को काल के अनुसार जीवों पर छोड रहे हैं। काल चक्र में नवग्रह घूमते रहने के वजह से ही पाप पुण्य एक ही बार में प्रसार न होते हुये थोडा थोडा मिश्रम रुप में प्रसार होरहे हैं उसीको **प्रारब्द** कहते हैं।

कर्मचक्र हमारे सर में ही रहने की वजह से सबलोग मेरा कर्म कहते हुये हाथ को सरके तरफ ही दिखाते हैं। और जब एक काम पूरा नहीं होता है तब भी कहते हैं कि कौन क्या करसकता हैं जब मेरी खुद की तखदीर ही ऐसी है तो (यानि कहने का मतलब यह है कि ईश्वर ने मेरे सर पर ऐसा ही लिखा है)। हम आम तौर पर ऐसे बातें करते ही रहते हैं कि जब एक को ज्यादा फायिदा (लाभ) होता है तो कहते हैं कि उसका पुण्य वैसा है,जब किसी के साथ नुकसान होता है तो कहते हैं कि उसने पाप किया है। हमें मालूम न होते ही हमारे मुँह से इसतरह के बातें निकल रहे हैं कि अगर काम अच्छे से पूरा होता है तो फौरन पुण्य कहते हैं अगर काम सही ढंग से पूरा नहीं होता है तो पाप कहते हैं।

और ऐसा ही हमें मालूम न होते ही हमारे मुँह से इसतरह के शब्द यानि मेरा नसीब (तकदीर), मेरा कर्म कहते हुये हमारा हाथ

ही सर के तरफ दिखा रही है। चाहे कोई भई हो पूरा सच जानकर यानि कर्म का विधान जानकर अपने सर के तरफ हाथ दिखाके मेरा कर्म कहा है? या बस यूँही कहदिया? यदि हम इस बात पर गौर करें तो मालूम होता है कि उसे इसके बारे में कुछ भी नहीं मालूम। यहाँ पर हमें जो मालूम करनी चाहिये वह यह है कि हमने जो पाप और पुण्य किया वह कर्मचक्र में हैं। उन पाप पुण्यों को ही हम भुगत रहे हैं। इसीलिये हमारे सर में जो कर्म चक्र है उसी के तरफ हमें मालूम न होने पर भी विधिपूर्वक से हाथ दिखा रहे हैं।

कर्म चक्र में जो कर्म है उसके अधिनेताएँ नवग्रह है इसलिये कर्मचक्र में जो कर्म है उस कर्म के अनुसार जीवों को नवग्रह घुमाते रहते हैं। कर्मचक्र की तरह कालचक्र भी बारह हिस्से हुयी। शुरुआत से जो सप्तग्रह है उन्हे इन बारह भागों केलिये अधिनेताओं की तरह नियमित किया गया। कालचक्र में बारह भागों को बारह नाम रखे गये। वे ये है कि १) मेष २) वृषभ ३) मिथुन ४) कर्काटक ५) सिंह ६) कन्य ७) तुल ८) वृश्चिकम ९) धनुष १९)मकर ११) कुंभ १२)मीन। सप्तग्रह इन बारह भागों पर स्वयं हख रखते हैं। वह इसतरह है कि सूरज सिंहरासि का अधिनेता है यानि जिस भाग का नाम सिंह है वह सूरज का खुद का स्थाना है। उसीतरह चंद्र का स्थान कर्काटक है, अंगारक केलिये मेष और वृश्चिक दो भाग है, बुध के लिये मिथुन, कन्या कहलानेवाले दो भाग, गुरु केलिये मीन, धनुष कहलानेवाले दो भाग, शुक्र के लिये वृषभ, तुल कहलानेवाले दो भाग, शनि केलिये मकर, कुंभ कहलानेवाले दो भाग खुद के भागों की तरह हिसाब किये गये। इसतरह से बारह भागों के लिये सात अधिनेताएँ शुरु से हैं। बीच में आया हुआ राहु ने शनि के स्वयं स्थान

कुंभ में अपना जगह बनालिया तो केतु ने गुरु के स्वयं स्थान मीन में अपना जगह बनालिया। नौ ग्रह बारह भागों के अधिनेताएँ बनें। और भी तीन नज़र न आनेवाले ग्रहों के स्वयं स्थानों को बाद में **ज्योतिश्य ग्रंथ** में बतायेंगे। यह कालचक्र कम्रचक्र को छूते हुये ऊपर फिरता रहता है। कालचक्र को (3) तीसरी तस्वीर में देकसकते हैं ।

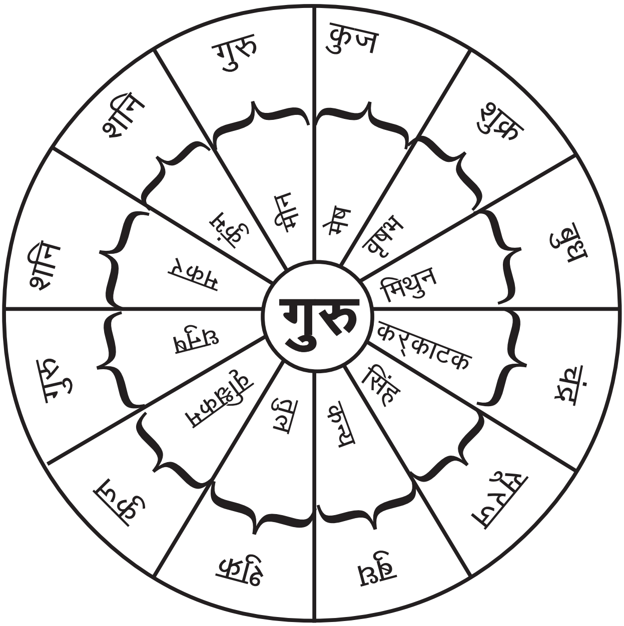

(3) तीसरी तसवीर

कर्मचक्र में कर्म को घुमानेवाले नवग्रह हैं। ऐसा ही कालचक्र में नवग्रहों को घुमानेवाली आत्मा है। आत्मा कहलानेवाला अपने अधीन में जो नवग्रह हैं उनके मदद् से कर्म को जीवों पर प्रसार कर रहा है। प्राणियों के शरीर में जो कपाल स्थान है उसमें कर्मचक्र, कालचक्र परिभ्रम कर रहे हैं। कर्मचक्र पर अधिकार नवग्रहों को

रहता हैं। तो कालचक्र पर अधिकार आत्मा को रहता है। आत्मा यकीनन कालचक्र को परिभ्रम करवाती रहती है। कर्म को नवग्रह चला रहे हैं तो नवग्रहों को यम (आत्मा) चला रही है तो, गुरु (परमात्मा) बीच में रहकर गुरुत्वाकर्षण शक्ति से ऐसा कर रहा हैं कि ये सबकुछ अपने गोल घूमे। जो गुरुत्वाकर्षण शक्ति बीच में है उसे 4 वीं तस्वीर में देखसकते हैं।

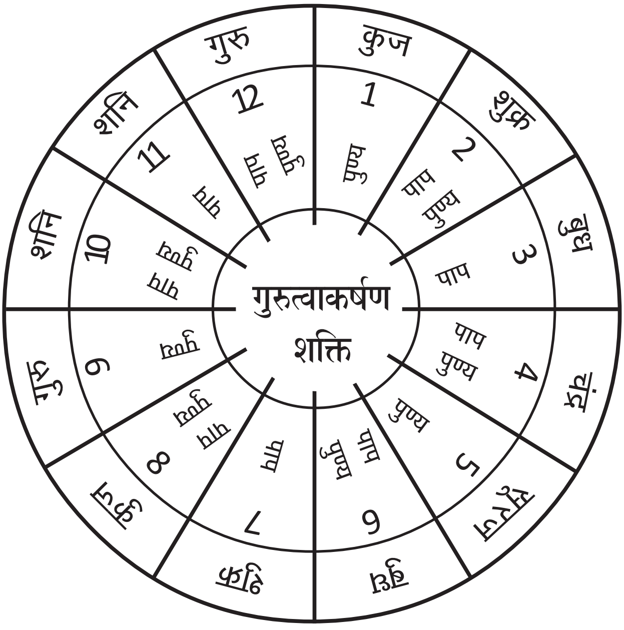

(4) चौथी तस्वीर

कर्म, काल चक्रों केलिये परमात्मा केंद्रबिन्दु की तरह रहते हुये, काल (वक्त) के नाम से नवग्रहों को, कर्म को अपने आकर्षण शक्ति से चलाते हुये साक्षिभूत की तरह है इसीलिये गीता शास्त्र में राजविद्या राजगुह्य योग में भगवान ने कहा कि **मैं प्रकृती पर**

आधिपत्य रखा हुआ हूँ। मेरे वजह से ही सर्व प्राणियाँ पैदा होरहे हैं और मर रहे हैं। इसी कारण से ही जगत चक्र की तरह घूम रही है।

सर्व प्राणियों के ब्रह्मनाडि में वह आत्मा है जो मध्यपुरुष है। ब्रह्मनाडि के सप्तस्थान में आत्मशक्ति केंद्रीकृत होकर है। सप्तस्थान को केंद्र बनालेकर उसके गोल कर्म, कालचक्र फिर रहे हैं। कालचक्र में रात दिन, शुक्लपक्ष, कृष्णपक्ष, मास (महीने), उत्तर दक्षिणायन, संवत्सर हो ही रहे हैं। रात दिन से शुरुहोकर संवत्सर काल तक कर्म को प्राणियाँ भुगतरहे हैं। कालचक्र में रात दिन इसतरह संभव हो रहे हैं कि! जो सूरज कालचक्र में है वह कर्म चक्र के हिस्सों को पार करते हुये प्रयाण करता रहता है। एक एक भाग को पार करने केलिये तकरीबन दो घंटों का वक्त लगता है। सूर्योदय से शुरु होकर छः भाग पार करनेकेलिये बारह घंटे लगेंगे। इसीको दिन की तरह हम देख ही रहे हैं। उसीतरह बाकी छः भाग पार करनेकेलिये बारह घंटे लगेंगे। इसीको रात कह रहे हैं। हमारे कपाल में जो कर्मचक्र है उसे पार करते हुये सूरज कालचक्र में सफ़र कर रहा है। इसतरह कालचक्र में सफ़र करते हुये कर्मचक में के बारह हिस्सों को पार करने के लिये २४ घंटों का वक्त लग रहा है। २४ घंटों को एक दिन कहरहे हैं। कर्मचक्र में मध्यरेखा है। मालूम हो रहा है कि सूर्यभ्रमण में मध्यरेखा के बायें तरफ के छः हिस्से दिन है तो मध्यरेखा के दायें तरफ के छः हिस्से रात है। 5 वीं तसवीर में रात दिन के भागों को देख सकते हैं।

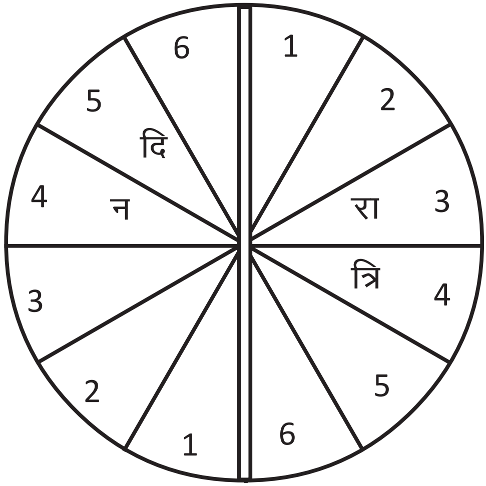

(5) पाँचवीं तस्वीर

सूरज कालचक्र में परिभ्रम कर रहा हैं, हेना! काल चक्र बारह हिस्से हैं ना! सूरज कालचक्र में एक एक भाग को पार करने केलिये एक मास का वक्त लगता है। कालचक्र के पूरे बारह भागों को पार करने केलिये बारह मास लगेंगे उसीको एक संवत्सर कह रहे हैं। कालचक्र में बीचमें जीवरेखा है। जो छः हिस्से जीवरेखा के बायें तरफ हैं उन्हे पार करने केलिये सूरज को छः महीने लगते हैं। उस वक्त को ही उत्तरायण कह रहे हैं। ऐसा ही जो छः हिस्से जीवरेखा के दायें तरफ हैं उन्हे पार करने केलिये सूरज को छः महीने लगते हैं। उस वक्त को ही दक्षिणायण कह रहे हैं। उत्तर दक्षिणायणों को नीचे वाले (6) छटवीं तस्वीर में देखसकते हैं।

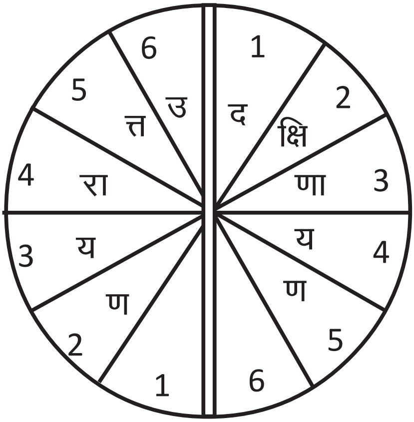

(6) (छटवीं तस्वीर) कालचक्र

कालचक्र में चंद्र एक एक भाग को पार करने केलिये ढाई दिन लगता है। वे छः हिस्से जो जीवरेखा के एक तरफ है उन्हे पार करने केलिये १५ दिन लगेंगे। दूसरे तरफ के छः हिस्सों को पार करने केलिये १५ दिन लगेंगे। चंद्र बारह हिस्सों को पार करने केलिये ३० दिन का वक्त लगेगा। चंद्र जीवरेखा के बायें तरफ के हिस्सों को पार करने के वक्त को शुक्लपक्ष कहते हैं,बायें तरफ के हिस्सों को पार करने के वक्त को कृष्णपक्ष कहते हैं। कृष्ण, शुक्ल पक्षों को नीचें 7 वीं तस्वीर में देखसकते हैं।

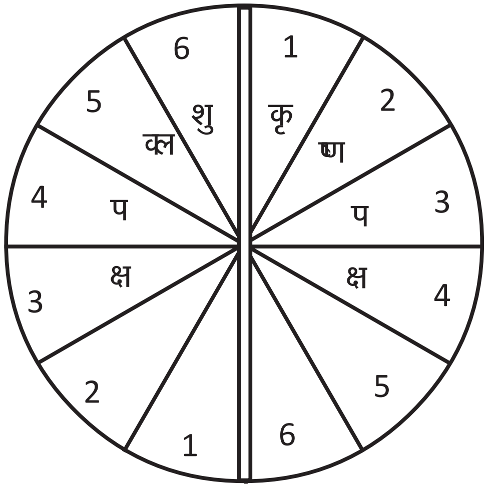

(7 वीं तस्वीर) कालचक्र

इसतरह कालचक्र में रातदिन, शुक्ल, कृष्ण पक्ष, आयन हो रहे हैं। जो योगशक्ति जीव को योग करने से मिलता है वह सब उस गुरु केंद्र में जमा होजाता है जो काल, कर्म चक्र के बीच में मौजूद है। जिसकी योगशक्ति परिपूर्ण स्थिति को आजाती है उसका मरण संभव जब ही होता है तब सूरज जीवरेखा को बायें तरफ रहता है और सूरज कर्मचक्र पर भी जीवरेखा को बायें तरफ ही रहता है, चंद्र भी कालचक्र में जीवरेखा को बायें तरफ जब रहता है तब ही उसका मरण संभव होता है। जो जीव इसतरह मरता है वह जीव बीच में जो केंद्र है उसीमें चला जा रहा है। यानि आत्मा में ही लीन हो रहा है। जो जीव दूसरे समय में मरजाता है वह केंद्र में रहनेवाली आत्मा तक नहीं पहुँच सकता। जिस वक्त में दिन, शुक्लपक्ष, उत्तरायण मिलते हैं उस वक्त जीवको आत्मा तक पहुचने का रास्ता बनजाता है। वरना रास्ता नहीं रहता। इन मार्गों (रास्तों) को नीचे 8 वीं तस्वीर में देखसकते हैं।

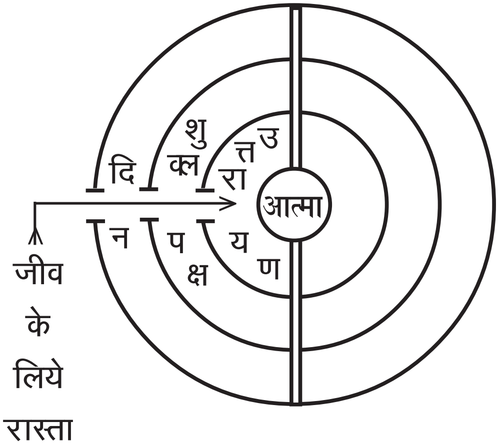

(8 वीं तस्वीर)

जो जीव रात में, शुक्लपक्ष में, दक्षिणायन में मरता है वह आत्मा को नहीं पहुंच सकता। उस समय में मराहुआ जीव को कालचक्र में आत्मा को पहुंचने का मार्ग नहीं मिलता। रात में, शुक्ल पक्ष में, दक्षिणायन में कालचक्र में मार्ग किसतरह है वह आप नौ वीं तसवीर (9) में देखसकते हैं।

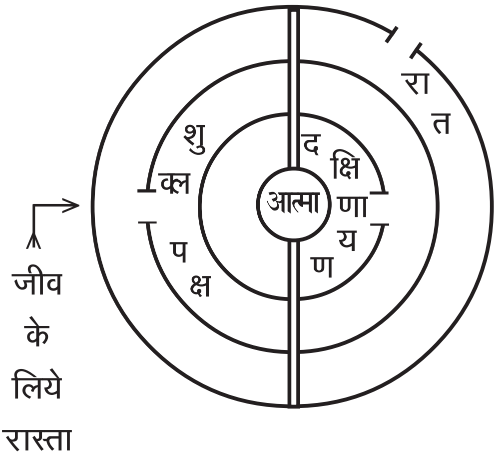

9 वीं तस्वीर

दिन में, शुक्ल पक्ष में, दक्षिणायन में मराहुआजीव आत्मा तक नहीं पहुँच सकता। उस समय में मराहुआ जीव केलिये कालचक्र में आत्मा तक पहुँचने का रास्ता नहीं रहता। दिन में, शुक्लपक्ष में, दक्षिणायन में कालचक्र में मार्ग किसतरह है वह आप नीचे के 10 वीं तस्वीर में देखसकते हैं।

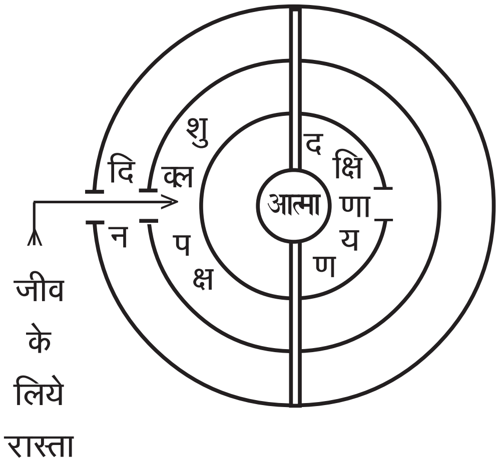

10 वीं तस्वीर

आत्मा को पहुँचने केलिये सारे द्वार एक ही तरफ यानि बायें तरफ ही आकर रहनी चाहिये। उसके अलावा कालचक्र में अगर कोई भी द्वार सीधे तरफ चलागया तो जीवकेलिये बायें तरफ मार्ग न मिलने से वापिस दूसरे शरीर को आश्रय करके पैदा होता रहता है। यह सिर्फ योगियों के लिये ही तै किया गया हुआ है।

योगि उत्तरायण में, कृष्णपक्ष में दिन में मरने पर भी आत्म को नहीं पहुँचता है। उस समय में जो योगी मरता है उसे कालचक्र में आत्मा को पहुँचने का रास्ता नहीं रहता । उस समय में कालचक्र किसतरह रहता है यह आप 11 वीं तस्वीर में देखसकते हैं।

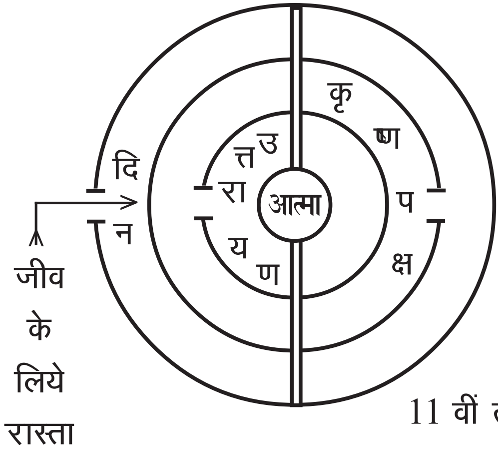

11 वीं तस्वीर

इसतरह जीव को आत्मा तक पहुँचने का रास्ता न मिलने की वजह से उसे वापिस जन्म लेना पड रहा है। इसके बारे में भगवद्गीता शास्त्र में अक्षरपरब्रह्मयोग में श्रीकृष्ण परमात्मा ने इसतरह कहा कि हे **अर्जुन मैं उस समय के बारे में तुम्हे बताता हूँ जिस समय योगी मरने से वे वापिस जन्म नहीं लेते और किस समय मरने से वे वापिस भूमि पर जन्म लेते हैं, सुनो। उस जगह में जहाँ सूर्यतेजस होता है, दिन में, शुक्लपक्ष में, उत्तरायण में अगर योगीयाँ मरें तो उनको आत्मा को पहुँचने का भाग्य मिलेगा। वरना जिस प्रांत में मेघ (बादल) रहता है वहाँ रात में, कृष्ण पक्ष में, दक्षिणायन में अगर योगियाँ मरते हैं तो वे चंद्र तेजस पाकर वापिस जन्म लेते हैं।** जो लोग संपूर्ण तरीके से योगियाँ बनगये जिस वक्त वे मरजाते हैं वह बेशक दिन, शुक्लपक्ष, उत्तरायण ही होकर रहेगा। जो लोग प्रपंच में बडे स्वामीजियाँ कहलवालेने पर भी यदि उनका कर्म बचकर है तो उनका मौत का वक्त या तो राम में होता है या कृष्ण पक्ष में होता है या दक्षिणायन में होता है। इसलिये बडों ने कहा कि तू जो पूरी ज़िंदगी जिया था वह सबकुछ मौत के वक्त में ही मालूम होता है

(यानि वह मोक्ष पाया है या दूसरे जन्म को गया है उस वक्त से पता चलजायेगा)

कालचक्र में सूरज के द्वारा दिन, आयन, संवत्सर हिसाब करले रहे हैं। इस हिसाब के बराबर हमें युग गुज़र रहे हैं। एक युग में हमें शतकरोड (यानि सैकडों करोड) या उससे भी ज्यादा जन्म उठानी पडती हैं। ऐसे युग हज़ार गुज़र ने पर भी परमात्मा के हिसाब में वह एक दिन है, वैसा ही हज़ार युग परमात्मा के हिसाब में एक रात है। यह दिन रात ऐसे हैं कि हज़ार युगों के समय में यानि परमात्मा केलिये एक दिन, उस समय में प्राणियों को मौत और पैदाइश होते रहते हैं। परमात्मा का दिन (ब्रह्म का दिन) हज़र युग गज़रते ही फौरन ब्रह्मरात्रि शुरु होजाती है। रात्रि शुरु होते ही फौरन सब प्राणिया प्रलय पाते हैं। रात्रि का वक्त यानि हज़ारयुग जब तक नहीं गुज़रते तब तक जीव हो, प्रकृति हो कुछ भी नहीं रहता। यानि कालचक्र, कर्मचक्र नहीं है। सबकुछ शून्य की तरह रहता है जिसके बारे में हम कल्पना तक नहीं करसकते। ब्रह्मरत्रि का वक्त हज़ारयुग गुज़रने के बाद दिन आते ही फौरन प्रकृति पैदा होती है। (भगवद्गीता अक्षर परब्रह्मयोग में 17, 18, 19, 20 श्लोक देखिये) ब्रह्म का दिन, ब्रह्म का रात्रि नीचे के 12 वीं तस्वीर में देखसकते हैं।

इसतरह से ब्रह्मचक्र हज़ार युग दिन की तरह, हज़ार युग रात्रि की तरह परिभ्रम कर रही है। अय जीवों! अबतक जो ब्रह्म, काल, कर्म, गुण चक्रों के बारें में मालूम किया हैं उसमें फसे बगैर उनको पार करके आत्मा तक पहुँचगये तो किसी भी तरह के परेशानियाँ नहीं रहेंगे। इसलिये आज से अपने आप को पाप पुण्य कहलानेवाली कर्मचक्र में दाखिल हुये बगैर करलेनीचाहिये कहकर मैं तुझे ही ... तुझे ही ... खास करके बता रहा हूँ।

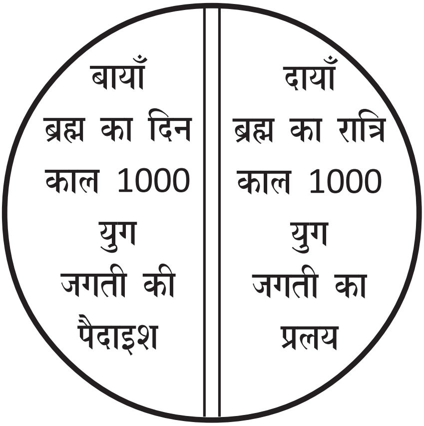

12वीं तस्वीर

ब्रह्म, काल, कर्म, गुण चक्रों के चित्र को बादवाली पेज में 13 वीं चित्र में देखसकते हैं।

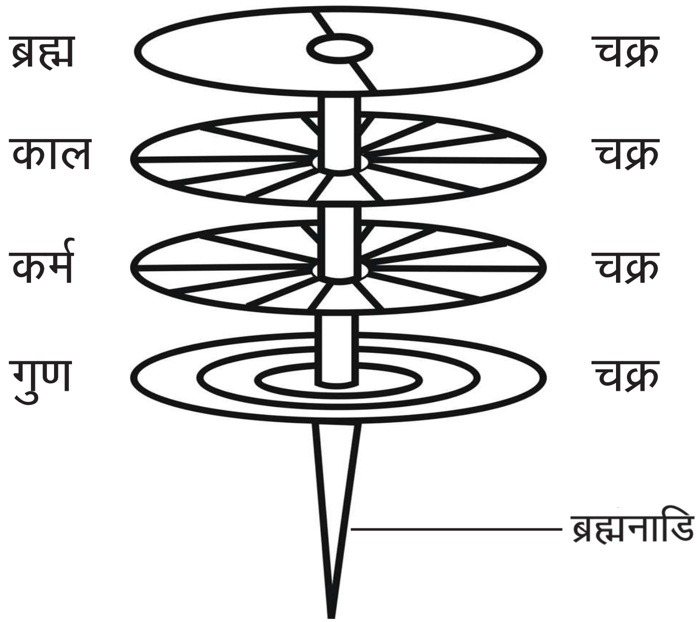

ब्रह्म, काल, कर्म, गुण चक्रों का चित्र (13वीं चित्र)

सगुण - साकार - निराकार

यह सच तो सब जानते ही है कि जो आँखों को दिखता है उसे साकार कहते हैं, निराकार मतलब जो आँखों से मालूम नहीं होता। अब यह जानना ही मुख्यांश है कि साकार का क्या मतलब है, निराकार का क्या मतलब है। आज के ज़माने के मानवों के दृष्टि में इसतरह का भाव है कि साकार मतलब आँखों को दिखनेवाले देवालय में के प्रतिमायें, निराकार मतलब आँखों को नज़र न आने वाली आत्मा है। और वे समझते हैं कि साकार (प्रतिमा) की पूजा करना सगुणोपासन है, निराकार (आत्मा) की पूजा करना निर्गुणोपासन है। थोडा बहुत ज्ञान रखनेवाले सबलोगों को यह बात मालूम ही है। बस सगुण, निर्गुणउपासनों का और साकार निराकारों का सारांश सिर्फ इतना ही है क्या? जब इसतरह का सवाल उठता है तो हमें इस बात को लेकर और भी योचना करना पडेगा कि इन अर्थों के अलावा भी इनका कुछ और मतलब है क्या?

हमने हमारी रचना देवालय के रहस्य ग्रंथ में भी बताचुके हैं कि जो लोग देवलय में जाते हैं उन्हे निज भक्ति से जाना चाहिये, जो लोग गये थे उन्हे वहाँ थोडीदेर तक निश्चिंत से रहनी चाहिये उस विधान को बताने वाली ही वहाँ की आराधना का सारांश है। कई बडों ने भी बताया था कि जब हम दैवप्रतिमा के नज़दीक जाते हैं तो हमारे सर में जो गुण होते हैं उनके हरकतों को दबाकर कम से कम एक क्षण तो भी मन को एकाग्रता से रखना ही मुख्य आराधना है। और बडों ने यह भी कहा कि दैवप्रतिमा के सामने भी प्रपंच के विषय ही याद आयें तो वह आराधना नहीं कहलाती तो फिर देवालय को जाकर भी कोई प्रयोजन नहीं है। यानि वह काम बेकार होगया। असली आराधना का मतलब यह है कि कम से कम मन को थोडी

देर तो रोकनी चाहिये। यानि ऐसी हालत में रहनी चाहिये कि उसवक्त गुण बिलकुल भी काम न करें। जब एक गुण काम किये तो भी उसके रिलेटेड विषय का खयाल आजाता है। इसलिये पूरे तरीके से गुणों से दूर रहना ही बेहतर है।

पद्दती के प्रकार बगैर विषय चिंतन के मन को ईश्वर पर जब लग्न करते हैं तो उसवक्त तो गुण बिलकुल भी नहीं है ना! तो फिर ऐसी आराधना को सगुणोपासन क्यों कहा है? इसतरह का सवाल ज़रुर उठेगा। जब गुणरहित मन को ईश्वर पर लग्न करते हैं तो वह गुणरहित (निर्गुणोपासन) पूजा ही होता है मगर सगुण पूजा कैसे होगा? जब कोई भी पूजा हो गुणों को दबाकर निर्गुण होकर ही हमें पूजा करनी चाहिये तो वह निर्गुण पूजा ही होता है। ऐसी दैवाराधना में सगुण कहनेवाला शब्द कैसे आगया? क्या इस सगुणोपसना का कोई और अर्थ है जो हम नहीं जानते? इसतरह योचना करनेवालों को ऐसे सवाल ज़रुर पैदा होते हैं। जब इसतरह सवाल उठते हैं तो उनका जवाब मिलना भी बहुत मुशकिल काम ही है।

बहुत से विमर्शकों को इसतरह के सवाल पैदा होके पद्दती के प्रकार सही जवाब न मिलने से आखिर में वे हमारे पास आकर हमें जवाबों केलिये पूछे थे, हमारी संभाषणा नीचे लिख रहे हैं।

उनका सवाल :- बहुत से बडेलोगों ने कहा कि देवालयों प्रतिमाओं की पूजा करना ही सगुण पूजा (सगुणोपासन) है। और वहीं बडे लोगों ने यह भी कहा कि जब देवालयों में दैवप्रतिमाओं के सामने जाते हैं तो ऐसी एकाग्रता के साथ पूजा करनी चाहिये कि उसवक्त कोई भी गुण काम नहीं करनी चाहिये। मंदिर में रहनेवाली घंटी से शुरुहोकर प्रतिमा तक भी यही भाव है, और हम जो पूजायें करते हैं उनमें जो

दीप, तांबूल (पान के पत्ते) से शुरु होकर सारे आचरण वही अर्थ को बता रहे हैं। इसीलिये जब हम मंदिर जाते हैं तब हमारे अदंर जो मन है उसे भटकने न देते हुये ईश्वर पर ही लग्न करनी चाहिये। जैसे बडोंने कहा वैसे ही अगर हम गुणों को दबाकर मन को पूरे तरीके से ईश्वर पर लग्न करते हैं तो वह निर्गुण पूजा कहलायेगी लेकिन सगुण पूजा कैसे कहला सकती है! हम आप से रिक्वेस्ट करते हैं कि आप हमें इसका पूरा विवरण देकर समझाये।

हमारा जवाब :- जो शक आपलोगों को आया है वह हेतुबद्ध से ही है। भूमि पर कई दैवभक्त यानि उपासक हैं। जो लोग हनुमान की पूजा करते हैं उन्हे हनुमान के उपासक कहरहे हैं। जो लोग देवी की पूजा करते हैं उन्हे देवी उपासक कहरहे हैं। उसी प्रकार कालि माता की पूजा करने वालों को कालि उपासक कह रहे हैं। इसतरह हम देख रहे हैं कि जिस ईश्वर की पूजा करते हैं उन्हे उस ईश्वर के उपासक कह रहे हैं। उसीतरह जब निर्गुणोपासन कहते हैं तो पद्दती के प्रकार तो यही कहना पडेगा कि बिनागुणवाले की पूजा करना। जब हम हनुमानुपासन को हनुमान पूजा कहरहे हैं तो सगुणोपासन को सगुणपूजा यानि जो गुण रखता है उसकी पूजा करना, ऐसा ही तो कहना पडेगा ना! अगर इस सूत्र के प्रकार बतायें तो जो हमारे सामने है उसकी पूजा करने से उसीकी आराधना या उसीकी उपासना कहकर नाम रखा गया मगर जो कर रहा है उसके (यानि पूजा करनेवाले व्यक्ति के) मुताबिक नाम नहीं दिया गया।

इसतरह कहना सही तरीका होगा कि गुण रखनेवाले की पूजा अगर हम कर रहें हैं तो उसे सगुण पूजा कहनी चाहिये, उसीतरह बिना गुणवाले की पूजा अगर हम कर रहे हैं तो उसे

निर्गुण पूजा कहनी चाहिये। इस सूत्र के प्रकार आप खुद योचना कीजिये कि हम मंदिर में जिस प्रतिमा की पूजा कर रहे हैं उस पूजा को क्या कहनी चाहिये। वह प्रतिमा को तो न गुण हैं न वह हिलसकती है इसलिये उस प्रतिमा की पूजा को निर्गुणोपासन ही कहना चाहिये। यह बात अच्छी तरीके से जानलो कि सामने जो होता है उसके मुताबिक ही उपासना का नाम दिया जाता है मगर जो व्यक्ति पूजा कर रहा है उसके मुताबिक उपासना का नाम नहीं दिया जाता। हम जिसे सामने रखके पूजा करते है हम उसीके उपासक कहलायेंगे। इसीलिये अगर मानलों कि पूजा करनेवाले के सामने हनुमान है तो उसे हनुमान का उपासक कहेंगे हेना!

इसके मुताबिक देखें तो कई लोग करनेवाले पूजाओं को दो हिस्सों में डिवैड करसकते हैं। १) निर्गुणोपासन २) सगुणोपासन सूत्रबद्ध के साथ कहसकते हैं कि जो गुण रखता है उसकी पूजा करना सगुणोपासना है तो फिर इसके मुताबिक तो देवालयों में कई प्रकार के प्रतिमाओं की पूजा करने वालों को सबको मिलाकर एक गूॅप की तरह निर्गुणोपासक ही कहसकते हैं। अब तक तो आप लोगों ने ऐसा ही समझा होगा कि प्रतिमाओं के सामने पूजा करना सगुणोपासन है। यहीं पर आप लोगों से भूल हुयी इसीलिये जो सवाल तुम में पैदा हुआ उसका जवाब अब तक नहीं मिला। रास्ते के बराबर चलनेवाले को कोई रुकावटे नहीं रहते ना! अगर रास्ते से हट गये तो रुकावटें होसकते हैं। उसीतरह सूत्र पद्दती (शास्त्र पद्दती) के प्रकार योचना करनेवाले को जवाब ज़रुर मिलेगा। प्रश्न कहलानेवाले संशय बिलकुल भी नहीं रहेंगे। सूत्र पद्दती के प्रकार योचना करने वालों को जवाब तो ज़रुर होते हैं।

अब हमें यह मालूम हुआ कि देवालय पूजाओं को सगुण पूजा समझलेना गलत है, वह निर्गुण पूजा है। अब हमें एक ऐसा सच मालूम हुआ जो हम नहीं जानते। हम समझते हैं कि इस सत्य को अखलमंद ज़रुर समझ करलेंगे।

उनका सवाल :- आप जो सूत्र बता रहे हैं उसके प्रकार तो देवालयों में किये जानेवाले सारे पूजायें निर्गुणोपासन ही होते हैं। तो फिर यह भी बतायिये कि सूत्र के प्रकार सगुणोपासन किसको कहते हैं?

हमारा जवाब :- जब बिना गुण वाले की पूजा करना निर्गुणोपासन है तो गुण रखनेवाले की पूजा करना सुगुणोपासन होता है। सजीव रहकर यानि ज़िंदा रहकर गुण रखनेवाले एक गुरु की हो, या महर्षि की हो,या तो उन्नत व्यक्ति की हो या ईश्वर समान वाले व्यक्ति की पूजा करना सगुणोपासन होता है। चरित्र बताता है कि पूर्व में राजाएँ सहित उनके अपने अपने गुरुओं की पाद पूजा की है। ऐसे पूजाओं को सगुण पूजा कहते हैं। शिश्य गुरु की पूजा करना सगुण पूजा ही होता है। श्रीराम को उस ज़माने की शबरि ने पूजा की। श्री कृष्ण को उस ज़माने की राधा ने आराधना किया। इसतरह जिंदा रहकर गुण रखनेवाले की पूजा करना सगुण पूजा होता है। यह जानलों कि सामने जो है उसकी पूजा करने से वह नाम आरहा है मगर जो पूजा कर रहे हैं उनके मुताबिक आराधना का नाम नहीं आ रहा है। उदाहरण के तौर पर मानलीजिये कि कुल्लायि नाम का एक व्यक्ति हनुमान की पूजा कर रहा है। जब हम सामने जो हनुमान है उसके मुताबिक उसे हनुमान की उपासन कहते हैं मगर जो पूजा कर रहा है उसके मुताबिक कुल्लायि उपासना नहीं कहते हैं हेना! इसतरह अगर हम योचना करें तो वो सारे पूजायें जो बिना गुणवाले दैवप्रतिमाओं

को कर रहे हैं वे निर्गुण पूजायें हैं, गुण रखनेवाले मनुष्यों की पूजा करें तो उसे सगुण पूजा कहसकते हैं।

उनका सवाल :- स्वामीजी! अगर एक व्यक्ति इधर न प्रतिमाओं की, न उधर इनसानों की पूजा किये बगैर, गाय को ईश्वर मानकर पूजा करें तो उसे क्या पूजा कहनी चाहिये? हमारा जवाब :- गाय भी जान रखती है और गुण भी। इसलिये उसे भी सगुण पूजा ही कहना चाहिये।

उनका सवाल :- कहते हैं ना कि गुरुयें, बडे महर्षियाँ गुणों पर जीत हासिल किये हैं, उन्हे किसी भी तरह के गुण नहीं रहते! तो फिर उनको पूजा करना सगुण पूजा कैसे होगा?

हमारा जवाब :- गुरुएँ, महर्षियाँ, योगियाँ जब योग करते हैं सिर्फ उसी समय गुणों पर जीत हासिल करके, बिना गुणवाले हालत में रहते हैं। वापिस आँखे खोलने के बाद यानि जिस वक्त वे ब्रह्मयोग में नहीं रहते तब उनमें भी गुण काम करते रहते हैं। गुणों के काम करने से ही हर इनसान चंचल होकर काम करते हैं। यह जानलो कि अगर गुण नहीं होते तो चलन (हरकत) ही नहीं रहती। गुरु, योगियाँ जब योग करते हैं तो उन्हे गुणों को दबा के रखने की शक्ति होती है। (यानि उन पर काबु पाने की शक्ति रखते हैं) इसीलिये उन्हे इसतरह कहसकते हैं कि उन्होने गुणों पर जीत हासिल की है। बाकी मनुष्य किसी भी वक्त में हो गुणों पर काबु पाने की कोशीश नहीं की यानि उन्हें नहीं दबाया इसलिये दूसरों को ऐसा नहीं कहसकते कि उन्होने गुणों पर जीत हासिल की।

उनका सवाल :- जैसे सगुण निर्गुण कहते हैं वैसे साकार निराकार पूजायें भी है हेना! हमारे भाव में साकार पूजा मतलब उसकी पूजा

करना जो आँखों को दिखनेवाला आकार रखता हो, उसी प्रकार निराकार पूजा मतलब उस परमात्मा का ध्यान करना जिसका कोई आकार ही नहीं है। आप ही बताइये कि हमारा भाव सही है या नहीं।

हमारा जवाब :- उस परमात्मा का कोई रुप नहीं है जो ईश्वर है। इसतरह बिना रुपवाला परमात्मा धर्मों को बताने केलिये रुप रखनेवाले मानवाकृती में हमारे बीच आकार अपने धर्मों को बताकर वापिस बिना रुपवाली स्थिति में ही वापिस चलाजाता है। यह कहना सही तरीका है कि रुप लेकर आया हुआ परमात्मा ही साकार है, जब वह अपना अवतार बस करके (यानि जिस काम के लिये वह आया है उसको पूरा करके) चलाजाता है तब वही निराकार है। निराकार परमात्मा जब आकार धारण करके आता है तब उस मनुष्य की पूजा करना साकार पूजा कहते हैं। बिना आकार वाले परमात्मा को ध्यान करने को ही निराकार पूजा कहते हैं।

उनका सवाल :- मानलीजिये कि एक गुरु को ईश्वर मान कर पूजा कर रहे हैं लेकिन ऐसा समझिये कि वह गुरु निजसे (असल में) परमात्मा नहीं है तो भी जैसे आपने कहा वैसे वह सगुण पूजाहोने पर भी उस गुरु को तो आकार है ना उसको भी तो साकार पूजा कहसकते हैं, हेना! ऐसा ही मानलीजिये कि जब परमात्मा ही मनुष्य की तरह आता है तो उस वक्त उसीकी पूजा कर रहे हैं। तब वह साकार पूजा ही होने पर भी उसे सगुण पूजा भी तो कहसकते हैं हेना!

हमारा जवाब :- जब आकार रहता है तो उसके साथ गुण और जब गुण रहते हैं तो उसके साथ आकार ज़रुर होते हैं इसलिये उन पूजाओं को सगुण साकार पूजायें कहसकते हैं। लेकिन प्रतिमाराधना

निराकर पूजा यें नहीं होते वे तो सिर्फ निर्गुण पूजायें ही होते हैं। क्योंकि प्रतिमाओं को आकार है और परमात्मा को आकार ही नहीं है इसलिये।

निर्गुण   सगुण --- साकार   निराकार

↓   ↑   ↑   ↓

1   →   1   ←   1

सगुण साकार पूजायें एक होसकते हैं लेकिन निर्गुण निराकार पूजायें एक नहीं होसकते। मैं और एक मरतबा सूत्र को बता रहा हूँ कि सामने जो होता है उसके मुताबिक ही आराधना का नाम दिया जाता है मगर जो व्यक्ति पूजा कर रहा हैं उसके मुताबिक आराधना का नाम नहीं रखा जाता।

ज्ञानयज्ञ

बडे ज्ञानी लोगों ने कहा कि यज्ञ का मतलब यह है कि जलादेना **या** जो कुछ है उसे खत्म करना। और उन्होने बताया कि द्रव्ययज्ञ का मतलब द्रव्यों को जलाना। इसके प्रकार ज्ञानयज्ञ का मतलब यही होता है ना कि ज्ञान को जलाना, हेना! कुछ लोगों को यह शक आसकता है कि जिन्होने द्रव्ययज्ञ में द्रव्य जलजाते हैं कहा था वही लोग ज्ञानयज्ञ में कर्म जलजाता हैं कहना कितने तद तक समंजस है? कुछ लोगों में यह शक आसकता है कि ज्ञानयज्ञ का निजार्थ (असली मतलब) क्या है। उसके लिये हमारा जवाब यह है कि!

भगवान के गीता के अंदर ही द्रव्ययज्ञ, ज्ञानयज्ञ बताये गये। इसलिये वे शास्त्रबद्ध ही है लेकिन अशास्त्रीय नहीं है। भगवान ने अपनी गीता में ज्ञानयोग अध्याय ३३ वीं श्लोक में भी कहा है कि इन दोनों में से द्रव्ययज्ञ से भी ज्ञानयज्ञ श्रेष्ट है। गीता के भाव के प्रकार द्रव्यों को जलानेवाली ही द्रव्ययज्ञ है। उसीतरह ज्ञानों को जलानेवाली ही ज्ञानयज्ञ होती है। जगत का ही आचार्य होकर जिसने जगत की रेखा की चित्र बनाया (यानि जगत की लैन को ड्रा किया था) भला वह कैसे अपनी बोधा में गलती करसकता है यानि बिलकुल नहीं करेगा। वास्तव विषय की सूचना करने केलिये ही उन शब्दों में अर्थ को बसाकर एक को द्रव्ययज्ञ, और एक को ज्ञानयज्ञ कहकर नाम रखा है। द्रव्ययज्ञ में चार प्रकार से डिवैड किये गये कई प्रकार के द्रव्य जलजा रहे हैं। कहा गया कि उसका स्थान उदर (पेट) में है। अब ज्ञानयज्ञ का विवरण उसका निजार्थ जाँच कर देखते हैं। मानव के शरीर में दो प्रकार के अवयव हैं। वे कर्मेंद्रिय और ज्ञानेंद्रिय। कर्मेंद्रिय ज्ञानेंद्रियों मिलकर काम करने से ही अनेक कार्य हो रहे हैं। अंदर की कर्म की वजह से यानि निर्णयकिया गया हुआ प्रारब्द की वजह से काम हो रहे हैं तो, उन कार्यों में ही नये से आनेवाला आगमि कर्म मिलकर है। जो कार्य हो रहे हैं उसमें आनेवाले आगमिक कर्म को जलादेना कर्मयज्ञ होता है। कर्मयज्ञ को ही गीता में भगवान ने ज्ञानयज्ञ कहकर भी नाम रखा है। कुछ लोग पूछ सकते हैं कि ज्ञानयज्ञ कहने का मतलब तो यही हुआ ना कि ज्ञान को जलादें। उसका जवाब यह है कि! ज्ञानेंद्रियों के ज्ञान को जलादेने को ज्ञानयज्ञ कहागया है। इसीलिये आँख, नाक, कान, ज़बान, चमडा वगैरा अवयवों को ज्ञानेंद्रिय कहा हैं। ज्ञानेंद्रियों के ज्ञान को जलाना एक काम है इस काम को ज्ञानयज्ञ कहना समंजस ही है। ज्ञानयज्ञ में अग्नी की तरह जो चीज़ इस्तेमाल होती है वह आत्मज्ञान कहलानेवाली

अग्नी है। यह जानलो कि द्रव्ययज्ञ में जो अग्नी इस्तेमाल होती है वह भौतिक से तयार हुयी क्लोम, पैत्य, लालाजलों के ज़रिये तयार हुयी अग्नि है। स्थूलग्रंथियों से निकलाहुआ स्थूल रसों का रसायनाग्नी जब पेट में दाखिल होता है तो द्रव्य कहलानेवाले द्रवों को जीर्ण कर रही है। उसीतरह यह मालूम हो रहा है कि सर में आत्मानात्मओं के सूक्ष्म विषय जो आँखों को नज़र नहीं आते उनके बारे में मालूम होने से जो सूक्ष्मअग्नि पैदा हुयी है उस सूक्ष्मअगि के ज़रिये ज्ञानेंद्रियों में जो ज्ञानार्थ सूक्ष्म से है उन्हे जलादेना ही ज्ञानयज्ञ है। यह जानलो कि द्रव्ययज्ञ में सब स्थूल ही है तो,ज्ञानयज्ञ में सब सूक्ष्म ही है। द्रव्ययज्ञ में चार द्रव्य नाश होकर उनसे शरीर के पोशक पदार्थ ज़ाहिर हो रहे हैं (दिखायी दे रहे हैं)। ऐसा ही ज्ञानयज्ञ में ज्ञानेंद्रियों में बसे हुये पांच ज्ञान नाश होकर उनसे शरीर नाश (जनम नाश) ज़ाहिर हो रहे हैं। द्रव्ययज्ञ में शरीर को पोशणा देनेवाले चार प्रकार के आहार ज़ाहिर हो रहे हैं। उसीतरह ज्ञानयज्ञ में शरीर राहित्य करनेवाले विधान ज़ाहिर हो रहे हैं। इसतरह यह मालूम करसकते हैं कि ज्ञानेंद्रियों में के प्रपंच के ज्ञानार्थों को जलादेने को (खत्म करने को) ज्ञानयज्ञ कहते हैं। आत्मानात्माओं की जानकारी के द्वारा आत्मा और अहम की पहचान इसतरह करसकते हैं कि यह आत्मा है और यह अहम है जो असल में आत्मा नहीं है, इस पहचान से ज्ञानेंद्रियों के द्वारा जो कर्म आता है उसको खत्म करले सकते हैं। यहाँ पर कर्म खत्म होजारहा है इसीलिये इसे कर्मयज्ञ कहा, ऐसा ही चाहे किसतरह भी देखलो ज्ञानेंद्रियों के द्वारा ही कर्म शुरु हो रही है इसलिये इस विधान को ज्ञानयज्ञ कहरहे हैं। यह बात खास तौर पर जानलें कि इसमें ज्ञानेंद्रियों की बाहर की ज्ञानसमूल जलजा रही है, लेकिन अंदर की आत्म संबंदित ज्ञान नहीं। ज्ञानयज्ञ में कर्म खत्म होजा रहा है,इसलिये ज्ञानयज्ञ को कर्मयज्ञ भी कहसकते हैं।

जपमाला में कितने मनके हैं?

जपमाला का इस्तेमाल करना इंदू धर्मों में एक मुख्य धर्म है। इंदू धर्म हमें सृष्टिकर्ता ईश्वर के बारे में बताते हैं, इसलिये खास करके इंदू धर्मों के बारे में मालूम करना हमारा कर्तव्य है। सबसे पहले यह मालूम करते हैं कि धर्म का क्या मतलब है? एक वस्तु या पदार्थ यानि जानदार हो या बेजान हो,उसका जो सूक्ष्म सहजत्व होता है उसीको धर्म कहते हैं। धर्म जो है वह पैदाइश से आता है। इसीलिये उसे सहजत्व कहा है। **ज** का मतलब **पैदाहोना** है। **सहज** का अर्थ **साथ में जो पैदा हुआ।** एक जाति केलिये एक ही प्रकार से जो चीज़ पैदाइश के साथ आती है वही उसका धर्म होता है। पूरे मानवजाति केलिये पैदाइश से ही आत्म धर्म रहने पर भी क्योंकि वह पोशीदा होजानेसे कहसकते हैं कि पूरे आत्मधर्म अधर्म में बदलगये। आत्मधर्म सिद्धांतसहित और आचरण योग्य होते है ऐसे आत्मधर्म जीवात्मा की तरह पैदाहुये सबलोगों से संबंध रखनेवाले ही होते हैं। बिना मतभेद के समस्त मानवाली से संबंदित धर्मों को ही इंदू धर्म कहते हैं। सारे शरीरों में ज्ञानवाली आत्मा है। इसीलिये मानवधर्मों को इंदूधर्म कहना पडा। ज्योतिश्य शास्त्र के प्रकार आत्मज्ञान केलिये अधिपति चंद्र है और चिह्न है। चंद्र को इंदू भी कहते हैं। आत्मज्ञान से संबंध रखनेवाले धर्म है होने से चंद्र की नाम से इशारा करते हुये इंदूधर्म कहा हैं। ऐसा नहीं समझना चाहिये कि इंदू धर्म मतलब प्रत्येक मतधर्म है। यह जानलो कि ये धर्म जिसमें आत्मा हैं उन सबलोगों पर लागू होते हैं।

पूर्व में भारतदेश में आत्मज्ञानी ज्यादा रहते थे। प्रपंच के सारे देशों से भी भारत देश में ही ज्ञानियाँ ज्यादा रहते थे इसीलिये

उसको ज्ञानियों का देश कहा करते थे। ज्ञान का अधिपति इंदू (चंद्र) है इसलिये जो लोग भी ज्ञान रखते थे उन्हे इंदू कहा करते थे। इसीलिये इस देश को इंदूदेश कहा हैं। जितने ज्ञानियाँ पूर्वकाल में रहा करते थे उतने आज न रहने पर भी इंदू देश कहलानेवाला नाम आज तक भी बाक़ी रहना बडी खुशी की बात है। इंदू देश में रहनेवालों को यह नहीं मालूम कि इंदू धर्में क्या हैं इसीलिये वे ऐसा समझ रहे हैं कि हमारे मत या मज़हबें अलग हैं, हमारे ईश्वर अलग हैं। इंदू शब्द हर एक इनसान से संबंध रखनेवाला है लेकिन यह बात किसी को मालूम नहीं। इंदू का शब्द किसी मत से संबंदित नहीं है। क्योंकि इंदूधर्म ईश्वर से बहुत ही नज़दीक हैं। इसीलिये ज्ञान जान कर ईश्वर पर विश्वास रखनेवाले हर इनसान को इंदू ही कहना चाहिये। पवित्र इंदूधर्म हर इनसान से ताल्लुख रखते हैं इसीलिये हमारे बडों ने कई धर्मआचरणों को बनाकर रखा है ताकि पवित्र इंदूधर्मो के बारे में सबलोगों को मालूम होजाये। फिर भी सारे धर्म पोशीदा होकर वे अधर्मों में बदलगये। कुछ आचरण हमारे बीच बाकी रहने पर भी वे मामूली से रहतेहुये, अर्थरहित होजाकर, अधर्म कहने केलिये तार्काण की तरह है। उनमें से एक धर्म को हम जाँच कर देखते हैं।

इस प्रपंच को भी थोडा आयु है। वह शास्त्र बद्ध से हज़ार युग है। कृता युग, त्रेता युग, द्वापर युग, कलियुग ये चार युगों की सैकिल २५० बार चलें तो प्रपंच का आयु पूरा होजायेगा। **सहस्त्रयुग पर्यन्त महर्यर्द्रह्मणो विदुहु** ईश्वर के इस वाक्य के प्रकार हज़ार युग ईश्वर का दिन है, उसीको जगत सृष्टि स्थिति कहरहे हैं। जगति में कृतयुग का परिमित काल 17,28,000 संवत्सर। त्रेतायुग काल परिमिति 12,96,000 संवत्सर है। द्वापर युग 8,64,000 साल है, कलियुग

4,32,000 साल है। ये चार युगों का पूरा वक्त 43,20,000 साल है यानि कलियुग से दस गुना ज्यादा है। चारयुग 250 बार गुज़रे तो 43,20,000x250 = 108,00,00,000 । यानि प्रपंच का आयु 108 करोड साल हैं।

इसका मतलब यही हुआना कि भूमि हो, आकाश हो, भूमि पर रहनेवाले सारे साम्राज्य हो,साम्राज्यों में जो मत है वे हो सिर्फ 108 करोड साल ही रहते हैं। 108 करोड साल को ही तुझे और इस प्रपंच में जो नाटक खेला जा रहा है उसे आखिर में परदा गिरेगा। यह जानलो कि 108 करोड साल ही जीवात्माओं की मौत और पैदाइश की कहानी चलती है। यह ईश्वर जीवों के साथ भेजा हुआ सहज आयुकाल है। बडों ने 108 संख्या को हमारे बीच में रहे जैसा इसलिये किया ताकि सबको यह बात मालूम होजाये कि 108 हामारी आयु की धर्म है। बडे लोगों ने दैवाराधन में, नाम जप में, मंत्र जप में उसकी विशिष्टता को घुसा दिया ताकि 108 को दखते ही जिन लोगों को उसके बारे में नहीं मालूम वे सोंचे कि आखिर यह 108 है क्या? और क्यों यह संख्या 108 ही रखा गया? और जिन लोगों को 108 का ज्ञान मालूम है वे लोग न भूले। बडोंने बतादिया कि दैवजप में हो, मंत्रजप में हो मनकों का माला ही इस्तेमाल करो। और उन्होने कहा कि आखिर में प्रदक्षिण भी 108 ही करनी चाहिये, चंदे में देनेवाला पैसा भी 108 संख्या रहे जैसा ही देखलो। इतना ही नहीं 108 संख्या और हमारे बीच बहुत ही मुख्य और खरीब रिश्ता एक है,वह इसतरह है कि!

हमारे शरीर में आशा, गुस्सा, लोभ, मोह, गर्व, असूय कहलानेवाले छः बुरे गुण हैं। उनके व्यतिरिक्त दान, दया, औदार्य,

वैराग्य, विनय, प्रेम कहलानेवाले छः अच्छे गुण भी हैं। ये सब शरीर में रहने की वजह से उन पर कर्म, कर्म पर नवग्रह अधिकार रखते हैं। इसीलिये नवग्रहों के अनुसार कर्म, कर्म के अनुसार गुण हरकत करते रहते हैं। नवग्रहों का प्रभाव कर्म के द्वारा गुणों पर है। आदित्यादि नवग्रह गुणों को भी एक एक को नौ प्रकार से डिवैड किये। गुस्से के नौ दर्जे है। इसीलिये हमें आनेवाले गुस्सों में छोटे दर्जे के गुस्से से लेकर, बडे दर्जे के गुस्से तक है। उसीतरह छोटी आशा, बडी आशा भी होती हैं। बाकी सब गुण भी ऐसे ही है। यह विषय हम लोगों को प्रत्यक्ष से नज़र आता है। इसतरह हमारे शरीर में रहनेवाले छः बुरे गुण एक एक नौं दर्जों में चीर गये तो,ऐसा ही उनके व्यतिरिक्त छः अच्छे गुण भी एक एक नौ भागों में चीर गये। एक वर्ग के छः गुणों के टुकडे कितने हुये? अगर हम इसकी हिसाब करते हैं तो पता चलता हैं कि 6x9 = 54। ऐसा ही दूसरे वर्ग का गुणकार करके देखें तो 6x9 = 54 होते हैं। मालूम हो रहा है कि इसतरह आयेहुये पूरे गुणों की संख्या 108 है।

प्रपंच की आयु 108 करोड सालों के अनुसार ही ईश्वर ने ही बराबर नाप के मानवों की जीवित को चलाने वाले गुणों की संख्या भी 108 ही रखा है। गणित में सबसे बडी संख्या करोड है। ईश्वर ने हमारे शरीर में 108 आलोचना विकारों को (यानि खयालों को)रखा है ताकि जीव को गणित में की 108 करोड याद रहे। वे विकार गुणित (गुणन) के वजह से आये हैं इसीलिये उन्हे **गुण** कहा गया ताकि मनुष्य को यह साफ मालूम होजाये कि यह शब्द गुणन (मल्टिप्लिकेशन) से बहुत ही खरीब वाला शब्द है और वह गुणन से ही उद्भव होती है। इसतरह शरीर में के **योचनाओं को गुण** कहलानेवाला नाम प्रप्त हुआ है। इसतरह कई प्रकार से हमारे बडों ने योचना

करके गुण कहलानेवाला एक प्रत्येक नाम रखके, उनकी 108 संख्या को भी प्रत्येक से रखे हैं। हम जिस जपमाला से जप करते हैं उसमें 108 मनकों को ही इसलिये रखा गया ताकि इनसान को यह बात याद रहे कि 108 करोड साल 108 गुणों से ज़िंदगी (जीवित) गुज़ारनी होगी। फिर भी हमारे बडोंने जो विधान को बताया वह वक्त के साथ साथ पोशीदा होगया। वह आयु का धर्म अधर्म में बदलजा रहा है जिसे ईश्वर ने जीव के साथ भेजा है। जपमाला में 108 संख्या अभी भी बाकी है लेकिन उसकी हक़ीकत कोई नहीं जानता। चंदे देने में,चढावे चढाने में, शादियों में पैसे रखने में आज 108 के बदले 116 और 108 संख्या आपडे है। जपमाला की संख्या उस वक्त ही फैसला करके रखा है तब मज़हब का नाम व निशान ही नहीं था। लेकिन कालगमन में वह संख्या 116 में, 101 में बदलजाकर वहाँ वहाँ 116, 101 भी सुनायी दे रही है। आज तक भी जपमाला में 108 रहना देखें तो थोडा धर्म बचा हुआ है कहसकते हैं। तो हम यह बता रहे हैं कि कुछ लोग अगर जपमाला में 116 और 101 संख्या को रखलिये तो उसे गलत माना जाता है,मज़हबें पैदा न होने से पहने ही कालगमन में बदलगये हुये संख्या को बदलालिये तो वह अर्थसहित होता है वरना अर्थहीन होगा। ईश्वर पर विश्वास रखनेवाले सब लोग चाहे वे कौनसे मज़हब वाले भी क्यों न हो इंदू ही होते हैं यानि ज्ञानियाँ ही हैं। इंदू शब्द मज़हब से रिलेटेड नहीं है। इसलिये सारे मज़हबों में भी जपमाला की ज़रुरत है। सारे मज़हबों में भी जपमाला रहने के बावजूद भी उसकी विशिष्टता किसीको मालूम नहीं हुआ। इंदू धर्मों में मुख्य धर्म आयुधर्म है वह इसतरह अधर्म की तरह बदलजाने का वक्त खरीब आरहा है। हम चाहते हैं कि जो लोग इंदू है वे इसतरह के कई धर्मों को सही मार्ग में अमलकरनी चाहिये। धर्म

की आचरण करना मतलब **स्वधर्म** यानि **आत्मधर्म** की आचरण करना। वही तुझे बचाती है इसका अंतरार्थ यह है कि **उस आचरण में जो ज्ञान है वही ज्ञान तेरे कर्म से तुझे बचाकर ईश्वर के पास भेजती है।**

धर्म पर चलो वह तुझे बचाति है

हमारे त्योहार (पंडुगलु)

(नोटः जैसे ग्रंथ में पहले ही बताया गया कि आध्यात्मिकता समझाने केलिये तेलुगु ज़बान के शब्दों का इस्तेमाल किया जा रहा है इस त्योहार के अंश में तेलुगु ज़बान में चंद शब्दों का इस्तेमाल किया गया **पका हुआ फल** को तेलुगु में **पंडु** कहते हैं, उसीतरह **कच्छे फल** को **काया** कहते हैं, **त्योहार** को **पंडुगा** कहते हैं)

काल (वक्त) पवित्र हैं और दैवस्वरुप हैं। ईश्वर ने भी गीता में एक ही बात में कहा कि **काल ही मैं हूँ।** काल कितनी भी महत्वपूर्ण होने पर भी वह हमें सहज ही दिख रही हैं। उसकी अहमियत ज़रा भी नज़र नहीं आरही हैं। कोई भी वक्त के बारे में नहीं सोच रहे हैं। कुछ बडे लोगों ने वक्त बडी खीमतवाली है समझकर टैम ईज़ मनी (काल पैसे के बराबर है) कहा हैं। लेकिन हम कह रहें हैं कि वक्त उससे भी ज्यादा खीमती हैं। क्युोंकि खोया हुआ पैसा वापिस कमाले सकते हैं मगर खोया हुआ वक्त को वापिस कमा नहीं सकते।

हर प्राणि वक्त को अनुभव कर रही हैं। हर प्राणि शरीर से कई अच्छे, बुरे कामों में काल को इस्तेमाल कर रही हैं। जो वक्त

गुज़र रहा हैं उसमें या तो वह अच्छा काम हो या बुरा काम हो उस काम को करनेवाले प्राणि को ही उसका फलित और अनुभव मिलेगा। लेकिन वक्त को अच्छे, बुरे से कुछ लेना देना नहीं यानि कुछ संबंध नहीं हैं। इसीलिये यह कहने में कोई संदेह नहीं हैं कि वक्त दैवस्वरुप हैं। वक्त एक इनसान के लिये, एक जाति के लिये, एक देश केलिये ही परिमित नहीं हैं बल्कि पूरे जगतकेलिये विनियोग किये जा रही हैं। उदाहरण के तौर पर इंडिया में रहनेवाले व्यक्ति के लिये, अमेरिका में रहनेवाले व्यक्ति केलिये वक्त एक ही तरह हैं। वक्त तो सबके लिये समान है लेकिन उनके अपने अपने काम, अपने अपने अनुभव अलग अलग होसकते हैं। लेकिन वक्त तो सबकेलिये एक ही है। इसीलिये काल को दैवस्वरुप कहसकते हैं।

जन्म से शुरु हुआ काल (वक्त) मरण से खत्म हो रही हैं। जन्म और मरण के बीच के काल को **जीवित या जीवित काल** कह रहें हैं। जीवित काल में कुछ लोग अच्छे से, कुछ लोग बुरे से जीवित को गुज़ार रहे हैं। वह काल जो अनंत हैं उसमें चाहे कौन कितने भी तरीकों से ज़िंदगी गुज़ारलें कालगर्भ में मिलजाने वाले ही हैं।

जो लोग अपनी जीवित काल में कुछ खासियत रखते हैं उन्हे चिरंजीवियाँ कहना हो रहा हैं। उनका जीवित काल भी कम ही हैं फिर भी उनका जीवित का ध्येय बहुत ही बडा रहता हैं। वे आम् लोगों की तरह न रहते हुये अपनी जीवित में कुछ प्रत्येक प्राप्त किये होते हैं। ऐसे लोगों को कारण जन्म, चिरंजीवियाँ कहते हैं।

आज ऐसे बहुत से लोग हैं जो इस बात की योचना तक नहीं करते कि असल यह वक्त क्या चीज़ है? वक्त के बारे में ज़रा भी

योचना न करते हुये वक्त को गुज़ार कर **(बडे लोग कहते हैं ना कि चुंटी के घर में क्या दीमक पैदा होकर नहीं मर रहा हैं मतलब दीमक पैदा होने या मरने पर किसी को कुछ फिकर नहीं रहती)** बिलकुल उसी तरह कुछ भी काम न आनेवाली या बिना सार्थक की ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। क्षण क्षण हमारे शरीर में बदलाव हो रहा हैं। क्षण क्षण के बदलावों से ही बाल्य से बुढापे तक शरीर पहुंच रही हैं। जैसे जैसे हरदिन वक्त गुज़रते जा रहा है मृत्यु पास आरही हैं। गुज़रता हुआ काल में किसी न किसी दिन मृत्यु को पहुंचना ही होगा। फिर भी गुज़रता हुआ वक्त को याद रख के कोई भी कम से कम यह बात नहीं सोच रहा हैं कि मरण या मौत खरीब हो रही है ना। हम सोचे या न सोचे न काल रुकनेवाला हैं न मौत।

हम यह कह रहे हैं कि **पंडुगा (त्योहार)** वह प्रक्रिया है जिसे बडों ने मनुष्यों से अमल करवाया ताकि मनुष्य को वक्त की अहमियत मालूम हो क्योंकि वह वक्त को खीमती नहीं समझ रहा हैं, उसे यह बात अच्छे तरीके से समझमें आजाये कि जो वक्त गुज़रगया है उसे वापिस पाया नहीं जासकता, और वह इस बात के ओर खयाल करें कि मेरा ज़िंदगी का वक्त तो बहुत ही कम है और वह भी खर्च हो जारहा हैं, इसीलिये मानव इसबात की फिकर या योचना करें कि आखिर मेरे जिंदगी में मैं ने क्या हासिल किया था? और यह वक्त क्या चीज़ है इसके बारे में मानव के आँख खुलवाने (केलिये रख्खी गयी प्रक्रिया ही पंडुगा है)। काया (यहाँ पर काया को **कच्चा फल** समझना चाहिये) थोडे वक्त के बाद पंडु (यानि **पक्के फल** की तरह) बदल जा रहा हैं। यह बात तो हम पूरी तरह से जानते हैं कि **काया** कहलानेवाली **पंडु** में परिवर्तन हो रहा हैं। बदलाव आया हुआ पंडु से पैदाहुयी शब्द ही **पंडुगा (त्योहार)** हैं।

साधारण से, प्रकृति सिद्ध से हर पेड को साल में एकबार या छः महीनों को एक बार या तीन महीनों को एकबार फूल होते हैं, उसके बाद काया (कच्चे फल) होना भी सहज ही हैं। पेड से काया (कच्चा फल) होकर पंडु (पक्के फल) में बदलने केलिये एक साल का समय लग रहा हैं ना! इसीलिये पेड को उदाहरण के तौर पर लेते हैं। पेड के पूरे जीवन में एकबार फल अच्छे से होने केलिये कम से कम एक संवत्सर का वक्त गुज़र जारहा हैं। ऐसा ही अगर मानव की जीवन काल भी एक संवत्सर गुज़र गया तो ऐसा समझते थे कि कच्छा फल पक्के फल में बदलने केलिये जितना समय लगता है उतना समय होगया इसीलिये उसको हम पंडुगा कहते हैं। पंडुगा नाम इसलिये रख्खा गया क्योंकि यह वह वक्त हैं जिसमें कच्चा फल पक्के फल में बदलजाता हैं। यह वह समय है जिसमें पेड का काया (कच्चा फल) पक्क को आता है उसीको मानव के जीवन में **पक्वदिन** कहा करते थे। आज **पक्वदिन** को पर्वदिन कह रहे हैं। यह बात को विवरण के साथ जानलिये तो इसतरह उसका अर्थ हैं।

पेड का सार फल (पंडु) है, पेड संवत्सर काल को अपना सार यानि फल को दूसरों को देकर इस्तेमाल हुयी हैं। बडे लोगों ने सिर्फ एक दिन को पंडुगा (त्योहार) नाम से इसलिये रख्खा गया ताकि मनुष्य को यह बात याद आजाये कि पेड की तरह तुम भी दूसरों को किसतरह इस्तेमाल हुये, फिर इस बात का खयाल करें कि संवत्सर काल में उसने क्या फलित हासिल किया। नित्य जीवन में डूबा हुआ मनुष्य वक्त को भूलगया है। इसलिये इस बात की पहचान केलिये भी पंडुगा नाम रखना हुआ कि तेरे जीवन में थोडा वक्त गुज़र गया हैं। उदाहरण केलिये युगादि पंडुगा को लेते हैं। पिछले संवत्सर में युगादि पंडुगा किये थे यह संवत्सर भी कर रहे हैं।

इसीको नया संवत्सर भी कह रहे हैं। कहा जाता है कि पूर्व में बडेलोग इसतरह पीछे मुडकर देखलिया करते थे कि उनके अपने जीवन में एक संवत्सर गुज़र गया है, और एक नया संवत्सर होनेवाला हैं, गुज़रे हुये संवत्सर में मैं ने क्या **ज्ञान** को हासिल किया था। इसलिये उस युगादि के दिन नित्य जीवन कार्यों में लग्न न होते हुये सब छोडकर विर्शांति लेकर, पिछले वक्त के बारे में योचना कर के हिसाब करलेते थे कि इस साल मैं ने क्या क्या किया था,क्या मैं ने दैवमार्ग में कुछ हासिल करपाया हूँ कि नहीं, इस साल के पूरे वक्त में मैं ने किसतरह बरताव किया? अच्छे से? या बुरे से?। उस दिन पूरा अपने आध्यात्मिक जीवन के बारे में योचना करते हुये गुज़ारते थे। जैसे बाक़ी दिनों में आहार (खाने) केलिये योचना करते थे। उसीतरह कुछ वक्त के पहले ही सब आहार पदार्थों को सारे दिनों से बहतर रहे जैसा इंतेज़ाम करलिया करते थे ताकि उन्हे उस पंडुगा (त्योहार) के दिन ज़रा भी खाद्गी (आहार) कपडों का खयाल हो, बाहर की ज़िंदगी की सोच हो बिलकुल भी न आये। उनदिनों में उनका कर्तव्य सिर्फ यही रहता था कि आहार की, कपडों की फिकर किये बगैर उन चीज़ों का इंतेज़ाम पहले ही करलेते थे और सारे दुनयवि कामों को छोडकर सिर्फ गुज़रे हुये वक्त के बारे में ही योचना किया करते थे। क्यों कि उसदिन अपनी जिंदगी के वक्त के बारे में योचना कर रहे हैं इसलिये उसे ज्ञान संबंध के दिन की तरह समझते थे। और इसतरह माँगते हुये प्रर्थनामंदिरों में हो या घरमें हो ईश्वर के आराधनायें किया करते थे कि मेरी जिंदगी इतनी वक्त इसतरह गुज़र चुकी, आगे आनेवाले पंडुगा (त्योहार) के वक्त तक तो कम से कम सारांशवाली दैवसंबंध ज्ञानवाली ज़िंदगी को मुझे गुज़ारना चाहिये।

सिर्फ यह सोचने केलिये ही बडे लोगों ने उसदिन पंडुगा (त्योहार) को रख्खा था ताकि मनुष्य इस बात की योचना करें कि तेरी ज़िंदगी थोडा काया से पंडु (फल) में बदलगया। सिर्फ यह बतानेकेलिये ही बडोंने पंडुगा (त्योहार) को रख्खे हैं ताकि नित्य जीवन में लग्नहुआ मानव को इस बात की याद आजाये कि तेरा आयुष इतना गुज़र गया या खत्म होगया,गुज़रे हुये काल में पैदा होकर आखिर तुमने क्या हासिल किया। इस बात पर गौर करने की ज़रुरत है कि ये पंडुगायें एक मत में ही नहीं बल्कि सारे मतों में मौजूद हैं। एक एक मत केलिये एक एक पंडुगा निर्णय किया गया हुआ हैं । यह नहीं बतासकते कि पूर्व में बडेलोगों ने एक ही भाव से पंडुगायें रख्खे हैं या नहीं। वैसे भी पंडुगा उसे कहते हैं कि जो यह बताती है कि कच्चे फल जैसी तेरी ज़िंदगी थोडे हद तक परिपक्वता तो आकर पंडु (फल) हुयी हैं।

हम समझते हैं कि आज के ज़माने में सब मत के पंडुगायें एक ही पद्दती, एक ही भाव के साथ हैं। पंडुगा (त्योहार) मतलब सब मत के लोगों में यही भाव है कि नये कपडे पहनना, अच्छा आहार खाना, किसी न किसी ईश्वर की आराधना करना, सजदा करना सामान्य बात हैं। कुछ लोग तो ऐसा समझते हैं कि सिर्फ खाने केलिये ही पंडुगा(त्योहार) हैं समझ कर उसदिन सब दिनों से भी ज्यादा पेट भर खाकर हाँपते हैं। तो कुछ लोग झूला झुलना हो, खेल खेलना हो करते हुये खुशियाँ मनाते हैं। कुछ लोग पीकर उछल रहे हैं। कुछ लोग जुआ खेल में ही अन्यचिंता किये बगैर पूरा दिन गुज़ार रहे हैं। कुछ लोग समझते हैं कि यह दिन ईश्वर को सजदा करने लिये लैसेन्स का दिन हैं इसलिये सिर्फ उस एक दिन चाहे पसंद रहे या न रहे सजदा कर के हाथ साफ कर रहे हैं। कुछ उद्योगी त्योहार को

इसतरह समझते हुये खुश हो रहे हैं कि उद्योग केलिये छुट्टी का दिन है, पंडुगा यानि बिना ड्यूटी (काम) वाला दिन है। थोडे व्यापारी लोग त्योहार के दिन मैं ने पिछले साल में कितना पुण्य और कितना पाप कमालिया था इसका हिसाब करलेने के बदले में मैं ने कितना पैसा कमाया कहकर हिसाब करले रहे हैं।

पूर्व में बडोंने जिस भाव के साथ पंडुगाओं (त्योहारों) को रखा वह पूरा मिट्टी में मिलजाकर आज त्योहारों का असली अर्थ किसी को मालूम नहीं हुआ। पूर्व में साल को एक पंडुगा रहता था। लेकिन आज संवत्सर को कई बेहिसाब पंडुगायें हुये। पूर्व में यह भाव रहता था कि ईश्वर एक ही है। लेकिन आज कई ईश्वर बनगये और अनेक पंडुगायें हुयें। त्योहार मानव जीवन के लिये मेज़रमेंट है लेकिन हमने इस बात को लेकर ज़रा भी योचना नहीं की बस ऐसे ही कई त्योहारें मना चुके थे, आगे और भी कई त्योहार आनेवाले हैं। आप खुद सोचलीजिये कि अब से किसतरह त्योहारों को मनाना चाहते हैं!

कौनसा चाहिये भजन या तत्वज्ञान?

कीर्ति प्रतिष्ठा, इन बातों को तो कुछ जगहों में सुने हुये होंगे। ऐसा ही तत्वज्ञान कहलानेवाला शब्द भी सुने हुये होंगे। इससे आसानी से मालूम हो रहा है कि कीर्ति अलग है और तत्व अलग है। कीर्ति प्रपंच संबंदित है, तत्व परमात्मा संबंदित है। क्योंकि चाहे कीर्ति कितना भी कमालो वह सबकुछ प्रपंच में ही रुकजाता है। लेकिन जितना तत्व के बारे में मालूम होता है उतना ही वह हमें ईश्वर के

खरीब करती है। कीर्ति जो है वह प्रपंच में ही प्रतिष्ठा की जाति है,लेकिन तत्वज्ञान जो है वह परलोक में फैलजाति है। उदाहरण केलिये महात्मागान्धी जिसने बडी प्रपंच कीर्ति कमाया है वह फिर से जन्म को गया है, लेकिन उसने मोक्ष नहीं पाया। जनक महाराज जिसने बडी तत्वज्ञान कमाया वह परलोक गया था, लेकिन जन्म को नहीं गया। बहुत से लोगों को इनका विवरण मालूम न होने से कीर्ति, तत्वों के बीच जो फरख है उसे पहचान नहीं पा रहे हैं। इसतरह उनका विवरण हो,या उनके बीच का फरख हो मालूम न होने से उनके फलितों के बीच का फरख से भी वे अन्जान है। इसलिये उनका विवरण जानना बेहद ज़रुरी है।

जो व्यक्ति दूसरों की दुनयवी ज़रुरतों को (प्रपंच के ज़रुरतों को) पूरा करता है, तो दूसरे लोग उसकी तारीफ करते हैं। इसतरह उसकी तारीफ करने को उसकी कीर्ति करना या तारीफ करना कहते हैं। एक व्यक्ति कीर्ति तब ही हासिल करसकता है जब वह दूसरों केलिये इस्तेमाल हो यानि दूसरों की भूक को मिटानेकेलिये खाना रखने से, प्यास को भुजानेकेलिये पानि देने से, पहनलेने केलिये कपडे देने से, निवास करनेकेलिये घर देने से, बाकी ज़रुरतें पूरा करलेने केलिये पैसे देने से कोई भी हो कीर्ति को पासकता है। जो मनुष्य दुनयवी ज़रुरतों को बडे समझता है, उसकेलिये तो वह व्यक्ति महान जैसा दिखता है जिसने उसकी ज़रुरतों को पूरा किया हो। जो व्यक्ति दुनयवी ज़रुरतों को बडे न समझते हुये, उनसे भी दैवज्ञान को बडा समझता है,उसकेलिये तो वह व्यक्ति महान है जिसने उसे दैवज्ञान को पहुंचाया था। जिसे दैवज्ञान पर श्रद्धा होता है उसकेलिये प्रपंच की कीर्ति बडी नहीं दिखती। जिसने दुनयवी ज़रुरतों को पूरा किया उसे वह बडा नहीं समझता। वह उसीको बडा

समझता है जिसने उसे ज्ञान पहुंचाया। इसके मुताबिक कीर्ति को दो प्रकार डिवैड करसकते हैं वह एक प्रपंच कीर्ति, दूसरी ज्ञान कीर्ति । दैवज्ञान की कीर्ति कमालेने वालों की उदाहरण के तौर पर बोधकों को कहसकते हैं। दैवज्ञान भी कुछ लोगों को ज़रुरत ही है इसलिये जिस बोधक ने उस ज़रुरत को पूरा किया कोई भी हो उसकी तारीफ करेगा। हमने पहले ही बयान करलिया कि कीर्ति प्रतिष्ठा अलग है, तत्वज्ञान अलग है। यहाँ जिस बोधक ने ज्ञानकीर्ति कमाली अगर उसे आत्मज्ञान (तत्वज्ञान) मालूम नहीं है तो वह मोक्ष को नहीं पासकता। इस सूत्र के प्रकार शंकराचार्य, रामानुजाचार्य वगैरा महान लोग जिन्होने दैवज्ञान की बोधा करके बडी कीर्ति हासिल की वे भी योगी न बनसके और ना ही मोक्ष को पासके। इतने महान लोग ही जब मोक्ष को नहीं पासके तो उनके मार्ग पर चलनेवाले कोई भी मोक्ष को नहीं पाये कहसकते हैं। प्रपंच कामों की कीर्ति हो, ज्ञान कीर्ति हो तत्वज्ञान नहीं होता। यहाँ कुछ लोगों को एक सवाल आसकता हैं वह यह है कि दैवज्ञान और तत्वज्ञान दोनों अलग चीज़ें है क्या? उसकेलिये हमारा जवाब यह है कि! दैवज्ञान तत्वज्ञान दोनों एक ही है। तो यहाँ बोधकों के ज़रिये जो ज्ञान बोली जा रही है वह प्रकृति ज्ञान है जिसे दैवज्ञान का नाम दिया गया। इसलिये वह किसी भी हाल में दैवज्ञान नहीं होसकता।

जिसे प्यास लगी वह अच्छे पानी को पीने की चाहत रखता है। अगर कोई भी पानी देदिया तो थोडा पीते ही वह यह जानजायेगा कि वह पानि अच्छा पानी है या नमकीन पानी (खारा पानी)। क्यों कि पानि का विषय उसे बहुत अच्छे से मालूम है इसलिये अगर कोई भी अच्छा पानी कहते हुये नमकीन पानी देदिया तो, फौरन वह यह कहपायेगा कि वह पानी अच्छा नहीं बल्कि नमकीन है। उसीतरह जो

व्यक्ति ज्ञान की जिज्ञासा रखता है वह दैवज्ञान को मालूम करने की चाहत रखता है। अगर कोई भी बोधक ज्ञान को पहुंचाता है तो उसे दैवज्ञान ही समझता है। लेकिन यह नहीं पहचान सकता कि वह दैवज्ञान है या प्रकृति का ज्ञान है। क्योंकि जैसे वह पानि का विवरण जानता है वैसै ज्ञान का विवरण नहीं जानता। इसीलिये वह प्रकृतिज्ञान को परमात्मा का ज्ञान समझकर यकीन कररहा है। **बहुत से ज्ञानजिज्ञानसों को यह बात नहीं मालूम है कि जहाँ भी स्त्रीस्वरुप को देवता की तरह कहा जा रहा हैं, जहाँ मंत्रों के बीजाक्षरों के बारे में बताया जारहा हैं, जहाँ यंत्रों की प्रतिष्ठा के बारे में बोलाजा रहा हैं, जहाँ यज्ञों के बारे में बताया जा रहा हैं, जहाँ बाह्य आराधनों के (बाहर के आराधनाओं के) बारे में बता रहा हैं वहाँ जो भी बोला जा रहा हैं वह सब कुछ प्रकृति का ज्ञान ही है।** बहुत से बोधक गुरुओं की तरह पेश आते हुये, दैवज्ञान के नाम से, प्रकृति ज्ञान की बोधा कर रहे हैं। जो लोग इसतरह के बोधाओं को सिखाकर कीर्ति पाये हैं वे कीर्तिवान ही होते हैं मगर तत्वज्ञानी नहीं होते।

जिसके पास कुछ नहीं है उसे पानी, खाना, वस्त्र, गृह, धन को देकर उनकी आदर करके नाम पाये हुये लोग भूमि पर बहुत ही हैं। दानदेनेवाला अपनी माल को अन्याय से कमाकर उस धन को किसी भी रुप में दूसरों को दने पर वह दान ही होता है। दान वह होता है जो चाहे किसी भी रुप में कमाने पर भी दूसरों की ज़रुरतों केलिये उचित से दी जाती है। ऐसी दान की वजह से कीर्ति आसकती है मगर मोक्ष नहीं। इसीलिये भगवान ने विश्वरुप संदर्शन योग अध्याय में कहा है कि दान से मोक्ष नहीं मिलता। दुर्मार्ग (दुष्ट) दान देने पर भी वह सिर्फ उसे कीर्ति लाकर रखती है। एक मंत्रि एक गरीब को उचित से कुछ भी दें वह दान ही होता है। यह मुख्य नहीं है कि

किसने दिया और किसने लिया। लेकिन जिसने दान लिया वह उसकी तारीफ करेगा जिसने उसे दान किया। उसीतरह जब एक ज्ञानजिज्ञासि एक बोधक के पास ज्ञान सुनता है तो जिसने सुना वह उस बोधक की तारीफ करेगा जिसने उसे ज्ञान बताया हो। लेकिन यहाँ सुननेवाला यह नहीं देख रहा है कि बोधक ने जो कहा वह प्रकृतिज्ञान है! या परमात्मा का ज्ञान है! ज्ञानजिज्ञासि ऐसी हाल में है कि बोलने वाला ज्ञान के नाम से कुछ भी बोलो वह सब दैवज्ञान ही समझ रहा है। ऐसी सूरत में प्रकृतिज्ञान की बोधा करनेवाले को भी कीर्तिप्रतिष्ठायें आ रहे हैं। अबतक हमने उनके बारे में बयान करलिया जिन्होने गुज़रे हुये ज़माने में कीर्ति को कमालिये थे। बलिचक्रवर्ति दान करने में बडा है कहकर आज भी हम उसकी तारीफ करते हैं। उसीतरह कर्ण की भी तारीफ कर रहे हैं। बलिचक्रवर्ति, कर्ण वगैरा लोग प्रपंच संबंध दान करके कीर्ति को कमालिये। उसीतरह गुज़रे हुये ज़माने में कई बोधक गुरुओं की तरह बरताव करके ज्ञान को बोलकर कीर्ति पा चुके थे।

प्रस्तुत काल में पैसेवाला वस्तुदान,बोधक ज्ञानदान कर रहे हैं। इतना हि नहीं बल्कि पैसेवाला बोधकों को धन देकर उनसे ज्ञानदान करवाकर ऐसा समझकर तृप्ति (सुकून) पा रहा है कि खुद उसीने ज्ञानदान किया हो। उसीतरह बोधक जिसे ज्ञान मालूम है वह भी उसने जो धन कमाया है उसे वस्तु रुप में प्रजाओं को देकर खुद वस्तुदान किये जैसा तृप्ति पा रहा है। उदाहरण केलिये मानलीजिये कि एक बाबा ने अपने आस पास के कुछ गाँवों में रहनेवाले प्रजाओं को एक त्योहार के मौके पर नये कपडे, मिठायि के पोटलिया,लड्डू बाँटा है। तो **वह एक बोधक ने किया हुआ वस्तुदान होता है।** उसीतरह एक गाँव में मालवाला अपने आस पास के गाँववाले सब

आकर ज्ञान को सुने जैसा एक स्वामीजि को अह्वान करके उसके ज़रिये ज्ञान को कहलवाया तो वह **एक धनिक (पैसेवाला) किया हुआ ज्ञानदान होगा।** इसतरह मालवाले वस्तुदान, ज्ञानदान दो भी कररहे हैं तो कुछ बोधक ज्ञानदान, वस्तुदान कर रहे हैं। यह सब कीर्ति से संबंध रखनेवाले चीज़ें ही होते हैं मगर तत्वज्ञान (आत्मज्ञान) से इन सब दानों का कोई संबंध (वास्ता) नहीं है।

आख़िर यह तत्वज्ञान है क्या? अगर इसतरह सवाल आता है तो आत्मा के बारे में मालूम करने को ही आत्मज्ञान या तत्वज्ञान कहते हैं। अबतक अद्वैत में हो, विशिष्टाद्वैत में हो, द्वैत में हो आत्मा के बारे में प्रस्तावना नहीं आया। इसीलिये हमने कहा था कि आदिशंकराचार्य को हो, रामानुजाचार्य को हो, मद्वाचार्य को हो आत्मज्ञान मालूम नहीं। हमारी बात में जो सत्य है उसको न समझ सकके कुछ लोग हमारी बात को असत्य की तरह हिसाब करलेने पर भी हम जो बात कह रहे हैं वह **बेशक सत्य** है। **त्रैतसिद्धांत छुपकर अभी अभी बाहर आया हुआ है, एक त्रैतसिद्धांत में सिवा आत्मज्ञान कहीं और नहीं है। श्री श्री श्री आचार्य प्रबोधानंद योगीश्वर जी जो त्रैतसिद्धांत के आदिकर्ता है उनसे कहीगयी त्रैतसिद्धांत में यह बताया गया कि आत्मा क्या चीज़ है।** आदिशंकराचार्य जो अद्वैतसिद्धांति है उसने परमात्मा के बारे में कहा था। रामानुजाचार्य जो विशिष्टाद्वैतसिद्धांति है उसने उस परमात्मा के बारे में कहा था जो प्रकृति से भी विशिष्ट है। मद्वाचार्य जो द्वैतसिद्धांति है उसने जीवात्मा, परमात्मा के बारे में कहा था। लेकिन **आत्मा के बारे में सिर्फ प्रबोधाचार्य ने अपने त्रैतसिद्धांत में बताया हैं।** इसीलिये हमने कहा कि आत्मज्ञान किसीको भी नहीं मालूम।

हमलोगों ने अबतक कीर्ति के बारे में, तत्वज्ञान के बारे में मालूम किया हैं। धन रखनेवाले अमीर लोग कीर्ति कमालिये तो भी कोई बात नहीं है लेकिन ज्ञान धन रखनेवाला बोधक प्रपंच कीर्ति कमालेने के पीछे पडना अच्छी बात नहीं है। अमीरलोग उस दान को करसकते हैं जो प्रपंच सेवा में एक भाग है। लेकिन बोधक उस तत्वज्ञान की ही बोधा करनी चाहिये जो ईश्वर की सेवा में एक भाग है। प्रपंच में इस्तेमाल होने वाले धन, वस्तु, वस्त्र, वाहन, सोना देने पर भी वे भूमि पर थोडा वक्त यानि सिर्फ इस जन्म में ही इस्तेमाल होंगे। सिर्फ एक आत्मज्ञान ही दूसरे जन्म को भी साथ आति है, शाश्वित से इस्तेमाल होती है। इसलिये अगर एक स्वामीजी दैवज्ञान के संबंदित पुस्तकों को अज्ञान प्रजाओं को बाँट ने पर भी वह समर्थनीय काम ही होता है। उसके अलावा अमीरवालों के जैसा कई गाँवों को पानि की सहूलत दिलवाने पर भी, कई हज़ारों लोगों को नित्य अन्नदान करवाने पर भी, त्योहारों के समय वस्त्रदान, मिठायियाँ दान करने पर भी वह असमर्थनीय काम ही होता है। ये सब अमीर और प्रभुत्व करनेवाले काम है मगर स्वामीजियों का काम नहीं। धोबी का काम धोबी, नाई का काम नाई करें तो अच्छा है। वरना धोबी का काम नाई, नाई का काम धोबी करें तो यहीं तो कहेंगे ना कि वह वृत्ति नहीं है, उसीतरह स्वामीजियाँ दान देना, धनिक ज्ञान की बोधा करना भी रास्ते से हट कर काम किये जैसा होगा।

मानव को बाह्य प्रपंच में जो भी ज़रुरतें हैं चाहे वह विद्या हो, वैद्य हो, खाना हो, कपडा हो कर्म के अनुसार पहले ही तै किया जाचुका होता है। सिर्फ एक दैवज्ञान ही कर्म से अतीत होकर रहता हैं। बोधकों का (स्वामीजियों का) काम यह होकर रहना चाहिये कि उस ज्ञान को लोगों को बताना चाहिये जो कर्म से अतीत है। विद्या,

वैद्या, खाना, कपडा ये सब कर्माधीन होकर किसको कितना मिलना चाहिये उतना ही मिलेजैसा पहले ही फिक्स किया हुआ रहता है। जिस समय जो मिलना चाहिये वह किसी न किसी के द्वारा मिल ही जाता है। लेकिन ज्ञान सिर्फ ज्ञानियों के द्वारा ही मिलता है। इसलिये ज्ञानियाँ दुनयवी मदद किये बगैर परमात्मा की ज्ञान को पहुंचाना चाहिये। एक मौके पर कुछ लोग हमें इस बात को लेकर सवाल करते हुये पूछा कि आप समाजसेवा क्या कर रहे हैं? तब हमने इसतरह कहा कि **हम ज्ञानसेवा के सिवा मनुष्यों की सेवा नहीं करते।** मनुष्यों की सेवा करने केलिये प्रभुत्व (गवर्नमेन्ट) है। अमीर लोग हैं। जब प्रभुत्व कहरहे हैं कि हम आपलोगों केलिये ही हैं और कई डिपार्टमेन्टस् बनाकर उनके द्वारा मनुष्यों की पालना कर रहे हैं तो अगर उन सेवाओं में कुछ कमी होती है तो प्रभुत्वों को पूछनी चाहिये। उसीतरह आप हम से यह पूछना चाहिये कि हमें स्वच्छ ज्ञान को पहुंचायिये। आज बहुत से स्वामीजियाँ प्रपंच कीर्ति को कमालेनेकेलिये, उन्होने जो कमाया उस धन को दूसरों के ज़रुरतों केलिये खर्च करते हुये ख्याति पा रहे हैं। पहले किसी न किसी तरीके से अपने प्रभाव से हो या महत्य से हो अमीरलोगों के पास से धन को कमाकर उस धन को इस्तेमाल करके वैद्यशाला, विद्यालय, नित्यअन्नदान वगैरा वगैरा स्थापित करके उचितविद्या, उचितवैद्य, उचित भोजन का प्रचार करके कीर्ति को कमालेरहे हैं।

इसतरह बहुत से स्वामीजियाँ प्रपंच मददों को सबको मालूम हुये जैसा किया इतना ही नहीं बल्कि खुद को स्वामिजियाँ कहते हुये हम ज्ञान भी बताते हैं कहकर बडे बडे सभाओं को वहाँ वहाँ ज्ञान बोधा का नाम रखके बोधायें बोलते रहते हैं। वहाँ पर जो प्रवचन बोले जाते हैं उनमें सिर्फ हमें यही दिखायि देता है कि गत में जिनलोगों ने

कीर्ति हासिल की थि सिर्फ उन्ही के बारे में बोलते रहते हैं। पिछले लोगों की महानता के बारे में बोललेना ही नहीं बल्कि, उनके नाम पर गाने तयार करके उन गानों में उनकी तारीफ की भजन करते रहते हैं। इसतरह बहुत से स्वामिजियाँ उनको जो तत्वज्ञान मालूम है उसे न बताते हुये अपने से पहले पैदा होकर मरचुके हुये स्वामिजियों के बारे में, उनके महत्यों के बारे में, उनके जीवित चरित्रों के बारे में, उन्होने उनके ज़माने में जो ज्ञान कहा होगा फिर से वहीं ज्ञान को थोडा बातों के रुप में थोडा गानों के रुप में बोलते रहते हैं। आख़िर तक उनके बोधायें सुनने पर भी उसमें भजन (कीर्तना, स्तोत्र) के सिवा ज़रासी भी आत्मज्ञान नहीं रहता। और कुछ स्वामिजियाँ तो पूरा गाने की कचेरि की तरह सारे वायिद्यों के साथ सिर्फ गाने ही गाते रहते हैं। सुननेवाले सरों को हिलाते हुये, आनंद से सुनते ही रहे तो बोलनेवाले भी वही ज्ञान है कहे जैसा गाते ही रहते हैं। एक स्वामीजि इसतरह गाता है कि तेरे नाम सुने तो ही बस कर्म चले जाते हैं, तेरे दर्शन मिलेतो बस है जन्म खत्म होजाते हैं, तो और एक स्वामीजि ओ...गायिनाथा तुझ से बढकर कोई ईश्वर ही नहीं है,तेरे स्पर्श से हमारे रोग जाते हैं, तेरे आँख से हमे लाभ आते हैं कहकर गाते रहते हैं। एक जन पुराणों की कथाओं को सुनाता है कोई दूसरा पुण्यक्षेत्रों की कथाओं को सुनाता हैं। एक जन भारत रामायण गाथाओं को याद दिलाते हुये बोल रहा है तो, और एक जन देवताओं के महिमाओं के बारे में बोलते रहते हैं। इष्टदेवताओं के बारे में कोई बताता है तो, कोई और इष्ट को पूरा करके कोष्टों को मिटानेवाले देवताओं के बारे में बोलता है। इसतरह कई प्रकार के बोधाओं के आज के स्वामीजियाँ बोल रहे हैं। उन सबकी जाँच करें तो उसमें न आत्मा का ज्ञान मिलता है न जीवात्मा का न परमात्मा का। उनकी

बोधाओं में ज़रासी आत्माज्ञान भी नहीं रहती। ऐसी सूरत में स्वामीजियाँ जो ज्ञान बोलरहे हैं वह दैवज्ञान है या नहीं? अगर यह सवाल उठा तो उसके जवाब में यही कहना पडेगा कि बिलकुल भी नहीं है। वे जो भी बतारहे हैं वह सबकुछ प्रकृति का ज्ञान ही है कहसकते हैं। दूसरों की कीर्ति के बारे में बोलाजा रहा है इसलिये मालूम हो रहा हैं कि जो कुछ भी वे बोल रहे हैं वह सबकुछ सिर्फ दूसरों की कीर्ति ही है,जो गाने वे गा रहे हैं वे सब भजन ही है। अगर कहीं पे भी कोई भी स्वमीजि आत्मज्ञान संबंदित भगवद्गीता को बोल रहा है मतलब उसके उपन्यास में कृष्ण ने जो ज्ञान कहा वहीं ज्ञान रहने के बावजूद भी उस स्वामीजि के बातों में सिर्फ जीवात्मा होता है,परमात्मा होता है। लेकिन बीच में आत्मा बिलकुल नहीं रहती। जब आत्मा की प्रस्तावना तक नहीं है तो यह साफ बता सकते हैं कि वहाँ पर जो ज्ञान बोली जा रही है वह परमात्मा का ज्ञान हो सकता है या तो जीवात्मा का ज्ञान होसकता है मगर आत्मज्ञान तो नहीं होसकता। इसतरह भगवद्गीता के उपन्यासों में भी आत्मा को ही नहीं रहे जैसा कर रहे हैं। पूर्व में हमारे बडों ने पहले ही सोचलिया कि भविष्य में आत्मा को लोग भूलजायेंगे इसीलिये उन्होने हमारे बीच आत्मा से रिलेटेड कई वाक्यों को रखा हैं। वैसे रखे हुये वाक्यों में से चंद वाक्य ये हैं कि **आत्महत्या, आत्मबोधा, आत्मबल, आत्मचैतन्य, आत्मगमन, आत्मसाक्षि, आत्मबंधु, आत्माभिमान, आत्मशक्ति, आत्मविश्वास, आत्मविमर्शा, आत्मज्ञान,** आत्मतेज,इतना ही नहीं बल्कि भगवद्गीता के श्लोकों में आत्मा का शब्द ही इस्तेमाल किया। फिर भी आज का मानव स्वामीजि की तरह बदलने पर भी आत्मा के बारे में मालूम न करसकके दूसरों की तारीफ करना, अन्यदेवताओं की आराधना करते हुये वह खुद कीर्ति को कमालेने केलिये प्रपंच संबंध के

सहायता कार्यक्रम कर रहा है। इसलिये हर मनुष्य चाहे वह मान्य हो या सामान्य हो अपने आप में इसतरह सवाल करलें कि क्या मैं दूसरों की कीर्ति (तारीफ) कर रहा हूँ? क्या मैं कीर्ति (Status) कमालेने के पीछे पडा हूँ? और खूब योचना करके अपने अंदर यह झाँक कर देखलेने की ज़रुरत है कि क्या मैं आत्मज्ञान को मालूम करले रहा हूँ या नहीं? क्या मैं दूसरों को आत्मज्ञान के बारे में बोल रहा हूँ या नहीं? इसलिये मनुष्य अपने ज़िंदगी में पुण्य को देनेवाली कीर्ति को छोडने पर ही मोक्ष को देनेवाली आत्मज्ञान (तत्वज्ञान को) मालूम करने केलिये मौका बनता है।

शरीर किराय का घर है

एक मनुष्य को डिवैड करके देखें तो शरीर और जीव यानि दोनों को मिलाकर मनुष्य कहते हैं। जिस शरीर में जीव नहीं रहता है उस शरीर को **शव** कहते हैं। उसी तरह बिना शरीर वाले जीव को जिन्न (सूक्ष्म शरीर) कहते हैं। एक जिन्न, एक शव जब दो भी मिलजाते हैं तब उसे **मनुष्य** कहरहे हैं। अगर विवरण से बयान किये तो एक जीव एक शरीर में निवास करते हुये जीवितकाल को बिता रहा है। जीव केलिये शरीर गृह (घर) जैसी है। शरीर कहलानेवाले गृह में जीव कुछ वक्त निवास कर रहा हैं। जीव शरीर में जितना वक्त निवास करता है वह पूरे वक्त को **जीवित काल** कहते हैं। जीवित काल को पूर्व में **जीतकाल** कहा करते थे। **जीत** कहलानेवाले दो अक्षरों के बीच में **वि** कहलानेवाला अक्षर कालक्रम में दाखिल होगया है। इसलिये **जीत** काल **जीवितकाल** में बदलगया। जो शब्द बदलगया उसे छोडकर देखें तो शरीर में जितना वक्त जीव रहा उतनी वक्त

को जीतकाल कहने में थोडा अर्थ बसा हुआ है। एक काम के लिये प्रतिफल में जो दिया जाता है उसे **जीत** कहते हैं या भाड़ा (किराया) भी कहते हैं। जीव दूसरे के घर में निवास कर रहा है जो खुद का नहीं है। यानि यह शरीर जीव का खास अपना घर नहीं है। इसीलिये उस घर के मालिक को किराया देना पड रहा है। यह बात हर इनसान को याद रखलेनी चाहिये कि शरीर जीव का खास घर नहीं है। अगर शरीर जीव का अपना स्वयं घर नहीं है तो फिर यह शरीर किसका है? यह सवाल भी फौरन आसकता है, उसकेलिये हमारा जवाब यह है कि!

कुछ नगरों में कुछ मालिक अपने खास घर को पूरा इस्तेमाल किये बगैर, घरमें कुछ हिस्सा हो या एक कमरे को हो दूसरों को किराय पर दे रहे हैं। उदाहरण के लिये मानलीजिये कि एक घर का मालिक अपने घर में का एक कमरा दूसरे को दिया है। जब उस घर का मालिक जो व्यक्ति भाड़े पर है उस केलिये पानि से लेकर सारे सहूलतें इंतेज़ाम करके उसके प्रतिफल (बदले) में उससे किराया (भाड़ा) लेता है। यह तो सब जानते ही है। अब राज़वाली मुख्य बात जो कोई नहीं जानता वह यह है कि! जीव शरीर कहलानेवाले घर में इसतरह निवास कर रहा है कि उस विशाल घर में उस घर के मालिक को किराया देते हुये, एक घर में रहनेवाले किरायदार की तरह जीव शरीर कहलानेवाले घर में निवास कर रहा है। शरीर कहलानेवाले पूरे घर का मालिक (अधिपति) आत्मा है तो, शरीर नाम के घर में थोडी सी जगह में ही जीव निवास कर रहा है। जीव अपने घर में निवास करनेकेलिये जो सहूलतें ज़रुरत है वे सब आत्मा कहलानेवाला मालिक इंतेज़ाम कर रहा है। उसके प्रतिफल में जीव जो किराया दार है आत्मा को यानि शरीर गृह के मालिक को

आहार कहलानेवाला किराया (भाड़ा) देना पडेगा। जीव ने जो आहार कहलानेवाला किराया दिया था उसे आत्मा अपनी जीवन के लिये इस्तेमाल करलेती है। बाहर के गृहों के मालिक महीने को एक बार पैसों के रुप में किराय (भाडे) को दिलवालेते हैं। अंदर शरीरगृह का मालिक वक्त के अनुसार एक बार आहार के रुप में किराया दिलवाले रहा है। बाहरवाला घर का मालिक महीने को एक बार पूछ कर अपना किराया दिलवालिये तो, अंदर का मालिक वक्त पर एक बार भूक को पैदा करके अपनी किराया दिलवालेता है। मालिक आत्मा को आहार कहलानेवाला किराया बाँधने केलिये मनुष्य को कई काम करने पडते हैं। वे काम करनेकेलिये कई विद्यायें सीखनी पडती हैं। इसीलिये बडों ने कहा कि पेट के लिये करोड विद्यायें है यानि पेट भरने केलिये ही मनुष्य बेहिसाब काम करता रहता है। करोड तो नहीं लेकिन कम से कम कुछ विद्याओं को तो सीखना पड रहा है। आज के ज़माने में मानव की आयु सामान्य से साठ साल है तो पेट के लिये सीखनेवाले पढ़ायियाँ पढ़नेकेलिये तकरीबन ३० साल लग रहे हैं।

आज के ज़माने का मनुष्य कहता है कि हम विज्ञान केलिये पढ रहे हैं, लेकिन यह बात को नहीं भूलना चाहिये कि आख़िर वह विज्ञान भी मनुष्य जीनेकेलिये ही है और आहार को कमाने केलिये ही है। चाहे कितने भी विद्यायें सीखें, चाहे कितने भी डिग्रियाँ हासिल करलें, वे विद्यायें सिर्फ बाहर की नज़र को ही सिखाती हैं। लेकिन कोई विज्ञान हो, कोई विद्या हो मनुष्य को यह नहीं सिखा पायि कि मैं एक जन के आधीन में किराय पर हूँ, मेरा एक मालिक है, उसकी मरज़ी नामरज़ी पर ही मैं जी रहा हूँ,जीना मतलब शरीर में निवास करना ही है विज्ञान इनमें से एक चीज़ को भी नहीं बता पाया है। आत्मा जो शरीर का मालिक है उसकी जानकारी देनेवाली ही

ब्रह्मविद्या हैं। ब्रह्मा का मतलब बडा है। ब्रह्मविद्या वह विद्या है जो यह बताती है कि तुझे एक बडा (मालिक) है, वह बडा कोई और नहीं बल्कि तेरे शरीर में की आत्मा ही है। प्रपंच ज्ञान को बतानेवाले विद्यायें कई विभागों की तरह यानि डाक्टर्स, इंजिनीर्स, लायर्स वगैरा वगैरा बहुत से हैं। चाहे बाहर की कोई भी सैन्स पढलें वह भौतिक शरीर को इस्तेमाल होनेवाली ही है मगर वह आत्मा के बारे में नहीं बताती जो भौतिक शरीर का मालिक है।

अब एक कथा को बयान करलेते हैं! भूपति नाम का एक व्यक्ति एक बडे घर में, सिर्फ एक ही कमरे में किराय पर है,उस घर के मालिक का नाम पति है। पति का घर बडा होने के वजह से पति अपने घर में सामने के कमरे को भूपति को किराय पर देकर वह खुद पीछे बाक़ी कमरों में रहा करता था। पति केलिये नौकर दो डज़न रहा करते थे। पति उतने लोगों से काम करवालेने के बावजूद भी, उतने जन का मालिक होने के बावजूद भी, खुद कभी भी ज़रा भी फखर नहीं करता था। वह कभी भी खुद की तारीफ नहीं करलेता था। अपने घर के पूरे काम को अपने वालों को (नौकरों को) सौंप कर खुद सबको गौर करते रहता था। बाहर का पूरा व्यवहार अपने वाले ही देखलेते थे। घर के सामने वाले हिस्से में रहनेवाला भूपति उन सबको देखता रहता था जो उस घर को आते जाते रहते थे। वह सामने के कमरे में ही हैं इसलिये बाहर से आनेवाले सबको देखता था। सारे विषयों को मालूम करता था। पति के चौबीस कामदार (नौकर) भूपति से खूब मुलाकात रहने की वजह से सब विषय भूपति को आसानी से मालूम होजाते थे। पति के सारे मनुष्य भूपति केलिये अनुकूल रहने से भूपति उन सबको अपने वालों की तरह हिसाब करके उसके मन में यह भाव रहता था कि वहीं (भूपति) इन सबका

मालिक है। विस्तार से बतायें तो 24 लोगों को जिसने काम पर रखलिया वह पती ही है फिर भी 24 लोगों में कुछ लोग पति के खिलाफ रहते हुये भूपति को अनुकूल से रहते थे। तुस्सु तस्सु कहलानेवाले दोनों काम वाले पति के खिलाफ दिखते थे। तुस्सु कहलानेवाला हर विषय को भूपति को बताते हुये ऐसा बरताव करता था कि वह भूपति का ही आदमी है। अब तस्सु कहलानेवाला पति के पूरे खिलाफ होकर इसतरह कहा करता था कि खुद का (तस्सु का) मालिक भूपति ही है, भूपति ही यहाँ के कामों का और यहाँ के पूरे घर का मालिक है। तुस्सु तस्सुओं की वजह से भूपति विचक्षणा खोकर यह तक भूलगया कि वह परायों के घर में निवास कर रहा है और वह तस्सु के बातों से फुलजाता था। घर के नौकर घर में अनेक प्रकार के काम किया करते थे। कुछ लोग सिर्फ छोटे छोटे कामों केलिये ही परिमित (लिमिटेड) है तो कुछ लोग मुख्य कामों को देखलेते थे। घर में अतिमुख्य कामों को देखलेनेवाले सिर्फ चारों ही है। उन चारों में से दोनों तुस्सु, तस्सु है तो बाक़ी दोनों सद्धि, गिद्धि हैं। उन चारों में तुस्सु, तस्सु दोनों एक ग्रूप (समूह) है तो सद्धि, गिद्धि एक समूह है। हमने कहा कि ये चार मुख्य लोग भूपति केलिये अनुकूल है, पति केलिये व्यतिरेक है तो सौ के सौ प्रतिशत तुस्सू,तस्सु पति के खिलाफ हैं। अब बाक़ी दोनों सद्धि, गिद्धि दिखे न दिखे जैसा रहते हैं। सद्धि कहती है कि भूपति से मेरी सलहा के बगैर कुछ नहीं होता, तो गिद्धी कहती हैं कि सद्धि कहने पर भी जब तक मैं (उस सलाह को) खुबूल नहीं करुँगी तब तक कुछ नहीं होसकता, इसतरह ये दोनों कहते रहते हैं कि हम घर में भूपति केलिये काम कर रहे हैं लेकिन पति केलिये नहीं।

भूपति पति के घर में किराय पर रहकर हर महीना किराया बाँधते हुये भी कहरहा है कि मैं ने किसी को भी किराया नहीं बाँधा, यह घर मेरा ही है। इतना ही नहीं घर में काम करनेवाले सब लोग मेरे अपने लोग है। वह बोलले रहा है कि यह मेरा तुस्सु है, वह मेरा गिद्धि हैं। यह पूरा विषय पति को मालूम है फिर भी पति भूपति को कुछ नहीं कहा। अपने घर में किराय पर रहनेवाला एक छोटु खुद को मालिक बोललेने पर भी पति मौन से रहने की एक वजह है। वह यह है कि! घर खुद का ही है फिर भी वह दूसरों के पास गिरवी में रखा हुआ है। वह दस्तावीज़ जिस पर लिखा हुआ है कि यह घर खुद का (पति का) है वे सब उस व्यक्ति के पास हैं जिसके पास गिरवी रखी गयी। चाहे भूपति कुछ भी बोलले उसके बातें नहीं चलेंगें। पति के नाम पर ही लिख्खत के सूरत में है। पति का ही घर है कहने केलिये सबूत के तौर पर परपति कहलानेवाले तीसरे व्यक्ति के पास घर गिरवी पर है। घर पति का ही है फिर भी गिरवी पर रहने की वजह से, घर का पूरा रिकार्ड परपति के पास रहने की वजह से, कहसकते हैं कि फिलहाल मालिक परपति ही है, पूरा घर उसीके आधीन में है। इसलिये भूपति घर मेरा ही है कहकर समझने पर भी पति को किसी भी तरह का दुख नहीं है। जबतक परपति का कर्ज़ पूरा नहीं चुकाता, गिरवी जबतक रद नहीं की जाती तबतक ु पति और भूपति दोनों केलिये मालिक परपति ही है। पति का कर्ज़ परपति के पास खत्म होने केलिये जो किराया भूपति बाँधता है वह डैरेक्ट परपति को ही बांधना पडेगा। परपति के नाम पर बांधने से उसे अपने कर्ज़ में जमा करलेते हुये आख़िर में जिस दिन कर्ज़ खत्म होजाता है अपनी कर्ज़ को रद करलेके कर्ज़ से पति को रिहा पाये जैसा करता है। क्या कहा आपने भूपति कर्ज़ा चुकाने से पति कर्ज़े से

कौसे रिहा होगा? अगर इसतरह सवाल उठता है तो उसका जवाब इसतरह है कि **वास्तव में भूपति ही परपति का कर्ज़दार है।** लेकिन भूपति से मैं तेरे कर्ज़ को बंधवाऊँगा कहकर बीच में पति कहलानेवाला राज़ी हुआ था। **इसलिये चाहे** भूपति कितना नालायक होने पर भी सबर के साथ पेश आते हुये अपने घर में सामनेवाले कमरे में रखलिया है।

भूपति कहलानेवाला परपति के पास कर्ज़ लेकर, पति को गवाह रखके, घर को गिरवी रखवाकर, खुद सब भूलजाकर, मैं ने किसी से भी कर्ज़ नहीं लिया कहनेका भाव में रहते हुये ऊपर से जिस घर में वह रह रहा है उसे खुद का घर कह रहा है। लेकिन परपति इसतरह समझलेरहा है कि चाहे भूपति कुछ भी समझलें पति और भूपति दोनों भी मेरे हाथों फसगये। पति इसतरह समझले रहा है कि जब तक भूपति कर्ज़ नहीं चुकाता तब तक मैं उसे नहीं छोडूँगा। अगर भूपति के भाव में ऐसा खयाल हो तो कि मैं जो भी बांध रहा हूँ वह परपति केलिये ही है तो वह सबकुछ डैरेक्टलि परपति के बाकी में ही जमा होजायेगा। उसके अलावा अगर उसके भाव में ऐसा खयाल हो तो कि जो कुछ वह बांध रहा है वह सबकुछ पति केलिये है तो वह पति के बाकी मे ंजमा होजाता है। पति को बांधने पर भी पति ऐसा करता है कि आखिर में वह परपति को ही मिले। ऐसा पहले से ही इंतेज़ाम किया गया है कि किसी न किसी तरीके से घरको किराय के रुप में जो कुछ बांधा उसे बाकी के नीचे जमाकिया जासकता है उसके बावजूद भी भूपति की ऋण इसलिये नहीं पिढ रहा है क्यों कि वह अपने अंदर ऐसा समझले रहा है कि मैं किसी को किराया नहीं बांध रहा हूँ, यह घर मेरा ही है, आहार के रुप में जो भी बांध रहा हूँ वह खुद की पोषणा केलिये ही है मगर किसी और

केलिये नहीं मुझे यह तक नहीं मालूम कि पति कौन है और परपति कौन है?

परपति जानगया कि भूपति परम मूर्ख हैं इसीलिये उसने बाकी के विषय में थोडी छूट भी देदी। वह छूट यह है कि! भूपति जो बांधता है अगर वह पति के नाम पर बांधे तो जितना बांधा था उतना बाकी चुकजायेगा। उसके अलावा सीधे परपति के नाम पर बांधे तो जितना बांधा उससे हज़ार गुना ज्यादा बांधे जैसा हिसाबकिया जायेगा। वह इसलिये है कि परपति अपनी बीवी के द्वारा भूपति को बाकी दिया था। पति भी भूपति के बाकी की विषय में परपति के बीवी के पास ही खुद को ज़िम्मेदार कहा। इसलिये सकृति देवी जो बीवी है जितना जमा करेंगे उतना ही जमा डाललेगी। परपति की बीवी सकृति देवि ठीक ठीक हिसाब रखती है इसलिये वह बाकी उतनी आसानी से पिढनेवाली नहीं है कहकर परपति भूपति की भलाई चाहते हुये वह परपति जो सकृति देवी का भी अधिपति है अपने मरज़ी की मुताबिक छूट ऐलान किया। उसने कहा कि जो बाकी सीधे मेरे नाम पर बांधी जायेगी उसमें इसतरह के कोई नियम नहीं है कि जितना दोगे तो उतना ही जमा..। उसने कहा कि अगर मुझे पसंद आगये तो तेरे पूरे बाकी को एक दिन में जमा करलूँगा। इस तरीके के प्रकार तो भूपति की बाकी जल्दी से पिढजाती है और वह बाकी से बाहर पडेगा। परपति इतनी छूट देने की बावजूद भी भूपति ऐसा समझले रहा है कि पति कौन है? परपति कौन? मैं तो भूपति हूँ, और मैं किसी के आधीन में नहीं हूँ, मैं आज़ाद हूँ,जैसे मेरी मरज़ी है मैं वैसे करलेसकता हूँ। इसलिये भूपति के कर्ज़े में न साधारणवाला जमा हो रहा है न छूट वाला जमा। भूपति हमेशा भूमि पर किराय के घर में ही बसर कर

रहा है क्यों कि न उसके पास हिसाब है न जमा। क्या यह अन्याय नहीं है कर्ज़ा रहकर भी कर्ज़ को भूलजाना? जिसने उसकेलिये ज़िम्मेदार की तरह ठहरा उसे कौन है वह? उसे मैं नहीं जानता कहते हुये उसे भूलजाना तो और भी अन्याय है। जिसने उसकी भलाई केलिये खूब सोचकर साधारण से तो यह बाकी नहीं चुका पायेगा इसलिये एक रुपे केलिये हज़ार रुपे जमा का ऐलान जिसने किया उसे भूलकर बरताव करना और भी बडा अन्याय नहीं है क्या? वह पति के ओर जिसने कहा कि मैं बगैर इन्टेरेस्ट के कर्ज़ को जमा करलूँगा, उसीतरह उस परपति के ओर जिसने कहा कि हज़ार गुना जमा करलूँगा, ज़रा भी विनय विधेयता को न दिखानेवाले भूपति को क्या कहना चाहिये आप खुद बतायिये। यही लगता है ना कि उसे नीच, निकृष्ट, दुष्ट, दुर्मार्ग कुछ भी कहें कम ही है, हेना!

शायद इस कहानि में भूपति को कोई भी खुबूल नहीं करेगा। बहुत ही सबर रखनेवाले पति की हो, उसीतरह कर्ज़ पिढ़ने केलिये छूट के नाम से बहुत ही मौका दिया हुआ परपति का हो प्रशंसा ज़रुर करनी पडेगी। अब कुछ लोग ऐसा समझ सकते हैं कि आखिर इतनी बडी कहानि बोललेने की ज़रुरत क्यों पडी। उसकेलिये हमारा जवाब यह है कि! सबको इस कहानि को जानने की आवश्यकता है। क्योंकि यह कल्पित कथा नहीं है यथार्थ कथा है। इसमें जो भूपति का किरदार है वह कोई और नहीं बेशक तू ही है। किराया घर वह शरीर है जिसमें तू रह रहा है। पति कोई और नहीं वह आत्मा ही है जो इस शरीर का अधिपति है। परपति कोई और नहीं वह परमात्मा ही है जो आत्मा से परे हैं। यह याद रखलेनी चाहिये कि पति केलिये कामदारों की तरह जो २४ लोग है वे कोई और नहीं बल्कि तेरे

शरीर के भाग ही है। यह जानलो कि वे चार मुख्य लोग जो पति के खिलाफ भूपति के अनुकूल है उनमें से तुस्सु मन है तो, तस्सु अहम है। इतना ही नहीं बल्कि यह भी जानलो कि सद्धि यानि हमें जो बुद्धि है वही सद्धि है, गिद्धि यानि हम में जो चित्त है वही गिद्धि है। और यह भी जानलो कि हम जो आहार को अंदर पहुंचा रहा है वहीं भूपति बांधनेवाला किराया है। यह जानलो कि भूपती की कर्ज़ जो है वह जीवात्मा का कर्म है, कर्म को खत्म करलेना ही परमात्मा की कर्ज़ा चुकाना है। भूपति पति और परपति का विषय को भूलजाना मतलब आत्मा, परमात्मा की ज्ञान को जीवात्मा ग्रहण नहीं करसकना। यह जानलों कि पति भूपति केलिये उत्तरवादि की तरह रहना मतलब आत्मा जीवात्मा के साथ हमेशा रहता है और जीव के सारे काम खुद आत्मा ही कर रही है। यह भी जानलो कि पति के पास जमा करना मतलब ब्रह्म कर्म योगों के द्वारा आत्मा की आराधना करना, परपति के पास जमा करना मतलब परमात्मा को भक्ति योग के द्वारा आराधना करना। भक्ति योग के द्वारा कर्म जल्दी से खत्म होजाकर कर्म से विमुक्त होसकते हैं। सकृति देवी मतलब ऐसा समझो कि वह प्रकृति शक्ति है। नियम यानि धर्म है, धर्मों का अतिक्रमण करके मोक्ष देने की शक्ति सिर्फ एक परमात्मा को ही है। इसीलिये हमने कहा कि परपति ने अपनी मरज़ी के मुताबिक छूट दिया है। परमात्मा प्रकृति के द्वारा ही जगत को चला रहा है इसीलिये हमने कहा कि परपति अपने बीवी के द्वारा ही बाकी दिलवाया। हम यह बता रहे हैं कि इतनी बडी कहानि हमारे शरीर में ही होरही है, जिसने इस कथा में की यदार्थ को जानलिया वह अपनी कर्म की कर्ज़ को जल्दी से चुकाकर मोक्ष पालेगा।

कल्पित	यदार्थ
1. भूपति	: जीवात्मा
2. पति	: आत्मा
3. परपति	: परमात्मा
4. घर	: शरीर
5. किराया	: आहार
6. कामदार(नौकर)	: शरीर के भाग
7. तुस्सु	: मन
8. तस्सु	: अहम
9. सद्धि	: बुद्धि
10. गिद्धि	: चित्त
11. कर्ज़	: कर्म
12. उत्तरदायि की तरह रहना	: साथी की तरह साथ रहना
13. पति को भूलजाना	: आत्मज्ञान मालूम न होना
14. पति के पास जमा रखना	: ब्रह्म कर्म योगों का आचरण करना
15. कर्ज़ पूरे तरीके से रद होजाना	: मोक्ष पाना
16. सकृति देवी	: प्रकृति शक्ति
17. नियम	: धर्म
18. बाकी रायिति	: कर्म को रद करना

आखरी मरण

एक मनुष्य जी रहा है मतलब उस मनुष्य का शरीर बडी यंत्रांग की तरह काम कर रहा है। शरीर यंत्र में कुछ हिस्से ऐसे रहते हैं कि वे नज़र आते हैं तो कुछ हिस्से ऐसे रहते हैं कि वे नज़र नहीं आते हैं। नज़र आनेवाले या दिखने वाले हिस्से १० है तो, नज़र न आनेवाले भाग १४ हैं। शरीर यंत्र बाहर दिखनेवाली लोहे के टुकडों की यंत्र जैसी नहीं है। लोहे के टुकडों के यंत्र में सब हिस्से रहने पर भी, उसमें तेल जो उसका इंधन है रहने के बावजूद भी उसे चलाने केलिये एक मनुष्य चाहिये। उसीको तेलुगु ज़बान में जंत्रवाला और इंग्लिश ज़बान में डैंवर कहते हैं। दिखनेवाले कुछ हिस्सों से जुडेहुये मांस की टुकडों की शरीर यंत्रांग में इंधन की तरह खून रहने पर भी शरीर यंत्र को चलाने केलिये एक जन(एक व्यक्ति) चाहिये। **बाहर की यंत्र को खिलानेवाला मनुष्य है तो, मानलेते हैं कि शरीर की यंत्र को खिलानेवाला मिस्टर च (यक्स) है। बाहर की यंत्र को खिलानेवाले मनुष्य को जंत्रवाला कहते हैं। यहाँ शरीरयंत्र को खिलानेवाले को मंत्रवाला कहते हैं।** अगर लोहे के वस्तुओं से निर्मित की गयी यंत्र के डैंवर को जंत्रवाला कहते हैं तो, मांस के अवयवों से निर्मित की गयी शरीर यंत्र के डैंवर को मंत्रवाला कहना चाहिये। पूर्व में इसतरह के जंत्रवाला,मंत्रवाला नाम पैदा हुये। और भी विवरण से बतायें तो बाहर दिखनेवाले भागों को चलानेवाला दिखता है उसीको जंत्रवाला कहते हैं, अंदर नज़र न आनेवाले शरीर के यंत्रभागों को चलानेवाला नज़र नहीं आता उसीको मंत्रवाला कह रहे हैं।

नज़र न आते हुये काम करनेवाली को मंत्र कहते हैं, मांत्रिक उसे कहते हैं जो मंत्र को काम किये जैसा करता है। हमने पहले ही

बतादिया ना कि शरीर यंत्र में नज़र न आनेवाले हिस्से १४ हैं। उसमें एक एक हिस्सा एक एक काम की योग्यता रखती है। उनमें अब हम बयान करलेने केलिये संदर्भ के अनुसार ज़रुरत पड़ी, **मन भी शरीरा का एक हिस्सा है, क्यों कि वह मनन करती है या मनन रखनेवाली है इसीलिये उसे मन कह रहे हैं।** शरीर में सारे ज्ञापकों (यादों) के लिये मुख्य कारण मन है। मनुष्य के ज़िंदगी में सबसे आख़िर में नाश होजानेवाली भी मन ही है कहसकते हैं। शरीर के अंदर जो चीज़ें नज़र नहीं आते वे सब काम न करसकनेवाली हालत में पहुँचकर, नाश होजाने के बाद सबसे आखिर में नाश होजानेवाली मन है। मन के नाश होजाने के बाद जीव भी शरीर को छोडकर चलाजाता है। उसीको मरण कहते हैं। यहाँ गौर करनेवाली बात यह है कि वे १४ यंत्र भाग जो अंदर नज़र नहीं आते हैं सिर्फ वे ही मरण में नाश होते हैं। यह बात अच्छे से याद रखलेना चाहिये कि जीव नाश नहीं हुआ है। मरण में बाहर के दस भागों से, अंदर के १४ भागों से जीव का संबंध टूटजारहा है। हमने कहा था ना कि जब मनुष्य जिंदा रहता हैं, जब उसके शरीर में सारे भाग काम करते हैं तब उसे चलानेवाला डैंवर (मंत्रवाला) एक जन है ना! **यह बात खूब याद रखलेनी** चाहिये कि वह डैंवर जीव नहीं है। शरीर कहलानेवाले वाहन में जीव सिर्फ प्रयाणिक (पासेन्जर) है मगर डैंवर नहीं है।

शरीर नाम की वाहन इसलिये निर्माण की गयी ताकि जीव (जीवात्मा) कहलानेवाला प्रयाणिक उसमें प्रयाण करसके। जबतक वाहन चलती है तबतक जीव उसमें प्रयाण करता रहता है। जब वाहन न चलसकने की हालत में पहुँचती है तो उसको चलानेवाला कहता है कि चलो, अब यह गाडि हमारेलिये काम नहीं आयेगी, दूसरी नयी गाडि चडते हैं, फिर वह जीव को अपने साथ बुलाके लेजाकर नयी

गाडि चडता है। जब गाडि खराब होजाती है यानि उससे कुछ काम नहीं लिया जासकता तो सिर्फ प्रयाणिक ही नहीं उतरता बल्कि उसके साथ डैंवर भी उतरजाता है। इसतरह प्रयाणिक, डैंवर दोनों भी उस गाडि में से उतरजाते हैं जो इस्तेमाल करने की योग्य नहीं फिर दूसरी नयी गाडि चढकर सफ़र शुरु करते हैं। चाहे गाडि कोई भी हो प्रयाणिक एक ही है,डैंवर भी एक ही है। एक प्रयाणिक सफ़र करने केलिये सिर्फ एक ही सीट रहनेवाली गाडि को चलाने केलिये, प्रयाणिक के साथ शाश्वित से एक ही डैंवर रहता है। कितने भी गाडियाँ खराब हो, चाहे कितने भी गाडियाँ बदलें इस बात को नहीं भूलना चाहिये कि प्रयाणिक एक ही है, डैंवर एक ही है, रास्ता भी एक ही है। **जब एक वाहन खराब होजाकर न चलसकने की हालत को जब पहुँचती हैं तो, दूसरी नयी वाहन को पहुँचाने वाला यानि वाहन को तयार करनेवाला और एक जन है, वही वाहनों का मालिक है।** वाहनों को तयार करनेवाला ऐसी खाबीलियत रखता हैं कि चाहे कितने भी प्रयाणिकों केलिये हो वह नये गाडियों को बनाकर पहुँचासकता है। वाहनों को तयार करनेवाला वाहन को ऐसा डिज़ैन करके रखा कि उस वाहन में एक ही प्रयाणिक बैठ सके और एक ही डैंवर चलासके, इतना ही नहीं बल्कि पहली वाहन में जितने भाग होते है उतने ही भागों की नमूने से ही गाडि को तयार करके रखा हुआ होता है।

अगर एक गाडि में प्रयाण रुकजायें तो उसमें रहनेवाले डैंवर, प्रयाणिक दोनों उतरकर फौरन नयी गाडि चडसकते हैं। शरीर कहलानेवाली गाडि में जीव अपने सामान के साथ (लगेज) प्रयाण करता रहता है। मानलीजिये कि गाडि को चलानेवाला मंत्रवाला है मिस्टर (**X**) एक्स है। डैंवर कौन है यह बात हम आखिर में

बोललेते हैं। लेकिन चाहे कितने भी लोगों को हो कितने भी नये वाहनों को देनेवाला एक जन है। **उन वाहनों के मालिक को परमात्मा या ईश्वर कहते हैं। अब तेरा शरीर एक वाहन है तो,उसे देनेवाला ईश्वर ही है। यह जानलो कि तेरे शरीर वाहन में जीवन (जीवित) का प्रयाण करनेवाला तू ही है।** लेकिन कई करोडों सालों से तुझे परमिनेन्ट ड्रैवर की तरह रहकर, तेरे शरीर वाहन में तेरे साथ तेरे सामने ही बैठकर उसे चलानेवाले को तू ने कभी भी नहीं देखा। बहुत से लोगों को यह तक नहीं मालूम कि वह कौन है। उसको अभी भी मिस्टर X की तरह ही बोललेते हैं। हमने पहले ही बयान करलिये थे ना कि जीव सफ़र करनेवाले शरीर कहलानेवाली गाडि में जीव के साथ एक थैला रहता है! जीव जो प्रयाणिक है वह जब कभी भी पुरानी गाडि उतरकर नयी गाडि चढता है तब अपने थैले को संभालकर लेके जाता है। चाहे कौनसे भी गाडि चढलो सफ़र करनेवाला जीव अपने थैले को अपने बगल में ही रखलेता है। आखिर उस थैले में है क्या? अगर इस बात पर हम गौर करें तो यह मालूम हो रहा हैं कि उसमें कई प्रकार के कच्चे फल,पकने केलिये आये हुये फल मौजूद है। बिना रुकावट वाली इस प्रयाण में जीव उन फलों को आहार की तरह लेता रहता है। अगर इसतरह थैले में के फल खाते रहें तो वे खत्म होजायेंगे ना! लेकिन जीव उन फलों को खाते हुये उन्हे खत्म न होने देते हुये रास्ते के बगल में ही जो पेड रहते हैं उनको लटके हुये फलों को जाते जाते तोड लेकर अपने थैले में डालकर लेजारहा है। इसतरह रास्ते में पडेहुये कई झाडों के कई जाति के फलों को तोडलेते हुये जीव ऐसा करलेता रहता हैं कि अपना थैला कभी भी खाली न हो, खुद कितने दूर सफ़र करने पर भी फल खत्म न हो। इसतरह रास्ते में जीव सफ़र करते हुये, जो

फल पकने के लिये आये थे उनमें से कुछ फलों को खाते खर्च करते हुये, कुछ कच्चे फलों को जो पेड अंपडता है उससे खींच कर जमा करलेते रहता हैं। एक दिन अपने सफ़र में चार फल खालिये तो, उस दिन नौ या दस कच्चे फलों को जमा करलेते रहता है। एक एक दिन दस फलों को खाकर खत्म करें तो, उसदिन तीन या चार फलों को ही जमा करलेता है। इसतरह खर्चा और जमा ज्यादा कम में बदलता रहता है। ऐसे बहुत से लोग है जिनके पास तोडे हुये फलों की जमा ही ज्यादा होकर कुछ थैलिया बचकर हैं। हमने पहले ही बयान करलिया था ना! कि यह सब जीव का सफ़र ही है। कुछ लोग पूछ सकते हैं कि ये थैलियाँ क्या चीज़ हैं? उसके जवाब में ये थैलियाँ तो हम सबको है हि। वहीं कर्म के थैलियाँ। उनमें कई प्रकार के फल यानि पाप पुण्य हैं। हम नित्य कर्म की स्टाक से पाप पुण्यों को भुगतते हुये खत्म करलेते हुये, वापिस नये पाप पुण्यों को कर्म की थैली में जमा करले रहे हैं।

जब एक सफ़र है मतलब उसका गम्य भी तो होना चाहिये हेना! यह बात सच है कि इसतरह हम बगैर गम्य के शरीर के वाहनों को बदलते हुये बिना रुकावट वाली सफ़र कर रहे हैं। यहाँ पर कुछ लोग पूछसकते हैं कि यहाँ बिना रुकावट वाली सफ़र क्या है(ऐसा क्यों कहा आपने)? गम्य तो ज़रुर होना चाहिये ना! उसके जवाब में हम यह कह रहे हैं कि हाँ गम्य तो ज़रुर है,उस गम्य का नाम ही मोक्ष है। तो गम्य को पहुँचने केलिये एक नियम है। वह नियम यह है कि प्रयाणिक के पास जब थैला खालि होजाता है तब जहाँ पर वह रहता है वही उसका गम्य है। इस नियम के प्रकार जीव ने अपना सफ़र शुरु किया था, लेकिन अपने नियम को भूलकर सफ़र करते हुये, अपने थैले को खाली किये बगैर, कर्म फलों को भरलेने

केलिये कोशीष करते ही रह रहा है। इसतरह खर्च होने वाले फलों से भी जमा होने वाले फल ही ज्यादा रहने से जिनके थैलियाँ बचकर है वैसे लोग भी बहुत है। इस पूरे विषय को एक कहानि की तरह मत समझो। ऐसा समझो कि तू ही प्रयाणिक है, वाहन तेरा शरीर ही है समझो, थैलियाँ तेरे कर्म के थैलियाँ ही है समझो, यह जानलों कि तेरे थैले में जो पाप पुण्य है वे सब तू ने खुद कमालिया है। ऐसा समझो कि चाहे तू कितना भी भुगतले और भी तेरे पास कई कर्म फल भुगतने के बाकी हैं समझो। शायद अब तुझे समझ में आगया होगा कि तू क्यों मोक्ष के गम्य को नहीं पहुँच पा रहा है।

इस पूरे सफ़र को मनुष्य पर लागू करके देखें तो जीव कई करोडों सालों से जीवित (जीवन) को शरीर के साथ गुज़ारते ही आ रहा है। कोई भी ऐसा नहीं है जो मरण में खत्म होजा रहा हो। मरण जो है वह जीव का नाश नहीं । मरण में सिर्फ शरीर नाश हो रहा है। मरण के वजह से जीव को पुराना शरीर जाकर नया शरीर आ रहा है। इसीलिये जीव न मर रहा है न पैदा हो रहा है। शरीर ही मरण को पा रही है। ऐसा ही पैदा जो हो रहा है वह भी शरीर ही है। जिसतरह जीव पुराने वस्त्र को छोडकर नये वस्त्र की धारण करता है उसी तरह पुराने शरीर को छोडकर नये शरीर की धारण कर रहा है। पुरानी शरीर वाहन रुकगयी तो मरना, नयी शरीर वाहन आयी तो उसे पैदा होना का लफ़्ज़ इस्तेमाल कर रहे हैं। मरते वक्त हो या पैदा होते वक्त हो न शरीर में सफ़र करने वाले जीव में कोई बदलाव रहती है न उसे चलानेवाले डैंवर में। मरण में मन जो यादों का पहाडी है वह नाश होजाने की वज़ह से शरीर में जो भी यादें रहते हैं वे शरीर से ही चले जा रहे हैं यानि खत्म होजा रहे हैं। इसलिये मन जो पुराने शरीर की समाचार बताने वाली चीज़ इस

जनम में न रहने की वजह से पिछले जनम की विषय जीव को ज़रा भी मालूम नहीं हो रहा है। सिर्फ वही विषय मालूम होते हैं जो नये शरीर में की नयी मन बताती है। जीव को यह नहीं पता कि पिछले जनम में की पुरानी शरीर में उसने क्या क्या किया होगा। शरीर को चलानेवाले डैंवर को हमारे जैसा भाग या हिस्से नहीं रहते। वह एक स्वरुप है जिसके कुछ भाग नहीं होते इसलिये उसे सब याद रहते हैं, वह सब जानता है। लेकिन वह जीव को कुछ भी नहीं बताता। उसका काम सिर्फ गाडि चलाने का काम ही है। वह मिस्टर **X** की तरह ही रहते हुये जीव को मालूम हुये बगैर ही सिर्फ गाडि को चलाते रहता है। (नोटः पिछले जन्मो का विवरण मालूम न होने से, उन्हे प्रत्यक्षप्रमाण से,शास्त्रबद्ध के साथ कोई भी नहीं बताने से, भूमि पर मानव पूरी तरह अज्ञान में डूबकर ऐसा बोललेने का प्रमाद है कि जीव को जन्म ही नहीं है। अभी तो नये से पैदा हुये सारे मत या मज़हब यहीं कह रहे हैं कि जनम है ही नहीं। और हिंदू मत में के हेतुवादियाँ, नास्तिकवादियाँ भी यही कह रहे हैं कि पुनर्जन्म अवास्तव है। इसीलिये हमारे शरीर में जो डैंवर की तरह है वह कुछ सैकडों सालों को एक बार बहुत ही रेरली (Rarely) किसी न किसी एक को पिछले जनम का खयाल याद दिलाता है ताकि ज़मीन पर इसतरह बोलने की हालत न आजाये कि जनम है ही नहीं। मनुष्य पैदा होने के बाद छोटे उमर में ही तीन से पाँच सालों के अंदर ही पिछले के थोडे विषयों को डैंवर जीव को बताता है। जब वह बच्चा हो या बच्ची हो खुद को अंदर ही जो चीज़े मालूम हुयी वही विषयों को बाहर बोलते हैं। ऐसे कई संघटन हुये हैं जिनमें खुद के पिछले जन्म के बारे में कहा हो। वह पिछले की याद तकरीबन एक साल या उससे भी कम वक्त रहकर बाद में खयाल नहीं रहता। असल में तो वह याद या खयाल

नहीं है। शरीरों को चलानेवाला मिस्टर X जितना बताता है उतना ही बोलते हैं। जब वह बोलना रुका देता है तब वह बच्चा बोल नहीं सकता। यह पूरा ततंग (विधान) हतुवादियों को मालूम न होने से वह समझता हैं कि शायद उस बच्चे को कुछ बिमारी है, इसीलिये वह इसतरह की बातें कर रहा है बस इतनी सी बात है लेकिन इस बच्चे के बातों में तो कुछ भी सच नहीं है वह सबकुछ अवास्तव हैं। इसके बारे में हम **पुनर्जन्म रहस्य** नाम से जो ग्रंथ लिखने जा रहे हैं उसमें खुले तरीके से समझायेंगे।

चाहे जीव कितने भी शरीर क्यों न बदलें पिछले किसी एक शरीर का भी खयाल उस जीव को नहीं रहता। इसीलिये वह ऐसा समझता है कि इस जनम में ही मैं मौजूद हूँ इसलिये मैं सिर्फ इसी जनम में पैदा हुआ हूँ। वह इस भाव से रहता है कि इससे पहले पिछले जनम में मैं कभी भी भूमि पर पैदा ही नहीं हुआ हूँ क्यों कि उसे पिछले जनम का समाचार कुछ भी मालूम न होने से वह इसतरह समझ रहा है। वह मनुष्य जिसे यह तक नहीं मालूम कि **वास्तव में उसने इससे पहले भी कई शरीरों का धारण किया था, और आगे भी कई शरीरों की धारण करनी है और वह मनुष्य जिसे सिर्फ इसी जन्म के बारे में ही मालूम है, सिवाये इस जनम के यानि जिस जनम में वह अभी पैदा हुआ है उसके अलावा उसके आगे पीछे जन्मों का विवरण मालूम न होने से, वह ऐसा समझता है कि सिर्फ अभी ही इस जिंदगी में ही उसे ईश्वर ने भूमि पर पैदा किया है। या तो ऐसा समझता है कि वह खुद पैदा हुआ है, उसे किसी ईश्वर ने पैदा नहीं किया है।** हम समझते हैं कि यह भाव हिंदूमत के सिवाये दूसरे मज़हबों में हैं। हिंदूमत में भगवद्गीता की बोधा की वजह से मालूम हो रहा है कि मनुष्य केलिये कई जन्म गुज़र गये हैं, बाद में

जब तक मोक्ष नहीं मिलता तब तक कई जन्म लेनी पडती है। दूसरे मज़हब के लोग इसतरह बोललेते हुये हमने सुना कि मनुष्य मरजाने के बाद ईश्वर वापिस उसी शरीर के साथ उठाकर मनुष्य ने जो पापपुण्य करलिये उसके मुताबिक फैसला करके सज़ा डाला जायेगा। वह बात तो सच ही है मगर क्या ईश्वर इसतरह एक ही बार कर रहा है? इस बात पर हम गौर करें तो मालूम हो रहा है कि ऐसे कुछ इशारे हो या निशानि हो नज़र नहीं आते कि ईश्वर एक ही बार ऐसा कर रहा हो। यही बात को हिंदू मत के पुराणों में भी बोललिये हैं। लेकिन हम यह कह रहे हैं कि यह शास्त्रबद्ध नहीं है सिर्फ गीता में जो कहा वही शास्त्रबद्ध है।

कुछ लोग ऐसे भी है कि जिन्हे भगवद्गीता का ज्ञान मालूम है और वे इस बात पर यकीन रखते हैं कि उनके बहुत से जनम गुज़र चुके हैं, और वे समझते हैं कि बाद में आनेवाले जन्मों से छुटकारा पाना चाहिये इसलिये अब से ही हमें मोक्ष केलिये कोशीष करनी चाहिये। इसतरह का उद्धेश्य रखनेवालों को सही ज्ञान मार्ग न मिलने के कारण, उन्हे अपने पास जो कर्म का थैला है उसके बारे में मालूम न होने से, उनकी कोशीष वे करते जा रहे हैं। जब तक हमारे पास थैला है तबतक, जबतक वह खाली नहीं होता तबतक शरीर वाहन का मंत्रवाला (डैंवर) एक गाडि उतरते ही दूसरे गाडि में ज़बरदस्ती चढाता रहता है। मोक्ष तब ही मिलता है जब कर्म खत्म होजाता है। क्योंकि ! जब तक कर्म का लगेज हमारे साथ रहता है तबतक हमारा डैंवर हमें छोडकर नहीं जाता। जब डैंवर चलाजाता है तब तुझे गाडि चढने की ज़रुरत नहीं है। जबतक डैंवर रहता है तबतक वह तुम्हे गाडि में ही बिठाता रहता है। ईश्वर के पास से डैंवर को शासन (आर्डर) दिया गया है कि अगर जीव के पास का कर्म का

थैला खाली होगया तो तू जीव को छोड दे, जीव को वाहन में मत चढाऊ। इसलिये जहाँ कर्म बचाहुआ जीव रहता हैं वहाँ जीव को वाहन रहता है और उसे चलानेवाला डैंवर रहता है। हर जीव को एक शरीर, एक डैंवर रहना सर्वसाधारण है।

भूमि पर कुछ लोग मोक्ष केलिये कोशीष कर रहे है। उसकेलिये वे कई मार्गों पर चल रहे हैं। चाहे कोई कितने भी मार्गों पर चलें जब तक कर्म का विषय मालूम नहीं होता, शरीर को चलानेवाले के बारे में मालूम नहीं होता तबतक किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता। जिन्हे यह बात मालूम नहीं कि जिसके पास कर्म की थैली बाकी है उसे डैंवर नहीं छोडता वे लोग शरीर के अंदर गौर करने की बजाये बाहर की भक्ति में पडकर अनेक भक्ति मार्गों को अमल कर रहे हैं। मोक्ष केलिये यज्ञ करनेवाले, दान करनेवाले, वेदपठन करनेवाले, तपस्या करनेवाले बहुत से लोग हैं। ये सब तरीकों को अमल करवानेवाले भी कुछ लोग हैं। ये चार प्रकार के भक्ति मार्गों पर जो लोग चलरहे हैं उन्हे कभी भी मुक्ति नहीं मिलेगी कहकर भगवद्गीता विश्वरुपसंदर्शन योग में ४८, ५३ श्लोकों में खुले तरीके से भगवान ने बताया था। भगवद्गीता में भगवान ने जो विवरण बताया था उसे ठीक से समझ न सकके बहुत से लोग गलतसमझ कर, असली ईश्वर की मार्ग में सफ़र नहीं करपा रहे हैं। जैसे भगवद्गीता में भगवान ने कहा वैसे शरीर अंतर्गत में देखलिये बगैर, जबतक शरीर को चलानेवाले शरीरवाहक मांत्रिक जो तेरे बगल में ही है नहीं पहचानता तब तक किसीको भी मोक्ष नहीं मिलेगा। जिनको कर्मसिद्धांत के बारे में नहीं मालूम, जिन्हे शरीर में रहकर कर्म के प्रकार शरीर को चलानेवाले के बारे में नहीं मालूम चाहे वे भूमि पर कितने भी बडे स्वामीजियाँ ही क्यों न हो, चाहे कितने बडे पीठाधिपति क्यों न हो गडि चडनाहि

पडेगा, सफ़र करना ही पडेगा। ईश्वर के हिसाब में सामान्य हो, स्वामीजी हो दोनों बराबर ही है। **सामान्य मनुष्य ही क्यों न हो अगर वह ज्ञानपथ के प्रकार चलता है तो मोक्ष पासकता है। स्वामीजी ही क्यों न हो अगर वह ज्ञानपथ के प्रकार नहीं चलता है तो मोक्ष नहीं पायेगा।** जिस दिन तू यह जानजायेगा कि जिसतरह यंत्र को चलानेवाला यांत्रिक है, उसीतरह शरीर यंत्र को चलानेवाला मांत्रिक भी शरीर में ही है और वह मांत्रिक हमें जबतक नहीं छोडेगा तबतक हमारा कर्म बाकी रहता है, शरीर में के कर्म को, शरीर में रहनेवाले मिस्टर (X) को जानकर, जिस दिन तू खाली कर्म की थैली को मिस्टर (X) को देगा उसदिन तुझे मोक्ष मिलसकता है। उसवक्त जो मरजाता है उसकेलिये वह मरण आखरी मरण होसकती है। जबतक अंदर की बात मालूम नहीं होता, जबतक कर्म की थैली मांत्रिक को नहीं दोगे तबतक तुझे कितने बार मौत आने पर भी वह तेरेलिये आखरी मरण नहीं होगा।

अब जाकर हमें यह मालूम हुआ कि आखरि मरण का क्या मतलब है। जब कुछ स्वामीजियाँ मरजाते हैं तब उस स्वामीजि के शिश्य समझते हैं कि हमारे गुरुजी मोक्ष पाये हैं। उसवक्त मराहुआ स्वामीजि आखरी मरण पाया है कहकर हम समझसकते हैं। इसतरह समझना या तो सच होसकता है या झूट। जिसने आखरी मरण पाया ही नहीं उसे देखकर हम गलती से समझसकते हैं कि शायद उसे मोक्ष मिला होगा । ऐसा समझनेका मौका भी है कि जिसने निज से (असल में) आखरी मरण पाया है उसे देखकर इसतरह गलत समझसकते हैं कि उसने मोक्ष को नहीं पाया है। इसतरह कन्फ्यूज़ होकर, मनुष्यों को यह तक मालूम नहीं होगा कि मरेहुये लोगों में से किसने मोक्ष को पाया है, किसने नहीं भगवान को तो पहले से ही

मालूम था कि मनुष्य इस बात को लेकर कन्फ्यूज़ होगा इसीलिये उसने अपनी भगवद्गीता में आखरी मरण के बारे में अक्षर परब्रह्मयोग में आखिर में २३ श्लोक से २८ श्लोक तक कहा हैं। पहले २३ वीं श्लोक में क्या है? यह चीज़ को देखने पर वहाँ ऐसा है कि अध्याय ८, श्लोक २३

श्लोक: यत्रकाले त्वनावृत्ति मावृत्तिं चैव योगिनह ।
प्रयाता यान्ति तं कालम वक्ष्यामि भरतर्षभ ।।

जो लोग योगी है वे किस समय पर मरजाने से वापिस पैदा नहीं होते, किस वक्त मरने से वापिस पैदा होते है उसवक्त के बारे में मैं तुम्हे बताता हूँ सुनो।

सबको यह अच्छी तरह समझना चाहिये कि जो बात अब बोली जा रही है वह शास्त्रबद्ध है। जिस वक्त के बारे में भगवान बोलने जा रहा है उसे मालूम करने के बाद किसी भी तरह की गलतफहमि होने की छान्स ही नहीं रहेगा। चाहे किनकी भी मौत हो भगवान ने जो समय कहा उस समय से कम्पार करके देखकर यह कन्फाम (फैसला) करले सकते हैं कि वह आखरि मरण है कि नहीं। ऊपर योगिनः शब्द का प्रयोग करके यह वक्त सिर्फ योगियों पर ही लागू होगा कहा था। इसलिये यह भी पहचान सकते हैं कि योगियों में किसका कर्म खत्म होगया और किसका बाकी है इस बात का भी पता लगासकते हैं। गीता में कि विश्वरुपसंदर्शन योग के 48, 53 श्लोकों के प्रकार कहसकते हैं कि यज्ञ करनेवाले, वेद पढनेवाले,दान करनेवाले, तपस्या करनेवाले योगी नहीं होते, वे जनम के सिवा मोक्ष को नहीं जाते, ऐसे लोगों के तरफ देखने की कोई ज़रुरत नहीं है। इन चार यानि यज्ञ, वेद, दान, तपों को करनेवालों को छोडकर,

योगियों में भी कर्म खत्म हुये बगैर, डैंवर छोडदिये बगैर जो व्यक्ति वापिस पैदा होता है उसका आखरी मरण नहीं होता। यह जानलो कि जिस व्यक्ति के शरीर को चलाने वाला डैंवर उसे छोडकर चलाजाता है, जिसका कर्म पूरे तरीके से खत्म होजाता है सिर्फ उस योगी की मरण ही आखरी मरण होता है। आखरी मरण को भी योगि किस समय में पाते हैं यह भी भगवान ने गीता में अक्षर परब्रह्म योग २४ श्लोक से कहा था। इसलिये मुझे उस समय के बारे में बताने की ज़रुरत नहीं है। हम यह बतारहे हैं कि अगर भगवद्गीता पढें तो हमारा डैंवर मिस्टर भी मालूम होजायेगा। कुछ लोग इसतरह पूछ सकते हैं कि हमने भगवद्गीता बहुत बार पढा हैं, जैसे आपने कहा वैसे तो न उसमें आखरी मरण केबारे में है न शरीर को चलाने वाले के बारे में। उसकेलिये हमारा जवाब यह है कि! **आध्यात्मि क्षेत्र में विप्लवात्मक रचना के साथ जुडी हुयी त्रैतसिद्धांत भगवद्गीता को पढिये, सब समझमें आजायेंगे।**

समाप्त

झूट को हज़ार लोग कहने पर भी वह सच नहीं होता
सच को हज़ार लोग इनकार करने पर भी वह झूट नहीं होता

प्रमुखों की लेखा

साक्षि न्यूस पेपर २१-०१-२०१४

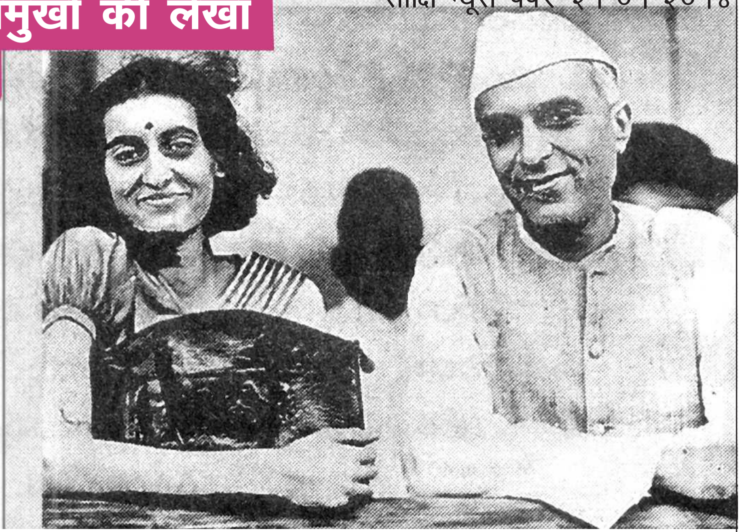

इंदू देश ही इंडिया है!

हिमालय, विंद्यापर्वतों के बीच उस ज़माने का, आर्यों का भूभाग कहाँ रहता था, उस जगह को तुमने हमारे देश के चित्र में देखा था। उसका आकार ऐसा दिखता था कि जैसे उगताहुआ चांद दिखता है, इसीलिये आर्यवर्तक को इंदूदेश नाम आया था। इंदू देश ही हिंदू देश हुआ हैं।

रामायण पैदा होने के बहुत वक्त के बाद महाभारत पैदा हुई थी। वह रामायण से भी बडी ग्रंथ हैं। उसमें जो कहा गया था वह आर्य द्राविडों का युद्ध नहीं था। आर्यों के बीच जो कुटुंब कलह पैदाहुआ वही भारत कथा हैं। महाभारत में कही गई कहानियाँ, धर्म इतने उतने नहीं हैं। वे बहुत ही खूबसूरत, गंभीर से रहते हैं। इन सबसे बडी महत्व वाली भगवद्गीता नाम की महाग्रंथ महाभारत में रहने की वजह से वह हम सबकेलिये प्रियतम हुई हैं। कई हज़ारों सालों पहले ही हमारे देश में ऐसे महत्व ग्रंथ पैदा हुये थे। इन्हे बडे महान लोग ही लिखे हुए होंगे। ये ग्रंथ पैदा होकर इतना वक्त गुज़रने पर भी उनके बारे में मालूम न किये हुए बच्चे हो, फायिदा नहीं पाये हुए बडे हो नहीं रहते।

* उस लेखा में से जो नेहरू ने इंदिरा को लिखा

01) त्रैत सिद्धाँत के ग्रंथों में अक्षर समुदाय ही आत्म समाचार है।
त्रैत सिद्धाँत के ग्रंथों में क्षय, अक्षय समाचार,परमात्मा का समाचार हैं।

02) त्रैत सिद्धाँत के संबंधित ग्रंथों को भौतिक से योगीश्वर जी ने लिख्खा हैं।त्रैत सिद्धांत के अनुबंध ग्रंथों में अभौतिक रुप में योगशक्ति हैं।

03) त्रैत सिद्धाँत इंदू (हिंदू) धर्मों में विप्लवात्मक हैं।

04) त्रैत सिद्धाँत लोक में सबसे बडी हैं। त्रैत सिद्धाँत के ग्रंथ सब ग्रंथों से बडकर हैं, उसका रचयिता योगियों का ईश्वर योगीश्वर हैं।

05) अगर त्रैत सिद्धाँत के ग्रंथें दिखे तो दुष्टशक्तियाँ डर से कँापजाते हैं। त्रैत सिद्धाँत के ग्रंथों को पास रखलें तो योगशक्ति से बरदाश्त न करपाकर डरजाते हैं।

06) त्रैत सिद्धाँत का ज्ञान भगवद्गीता के बाद कही गयी बडी महत्वपूर्ण ज्ञान हैं। त्रैत सिद्धाँत के ग्रंथों में योगीश्वर जी ने वह ज्ञान को बताये जो कृष्ण ने पहले नहीं बतायी हैं।

07) त्रैत सिद्धाँत का ज्ञान मानव जीवित केलिये बडी रोशनी हैं।
जो व्यक्ति त्रैत सिद्धाँत की रोशनी में जाता हैं उसे मालूम होजाये गा कि वह दैवशक्ति हैं।

08) त्रैत सिद्धाँत भगवद्गीता को योगीश्वर जी ने लिख्खा हैं।इसीलिये यह मालूम हुआ कि त्रैत सिद्धाँत क्या हैं, वह कितनी महत्वपूर्ण हैं।

09) अगर त्रैत सिद्धाँत के बारे में मालूम करलिये तो, अगर योगीश्वर जी के ग्रंथों को पढपाये तो, वह कोई भी मतवाला क्यों न हो ज़रुर मानजायेगा,उस पर अमल करेगा।

10) त्रैत सिद्धाँत प्रत्यक्ष से भगवान ने कही हैं।इसलिये सब मतों का सारांश त्रैत सिद्धाँत के ग्रंथों में मौजूद हैं।

11) त्रैत सिद्धाँत के ग्रंथ व्यक्ति ने नहीं लिख्खे,व्यक्ति में के शक्ति ने लिख्खे हैं।इसलिये सब रहस्य ही है पढकर मालूम करलीजिये।

12) त्रैत सिद्धाँत भगवद्गीता, बैबिल, खुरान ग्रंथों में मौजूद हैं ।फिर भी यह बात न हिंदू जानते हैं, न ईसायी, न मुसल्मान।

ज़रुर पढियें! *पढायियें*

प्रथम दैवग्रंथ

त्रैत सिद्धाँत भगवद्गीता

(578 श्लोकों में)

त्रिमत के एकैक गुरू, त्रैतसिद्धान्त आदिकर्ता : **श्रीश्रीश्री आचार्य प्रबोधानंद योगीश्वर**

आध्यात्मि क्षेत्र में संचलनात्मक है और विज्ञान क्षेत्र में विप्लवात्मक हैं।वे सारे दैव रहस्य जो ५००० साल से मालूम नहीं हुये वे सब इस ग्रंथ में बाहर आगयें।यह भगवद्गीता त्रैतसिद्धाँत से जुडी हुयी भगवद्गीता हैं जिसमें यह बताया गया कि जीवात्मा,परमात्मा और बीचमें वाली आत्मा क्या हैं और उनके अपने काम क्या हैं ।यह भगवद्गीता अद्वैत,विशिष्टाद्वैत को न कह कर त्रैतसिद्धाँत की प्रतिपादना की हैं।इसे पढने से यह मालूम होगा कि दैवज्ञान क्या हैं।

हिंदू रक्षण ! या हिंदू भक्षण हिंया ण !!

जिसने भगवद्गीता ही नहीं पढा क्या वह हिंदू रक्षक है?

जिन्हे हिंदू धर्म ही नहीं मालूम क्या वे हिंदू रक्षक है?

यह सत्य को तो सब जानते ही हैं कि हिंदू लोग आज जातियों में चीरे जाकर, उसमें भी ऐसा वर्णन किये कि कुछ जातियाँ बडे हैं तो कुछ जातियाँ छोटे हैं। ईश्वर ने सब मनुष्यों को बराबर पैदा किया तो कुछ मनुष्य अपने स्वार्थ बुद्धि से हिंदू (इंदू) समाज को टुकडे टुकडे करके चीरके बलहीन करके ऐसा प्रचार किये कि पूरे हिंदू समाज केलिये हम ही बडे हैं,जैसे हम कहते हैं वैसा ही सब लोग सुन कर कार्य करलेनी चाहिये। वह हिंदू समाज जो कई वर्णों की सूरत में हैं उसमें अपना कुल ही अग्रकुल है कह कर बोललेना ही नहीं बल्कि, यह ऐलान करलिये कि हम ही दूसरे कुल के सबलोगों के लिये मार्गदर्शक है,गुरु है। भविश्य में उनको कोई आढ न आये जैसा, सब कुलवालों को नीच कुल बनाकर, हिंदूसमाज के साथ बडा अन्याय किया है। उतने से रुके बगैर आज तक भी अपने आप को हिंदू समाज के रक्षकों की तरह बोललेते हुये, हिंदू समाज को सर्वनाश करते हुये, हिंदू समाज दूसरे मतों की तरह बदलने केलिये पहला कारक होरहे है। ऐसे लोग हिंदू समाज केलिये नुकसान पहुंचानेवाले कीडे होने पर भी, बाकी कुल के लोग उनकी असली स्वरुप को न मालूम होने से जैसे वे कह रहे हैं वैसे सुनने की वजह से,हिंदू समाज को पूरे तरीके से अज्ञान दिशा के तरफ, अधर्म मार्ग के तरफ मोडकर, लोगों को किसी भी हाल में दैवज्ञान को मालूम न होने दिया फिर उन्हे ऐसा यकीन दिलाया कि जो कुछ वे कह रहे हैं वही असली दैवज्ञान हैं।

ऐसी हालत में आज त्रैत सिद्धांतकर्ता श्री आचार्य प्रबोधानंद योगीश्वर जी ने अज्ञान दिशा के तरफ ठहरी हुयी हिंदू समाज को सही रास्ते में रखने केलिये, **भगवद्गीता में पुरुषोत्तम प्राप्ति योग अध्याय में बोधा की गयी क्षर, अक्षर, पुरुषोत्तम कहलानेवाले तीन पुरुषों के विषय को त्रैतसिद्धांत नाम से प्रतिपाद (निरुपण) करके दैवज्ञान सबको समझमें आये जैसा ग्रंथरुपमें लिखना, बोधा करना हो रहा हैं।** इन ग्रंथों के ज्ञान से आज लोग खुश हो रहे हैं कि हमें अब असल ज्ञान मालूम हो रहा है। जो लोग अग्रकुल में हैं वे लोग भी अपने अज्ञान के अंधेरों को छोडकर, इस बात से खुश हो रहे हैं कि अबतक जो ज्ञान हमें मालूम नही हुआ वह ज्ञान आज हमलोगों को योगीश्वर जी के द्वारा मालूम हो रहा है और वे खुशी से उनके शिष्यों में दाखिल हो रहे हैं। तो अग्रकुल में सिर्फ कुछ लोग योगीश्वर जी जो ज्ञानविषयों को बता रहे हैं उनको देखकर यह ज्ञान से तो लोग ज्ञान चैतन्य होकर, ज्ञान नही जाननेवाले हमलोगों की इज़्ज़त तक नहीं करेंगे, इससे समाज पर हम जो हुकूमत कर रहे हैं वह पूरा चली जायेगी समझकर उन्होने ऐसा प्रचार करना शुरु किया कि योगीश्वर जी जो ज्ञान बता रहे हैं वह त्रैतसिद्धांत हो, त्रैतसिद्धांत भगवद्गीता हो हिंदुओं का ज्ञान ही नही है, वह ईसायियों के मज़हब से संबंध रखने वाला ज्ञान है, कोई भी उस ज्ञान को पढना नहीं चाहिये। इतना ही नहीं हम हिंदू धर्म रक्षक है कहते हुये थोडा राजकीय का रंग लगालेकर, वहाँ वहाँ हमारे ज्ञान प्रचार को आढे आना भी हो रहा है। अपनी बात को सुनने वाले दूसरे कुल के लोगों से भी यह कह रहे हैं कि जो ज्ञान प्रबोधानंद योगीश्वर बता रहे हैं वह हिंदू ज्ञान ही नहीं है, ईसायियों का ज्ञान है, हिंदुओं का परदा लगाले कर ईसायियत का मत प्रचार कर रहे हैं इतना ही नहीं बल्कि उनको उक्साकर हमारे प्रचार को आडे आये जैसा कर रहे हैं।

योगीश्वर जी ने स्थापना की हुयी हिंदू (इंदू) ज्ञानवेदिका इसतरह के रुकावटों को थोडे वक्त तक सबर के साथ देखना हुआ। हम में सबर खतम होजाकर हमें अन्यमतप्रचारक जैसा वर्णन करनेवाले अग्रकुल के लोगों को, उनके अनुचरों का सामना करके सवाल करना हुआ। हमने पूछे हुये एक सवाल का भी उन्होने सही जवाब नहीं दिया। वे जवाब कैसे थे पाठकों की तरह आप देखिये।

हमारा सवाल :- हम गाँव गाँव फिर कर, गाँव में घर घर फिर कर हिंदू धर्म ऐसा प्रचार कर रहे हैं कि अबतक कोई भी हिंदू ने नहीं किया! इसतरह प्रचार करनेवाले हमें देखकर आप क्यों अन्यमत प्रचारक कह रहे हैं?

उनका जवाब :- हिंदू मत में कई स्वामीजियाँ हैं। उनमें से कोई भी घर घर जाकर प्रचार नहीं किये। हिंदू इसतरह प्रचार नहीं करते। ईसायियाँ ही बाज़ार बाज़ार, घर घर फिर कर प्रचार करते हैं। आप हिंदू का परदा पहनकर घर घर घूम कर ईसायियत का प्रचार कर रहे हैं।

हमारा सवाल :- अगर हम ईसायि है तो भगवद्गीता क्यों प्रचार करेंगे?

उनका जवाब :- आप जिसका प्रचार कर रहे हैं वह त्रैतसिद्धांत भगवद्गीता हैं,वह ईसायियों का है । आपने बैबिल को ही ऐसा नाम रखा है।

हमारा सवाल :- ईसायियाँ तो अपने आप को ईसायी ही बोललेते हैं। ऐसा ही बैबिल को बैबिल की तरह ही बोललेते हैं। जब उनका प्रचार ईसायियत, बैबिल है तो वे लोग उसी नाम से प्रचार करेंगे मगर हिंदुओं की तरह भगवद्गीता के नाम से क्यों प्रचार करेंगे? अबतक इसतरह कहीं भी नहीं हुआ। जिस मत के लोग उनके अपने मत का

नाम ही बोललेते हैं मगर दूसरे मत का नाम नहीं कहते। उतने दूर तक क्यों क्या तुमलोगों ने हमारी भगवद्गीता को खोलकर देखा हैं क्या? उसमें भगवद्गीता के श्लोक है या बैबिल के वाक्य है?

उनका जवाब :- त्रैतसिद्धांत कह कर है ना! हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि त्रैत का मतलब त्रित्व है या त्रिनिटि है।

हमारा सवाल :- हिंदू धर्मों में अद्वैत सिद्धांत को आदिशंकराचार्य ने प्रतिपादन किया। विशिष्टाद्वैत को रामानुजाचार्य ने प्रतिपादन किया,द्वैत को मध्वाचार्य ने ऐलान किया। अब आचार्य प्रबोधानंद योगीश्वर जी ने त्रैतसिद्धांत का प्रतिपादन किया। सिद्धांतकर्तायें, सिद्धांत अलग होने पर भी सब हिंदू ही है कह कर तुम लोगों ने क्यों नहीं समझा?

उनका जवाब :- आपने आपके त्रैतसिद्धांत भगवद्गीता में लिखा कि यज्ञों को नही करना चाहिये हेना! असल में तो भगवद्गीता में वैसा नही हैं ना!

हमारा सवाल :- तुमलोग हिंदुओ में मुख्य होकर इतनी मूर्खत्व से कैसे बात करसकते हो? पूरे प्रपंच केलिये एक ही भगवद्गीता होती है मगर, इसतरह तुम्हारा भगवद्गीता, हमारा भगवद्गीता कह कर अलग नहीं रहता। भगवद्गीता का विवरण एक एक जन एक एक तरह जिसको जैसे समझमें आया वैसे बोले होंगे मगर,यह बात याद रखें कि सबकेलिये भगवद्गीता मूलग्रंथ एक ही है। जिन ज्ञानियों ने पढा वे सब उसकी तारीफ ऐसे कर रहे हैं कि त्रैतसिद्धांत भगवद्गीता सबसे बढकर सही भाव के साथ है तो, तुम्हारे समाज में कई लोग उसकी प्रशंसा भी कर रहे हैं तो, सिर्फ तुम थोडे लोगों को ही वह भगवद्गीता व्यतिरेक से दिख रहा है कहने के पीछे आपकी हसद और स्वार्थ साफ नज़र आ रहा है। हमने यह कहीं पे भी नहीं कहा कि यज्ञ मत कीजिये। हमने साफ कहा कि यज्ञों से पुण्य हासिल

होता है, स्वर्ग मिलता है। हमने कहा कि यज्ञों से मोक्ष नहीं मिलता, ईश्वर मालूम नहीं होगा (यानि ईश्वर को नहीं पायेंगे)। तुमलोग अपने आप को सब जातियों से स्वच्छ हिंदू बोलले रहे हैं ना! चलिये कम से कम एक हिंदू धर्म को तो बतायिये जो भगवद्गीता में कहा था।

उनका जवाब :- यह सब बातें हमें नही चाहिये....आप हिंदू नहीं है बस इतना ही....

हमारा सवाल :- इसतरह जिद्दी से बात मतकीजिये आप अग्रकुल वाले हैं कह कर जैसे आपकी मरज़ी है वैसे बात मत कीजिये। हम हिंदू नहीं है कहनेकेलिये क्या आप इसका कोई आधार या सबूत दिखापायेंगे? हमारी कहानि सैड में रखके अगर आप सच्चे हिंदू है तो भगवद्गीता में विश्वरुप संदर्शयोग अध्याय में ४८ श्लोक में,५३ श्लोक में भगवान ने क्या कहा आप ही बतायिये?

उनका जवाब :- हमने अबतक भगवद्गीता को नहीं पढा। अगर आप को चाहिये तो संपूर्णआनंदस्वामि से कहलवायेंगे।

हमारा सवाल:- कम से कम भगवद्गीता को भी आपलोगों ने नहीं पढा तो फिर तुम जैसे लोग योगीश्वर प्रबोधानंद स्वामि का दूषण करना अच्छी बात है क्या?कम से कम एक हिंदू धर्म को भी न जाननेवाले तुमलोग हिंदू धर्म रक्षक है कहना अच्छी बात है क्या? योगीश्वर जी ने जो ग्रंथ लिखे उनमें से एक ग्रंथ को भी पढे बगैर हमारे सिवा पूज्य,गुरुओं की तरह कोई और नहीं रहना चाहिये, इसतरह का हसद अपने अंदर रखलेके ऐसा बात करेंगे तो ईश्वर बरदाश नहीं करेगा।

उनका जवाब :- हिंदू मत में कई देवतायें है। शिव भी ईश्वर ही है,शिव का बेटा गणपति भी ईश्वर ही है, राम भी ईश्वर ही है,राम का सेवक

आंजनेय भी ईश्वर ही है। वैसे हिंदू मत में आप कहरहे हैं कि ईश्वर एक ही हैं तो फिर इसतरह कहना गलत नही है क्या?

हमारा सवाल :- हमने मत के बारे में नहीं कहा। हिंदू मत में कई ईश्वर रहना सही है, तो हमने यह कहा कि हिंदू ज्ञान में, हिंदू धर्म के प्रकार पूरे विश्व केलिये ईश्वर एक ही है। भगवद्गीता में ईश्वर ने जो कहा वही हमने कहा है उसके सिवा हमने यह कब कहा कि देवतायें नहीं है! हमने कहा कि सब देवताओं का भी मालिक एक है उसीको ईश्वर या परमात्मा या सृष्टिकर्ता कहते हैं, वही देवों का भी देव हैं, सब उसीकी आराधना करनी चाहिये।

उनका जवाब :- आप राम का नाम नहीं कहते,शिव का नाम नहीं कहते,विनायक का नाम भी नहीं कहते। किसीका नाम न कहते हुये ईश्वर,सृष्टिकर्ता है कह कर बहुत बार बतायें। ईश्वर शब्द को,सृष्टिकर्ता शब्द को ईसायियाँ ही इस्तेमाल करते हैं। हिंदू इस्तेमाल नहीं करते। इसीलिये आप को हिंदू नहीं ईसायि कह रहे हैं।

हमारा सवाल :- ईसायियत पैदा होकर दो हजार साल हुआ है। यह कोई भी नहीं बतासकते कि सृष्टी पैदा होकर कितने करोड साल हुये। सृष्टादि से सृष्टिकर्ता शब्द को, ईश्वर शब्द को हिंदू समाज इस्तेमाल करही रही हैं। तो हम यह पूछ रहे हैं ईश्वर, सृष्टिकर्ता कहलानेवाले शब्द पहले से हिंदू समाज में मौजूद थे तो उन शब्दों को क्या हिंदुओ ने ईसायियों को लीज़ पर दिया है? या पूरा बेच दिये? यह पूछ रहे हैं कि ऐसा कहाँ पर लिखा गया कि हिंदू लोग ईश्वर, सृष्टिकर्ता शब्दों को बोलना नहीं चाहिये?

उनका जवाब :- आपने कभी भी अपने आप को हिंदूओं की तरह नहीं बोललिये, हिंदू के बदले में हमेशा इंदू कहा था यह काफि है इस बात केलिये कि आप हिंदूमत की नहीं बल्कि अन्यमत की बोधा कररहे हैं।

ऐसी सूरत में क्या आप ने हिंदू मत को चीरे जैसा नहीं हैं क्या! प्रत्येक से इंदू मत कहनेवाली की प्रचार किये जैसा नहीं हुआ क्या! जब आप हिंदू ही है तो आप अपने ग्रंथों में हो, अपने बोधाओ में हो प्रत्येक से इंदू कह कर क्यों बोल रहे है?

हमारा सवाल :- हम सीधे एक सवाल पूछते हैं जवाब दीजिये। हिंदू,इंदू लफ़्ज़ में थोडा शब्द के सिवा क्या फरख है आप ही बतायिये। तेलुगु भाषा लिखनेवाले सब कहते हैं कि हिरण्यकश्यप को **नरशिंह** स्वामि ने मारा और वैसा ही लिखते भी हैं। प्रस्तुतकाल में जिस व्यक्ति का नाम नर**शिं**ह होता है वह भी अपने नाम को नर**शिं**ह ही कहकर लिखता है यह बात तो सब जानते हैं। तो हम कह रहे हैं कि वह बात गलत है उस नाम को वैसा लिखना नहीं चाहिये उसे **नरसिंह** कह कर लिखना चाहिये। और हम यह भी कह रहे हैं कि जंगल में मृगराजा को **सिं**ह कहते हैं लेकिन **शिं**ह नहीं कहते हैं। और हमने यह भी कहा कि **सिंह** शब्द का अर्थ है मगर **शिंह** शब्द का कोई मतलब नहीं हैं। उसीतरह अगर जो सच है वह कहे तो **इंदू** शब्द का अर्थ है मगर **हिंदू** शब्द का कोई मतलब ही नहीं हैं। सृष्टादि में जो पैदा हुआ वह इंदू समाज है (यानि पूरा विश्व जब पैदा हुआ उसवक्त ही इंदू समाज पैदा हुआ), लेकिन बीचमें वह जिसतरह **दृष्टि** शब्द **जिष्टि** शब्द में बदलगया वैसा ही इंदू शब्द हिंदू में बदलकर आज **इंदू** को **हिंदू** कह कर पुकार रहे हैं। इंदू लफ़्ज़ ही क्यों इस्तेमाल करनी चाहिये हिंदू क्यों इस्तेमाल नहीं करनी चाहिये यह बात भी हमने अपने ग्रंथो में साफ तौर पर विवरण दिया है। जो सत्य है वह आप अच्छी तरह से जानते हैं उसके बावजूद भी तुम लोग इस हसद

(असूय गुण) से बात कर रहे हैं कि हमारे सिवा समाज में और कोई बडे नहीं रहना चाहिये।

अग्रकुल में कई बडे लोग हमारे त्रैत सिद्धांत ज्ञान को मालूम करके खुशी व्यक्त कर रहे हैं तो, कुछ लोग गल्लियों में घूमनेवाले गुंडों की तरह इसतरह कहना अच्छी बात नहीं है कि हम मारेंगे, भोकेंगे, जलादेंगे आप प्रचार नहीं करना चाहिये । हमारे ग्रंथ पढे बगैर ही बात करना, हमने जो बातें कहीं है उनको सुने बगैर ही यह सब ड्रामा,नाटक है कहना अच्छी बात नहीं है। हम यह पूछ रहे हैं कि आप में से कोई भी हो यह साबित करके दिखायिये कि हमारे ग्रंथो में कहीं पे भी हो दूसरे मतों का प्रचार किये जैसा,या फलाना मत में दाखिल होजायिये जैसा कहा हो। जिसने यह साबित किया उसे **इंदू ज्ञानवेदिका के तरफ से दस लाख रुपये दे सकते हैं। अगर साबित नहीं करपाये तो तुम लोग किसी भी गाँव में हो श्रीकृष्ण के मंदिर के लिये लाख रुपे देना चाहिये।** क्या कोई भी इस शर्त के लिये आगे बडेंगे?

इंदू ज्ञान वेदिका और प्रबोध सेवा समिति

प्रबोधा

प्रबोधाश्रम (श्रीकृष्ण मंदिर) चित्र पोडमल

www.thraithashakam.org